"અહો ! શ્રુતજ્ઞાનમ્" ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર ૧૯૬

શીઘ્રબોધ ભાગ ૧૧ થી ૧૫

: દ્રવ્ય સહાયક :

શ્રી નીતિસૂરિજી સમુદાયના
પૂ. આ. શ્રી હેમપ્રભસૂરીશ્વરજી મ.સા.ના આજ્ઞાનુવર્તિની
પૂ. સા. શ્રી પદ્મયશાશ્રીજી મ.ની પ્રેરણાથી
સાબરમતી ધર્મશાળા, પાલિતાણામાં
સં. ૨૦૬૯ ના ચાતુર્માસમાં જ્ઞાનદ્રવ્યના ઉપજમાંથી
હ. રસીલાબેન ભાવનગરવાળા

: સંયોજક :

શાહ બાબુલાલ સરેમલ બેડાવાળા
શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર
શા. વિમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન
હીરાજૈન સોસાયટી, સાબરમતી, અમદાવાદ-૫
(મો.) 9426585904 (ઓ.) 22132543

સંવત ૨૦૭૧ ઈ. ૨૦૧૫

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com
शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६५ (ई. 2009) सेट नं.-१

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रमांक	पुस्तकनुं नाम	कर्त्ता-टीकाकार-संपादक	पृष्ठ
001	श्री नंदीसूत्र अवचूरी	पू. विक्रमसूरिजी म.सा.	238
002	श्री उत्तराध्ययन सूत्र चूर्णी	पू. जिनदासगणि चूर्णीकार	286
003	श्री अर्हद्गीता-भगवद्गीता	पू. मेघविजयजी गणि म.सा.	84
004	श्री अर्हच्चूडामणि सारसटीकः	पू. भद्रबाहुस्वामी म.सा.	18
005	श्री यूक्ति प्रकाशसूत्रं	पू. पद्मसागरजी गणि म.सा.	48
006	श्री मानतुङ्गशास्त्रम्	पू. मानतुंगविजयजी म.सा.	54
007	अपराजितपृच्छा	श्री बी. भट्टाचार्य	810
008	शिल्प स्मृति वास्तु विद्यायाम्	श्री नंदलाल चुनिलाल सोमपुरा	850
009	शिल्परत्नम् भाग-१	श्रीकुमार के. सभात्सव शास्त्री	322
010	शिल्परत्नम् भाग-२	श्रीकुमार के. सभात्सव शास्त्री	280
011	प्रासादतिलक	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	162
012	काश्यशिल्पम्	श्री विनायक गणेश आपटे	302
013	प्रासादमञ्जरी	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	156
014	राजवल्लभ याने शिल्पशास्त्र	श्री नारायण भारती गोंसाई	352
015	शिल्पदीपक	श्री गंगाधरजी प्रणीत	120
016	वास्तुसार	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	88
017	दीपार्णव उत्तरार्ध	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	110
018	જિનપ્રાસાદ માર્તણ્ડ	શ્રી નંદલાલ ચુનીલાલ સોમપુરા	498
019	जैन ग्रंथावली	श्री जैन श्वेताम्बर कोन्फ्रन्स	502
020	હીરકલશ જૈન જ્યોતિષ	શ્રી હિમ્મતરામ મહાશંકર જાની	454
021	न्यायप्रवेशः भाग-१	श्री आनंदशंकर बी. ध्रुव	226
022	दीपार्णव पूर्वार्ध	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	640
023	अनेकान्त जयपताकाख्यं भाग-१	पू. मुनिचंद्रसूरिजी म.सा.	452
024	अनेकान्त जयपताकाख्यं भाग-२	श्री एच. आर. कापडीआ	500
025	प्राकृत व्याकरण भाषांतर सह	श्री बेचरदास जीवराज दोशी	454
026	तत्त्पोपप्लवसिंहः	श्री जयराशी भट्ट, बी. भट्टाचार्य	188
027	शक्तिवादादर्शः	श्री सुदर्शनाचार्य शास्त्री	214
028	क्षीरार्णव	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	414
029	वेधवास्तु प्रभाकर	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	192

030	**शिल्परत्नाकर**	**श्री नर्मदाशंकर शास्त्री**	**824**
031	**प्रासाद मंडन**	**पं. भगवानदास जैन**	**288**
032	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-१**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**520**
033	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-२**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**578**
034	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-३ (१)**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**278**
035	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-3 (२) (३)**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**252**
036	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-५**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**324**
037	વાસ્તુનિઘંટુ	પ્રભાશંકર ઓઘડભાઈ સોમપુરા	302
038	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૧	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	196
039	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૨	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	190
040	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૩	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	202
041	સપ્તસન્ધાન મહાકાવ્યમ્	પૂ. વિજયઅમૃતસૂરિશ્વરજી	480
042	સપ્તભઙ્ગીમિમાંસા	પૂ. પં. શિવાનન્દવિજયજી	228
043	ન્યાયાવતાર	સતિષચંદ્ર વિદ્યાભૂષણ	60
044	વ્યુત્પત્તિવાદ ગુઢાર્થતત્ત્વાલોક	શ્રી ધર્મદત્તસૂરિ (બચ્છા ઝા)	218
045	સામાન્યનિર્યુક્તિ ગુઢાર્થતત્ત્વાલોક	શ્રી ધર્મદત્તસૂરિ (બચ્છા ઝા)	190
046	સપ્તભઙ્ગીનયપ્રદીપ બાલબોધિનીવિવૃત્તિઃ	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	138
047	વ્યુત્પત્તિવાદ શાસ્ત્રાર્થકલા ટીકા	શ્રીવેણીમાધવ શાસ્ત્રી	296
048	નયોપદેશ ભાગ-૧ તરઙ્ગિણીતરણી	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	210
049	નયોપદેશ ભાગ-૨ તરઙ્ગિણીતરણી	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	274
050	ન્યાયસમુચ્ચય	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	286
051	સ્યાદ્યાર્થપ્રકાશઃ	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	216
052	દિન શુદ્ધિ પ્રકરણ	પૂ. દર્શનવિજયજી	532
053	બૃહદ્ ધારણા યંત્ર	પૂ. દર્શનવિજયજી	113
054	જ્યોતિર્મહોદય	સં. પૂ. અક્ષયવિજયજી	112

શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર

સંયોજક – બાબુલાલ સરેમલ શાહ
શાહ વીમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન
હીરાજૈન સોસાયટી, રામનગર, સાબરમતી, અમદાવાદ-૦૫.
(મો.) ૯૪૨૬૫૮૫૯૦૪ (ઓ) ૨૨૧૩૨૫૪૩ (ઇ-મેલ) ahoshrut.bs@gmail.com

અહો શ્રુતજ્ઞાનમ્ ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર – સંવત ૨૦૬૬ (ઈ. ૨૦૧૦) – સેટ નં-૨

પ્રાયઃ જીર્ણ અપ્રાપ્ય પુસ્તકોને સ્કેન કરાવીને ડી.વી.ડી. બનાવી તેની યાદી.

આ પુસ્તકો www.ahoshrut.org વેબસાઇટ પરથી પણ ડાઉનલોડ કરી શકાશે.

ક્રમ	પુસ્તકનું નામ	ભાષા	કર્તા-ટીકાકાર-સંપાદક	પૃષ્ઠ
055	श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहद्न्यास अध्याय-६	सं	पू. लावण्यसूरिजी म.सा.	296
056	विविध तीर्थ कल्प	सं	पू. जिनविजयजी म.सा.	160
057	ભારતીય જૈન શ્રમણ સંસ્કૃતિ અને લેખનકળા	ગુજ.	पू. पूण्यविजयजी म.सा.	164
058	सिद्धान्तलक्षणगूढार्थ तत्त्वलोकः	सं	श्री धर्मदत्तसूरि	202
059	व्याप्ति पञ्चक विवृत्ति टीका	सं	श्री धर्मदत्तसूरि	48
060	જૈન સંગીત રાગમાળા	ગુ.	श्री मांगरोळ जैन संगीत मंडळी	306
061	चतुर्विंशतीप्रबन्ध (प्रबंध कोश)	सं	श्री रसिकलाल एच. कापडीआ	322
062	व्युत्पत्तिवाद आदर्श व्याख्यया संपूर्ण ६ अध्याय	सं	श्री सुदर्शनाचार्य	668
063	चन्द्रप्रभा हेमकौमुदी	सं	पू. मेघविजयजी गणि	516
064	विवेक विलास	सं/ગુ.	श्री दामोदर गोविंदाचार्य	268
065	पञ्चशती प्रबोध प्रबंध	सं	पू. मृगेन्द्रविजयजी म.सा.	456
066	सन्मतितत्त्वसोपानम्	सं	पू. लब्धिसूरिजी म.सा.	420
067	ઉપદેશમાલા દોઘટ્ટી ટીકા ગુર્જરાનુવાદ	ગુજ.	पू. हेमसागरसूरिजी म.सा.	638
068	मोहराजापराजयम्	सं	पू. चतुरविजयजी म.सा.	192
069	क्रियाकोश	सं/हिं	श्री मोहनलाल बांठिया	428
070	कालिकाचार्यकथासंग्रह	सं/ગુ.	श्री अंबालाल प्रेमचंद	406
071	सामान्यनिरुक्ति चंद्रकला कलाविलास टीका	सं.	श्री वामाचरण भट्टाचार्य	308
072	जन्मसमुद्रजातक	सं/हिं	श्री भगवानदास जैन	128
073	मेघमहोदय वर्षप्रबोध	सं/हिं	श्री भगवानदास जैन	532
074	જૈન સામુદ્રિકનાં પાંચ ગ્રંથો	ગુજ.	श्री हिम्मतराम महाशंकर जानी	376

075	જૈન ચિત્ર કલ્પદ્રૂમ ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	374
076	જૈન ચિત્ર કલ્પદ્રૂમ ભાગ-૨	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	238
077	સંગીત નાટ્ય રૂપાવલી	ગુજ.	**श्री विद्या साराभाई नवाब**	194
078	ભારતનાં જૈન તીર્થો અને તેનું શિલ્પસ્થાપત્ય	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	192
079	શિલ્પ ચિન્તામણિ ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री मनसुखलाल भुदरमल**	254
080	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	260
081	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૨	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	238
082	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૩	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	260
083	આયુર્વેદના અનુભૂત પ્રયોગો ભાગ-૧	ગુજ.	**पू. कान्तिसागरजी**	114
084	કલ્યાણ કારક	ગુજ.	**श्री वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री**	910
085	**विश्वलोचन कोश**	**सं./हिं**	**श्री नंदलाल शर्मा**	436
086	કથા રત્ન કોશ ભાગ-1	ગુજ.	**श्री बेचरदास जीवराज दोशी**	336
087	કથા રત્ન કોશ ભાગ-2	ગુજ.	**श्री बेचरदास जीवराज दोशी**	230
088	હસ્તસઞ્જીવનમ્	સં.	**पू. मेघविजयजीगणि**	322
089	એન્દ્રચતુર્વિંશતિકા	સં.	**पू.यशोविजयजी, पू. पुण्यविजयजी**	114
090	સમ્મતિ તર્ક મહાર્ણવાવતારિકા	સં.	**आचार्य श्री विजयदर्शनसूरिजी**	560

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com

शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६७ (ई. 2011) सेट नं.-३

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टीकाकार	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
91	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-१	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	272
92	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-२	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	240
93	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-३	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	254
94	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-४	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	282
95	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-५	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	118
96	पवित्र कल्पसूत्र	पुण्यविजयजी	सं./अं	साराभाई नवाब	466
97	समराङ्गण सूत्रधार भाग-१	भोजदेव	सं.	टी. गणपति शास्त्री	342
98	समराङ्गण सूत्रधार भाग-२	भोजदेव	सं.	टी. गणपति शास्त्री	362
99	भुवनदीपक	पद्मप्रभसूरिजी	सं.	वेंकटेश प्रेस	134
100	गाथासहस्त्री	समयसुंदरजी	सं.	सुखलालजी	70
101	भारतीय प्राचीन लिपीमाला	गौरीशंकर ओझा	हिन्दी	मुन्शीराम मनोहरराम	316
102	शब्दरत्नाकर	साधुसुन्दरजी	सं.	हरगोविन्ददास बेचरदास	224
103	सुबोधवाणी प्रकाश	न्यायविजयजी	सं./गु	हेमचंद्राचार्य जैन सभा	612
104	लघु प्रबंध संग्रह	जयंत पी. ठाकर	सं.	ओरीएन्ट इन्स्टीट्युट बरोडा	307
105	जैन स्तोत्र संचय-१-२-३	माणिक्यसागरसूरिजी	सं,	आगमोद्धारक सभा	250
106	सन्मति तर्क प्रकरण भाग-१,२,३	सिद्धसेन दिवाकर	सं.	सुखलाल संघवी	514
107	सन्मति तर्क प्रकरण भाग-४,५	सिद्धसेन दिवाकर	सं.	सुखलाल संघवी	454
108	न्यायसार – न्यायतात्पर्यदीपिका	सतिषचंद्र विद्याभूषण	सं.	एसियाटीक सोसायटी	354
109	जैन लेख संग्रह भाग-१	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	337
110	जैन लेख संग्रह भाग-२	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	354
111	जैन लेख संग्रह भाग-३	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	372
112	जैन धातु प्रतिमा लेख भाग-१	कांतिविजयजी	सं./हि	जिनदत्तसूरि ज्ञानभंडार	142
113	जैन प्रतिमा लेख संग्रह	दौलतसिंह लोढा	सं./हि	अरविन्द धामणिया	336
114	राधनपुर प्रतिमा लेख संदोह	विशालविजयजी	सं./गु	यशोविजयजी ग्रंथमाळा	364
115	प्राचिन लेख संग्रह-१	विजयधर्मसूरिजी	सं./गु	यशोविजयजी ग्रंथमाळा	218
116	बीकानेर जैन लेख संग्रह	अगरचंद नाहटा	सं./हि	नाहटा ब्रधर्स	656
117	प्राचीन जैन लेख संग्रह भाग-१	जिनविजयजी	सं./हि	जैन आत्मानंद सभा	122
118	प्राचिन जैन लेख संग्रह भाग-२	जिनविजयजी	सं./हि	जैन आत्मानंद सभा	764
119	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-१	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	404
120	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-२	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	404
121	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-३	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	540
122	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-१	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	274
123	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-४	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	414
124	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-५	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	400
125	कलेक्शन ऑफ प्राकृत एन्ड संस्कृत इन्स्क्रीप्शन्स	पी. पीटरसन	अं.	भावनगर आर्चीऑलॉजीकल डिपा.	320
126	विजयदेव माहात्म्यम्	जिनविजयजी	सं.	जैन सत्य संशोधक	148

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com

शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६८ (ई. 2012) सेट नं.-४

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। ***यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।***

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	भाषा	प्रकाशक	पृष्ठ
127	महाप्रभाविक नवस्मरण	साराभाई नवाब	गुज.	साराभाई नवाब	754
128	जैन चित्र कल्पलता	साराभाई नवाब	गुज.	साराभाई नवाब	84
129	जैन धर्मनो प्राचीन इतिहास भाग-२	हीरालाल हंसराज	गुज.	हीरालाल हंसराज	194
130	ओपरेशन इन सर्च ओफ सं. मेन्यु. भाग-६	पी. पीटरसन	अंग्रेजी	एशियाटीक सोसायटी	171
131	जैन गणित विचार	कुंवरजी आणंदजी	गुज.	जैन धर्म प्रसारक सभा	90
132	दैवज्ञ कामधेनु (प्राचिन ज्योतिष ग्रंथ)	शील खंड	सं.	ब्रज. बी. दास बनारस	310
133	करण प्रकाशः	ब्रह्मदेव	सं./अं.	सुधाकर द्विवेदि	276
134	न्यायविशारद महो. यशोविजयजी स्वहस्तलिखित कृति संग्रह	यशोदेवसूरिजी	गुज.	यशोभारती प्रकाशन	69
135	भौगोलिक कोश-१	डाह्याभाई पीतांबरदास	गुज.	गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी	100
136	भौगोलिक कोश-२	डाह्याभाई पीतांबरदास	गुज.	गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी	136
137	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-१ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	266
138	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-१ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	244
139	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-२ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	274
140	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-२ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	168
141	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-३ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	282
142	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-३ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	182
143	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-१	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	384
144	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-२	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	376
145	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-३	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	387
146	भाषवति	शतानंद मारछता	सं./हि	एच.बी. गुप्ता एन्ड सन्स बनारस	174
147	जैन सिद्धांत कौमुदी (अर्धमागधी व्याकरण)	रत्नचंद्र स्वामी	प्रा./सं.	भैरोदान सेठीया	320
148	मंत्रराज गुणकल्प महोदधि	जयदयाल शर्मा	हिन्दी	जयदयाल शर्मा	286
149	फक्कीका रत्नमंजूषा-१, २	कनकलाल ठाकूर	सं.	हरिकृष्ण निबंध	272
150	अनुभूत सिद्ध विशायंत्र (छ कल्प संग्रह)	मेघविजयजी	सं./गुज	महावीर ग्रंथमाळा	142
151	सारावलि	कल्याण वर्धन	सं.	पांडुरंग जीवाजी	260
152	ज्योतिष सिद्धांत संग्रह	विश्वेश्वरप्रसाद द्विवेदी	सं.	ब्रीजभूषणदास बनारस	232
153	ज्ञान प्रदीपिका तथा सामुद्रिक शास्त्रम्	रामव्यास पान्डेय	सं.	जैन सिद्धांत भवन	160
	नूतन संकलन				
१	आ. चंद्रसागरसूरिजी ज्ञानभंडार – उज्जैन	हस्तप्रत सूचीपत्र	हिन्दी	श्री आशापुरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार	
२	श्री गुजराती श्वे.मू. जैन संघ-हस्तप्रत भंडार – कलकत्ता	हस्तप्रत सूचीपत्र	हिन्दी	श्री आशापुरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार	

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com

शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६९ (ई. 2013) सेट नं.-५

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	विषय	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
154	उणादि सूत्रो ओफ हेमचंद्राचार्य	पू. हेमचंद्राचार्य	व्याकरण	संस्कृत	जोहन क्रिष्टे	304
155	उणादि गण विवृत्ति	पू. हेमचंद्राचार्य	व्याकरण	संस्कृत	पू. मनोहरविजयजी	122
156	प्राकृत प्रकाश-सटीक	भामाह	व्याकरण	प्राकृत	जय कृष्णदास गुप्ता	208
157	द्रव्य परिक्षा और धातु उत्पत्ति	ठक्कर फेरू	धातु	संस्कृत /हिन्दी	भंवरलाल नाहटा	70
158	आरम्भसिध्धि – सटीक	पू. उदयप्रभदेवसूरिजी	ज्योतीष	संस्कृत	पू. जितेन्द्रविजयजी	310
159	खंडहरो का वैभव	पू. कान्तीसागरजी	शील्प	हिन्दी	भारतीय ज्ञानपीठ	462
160	बालभारत	पू. अमरचंद्रसूरिजी	काव्य	संस्कृत	पं. शीवदत्त	512
161	गिरनार माहात्म्य	दौलतचंद परषोत्तमदास	तीर्थ	संस्कृत /गुजराती	जैन पत्र	264
162	गिरनार गल्प	पू. ललितविजयजी	तीर्थ	संस्कृत/गुजराती	हंसकविजय फ्री लायब्रेरी	144
163	प्रश्नोत्तर सार्ध शतक	पू. क्षमाकल्याणविजयजी	प्रकरण	हिन्दी	साध्वीजी विचक्षणाश्रीजी	256
164	भारतिय संपादन शास्त्र	मूलराज जैन	साहित्य	हिन्दी	जैन विद्याभवन, लाहोर	75
165	विभक्त्यर्थ निर्णय	गिरिधर झा	न्याय	संस्कृत	चौखम्बा प्रकाशन	488
166	व्योम वती-१	शिवाचार्य	न्याय	संस्कृत	संपूर्णानंद संस्कृत युनिवर्सिटी	226
167	व्योम वती-२	शिवाचार्य	न्याय	संस्कृत	संपूर्णानंद संस्कृत विद्यालय	365
168	जैन न्यायखंड खाद्यम्	उपा. यशोविजयजी	न्याय	संस्कृत /हिन्दी	बद्रीनाथ शुक्ल	190
169	हरितकाव्यादि निघंटू	भाव मिश्र	आयुर्वेद	संस्कृत /हिन्दी	शीव शर्मा	480
170	योग चिंतामणि-सटीक	पू. हर्षकीर्तिसूरिजी	आयुर्वेद	संस्कृत /हिन्दी	लक्ष्मी वेंकटेश प्रेस	352
171	वसंतराज शकुनम्	पू. भानुचन्द्र गणि टीका	ज्योतिष	संस्कृत	खेमराज कृष्णदास	596
172	महाविद्या विडंबना	पू. भुवनसुन्दरसूरि टीका	ज्योतिष	संस्कृत	सेन्ट्रल लायब्रेरी	250
173	ज्योतिर्निबन्ध	शिवराज	ज्योतिष	संस्कृत	आनंद आश्रम	391
174	मेघमाला विचार	पू. विजयप्रभसूरिजी	ज्योतिष	संस्कृत/गुजराती	मेघजी हीरजी	114
175	मुहूर्त चिंतामणि-सटीक	रामकृत प्रमिताक्षय टीका	ज्योतिष	संस्कृत	अनूप मिश्र	238
176	मानसोल्लास सटीक-१	भुलाकमल्ल सोमेश्वर	ज्योतिष	संस्कृत	ओरिएन्ट इन्स्टीट्यूट	166
177	मानसोल्लास सटीक-२	भुलाकमल्ल सोमेश्वर	ज्योतिष	संस्कृत	ओरिएन्ट इन्स्टीट्यूट	368
178	ज्योतिष सार प्राकृत	भगवानदास जैन	ज्योतिष	प्राकृत/हिन्दी	भगवानदास जैन	88
179	मुहूर्त संग्रह	अंबालाल शर्मा	ज्योतिष	गुजराती	शास्त्री जगन्नाथ परशुराम द्विवेदी	356
180	हिन्दु एस्ट्रोलोजी	पिताम्बरदास त्रीभोवनदास	ज्योतिष	गुजराती	पिताम्बरदास टी. महेता	168

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com
शाह विमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-380005.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०७१ (ई. 2015) सेट नं.-६

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची।
यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	विषय	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
181	काव्यप्रकाश भाग-१	पूज्य मम्मटाचार्य कृत		संस्कृत	पूज्य जिनविजयजी	364
182	काव्यप्रकाश भाग-२	पूज्य मम्मटाचार्य कृत		संस्कृत	पूज्य जिनविजयजी	222
183	काव्यप्रकाश उल्लास-२ अने ३	उपा. यशोविजयजी		संस्कृत	यशोभारति जैन प्रकाशन समिति	330
184	नृत्यरत्न कोश भाग-१	श्री कुम्भकर्ण नृपति		संस्कृत	श्री रसीकलाल छोटालाल	156
185	नृत्यरत्न कोश भाग-२	श्री कुम्भकर्ण नृपति		संस्कृत	श्री रसीकलाल छोटालाल	248
186	नृत्याध्याय	श्री अशोकमलजी		संस्कृत /हिन्दी	श्री वाचस्पति गैरोभा	504
187	संगीरत्नाकर भाग-१ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	448
188	संगीरत्नाकर भाग-२ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	444
189	संगीरत्नाकर भाग-३ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	616
190	संगीरत्नाकर भाग-४ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	632
191	संगीत मकरन्द	नारद		संस्कृत	श्री मंगेश रामकृष्ण तेलंग	84
192	संगीत नृत्य अने नाट्य संबंधी जैन ग्रंथो	श्री हीरालाल कापडीया		गुजराती	मुक्ति-कमल-जैन मोहन ग्रंथमाला	244
193	न्यायबिंदु सटीक	पूज्य धर्मोतराचार्य		संस्कृत	श्री चंद्रशेखर शास्त्री	220
194	शीघ्रबोध भाग-१ थी ५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	422
195	शीघ्रबोध भाग-६ थी १०	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	304
196	शीघ्रबोध भाग-११ थी १५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	446
197	शीघ्रबोध भाग-१६ थी २०	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	414
198	शीघ्रबोध भाग-२१ थी २५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	409
199	अध्यात्मसार सटीक	पूज्य गंभीरविजयजी		संस्कृत/गुजराती	नरोत्तमदास भानजी	476
200	छन्दोनुशासन	एच. डी. वेलनकर		संस्कृत	सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ	444
200	मग्गानुसारिया	श्री डी. एस शाह		संस्कृत/गुजराती	ज्ञातपुत्र भगवान महावीर ट्रस्ट	146

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543. E-mail : ahoshrut.bs@gmail.com
शाह विमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-380005.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०७२ (ई. 201६) सेट नं.-७

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की डिजिटाइझेशन द्वारा डीवीडी बनाई उसकी सूची।

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टिकाकार	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
202	आचारांग सूत्र भाग-१ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	285
203	आचारांग सूत्र भाग-२ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	280
204	आचारांग सूत्र भाग-३ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	315
205	आचारांग सूत्र भाग-४ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	307
206	आचारांग सूत्र भाग-५ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	361
207	सुयगडांग सूत्र भाग-१ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	301
208	सुयगडांग सूत्र भाग-२ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	263
209	सुयगडांग सूत्र भाग-३ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	395
210	सुयगडांग सूत्र भाग-४ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	386
211	सुयगडांग सूत्र भाग-५ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	351
212	रायपसेणिय सूत्र	श्री मलयगिरि	गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	260
213	प्राचीन तीर्थमाळा भाग-१	आ.श्री धर्मसूरि	सं./गुजराती	श्री यशोविजयजी ग्रंथमाळा	272
214	धातु पारायणम्	श्री हेमचंद्राचार्य	संस्कृत	आ. श्री मुनिचंद्रसूरि	530
215	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-१	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	648
216	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-२	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	510
217	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-३	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	560
218	तार्किक रक्षा सार संग्रह	आ. श्री वरदराज	संस्कृत	राजकीय संस्कृत पुस्तकालय	427
219	वादार्थ संग्रह भाग-१ (स्फोट तत्त्व निरूपण, स्फोट चन्द्रिका, प्रतिपादिक संज्ञावाद, वाक्यवाद, वाक्यदीपिका)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	88
220	वादार्थ संग्रह भाग-२ (षट्कारक विवेचन, कारक वादार्थ, समासवादार्थ, वकारवादार्थ)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	78
221	वादार्थ संग्रह भाग-३ (वादसुधाकर, लघुविभक्त्यर्थ निर्णय, शाब्दबोधप्रकाशिका)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	112
222	वादार्थ संग्रह भाग-४ (आख्यात शक्तिवाद छः टीका)	रघुनाथ शिरोमणि	संस्कृत	महादेव शर्मा	228

श्रीरत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला पुष्प नं. ४६.

श्रीरत्नप्रभसूरीश्वरपादपद्मेभ्यो नमः

शीघ्रबोध भाग ११ वाँ.

लेखक—

मुनिश्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज.

द्रव्यसहायक—

शाह हजारीमलजी कुँवरलालजी पारख.

मु. लोहावट (मारवाड़)

प्रकाशक—

श्रीरत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला.

मु. फलोदी (मारवाड़)

वीर सं. २४५९ ओसवाल सं. २३८९ वि. सं. १९८९.

द्वितीयावृति

श्रीरत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला पुष्प नं. ४६.

श्रीरत्नप्रभसूरीश्वरपादपद्मेभ्यो नमः

शीघ्रबोध भाग ११ वाँ.

लेखक,

मुनिश्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज.

द्रव्यसहायक,

शाह हजारीमलजी कँवरलालजी पारख.

मु. लोहावट (मारवाड़)

प्रकाशक,

श्रीरत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला.

मु. फलोदी (मारवाड़)

वीर सं. २४५९ वि. सं. १९८९.

ओसवाल सं. २३८९

द्वितीयावृति मूल्य चार आना.

मुद्रक:-
शेठ देवचंद दामजी
आनंद प्रेस-भावनगर.

प्राचीन ऐतिहासिक सस्ती पुस्तकें.

जैन जाति महोदय—प्रथम खण्ड (सचित्र) जैन धर्म व जैन जातियोंका सच्चा इतिहास बडे ही सोधखोजसे लिखा गया हैं पृष्ट संख्या १०५० चित्र ४३ रेशमी पकी जिल्द होनेपर भी किंमत केवल रु. ४)

समरसिंह—यह एक ऐतिहासिक घटनाएसे परिपूर्ण तीलंग देशका मालिक और श्री शत्रुंजय तीर्थका पंद्रहवा उद्धारक जैन शासनमें यशस्वी उज्वल रत्न वीरवर समरसिंह के साथ ढाईहजार वर्षोंकी ऐतिहासिक बातोंका खजाना सचित्र ग्रन्थ हैं. पृष्ट ३०० चित्र १० किंमत १।) सजिल्द १॥=

पुस्तक मिलनेका पत्ता-
श्रीरत्नप्रभाकर ज्ञान
पुष्पमाला.
मु. फलोदी (मारवाड)

श्री रत्नप्रभसूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः

शीघ्रबोध भाग ११ वां

थोकडा नं० १३३

श्री पन्नवणा सूत्र पद २ स्थानपद

चौवीस दंडकके जीव कौनसे स्थानमें, कितने क्षेत्रमें और कहांसे आके उत्पन्न होते हैं व समुद्घात कितने क्षेत्रमें करते हैं यह सब इस थोकड़ेद्वारा समजाये जावेंगे ।

(१) बादर पृथ्वीकाय के पर्याप्ता जीवों के स्थान कहां है ? सातों नारक के पृथ्वीपिंड और ईसीपभारापृथ्वी, अधोलोकमें पातालकलशा, भुवनपतिदेवके भवन (रत्नमय हैं), नारकीके नरकावास कुंभी आदि (पृथ्वीमय है) उर्ध्वलोकमें विमान, विमानका पृथ्वीपिंड और देवताओंके शयनासनादि जितने रत्नोंके पदार्थ हैं वे सब पृथ्वीकायके उत्पन्न होनेका स्थान हैं. तिरछेलोकमें पर्वत, कूट, शिखर, प्रासाद, विजय, वक्खारापर्वत, भरतादि क्षेत्र और वेदिकादि साश्वत पदार्थमें पृथ्वीकायके जीव उत्पन्न होते हैं जिनके तीन भेद हैं ।

(१) उत्पन्न—लोकके असंख्यातमें भागसे आके उत्पन्न होते हैं ।

(२) स्थान—उत्पन्न होनेका स्थान भी लोकके असंख्यात भाग हैं ।

(३) समुद्घात भी लोकके असंख्यातवे भाग है ।

(२) बादर पृथ्वीकायके अपर्याप्ताके स्थान कहां है ? जहां बादरपृथ्वीकायके पर्याप्ताका स्थान हैं वहीं बादरपृथ्वीकायके अपर्याप्ताका भी स्थान हैं परन्तु उत्पात, समुद्घात सब लोकमें हैं। क्योंकी सूक्ष्मजीव सर्वलोक व्यापी हैं और वे जीव मरके पृथ्वीकायमें आ शकते हैं । इसलिये अपर्याप्ता अवस्थामें सर्व लोक कहा पर स्थान लोकके असंख्यातमें भाग है ।

(३) सूक्ष्मपृथ्वीकायके पर्याप्ता अपर्याप्ता सब एक ही प्रकारके हैं । कारण ये दोनों प्रकारके जीव लोकव्यापी हैं । इसलिये इनका, उत्पात, स्थान, और समुद्घात सर्वलोकमें हैं ।

(४) बादरअप्पकायके स्थान कहां हैं ? सातों घणोदधि, सातों घणोदधिके वलीया, अधोलोकके पातालकलमें, भुवनपतिके भवनोमें, भवनके विस्तारमें, उर्ध्वलोक वैमानमें, वैमानके विस्तारमें, तिरछालोकमें तालाव, कूवा, नदी, द्रह, वापी, पुष्करणी आदि द्वीप, समुद्र जहां जलके स्थान है वहां बादरअप्पकाय उत्पन्न होती हैं। उत्पात, स्थान और समूद्घात तीनों, लोकके असं० भाग हैं ।

(५) बादर अप्पकायके अपर्याप्ता का स्थान कहां है ? जहां पर बादरअप्पकाय के पर्याप्ता हैं वहां अपर्याप्ता भी हैं। उत्पात, समुद्घात सर्वलोकमें हैं और स्थान लोकके असं० भागमें है। पृथ्वीकायवत् ।

(६) सूक्ष्मअप्पकाय पर्याप्ताऽपर्याप्ता तीनों सर्व लोकमें हैं।

(७) बादरतेउकाय पर्याप्ताके स्थान कहां है ?

अढ़ाईद्वीप और दो समुद्रोमें तथा निर्व्याघातापेक्षा पंद्रह कर्मभूमिमें और व्याघातापेक्षा पांचो महाविदेहमें बादरतेउकायके स्थान हैं, उत्पात, समुद्घात और स्थान तीनों, लोकके असंख्यातमें भाग हैं.

(८) बादरतेउकाय के अपर्याप्ताका स्थान कहां है ? जहां पर बादरतेउकायके पर्याप्ताका स्थान है वहीं अपर्याप्ताका भी स्थान है। उत्पात लोकके असंख्यातमें भाग " दोसु उड्ढ कवाडेसु तिरिय लोयंतट्ठेव " अर्थात् उर्ध्व १८०० योजन, तिरछा ४५ लक्ष योजनका कपाट तिरछालोकके अन्त तक याने स्वयंभूरमण समुद्रके बाहरकी वेदिका तकके जीव आके मनुष्यलोकके तेउकायपने उत्पन्न होते हैं। समुद्घात सर्व लोकमें स्थान लोकके असंख्यातमें भाग।

(९) सूक्ष्मतेउकायके तीनों बोल सर्व लोकमें पृथ्वीकायवत्.

(१०) बादरवायुकाय पर्याप्ताके स्थान कहाँ हैं ? सात घनवायु, सात तनवायु, घनवायु तनवायुके वलीयोमें अधोलोकके, पातालकलशा, भवनपतिके भवनोंमें, भवनके विस्तारमें, भवनके छिद्रमें, नरक और नरकके विस्तारमें। उर्ध्वलोक वैमानमें, वैमानके विस्तारमें, वैमानके छिद्रमें। तिरछालोक—पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण दिशा, विदिशामें, सर्व लोककाशके छिद्रमें यानि सर्व लोककी पोलारमें वायुकायका स्थान हैं। उत्पन्न और समुद्घात लोकके घने असंख्यात भागमें हैं।

(११) बादरवायुकायके अपर्याप्ताका स्थान कहां है ? जहां बादरवायुकायका पर्याप्ता है वहां अपर्याप्ता भी हैं। उत्पात समुद्घात सर्व लोकमें, स्थान लोकके घणे असंख्यातमें भाग है।

(१२) सूक्ष्मवायुकाय के पर्याप्ता अपर्याप्ता पृथ्वीकायवत् ।

(१३) बादरवनस्पतिकाय के पर्याप्ता स्थान कहां है ? जहां पर जल है उन सब स्थानोंमें वनस्पतिकाय हैं। जलमें वनस्पतिकायकी नियमा हैं। उत्पात; समुद्घात सर्व लोकमें, स्थान लोकके असंख्यातमें भाग है।

(१४) बादरवनस्पतिकाय के अपर्याप्ताका स्थान कहां हैं ? जहां पर्याप्ता वहां अपर्याप्ता भी है। उत्पात, समुद्घात, सर्व लोकमें, स्थान लोकके असंख्यातमें भाग हैं।

(१५) सूक्ष्मवनस्पतिकाय के पर्याप्ता अपर्याप्ता सर्व लोकव्यापी हैं। यावत् पृथ्वीकायवत् समझना।

(१६) बेरिन्द्री, तेरिन्द्री, चौरिन्द्री और तीर्यंच पंचेन्द्री के पर्याप्ता अपर्याप्ताका स्थान जहां जल हैं वहां इनकी नियमा हैं परन्तु उर्ध्वलोक मेरुपर्वतकी वापी तक और अधोलोक सलीलावतिविजय तक बेरिन्द्री आदि जीवोंके स्थान है। उर्ध्वलोकमें देवलोकोंकी वापियो आदिमें बेरिन्दी आदि जीव नहीं हैं।

(१७) मनुष्य पर्याप्ता अपर्याप्ताके स्थान कहां है ? अढाईद्वीपमें पन्द्रह कर्मभूमि, तीस अकर्मभूमि, छपन्न अन्तरद्वीपोंमें मनुष्य उत्पन्न होते हैं। उत्पात, समुद्घात और स्थान लोकके असंख्यातमें भाग हैं।

(१८) नारकी पर्याप्ता अपर्याप्ताके स्थान कहां है ? सातों नरकके ८४ लक्ष नरकावासमें नारकी उत्पन्न होते हैं। उत्पात, समुद्घात, स्थान, लोकके असंख्यातमें भाग हैं।

(१९) देवताओं के पर्याप्ता अपर्याप्ताका स्थान कहां

है? भुवनपतिदेवता=अधोलोक के रत्नप्रभानारकी के आन्तरोंमें ७७२०००००० भवनोंमें। वाणव्यंतरोंके असंख्यात नगर तिरछे-लोकमें हैं। और ज्योतिषीयोंके भी असंख्याते विमान तिरछा लोकमें हैं वे उनके स्थान हैं। वैमानिक देवता उर्ध्वलोकमें उत्पन्न होते हैं, उनके ८४९७०२३ विमान हैं। इन्हीं स्थानोमें देवता उत्पन्न होते हैं। उत्पात, समुद्घात, स्थान, लोकके असंख्यातमें भाग हैं। देवता नारकीके स्थान और परिवारका वर्णन सविस्तार देखो भाग १३ वां

(२०) **सिद्धभगवान**का स्थान कहां हैं? चौदह राज-लोकके अग्रभाग अर्थात् सिद्धशिलाके ऊपर एक योजनके २४ वें भाग यनि ३३३ धनुष्य ३२ अंगुल प्रमाण क्षेत्र हैं। वहां शाश्वत अबाधित सुखमें सिद्ध भगवान विराजते हैं। इति।

यंत्र

मार्गणा	उत्पन्न	समुद्घात	संस्थान
पांच सूक्ष्म स्थावर प. अ.	सर्वलोक	सर्वलोक	सर्वलोक
बादर पृथ्वी पाणी वना. अप.	सर्वलोक	सर्वलोक	लो. अ. भा.
,, तेउकाय अपर्याप्ता	तीर्च्छालोक	सर्वलोक	मनुष्यलोक
,, वायुकायके ,,	सर्वलोक	सर्वलोक	लो. अ० भा.
,, तेउकायके पर्याप्ता	लोक० असं.	लोक. असं.	मनु. लोकमें
,, वायुकायके ,,	लोकके घणा असं. भाग	लोकके घणा असं० भाग	लोकके घणा असं. भाग.
,, पृथ्वी पाणी पर्या०	लोक० असं	लोक. असं	लोक. असं
,, वनस्पति पर्या०	सर्वलोकमें	सर्वलोकमे	लोक. असं.
शेष १९ दंडकके जीवोंके	लोक. असं.	लोक. असं.	लोक. असं.

सेवंभंते सेवंभंते तमेवसच्चम्।

थोकड़ा नं० १३४

श्री पन्नवणा सूत्र पद ३ । इन्द्रियों की अल्पाधिक।

(१) (१) सबसे स्तोक पंचेन्द्रिय (२) चौरिन्द्रिय विशेषाधिक (३) तेरिन्द्रिय वि० (४) बेरिन्द्रिय वि० (५) अनेन्द्रिय अनंतगुणा (६) एकेन्द्रिय अनंत गु० (७) सइन्द्रिय वि० ।

(२) (१) सबसे स्तोक पंचेन्द्रिय अपर्याप्ता (२) चौरिन्द्रिय अप० वि० (३) तेरिन्द्रिय अप० वि० (४) बेरिन्द्रिय अप० वि० (५) एकेन्द्रिय अप० अनन्त गु० (६) सइन्द्रिय अप० वि०

(३) (१) चौरिन्द्रिय पर्याप्ता सबसे स्तोक (२) पंचेन्द्रिय प० वि० (४) तेरिन्द्रिय पर्या० वि० (४) बेरिन्द्रिय पर्या० वि० (५) एकेन्द्रिय पर्या० अनं० गु० (६) सइन्द्रि पर्या० वि०

(४) (१) सइन्द्रियअपर्याप्ता सबसे स्तोक (२) सइन्द्रिय पर्याप्ता संख्यात् गु०

(५) (१) बेरिन्द्रिय पर्याप्ता सबसे स्तोक (२) बेरिन्द्रिय अपर्याप्ता असं० गु० एवं तेरिन्द्रिय, चौरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय को भी समझ लेना ।

(६) (१) चौरिन्द्रिय पर्या० स्तोक (२) पंचेन्द्रियपर्या० वि० (३) बेरिन्द्रिय पर्या० वि० (४) तेरिन्द्रि पर्या० वि० (५) पंचेन्द्रि अप० असं० गु० (६) चौरिन्द्रि अप० वि० (७) तेरिन्द्रि अप० वि० (८) बेरिन्द्रि अप० वि० (९) एकेन्द्रि अप० अनं० गु० (१०) सइन्द्रि अप० वि० (११) एकेन्द्रि पर्या० सं० गु० (१२) सइन्द्रि पर्या० वि० (१३) सइन्द्रिय वि०

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ।

'थोकडा नं० १३५

श्री पन्नवणा सूत्र पद ३, छे कायकी अल्प०

(१) (१) त्रसकाय सबसे स्तोक (२) तेउकाय असं० गु० (३) पृथ्वीकाय वि० (४) अप्पकाय वि० (५) वायुकाय वि० (६) अकाय अनं० गु० (७) वनस्पति० अनं० गु० (८) सकाय वि०

(२) (१) त्रसकायअपर्याप्ता सबसेस्तोक (२) तेउकाय अप० असं० गु० (३) पृथ्वीकाय अप० वि० (४) अप्पकाय अप० वि० (५) वायुकाय अप० वि० (६) वनस्पतिकाय अप० अनं० गुणा (७) सकाय अप० वि०

(३) (१) त्रसकाय पर्याप्ता सबसे स्तोक (२) तेउकाय पर्या० असं० (३) पृथ्वीकाय पर्या० वि० (४) अप्पकाय पर्या० वि० (५) वायुकाय पर्या० वि० (६) वनस्पतिकाय पर्या० अनं० (७) सकाय पर्या० वि०

(४) (१) सकाय अपर्याप्ता सबसे स्तोक (२) सकाय पर्याप्ता संख्यातगुणा एवं पृथ्वी, अप्प, तेऊ, वाऊ, वनस्पति भी कहना।

(५) (१) सबसे स्तोक त्रसकाय पर्याप्ता (२) त्रसकाय अपर्याप्ता असं० गु०

(६) (१) सबसेस्तोक त्रसकाय पर्याप्ता (२) त्रसकाय अपर्या० असं० गु० (३) तेऊकाय अपर्या० असं० गु० (४) पृथ्वीकाय अपर्या० वि० (५) अपकाय अपर्या० वि० (६) वायुकाय अपर्या० वि० (७) तेऊकाय पर्या० सं० गु० (८) पृथ्वी-

काय पर्याप्ता वि० (९) अप्पकाय पर्या० वि० (१०) वायुकाय पर्याय० वि० (११) वनस्पतिकाय अपर्या० अनं० गु० (१२) त्रसकाय अपर्या० वि० (१३) वनस्पतिकाय पर्या० सं० गु० (१४) त्रसकाय पर्या० वि० (१५) त्रसकाय वि० ।

(७) (१) सबसेस्तोक सूक्ष्म तेउकाय (२) सूक्ष्म पृथ्वीकाय वि० (३) सूक्ष्म अप्पकाय वि० (४) सूक्ष्म वायुकाय वि० (५) सूक्ष्म निगोद असं० गु० (६) सूक्ष्म वनस्पतिकाय अनं० (७) सूक्ष्म वि०

(८) (१) सबसे स्तोक सूक्ष्म तेऊकाय अपर्या० (२) सूक्ष्म पृथ्वीकाय अपर्या० वि० (३) सूक्ष्म अपकाय अपर्या० वि० (४) सूक्ष्म वायुकाय अपर्या० वि० (५) सूक्ष्म निगोद अपर्या० असं गु० (६) सूक्ष्म वनस्पति अपर्या० अनं० गु० (७) सूक्ष्म अपर्याप्त वि०

[१४] (१) सबसे स्तोक सूक्ष्मतेऊकायका पर्या० (२) सूक्ष्मपृथ्वीकाय पर्या० वि० (३) सूक्ष्मअप्पकाय पर्या० वि० (४) सूक्ष्मवायुकाय पर्या० वि० (५) सूक्ष्मनिगोद पर्या० असं० गु० (६) सूक्ष्मवनस्पतिकाय पर्या० अनं० गु० (७) समुचय सूक्ष्म पर्या० वि०

[१५] (१) सबसे स्तोक सूक्ष्म अपर्याप्ता (२) सूक्ष्म पर्याप्ता सं० गु० एवं पृथ्वी, अप्प, तेऊ, वायु, वनस्पति और निगोद भी कहना ।

[१६] (१) सबसे स्तोक, सूक्ष्मतेऊकाय अपर्याप्ता (२) सूक्ष्म पृथ्वीकाय अपर्या० वि० (३) सूक्ष्मअप्पकाय अ-

पर्या० वि० (४) सूक्ष्मवायुकाय अपर्या० वि० (५) सूक्ष्मतेऊकाय पर्या० सं० गु० (६) सूक्ष्मपृथ्वीकाय पर्या० वि० (७) सूक्ष्मअप्पकाय पर्या० वि० (८) सूक्ष्मवायुकाय पर्या० वि० (६) सूक्ष्मनिगोद अपर्या० असं० गु० (१०) सूक्ष्मनिगोद पर्या० सं० गु० (११) सूक्ष्मवनस्पतिकाय अपर्या० अनं० गु० (१२) सूक्ष्म समुचय अपर्या० वि० (१३) सूक्ष्मवनस्पतिकाय पर्या० सं० गु० (१४) समुचयसूक्ष्म पर्या० वि० (१५) समुचयसूक्ष्म वि०

[१७] (१) सबसे स्तोक, बादर त्रसकाय (२) बादरतेऊकाय असं० गु० (३) बादरप्रत्येक० शरीर वनस्पतिकाय असं० गु० (४) बादर निगोद असं० गु० (५) बादर पृथ्वीकाय असं० गु० (६) बादर अप्पकाय असं० गु० (७) बादर वायुकाय असं० गु० (८) बादर वनस्पतिकाय अनं० गु० (६) बादर समुचय वि०

[१८] (१) सबसे स्तोक, बादरत्रसकाय अपर्या० (२) बादर तेऊकाय अपर्या० असं० गु० (३) बादर प्रत्येक शरीर वनस्पतिकाय अपर्या० असं० गु० (४) बादरनिगोद अपर्या० असं० (५) बादर पृथ्वीकाय अपर्या० असं० गु० (६) बादरअप्पकाय अपर्या० असं० गु० (७) बादर वायुकाय अपर्या० असं० गु० (८) बादर वनस्पतिकाय अपर्या० अनं० गु० (९) बादर समुचय अपर्या० वि०

[१६] (१) सबसे स्तोक, बादरतेऊकाय पर्या० (२) बादर त्रसकाय पर्या० असं० गु० (३) बादर प्रत्येक शरीर

वनस्पतिकाय पर्या० असं० गु० (४) बादर निगोद पर्या० असं० गु० (५) बादर पृथ्वीकाय पर्या० असं० गु० (६) बादर अप्पकाय पर्या० असं० गु० (७) बादर वायुकाय पर्या० असं० गु० (८) बादर वनस्पतिकाय पर्या० अनं० गु० (९) बादर पर्याप्ता वि०

[२०] (१) सबसे स्तोक, बादरपर्याप्ता (२) बादर अ-पर्याप्ता असं० गु० एवं पृथ्वी, अप्प, तेऊ, वाऊ, प्रत्येक शरीर वनस्पति और बादर निगोद भी कहना।

[२१] (१) सबसे स्तोक बादर त्रसकाय पर्याप्ता (२) बादर त्रसकाय अपर्या० असं० गु०

[२२] (१) सबसे स्तोक बादर तेऊकाय पर्या० (२) बादर त्रसकाय पर्या० असं० गु० (३) बादर त्रसकाय अपर्या असं० गु० (४) बादर प्रत्येक शरीर वनस्पतिकाय पर्या० असं० गु० (५) बादर निगोद पर्या० असं० गु० (६) बादर पृथ्वीकाय पर्या० असं० गु० (७) बादर अप्पकाय पर्या० असं० गु० (८) बादर वायुकाय पर्या० असं० (९) बादर तेऊकाय अपर्या० असं० गु० (१०) बादर प्रत्येक शरीर वन० काय अपर्या० असं० गु० (११) बादर निगोद अपर्या० असं० गु० (१२) बादर पृथ्वीकाय अपर्या० असं० गु० (१३) बादर अप्पकाय अपर्या० असं० गु० (१४) बादर वायुकाय अपर्या० असं० गु० (१५) बादर वनस्पतिकाय पर्या० अनं० गु० (१६) बादर पर्या० वि० (१७) बादर वन-

स्पतिकाय० अपर्या० असं० गु० (१८) बादर अपर्या वि० (१९) समुचय बादर वि०

[२३] (१) सबसे स्तोक बादर त्रसकाय (२) बादर तेऊकाय असं० गु० (३) बादर प्रत्येक शरीर वन० काय असं० गु० (४) बादर निगोद असं० गु० (५) बादर पृथ्वीकाय असं० गु० (६) बादर अप्पकाय असं० गु० (७) बादर वायु-काय असं० गु० (८) सूक्ष्म तेऊकाय असं० गु० (९) सूक्ष्म पृथ्वीकाय वि० (१०) सूक्ष्म अप्पकाय वि० (११) सूक्ष्म वायुकाय वि० (१२) सूक्ष्मनिगोद असं० गु० (१३) बादर वन० काय अनं० गु० (१४) बादर वि० (१५) सूक्ष्म वन० काय असं० गु० (१६) सूक्ष्म वि०

[२४] (१) बादर त्रसकाय अपर्या० सबसे स्तोक (२) बादर तेऊकाय अपर्या० असं० गु० (३) बादर प्रत्ये० वन० अपर्या० असं० गु०० (४) बादर निगोद अपर्या० असं० गु० (५) बादर पृथ्वी० अपर्या० असं० गु० (६) बादर अप्प० अपर्या० असं० गु० (७) बादर वायु० अपर्या० असं० गु० (८) सूक्ष्म तेऊ० अपर्या० असं० गु० (९) सूक्ष्म पृथ्वी० अपर्या० वि० (१०) सूक्ष्म अप्पकाय अपर्या० वि० (११) सूक्ष्म वायु० अपर्या० वि० (१२) सूक्ष्म निगोद अपर्या० असं० गु० (१३) बादर वन० अपर्या० अनं० गु० (१४) बादर अ-पर्या० वि० (१५) सूक्ष्म वन० अपर्या० अनं० गु० (१६) सूक्ष्म अपर्या० वि०

[२५] (१) सबसे स्तोक बादर तेऊ० पर्या० (२) बादर

त्रसकाय पर्या० असं० गु० (३) बादर प्रत्ये० वन० पर्या० असं० गु० (४) बादर निगोद पर्या० असं० गु० (५) बादर पृथ्वी० पर्या० असं० गु० (६) बादर अप्प० पर्या० असं० गु० (७) बादर वायु० पर्या० असं० गु० (८) सूक्ष्म तेऊ० पर्या० असं० गु० (९) सूक्ष्म पृथ्वी० पर्या० विशे० (१०) सूक्ष्म० अप्प० पर्या० विशेषः (११) सूक्ष्मवायु० विशेषः (१२) सूक्ष्म निगो० पर्या० असं० गु० (१३) बादर वन० पर्या० अनं० गु० (१४) बादर पर्या० वि० (१५) सूक्ष्म वन० पर्या० असं० गु० (१६) सूक्ष्मपर्या० वि०

[२६] (१) सबसे स्तोक बादर पर्या० (२) बादर अपर्या० असं० गु० (३) सूक्ष्म अपर्या० असं० गु० (४) सूक्ष्म पर्या० सं० गु० एवं पृथ्वी० अप्प० तेऊ० वायु० वन० और निगोद भी कहना।

[२७] सबसे स्तोक बादर त्रसकाय पर्या० (२) बादर त्रसकाय अपर्या० असं० गु०

[२८] (१) सबसे स्तोक बादर तेऊ० पर्या० (२) बादर त्रसकाय पर्या० असं० गु० (३) बादर त्रसकाय अपर्या० असं० गु० (४) बादर प्रत्ये० वन० पर्या० असं० गु० (५) बादर निगोद पर्या० असं० गु० (६) बादर पृथ्वी० पर्या० असं० गु० (७) बादर अप्प० पर्या० असं० गु० (८) बादर वायुकाय पर्या० असं० गु० (९) बादर तेऊकाय अपर्या० असं० गु० (१०) बादर प्रत्ये० वन० अपर्या० असं० गु० (११) बादर निगोद अपर्या० असं० गु० (१२) बादर पृथ्वी० अपर्या०

असं० गु० (१३) बादर अप्प० अपर्या० असं० गु० (१४) बादर वायु० अपर्या० असं० गु० (१५) सूक्ष्म० तेऊ० अपर्या० असं० गु० (१६) सूक्ष्म पृथ्वी० अपर्या० वि० (१७) सूक्ष्म-अप्प० अपर्या० वि० (१८) सूक्ष्म वायु० अपर्या० वि० (१९) सूक्ष्म तेऊ० पर्या० सं० गु० (२०) सूक्ष्म पृथ्वी० पर्या० वि० (२१) सूक्ष्म अप्प० पर्या० वि० (२२) सूक्ष्म वायु० पर्या० वि० (२३) सूक्ष्म निगोद अपर्या० असं० गु० (२४) सूक्ष्म निगोद पर्या० सं० गु० (२५) बादर वन० पर्या० अनं० गु० (२६) बादर पर्या० वि० (२७) बादर वन० अपर्या० असं० गु० (२८) बादर अपर्या० वि० (२९) बादर वि० (३०) सूक्ष्म वन० अपर्या० असं० गु० (३१) सूक्ष्म अपर्या० वि० (३२) सूक्ष्म वन० पर्या० सं० (३३) सूक्ष्म पर्या० वि० (३४) सूक्ष्म वि०

[२९] (१) जीव स्तोक (२) पुद्गल अनं० गु० (३) काल अनं० गु० (४) सर्व द्रव्य वि० (५) सर्व प्रदेश अनं० गु० (६) सर्व पर्याय अनं० गु०

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० १३६

श्री पन्नवणा सूत्र पद ३, खेताणु वाई ।

लोक तीन प्रकारका है तथापि यहां पर लोकके छ विभाग बतलाके व्याख्या करते हैं । यथा—

(१) उर्ध्वलोक=ज्योतिषियोंके ऊपरके तलेसे लोकान्त तक उर्ध्वलोक माना जाता हैं जिसमें बारह देवलोक, कल्विषिक

तीन, लोकांतिक नव, ग्रैवेयक नव, पंचाणुत्तर विमान और मेरूके वापी अपेक्षा तिर्यंच भी मिलते हैं। तिर्यंचके ४८ भेद हैं जिसमें बादर तेऊकायके पर्याप्ता अपर्याप्ता वर्जके ४६ भेद मिलते हैं अर्थात् देवताओंके ७६ और तिर्यंचके ४६ मिलके १२२ भेद जीवके हैं।

(२) अधोलोक=मेरूपर्वतकी समभूमिसे ९०० योजन नीचे जावे वहां तक तिरछालोक है उसके नीचे अधोलोक है जिसमें ७ नारकी १० भवनपति १५ परमाधामि और सलिलावती विजया अपेक्षा मनुष्य और तिर्यंच भी मिलते हैं अर्थात् अधोलोकमें १४ नारकी ५० देवता ३ मनुष्य ४८ तिर्यंच सर्व ११५ भेद जीवोंके मिलते हैं।

(३) तिर्छालोक=मेरूपर्वतकी समभूमिसे ९०० योजन उर्ध्वलोक अर्थात् ज्योतिषियोंके ऊपरके तले तक और समभूमि से नीचे ९०० योजन एवं १८०० योजन जाडपनेमें तिर्छालोक हैं जिसमें तिर्यंचके ४८ मनुष्यके ३०३ देवताओंके ७२ सर्व मिलके ४२३ भेद जीवोंके मिलते हैं।

(४) उर्ध्वलोक, तिर्छालोक=ज्योतिषीयोंके ऊपरके तलेका एक प्रदेशके प्रतर और उर्ध्वलोकके नीचेका एक प्रदेशी प्रतर, इन्ही दोनों प्रतरोंको उर्ध्वलोक, तिरछालोक कहते हैं। देवताओं का गमनागमन तथा जीव मरके उर्ध्वलोक या तिरछालोकके अन्दर उत्पन्न हो या गमनागमन करते समय यह दोनों प्रतरोंको स्पर्श करते हैं।

(५) अधोलोक, तिरछालोक, यह भी जीवोंके गमनागमन के समय दोनों प्रतरोंको स्पर्श करते हैं।

(६) तीनलोक=उर्धलोक अधोलोक और तिरछालोक इन्हीं तीनों लोकका एक ही साथमें स्पर्श करे देवता देवीके आने-जानेके अपेक्षा या जीव मरणांतिक समुद्घात करते वख्त तीनों लोकका स्पर्श कर सक्ते हैं।

अब २४ दंडकके जीव ऊपरोक्त छओं लोकमें कौनसा जीव किस लोकमें न्यूनाधिक हैं वह अल्पाबहुत द्वारा बतलावेंगे।

(१) समुचय एकेन्द्रिय और पांच स्थावर एवं ६ इन्हीं ६ बोलोंके पर्याप्ता और अपर्याप्ता करनेसे १८ बोल तथा समुचय जीव १९ और समुचय तिर्यंच एवं २० बोलोंकी अल्पाबहुत।

(१) सबसे स्तोक उर्ध्वलोक तिरछालोकमें
(२) अधोलोक तिरछालोकमें विशेषाधिक
(३) तिरछालोकमें असंख्यात गुणाधिक
(४) तीनोंलोकमें असंख्यात गुणा ,,
(५) उर्ध्वलोकमें असंख्यात गुणा ,,
(६) अधोलोकमें विशेषाधिक।

(२) समुचय नारकी और (२) पर्याप्ता (३) अपर्याप्ता एवं ३ बोल

(१) सबसे स्तोक, तीनोंलोकमें
(२) अधोलोक, तिरछालोकमें असंख्यात गुणाधिक
(३) अधोलोकमें असंख्यात गुणाधिक ,,

(३) भवनपति देवोंके छ बोल का अ०

(क) समुचय भवनपति (२) भवन० पर्याप्ता (३) भ०
अपर्याप्ता एवं तीन बोल देवीके । कूल ६ बोल ।

(१) स्तोक उर्ध्वलोकमें

(२) उर्ध्वलोक तिरछालोकमें असंख्यात गुणा

(३) तीनों लोकमें संख्यात गुणा

(४) अधोलोक तिरछालोकमें असंख्यात गुणा

(५) तिरछालोकमें असंख्यात गुणा

(६) अधोलोकमें असंख्यात गुणा

(४) तिर्यंचणी (१) समुचयदेव (२) समुचयदेवी (३) पंचेन्द्रिका पर्याप्ता ४ एवं चार बोलोंकी अल्पा०

(१) स्तोक उर्ध्वलोकमें

(२) उर्ध्वलोक तिरछालोकमें असंख्यात गुणा

(३) तीनों लोकमें संख्यात गुणा

(४) अधोलोक तिरछालोकमें संख्यात गुणा

(५) अधोलोकमें संख्यात गुणा

(६) तिरछालोक तीनबोल संख्यातगुणा पंचेन्द्रिय के पर्याप्ता
असंख्यातगुणा

(५) समुचय मनुष्य (१) पर्याप्ता (२) अपर्याप्ता (३) एवं मनुष्यणीके तीन बोल कूल ६ बोलोंकी अल्पा०

(१) स्तोक तीनों लोकमें

(२) उर्ध्वलोक, तिरछालोकमें, मनुष्य अस० गु० पर
मनुष्यणी संख्या गु०

(३) अधोलोक तिरछालोकमें संख्यात गुणा

(४) उर्ध्वलोकमें संख्यात गुणा

(५) अधोलोकमें सं० गु० (६) तिरछालोकमें सं०

(६) व्यंतरदेवके तीन, देवीके तीन एवं ६ बोल

(१) स्तोक उर्ध्वलोकमें

(२) उर्ध्वलोक, तिरछालोकमें असंख्यात गुणा

(३) तीनों लोकमें संख्यात गुणा

(४) अधोलोक, तिरछालोकमें असंख्यात गुणा

(५) अधोलोकमें सं० गु० (६) तिरछालोकमें सं० गु०

(७) ज्योतिषी देवोंके तीन, देवीके तीन एवं ६ बोल

(१) सर्व स्तोक उर्ध्वलोकमें (२) उर्ध्वलोक, तिरछालोकमें असं० गु०

(३) तीनों लोकमें सं० गु० (४) अधोलोक, तिरछालोक असं० गु०

(५) अधोलोक सं० गु० (६) तिरछालोकमें असं० गु०

(८) वैमानिक देवके तीन, देवीके तीन एवं ६ बोल

(१) स्तोक उर्ध्वलोक, तिरछालोक (२) तीनों लोकमें सं० गु०

(३) अधोलोक, तिरछालोकमें सं० गु० (४) अधोलोकमें सं० गु०

(५) तिरछालोकमें सं० गु० (६) उर्ध्वलोकमें असं० गु०

(९) तीन विकलेन्द्रियके (३) पर्याप्ता (३) अपर्याप्ता

(१) स्तोक उर्ध्वलोकमें (२) उर्ध्वलोक, तिरछालोकमें असं० गु०

(३) तिरछालोकमें असं० गु० (४) अधोलोक, तिरछालोक असं० गु०

(५) अधोलोक सं० गु० (६) तिरछालोकमें सं० गु०

(१०) पांच बोलोकी अल्पा०

समुचय पंचेन्द्रिय, पंचेन्द्रियके अपर्याप्ता, समुचय त्रसकाय, त्रसकायके पर्याप्ता, त्रसकायके अपर्याप्ता, एवं ६ बोल

(१) स्तोक तीनों लोकमें (२) उर्ध्वलोक, तिरछालोक सं०गु०

(३) अधोलोक, तिरछालोकमें संख्यात गु०

(४) उर्ध्वलोकमें संख्यात गु० (५) अधोलोकमें संख्यात गु०

(६) तिरछालोक असं० गु०

(११) पुद्गलक्षेत्रापेक्षा

(२) स्तोक तीनों लोकमें (२)उर्ध्वलोक, तिरछालोक अ०गु०

(३) अधोलोक, तिरछालोक विशेषा (४) तिरछालोक असं० गु०

(५) उर्ध्वलोक असं० गु० (६) अधोलोक विशेषा

(१२) द्रव्यक्षेत्रापेक्षा

(१) स्तोक तीनों लोकमें (२) उर्ध्वलोक, तिरछालोक अ०गु०

(३) अधोलोक, तिरछालोक विशेषा (४) उर्ध्वलोक असं०गु०

(५) अधोलोके अनंत गु० (६) तिरछालोकमें संख्यात गु०

(१३) पुद्गलदिशापेक्षा

(१) स्तोक उर्ध्वदिशा (२) अधोदिशा विशेषा

(३) ईशान नैऋत्य कोण असं० गु० (४) अग्नि वायव्य कोण विशेषा

(५) पूर्व दिशा असं० गु० (६) पश्चिम दिशा विशेषा

(७) दक्षिण दिशा विशेषा (८) उत्तर दिशा विशेषा

(१४) द्रव्यदिशापेक्षा

(१) स्तोक अधोदिशा (२) उर्ध्वदिशा अनंत गुण

(३) ईशान नैऋत्य अनंत गुण (४) अग्निवायु दिशा विशेषा

(५) पूर्व दिशा असं० गु० (६) पश्चिम दिशा विशेषा

(७) दक्षिण दिशा विशेषा (८) उत्तर दिशा विशेषा

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० १३७

श्री पन्नवणा सूत्र पद ३, जीवोंके २५६ ढिगला

(१) सर्वसे स्तोक, जीव आयुष्यकर्म बांधनेवाला है

(२) अपर्याप्ता जीव संख्यातगुणा है

(३) सूता जीव संख्यातगुणा है

(४) समोहिया जीव संख्यातगुणा है

(५) सातवेदनेवाला जीव संख्यातगुणा है

(६) इन्द्रिय बहुता जीव संख्यातगुणा है

(७) अनाकार उपयोगवाले जीव संख्यातगुणा है

(८) साकार उपयोगवाले जीव संख्यातगुणा है

(९) नोइन्द्रियबहुता जीव विशेषाधिक है
(१०) असाता वेदनेवाले जीव विशेषाधिक है
(११) असमोहियां जीव विशेषाधिक है
(१२) जागृत जीव विशेषाधिक है
(१३) पर्याप्ता जीव विशेषाधिक है
(१४) आयुष्यकर्म के अबन्धक जीव विशेषा

इन्हीं १४ बोलों को ठीक ठकि समझमें आजाने के लिये शास्त्रकारोंने सर्व जीवोंके २५६ ढिगले (विभाग) कर के बतलाये हैं.

(१)	आयुष्यकर्मके बांधनेवालोंके	१	ढिगला
(२)	आयुष्यकर्मके अबंधकके	२५५	"
(३)	अपर्याप्ता जीवोंके	२	"
(४)	पर्याप्ता जीवोंके	२५४	"
(५)	सूता जीवोंके	४	"
(६)	जागता जीवोंके	२५२	"
(७)	समोहिया मरणवालोंके	८	"
(८)	असमोहिया मरणवालोंके	२४८	"
(९)	साता वेदनेवालोंके	१६	"
(१०)	अशाता वेदनेवालोंके	२४०	"
(११)	इन्द्रिय बहुता जीवोंके	३२	"
(१२)	नोइन्द्रिय बहुता जीवोंके	२२४	"
(१३)	अनाकार उपयोगवाले जीवोंके	६४	"
(१४)	साकार उपयोगवाले जीवोंके	१९२	"

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० १३८

श्री पन्नवणा सूत्र पद ४, स्थितिपद.

नं.	नाम.	जघन्यस्थिति.	उत्कृष्टस्थिति.
१	समुचय नरक	१०००० वर्ष	३३ सागरोपम
२	रत्नप्रभा ,,	१०००० वर्ष	१ ,,
३	शर्कराप्रभा ,,	१ सागरोपम	३ ,,
४	वालुकाप्रभा ,,	३ ,,	७ ,,
५	पंकप्रभा ,,	७ ,,	१० ,,
६	धूमप्रभा ,,	१० ,,	१७ ,,
७	तमःप्रभा ,,	१७ ,,	२२ ,,
८	तमस्तमःप्रभा ,,	२२ ,,	३३ ,,
९	समुचय देवता	१०००० वर्ष	३३ ,,
१०	,, देवी	,,	५५ पल्योपम
११	,, भुवनपति	,,	१ सागरोपम साधिक
१२	,, ,, देवी	,,	४॥ पल्योपम
१३	,, दक्षिण का भुवनपति	,,	१ सागरोपम
१४	,, ,, ,, देवी	,,	४॥ पल्योपम
१५	,, उत्तर का भुवनपति	,,	१ सागरोपम साधिक

१६	समुचय उ० भुवन० देवी	१०००० वर्ष	३॥ पल्योपम
१७	,, असुरकुमार देव	,,	१ सागरोपम साधिक
१८	,, ,, देवी	,,	४॥ पल्योपम
१९	चमरेन्द्र के देव	,,	१ सागरोपम
२०	चमरेन्द्र की देवी	,,	४॥ पल्योपम
२१	बलेन्द्र के देव	,,	१ सागरोपम साधिक
२२	बलेन्द्र की देवी	,,	३॥ पल्योपम
२३	समुचय नागकुमार देव	,,	देशोना २ ,,
२४	,, ,, देवी	,,	,, १ ,,
२५	दक्षिण ,, देव	,,	,, १॥ ,,
२६	,, ,, देवी	,,	,, ०॥। ,,
२७	उत्तर ,, देव	,,	,, २ ,,
२८	,, ,, देवी	,,	,, १ ,,

(७६) एवं सुवर्णादि ८ देवों का ४८ सूत्र होता है ।

७७	समुचय तिर्यंच	अन्तरमुहूर्त	३ पल्योपम
७८	,, एकेन्द्रिय	,,	२२००० वर्ष
७९	सूक्ष्म एकेन्द्रिय	,,	अन्तरमुहूर्त
८०	बादर एकेन्द्रिय	,,	२२००० वर्ष
८१	समुचय पृथ्वीकाय	,,	२२००० वर्ष

८२	सूक्ष्म पृथ्वीकाय	अन्तरमुहूर्त	अन्तरमुहूर्त
८३	बादर ,,	,,	२२००० वर्ष
८४	समुचय अपूकाय	,,	७००० वर्ष
८५	सूक्ष्म ,,	,,	अन्तरमुहूर्त
८६	बादर ,,	,,	७००० वर्ष
८७	समुचय तेऊकाय	,,	३ दिनकी
८८	सूक्ष्म ,,	,,	अन्तरमुहूर्त
८९	बादर ,,	,,	३ दिनकी
९०	समुचय वायुकाय	,,	३००० वर्ष
९१	सूक्ष्म ,,	,,	अन्तरमुहूर्त
९२	बादर ,,	,,	३००० वर्ष
९३	समुचय वनस्पतिकाय	,,	१०००० वर्ष
९४	सूक्ष्म ,,	,,	अन्तरमुहूर्त
९५	बादर ,,	,,	१०००० वर्ष
९६	बेंईंद्रिय	,,	१२ वर्ष
९७	तेंईंद्रिय	,,	४९ दिन
९८	चौरिन्द्रिय	,,	६ मास
९९	समुचय तिर्यंच पंचेन्द्रिय	,,	३ पल्योपम
१००	संज्ञी ,, ,,	,,	,,
१०१	असंज्ञी ,, ,,	,,	क्रोडपूर्व
१०२	समुचय जलचर ,,	,,	,,

१०३	संज्ञी जलचर पंचेन्द्रिय	अन्तरमुहूर्त	क्रोडपूर्व
१०४	असंज्ञी ,, ,,	,,	,,
१०५	समुचय थलचर	,,	३ पल्योपम
१०६	संज्ञी ,,	,,	,,
१०७	असंज्ञी ,,	,,	८४००० वर्ष
१०८	समुच्चय खेचर	,,	पल्यो. असं. भा
१०९	संज्ञी ,,	,,	,, ,, ,,
११०	असंज्ञी ,,	,,	७२००० वर्ष
१११	समुच्चय उरपरिसर्प	,,	क्रोडपूर्व
११२	संज्ञी ,,	,,	,,
११३	असंज्ञी ,,	,,	५३००० वर्ष
११४	समुच्चय भुजपरिसर्प	,,	क्रोडपूर्व
११५	संज्ञी ,,	,,	,,
११६	असंज्ञी ,,	,,	४२००० वर्ष
११७	समुच्चय मनुष्य	,,	३ पल्योपम
११८	संज्ञी ,,	,,	,,
११९	असंज्ञी ,,	,,	अन्तरमुहूर्त
१२०	व्यंतर देव	१०००० वर्ष	१ पल्योपम
१२१	व्यंतर की देवी	१०००० वर्ष	०॥ पल्योपम
१२२	समुचय ज्योतीषी देव	$\frac{१}{८}$ पल्योपम	१ पल्योपम १ लक्षवर्ष

१२३	समुच्चय ज्योतीषी की देवी	१/८ पल्योपम	१ पल्योपम ५०००० वर्ष
१२४	चंद्र विमान देव	१/४ ,,	१ पल्योपम १००००० ,,
१२५	,, ,, देवी	,, ,,	०॥ पल्योपम ५०००० ,,
१२६	सूर्य विमान देव	,, ,,	१ पल्योपम १००० ,,
१२७	,, ,, देवी	,, ,,	०॥ पल्योपम ५०० ,,
१२८	ग्रह विमान देव	,, ,,	१ पल्योपम
१२९	,, ,, देवी	,, ,,	०॥ ,,
१३०	नक्षत्र विमान देव	,, ,,	०॥ ,,
१३१	,, ,, देवी	,, ,,	०। ,,
१३२	तारा विमान देव	१/८ ,,	०। ,,
१३३	,, ,, देवी	१/८ ,,	१/८ ,, साधिक
१३४	समुच्चय वैमानिक देव	१ ,,	३३ सागरोपम
१३५	,, ,, देवी	,, ,,	५५ पल्योपम
१३६	सुधर्म देवलोक	,, ,,	२ सागरोपम
१३७	,, देवी	,, ,,	५० पल्योपम
१३८	परिगृहिता	,, ,,	७ ,,
१३९	अपरिगृहिता	,, ,,	५० ,,

१४०	ईशान देवलोक	१ पल्योपम साधिक	२ सागरोपम साधिक
१४१	,, देवी	,,	५५ पल्योपम
१४२	परिगृहिता	,,	९ ,,
१४३	अपरिगृहिता	,,	५५ ,,
१४४	सनत्कुमार दे०	२ सागरोपम	७ सागरोपम
१४५	महेन्द्र देवलोक	२ ,, साधिक	७ ,, साधिक
१४६	ब्रह्म ,,	७ सागरोपम	१० सागरोपम
१४७	लांतक ,,	१० ,,	१४ ,,
१४८	महाशुक्र	१४ ,,	१७ ,,
१४९	सहस्र	१७ ,,	१८ ,,
१५०	आनत	१८ ,,	१९ ,,
१५१	प्राणत	१९ ,,	२० ,,
१५२	आरण	२० ,,	२१ ,,
१५३	अच्युत	२१ ,,	२२ ,,
१५४	प्रथम ग्रैवेयक	२२ ,,	२३ ,,
१५५	दुजी ,,	२३ ,,	२४ ,,
१५६	तीजी ,,	२४ ,,	२५ ,,
१५७	चोथी ,,	२५ ,,	२६ ,,
१५८	पांचमी ,,	२६ ,,	२७ ,,
१५९	छट्ठी ,,	२७ ,,	२८ ,,

१६०	सातमी ,,	२८ ,,	२९ ,,
१६१	आठमी ,,	२९ ,,	३० ,,
१६२	नवमी ,,	३० ,,	३१ ,,
१६३	चार अनुत्तर विमान	३१ ,,	३२ ,,
१६४	सर्वार्थसिद्ध विमान	३३ ,,	३३ ,,

ऊपरोक्त १६४ बोलोंमें, १ असंज्ञी मनुष्य केवल अपर्याप्ता ही होता हैं वास्ते १६४ बोलों के अपर्याप्ता की स्थिति जघन्य अंतरमुहूर्तकी और उत्कृष्ट भी अन्तरमुहूर्तकी होती है और १६३ बोलों के पर्याप्ता की जघन्य स्थिति अपनीअपनी जघन्य स्थितिमें अंतरमुहूर्त न्युन और उत्कृष्टी अपनीअपनी उ० स्थितिसे अंतरमुहूर्त न्युन समझना।

१६४ समुचय बोल ऊपरवत् । १६४ अपर्याप्ता के १६३ पर्याप्ता के।

स्थितिपदके सर्व ४९१ बोल।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० १३९.

श्री पन्नवणासूत्र पद ५, पज्जवा.

लोक में पदार्थ दो प्रकारके है जीव और अजीव—जीव अनन्ते है और उनके संक्षिप्तसे ५६३ भेद हैं, जिनका समावेश २४ दंडकमें किया जा सकता हैं। और अजीव भी अनन्त हैं

जिनका संक्षिप्त से ९६० भेद हैं। इन सबको द्रव्य, क्षेत्र, का और भाव ये चार भेद करके अलग २ बतलावेंगे जैसे द्रव्य-परमाणु, द्विप्रदेशी यावत् अनंत प्रदेशी, क्षेत्र—एक आकाशप्रदेशसे यावत् असंख्यातआकाशप्रदेश। काल—एक समय की स्थितिसे यावत् असंख्यात समयकी स्थिति। और भावं से वर्णादि २० बोलवाले। जिसमें एक गुणसे यावत् अनन्तगुण पर्यन्त अनन्तभेद है। वे सब इस थोकड़ाद्वारा पाठकोंको ऐसी सुगम रीतिसे बतलावेंगे, कि हरेक ज्ञानप्रेमी थोड़े परिश्रमसे लाभ उठा सके। परंतु इस थोकड़ा का रहस्य बहुत गंभीर है, इसलिये पाठकवर्ग पहिले गहनदृष्टिद्वारा इसको समझ ले, क्योंकि इस थोकड़ा का भाषारूपसे विस्तारपूर्वक न लिखकर यंत्ररुप से ऐसा सुगम बनाकर लिखा है; कि कंठस्थ करनेवालोंके लिये बहुत ही लाभदायक और उपयोगी है। परन्तु पहिले इस यंत्रको समझने के लिये जो नीचे परिभाषा लिखी जा रही है उसको अच्छी तरह समझ लेना चाहिये। विना परिभाषाके समझे यंत्र से इतना लाभ न होगा। इसलिये परिभाषाका समझना आवश्यकीय है।

पज्जवा—पर्यव—पर्याय—विभाग—हिस्सा यह सब एकार्थी हैं। प्रश्न—हे भगवान्! पज्जवे कितने प्रकारके हैं? गौतम! दो प्रकारके—जीवपज्जवा और अजीवपज्जवा। जीवपज्जवा क्या संख्याते, असंख्याते, या अनन्ते हैं? गोतम! संख्याते, असंख्याते नहीं किन्तु अनन्ते हैं। क्योंकि असंख्याते नारकी, असंख्याते भवनपति, असंख्याते पृथ्वीकाय, असंख्याते अपकाय,

असंख्याते तेउकाय, असंख्याते वायुकाय, अनन्ते वनस्पतिकाय, असंख्याते बेरिन्द्रीय, असंख्याते तेरिन्द्रीय, असंख्याते चौरिन्द्रीय, असंख्याते तीर्यंचपंचेन्द्रीय, असंख्याते मनुष्य, असंख्याते व्यन्तर, असंख्याते ज्योतिषी, असंख्याते वैमानिक और अनन्तेसिद्ध है इस वास्ते हे गौतम ! अनन्ते पज्जवे कहा है। यह सामान्य प्रश्नोत्तर हुए। अब विशेषता से पूछते हैं।

हे भगवान् ! नारकीके नेरियेके पज्जवे कितने है? गौतम! अनन्ते एवं यावत् चौवीस दंडका ये पज्जवे जीवके ज्ञानादि गुणोंकी अपेक्षा और शरीरके वर्णादिकी अपेक्षासे कहे गये है, जिसका स्वरुपयंत्रसे समझ लेना।

परिभाषा।

नारकी २—याने नारकी नारकी परस्पर द्रव्यपने तुल्य हैं क्योंकि वह भी एक जीव है और वह भी एक जीव है या जितने गनतीमें एक तर्फ है उतने ही दूसरी तर्फ हैं; इसलिये परस्पर तुल्य कहा। जब द्रव्यतुल्य हैं तो प्रदेश भी तुल्य होगा, क्योंकी सबजीवोंके प्रदेश बराबर हैं, किसीका भी प्रदेश न्यूनाधिक नही हैं। इस वास्ते प्रदेश भी तुल्य कहा हैं।

अवगाहना=शरीरकी ऊंचाईको कहते हैं वह परस्पर चार प्रकारसे न्यूनाधिक हैं। जैसे एक नारकी की अवगाहना अंगुलके असंख्यातमें भाग है, और दूसरेकी ५०० धनुष्यकी हैं, तो असंख्यात् गुणावृद्धि, असंख्यात गुणाहानी यह पहिला भांगा हुवा। (१) एक नारकीकी अवगाहना ५०० धनुष्यकी

है और दूसरेकी ५०० धनुष्यसे अंगुलके असंख्यातमें भागन्यून हैं, तो असंख्यात भागहीना, यह दूसरा भांगा हुवा । एकनारकी के अवगाहना ७॥। धनुष्य ६ अंगुल है। और दूसरेकी ५०० धनुष्य हैं तो संख्यातगुणवृद्धि, संख्यातगुणहानी, यह तीसरा भांगा हुवा;. और एक नारकीकी अवगाहना ५०० धनुष्य हैं और दूसरेकी ४९९ धनुष्य हैं तो संख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागहानी यह चौथा भांगा हुआ । इसे चौठाणबलिया भी कहते हैं ।

स्थिति—चौठाणबलिया=जैसे एक नारकीकी स्थिति १०००० वर्षकी हैं और दूसरेकी ३३सागरोपम हैं तो असंख्यात गुणाधिक, असंख्यातगुणहीन यह पहिला भांगा, और एककी ३३ सागर० दूसरेकी ३३ सागरसे अन्तरमुहूर्त न्यून, यह असंख्यातभाग अधिक और असंख्यातभागहीन दूसरा भांगा, और एक नारकीकी १ सागर० दूसरेकी ३३ सागर, यह संख्यात गुणाधिक और संख्यातगुणहानी तीसरा भांगा हुवा, और एककी ३२ सागर० दूसरेकी २९ सागर० यह संख्यातभाग अधिक संख्यातभागहीन चौथा भांगा हुआ, जहां तीनका अंक हो वहां पहिला भांगा न्यून समझना ।

वर्णादि २० बोल लिखा है वहां वर्ण ५, गंध २, रस ५, स्पर्श ८, एवं २० बोल। उपयोग ९ लिखा है वहाँ ३ ज्ञान, ३ अज्ञान, ३ दर्शन एवं ९* तारतम्यताका कोष्टक है उसमें जो छेठाण बलीया (षट् गुणहानी–वृद्धि) हैं सो यह हानी वृद्धि वर्णादि

२० तथा १२ उपयोग की समझनी, वह अंतके कोष्टकमें (६) का अंक रखा गया है जिसका विवरण नीचे देखो—

१ अनन्तमें भागन्यून। अनन्तमें भागाधिक।

२ असंख्यातमें भागन्यून। असंख्यातमें भागाधिक।

३ संख्यातमें भागन्यून। संख्यातमें भागाधिक।

४ संख्यातमें गुणन्यून। संख्यातमें गुणाधिक।

५ असंख्यातमें गुणन्यून असंख्यातमें गुणाधिक।

६ अनन्तमें गुणन्यून। अनन्तमें गुणाधिक।

यह षट्गुण हानिवृद्धि है जिसको शास्त्रकारोंने 'छट्ठाण-वडिए' कहते है और कोष्टकमें ४–३–२–१ का अंक स्थिति या अवगाहनामें रखा जाता है वहां का सकेत।

नम्बर १–६ को छोड देनासे चौठाणवडिए।

न० १–६–२ छोडनेसे तीठाण वडिए।

न० १–५–६ छोडनेसे तीठाण वडिए।

न० १–२–५–६ छोडनेसे दुठाण वडिए।

न० १–२–३–५–६ छोडनेसे एक ठाण वडिए।

विशेष खुलासा विद्वानों से रूबरू करने से अधिक लाभ होगा।

---

* उपयोग १२ है वह जिस बोलमें जितना पावे वह कह देना समझना।

सामान्यतसे २४ दंडकका यंत्र.

नंबर मर्गण	द्रव्य	प्रदेश	अवगाहना	स्थिति	वर्णादि २०	उपयोग १२	त[illegible]
१ नारकी नारकी	तुल्य	तुल्य	४	४	२०	९	६
२ असुरकुमार–२	तु०	तु०	४	४	२०	९	६
३ नागकुमार–२	तु०	तु०	४	४	२०	९	६
४ सुवर्णकुमार–२	तु०	तु०	४	४	२०	९	६
५ विद्युत्कुमार–२	तु०	तु०	४	४	२०	९	६
६ अग्निकुमार–२	तु०	तु०	४	४	२०	९	६
७ द्वीपकुमार–२	तु०	तु०	४	४	२०	९	६
८ दिशाकुमार–२	तु०	तु०	४	४	२०	९	६
९ उदधीकुमार–२	तु०	तु०	४	४	२०	९	६
१० वायुकुमार–२	तु०	तु०	४	४	२०	९	६
११ पृथ्वीकाय–२	तु०	तु०	४	३	२०	३	६
१२ अप्पकाय–२	तु०	तु०	५	३	२०	३	६
१३ तेउकाय–२	तु०	तु०	४	३	२०	३	६
१४ वायुकाय–२	तु०	तु०	४	३	२०	३	६
१५ वनस्पतिकाय–२	तु०	तु०	४	३	२०	३	६
१६ बेरिन्द्री–२	तु०	तु०	४	३	२०	५	६
१७ तेरिन्द्री–२	तु०	तु०	४	३	२०	५	६
१८ चौरिन्द्री–२	तु०	तु०	४	३	२०	६	६

१९ तिर्यंच पंचेन्द्री २	तुल्य	तुल्य	४	४	२०	९	६
२० मनुष्य २	तु०	तु०	४	४	२०	२/१०	तु०/६
२१ व्यंतरदेव २	तु०	तु०	४	४	२०	९	६
२२ ज्योतिषी २	तु०	तु०	४	३	२०	९	६
२३ वैमानिक २	तु०	तु०	४	३	२०	९	६
२४ सिद्ध २	तु०	तु०	३	०	०	२	०

चौवीस दंडकोंके विस्तारसे वर्णन.

संकेत—संज्ञा निम्नलिखित ।

(१) ज० जघन्य (४) अव० अवगाहना

(२) म० मध्यम (५) च० चक्षु दर्शन

(३) उ० उत्कृष्ट (६) अच० अचक्षु दर्शन

जघन्य अवगाहनाके नारकी, जघन्य अवगाहनाके नारकी-पने इस माफिक सब जगह समझना ।

(१) नारकीके पर्यवकी तारतम्यता.

नंबर	मर्गण	द्रव्य	प्रदेश	अवगाहना	स्थिति	वर्णादि २०	उपयोग १२	तरतम्यता
१	ज० अव० नारकी २	तुल्य	तुल्य	तुल्य	४	२०	९	६
२	म० ,, ,, २	,,	,,	४	४	२०	९	६
३	उ० ,, ,, २	,,	,,	तु०	४	२०	९	६
४	ज० स्थिति ,, २	,,	,,	४	तु०	२०	९	६
५	म० ,, ,, २	,,	,,	४	४	२०	९	६
६	उ० ,, ,, २	,,	,,	४	तु०	२०	९	६
७	ज० कालागुण ,, २	,,	,,	४	४	१तु१९	८	६
८	म० ,, ,, २	,,	,,	४	४	२०	९	६
+९	उ० ,, ,, २	,,	,,	४	४	१तु१९	९	६
६७	ज० मतिज्ञान ,, २	,,	,,	४	४	२०	१तु५	६
६८	म० ,, ,, २	,,	,,	४	४	२०	६	६
६९	उ० ,, ,, २	,,	,,	४	४	२०	१तु५	६
८५*	ज० च० ,, २	,,	,,	४	४	२०	१तु८	६
८६	म० ,, ,, २	,,	,,	५	४	२०	९	६
८७×	उ० ,, ,, २	,,	,,	४	४	२०	१तु८	६

कुल ९३ सूत्र हुए।

\+ एवं निलादि १९ बोलोंके तीन तीन सूत्र गीननेसे ५७

* एवं दो ज्ञान तीन अज्ञान पांच बोलोंके तीन० १५ बोल.

× एवं अचक्षुद० अवधिद० दो बोलोंके तीन० ६ बोल.

(२) भवनपति देव-जैसे नारकीके ९३ सूत्र कह आये हैं इसी माफिक प्रत्येक भवनपतिके ९३-९३ सूत्र लगानेसे ९३० सूत्र भवनपतिके हुवे।

(३) पृथ्वीकायादि पांचस्थावर.

१ ज० अव० पृथ्वी	२	तुल्य	तुल्य	तुल्य	३	२०	३	६
२ म० ,, ,,	२	,,	,,	४	३	२०	३	६
३ उ० ,, ,,	२	,,	,,	तु०	३	२०	३	६
४ ज० स्थिति० ,,	२	,,	,,	४	तु०	२०	३	६
५ म० ,, ,,	२	,,	,,	४	३	२०	३	६
६ उ० ,, ,,	२	,,	,,	४	तु०	२०	३	६
७ ज०कालागुण,,	२	,,	,,	४	३	१तु१९	३	६
८ म० ,, ,,	२	,,	,,	४	३	२०	३	६
९ उ० ,, ,,	२	,,	,,	४	३	१तु१९	३	६
१० ज०मतिअज्ञान,,	२	,,	,,	तु०	३	२०	१तु२	६
११ म० ,, ,,	२	,,	,,	,,	३	२०	३	६
१२ उ० ,, ,,	२	,,	,,	,,	३	२०	१तु२	६

७५ एवं श्रुतिअज्ञानके ३ और अचक्षुदर्शनके ३ बोल समझना।

इसी तरह अप्पकाय, तेउकाय, वायुकाय और वनस्पतिकायके ७५-७५ गणनेसे ३०० बोल हुवे। कुल ३७५ सूत्र।

(४) बेरिन्द्रियके पर्यवकी तारतम्यता.

१ ज० अव० बेरिन्द्रि २	तुल्य	तुल्य	तुल्य	३	२०	५
२ म० ,, ,, २	,,	,,	४	३	२०	५
३ उ० ,, ,, २	,,	,,	तु०	३	२०	३
४ ज० स्थिति० ,, २	,,	,,	४	तु०	२०	३
५ म० ,, ,, २	,,	,,	४	३	२०	५
६ उ० ,, ,, २	,,	,,	४	तु०	२०	५
७ ज० कालागुण , २	,,	,,	४	३	१तु१९	५
८ म० ,, ,, २	,,	,,	४	३	२०	५
९ उ० ,, ,, २	,,	,,	४	३	१तु१९	५
६६ एवं नीलादि १९						
६७ ज० मतिज्ञान बे० २	,,	,,	४	३	२०	१तु२
६८ म० ,, ,, २	,,	,,	४	३	२०	३
६९ उ० ,, ,, २	,,	,,	४	३	२०	१तु२
७२ एवं श्रुतिज्ञानका ३						
७३ ज० मतिअज्ञान बे० २	,,	,,	४	३	२०	१तु२
७४ म० ,, ,, २	,,	,,	४	३	२०	३
७५ उ० ,, ,, २	,,	,,	४	३	२०	१तु२
७८ एवं श्रुतिअज्ञानके ३						
७९ ज० अच० बे० २	,,	,,	४	३	२०	१तु४
८० म० ,, ,, २	,,	,,	४	३	२०	५
८१ उ० ,, ,, २	,,	,,	४	३	२०	१तु४

(५) तेरिन्द्रियके पर्यवके ता० के ८१ सूत्र उपरवत् समझना ।

(६) चौरिन्द्रियके पर्यवके तारतम्यता.

६६ अवगाहना, स्थिति और वर्णादि २० बेरिन्द्रियवत्.

६७ ज० मति० चौरि० २	तुल्य	तुल्य	४	३	२०	१तु३	६
६८ म० ,, ,, २	,,	,,	४	३	२०	४	६
६९ उ० ,, ,, २	,,	,,	४	३	२०	१तु३	६
७२ एवं श्रुतिज्ञानके भी							
७३ ज० मतिअ० चौ० २	,,	,,	४	३	२०	१तु३	६
७४ म० ,, ,, २	,,	,,	४	३	२०	४	६
७५ उ० ,, ,, २	,,	,,	४	३	२०	१तु३	६
७८ एवं श्रुतअज्ञानके							
७९ ज० च० चौरि० २	,,	,,	४	३	२०	१तु५	६
८० म० च० ,, २	,,	,,	४	३	२०	६	६
८१ उ० च० ,, २	,,	,,	४	३	२०	१तु५	६
८४ एवं अचक्षुदर्शनके							

(७) तिर्यंच पंचेन्द्रियके पर्यवकी तारतम्यता.

१ ज० अव० ती० पं० २	तुल्य	तुल्य	तुल्य	३	२०	६	६
२ म० ,, ,, २	,,	,,	४	४	२०	९	६
३ उ० ,, ,, २	,,	,,	तु	तु	२०	९	६
४ ज० स्थिति ,, २	,,	,,	४	४	२०	४	६

५ म० स्थिति ती०पं०२	तुल्य	तुल्य	४	४	२०	९	६
६ उ० ,, ,, २	,,	,,	४	३	२०	६	६
७ ज०कालागुण,, २	,,	,,	४	४	१तु१९	९	६
८ ज० कालगुण,, २	,,	,,	४	४	२०	९	६
९ उ० ,, ,, २	,,	,,	४	४	१तु१९	९	६
६६ एवं शेष नीलादि १९							
६७ ज० मति०ती०पं० २	,,	,,	४	४	२०	१तु३	६
६८ म० ,, ,, २	,,	,,	४	४	२०	६	६
६९ उ० ,, ,, २	,,	,,	४	३	२०	१तु५	६
७२ एवं श्रुतज्ञानके ३ बोल							
७३ ज०अवधिज्ञानी ,, २	,,	,,	४	३	२०	१तु५	६
७४ म० ,, ,, २	,,	,,	४	३	२०	६	६
७५ उ० ,, ,, २	,,	,,	४	३	२०	१तु५	६
८४ एवं तीनअज्ञानके							
८५ ज० च० ती० पं० २	,,	,,	४	४	२०	१तु८	६
८६ म० ,, ,, २	,,	,,	४	४	२०	९	६
८७ उ० ,, ,, २	,,	,,	४	४	२०	१तु८	६
९० एवं अचक्षुदर्शनके							
९१ ज०अवधिद०ती.पं.२	,,	,,	४	३	२०	१तु८	६
९२ म० ,, ,, २	,,	,,	४	३	२०	९	६
९३ उ० ,, ,, २	,,	,,	४	३	२०	१तु८	६

(८) मनुष्यके पर्यवकी तारतम्यता.

१	ज० अव० मनुष्य २	तुल्य	तुल्य	तुल्य	३	२०	८	६
२	म० ,, ,, २	,,	,,	४	४	२०	२तु१०	६
३	उ० ,, ,, २	,,	,,	तु०	१	२०	६	६
४	ज० स्थिति ,, २	,,	,,	४	तु०	२०	४	६
५	म० ,, ,, २	,,	,,	४	४	२०	२तु१०	६
६	उ० ,, ,, २	,,	,,	४	तु०	२०	६	६
७	ज० कालागुण,, २	,,	,,	४	४	१तु१९	२तु१०	६
८	म० ,, ,, २	,,	,,	४	४	२०	२तु१०	६
९	उ० ,, ,, २	,,	,,	४	४	१तु१९	२तु१०	५
१६	एवं शेष नीलादि १९							
१७	ज० मतिज्ञानी,, २	,,	,,	४	४	२०	१तु३	६
१८	म० ,, ,, २	,,	,,	४	४	२०	७	६
१९	उ० ,, ,, २	,,	,,	३	३	२०	१तु६	६
२२	एवं श्रुतज्ञानके ३ बोल							
२३	ज० अवधिज्ञानी,, २	,,	,,	३	३	२०	१तु६	६
२४	म० ,, ,, २	,,	,,	४	३	२०	७	६
२५	उ० ,, ,, २	,,	,,	३	३	२०	१तु६	६
२६	ज० मन:पर्यवज्ञानी,, २	,,	,,	३	३	२०	१तु६	६
२७	म० ,, ,, २	,,	,,	३	३	२०	७	६
२८	उ० ,, ,, २	,,	,,	३	३	२०	१तु६	६

७९ केवलज्ञानी मनुष्य २	तुल्य	तुल्य	३	३	२०	२	तु०
८० ज० मतिअ०,, २	,,	,,	४	४	२०	१तु३	६
८१ म० ,, ,, २	,,	,,	४	४	२०	६	६
८२ उ० ,, ,, २	,,	,,	३	३	२०	१तु५	६
८५ एवं श्रुतअज्ञानी ३							
८६ ज० विभंगज्ञानी ,, २	,,	,,	४	४	२०	१तु५	६
८७ म० ,, ,, २	,,	,,	४	४	२०	६	६
८८ उ० ,, ,, २	,,	,,	३	३	२०	१तु५	६
८९ ज० च० द० ,, २	,,	,,	४	४	२०	१तु५	६
९० म० ,, ,, २	,,	,,	४	४	२०	१०	६
९१ उ० ,, ,, २	,,	,,	३	३	२०	१तु९	६

एवं अचक्षु० ३ अवधि० ३ केवलदर्शन० १ केवलज्ञानवत् कुल ९८ ।

(५) ज्योतिषी और वैमानिकके पर्यव.

१ ज० अव० ज्योतिषी २	तुल्य	तुल्य	तुल्य	३	२०	९	६
२ म० ,, ,, २	,,	,,	४	३	२०	९	६
३ उ० ,, ,, २	,,	,,	तु०	३	२०	९	६
४ ज० स्थिति ,, २	,,	,,	४	तु०	२०	९	६
५ म० ,, ,, २	,,	,,	४	३	२०	९	६
६ उ० ,, ,, २	,,	,,	४	तु०	२०	९	६
७ ज० कालागुण,, २	,,	,,	४	३	१तु१९	९	६
८ म० ,, ,, २	,,	,,	४	३	२०	९	६

१ उ० कालागुण ज्यो० २	तुल्य	तुल्य	४	३	१तु१९	९	६
६६ एवं नीलादि १९							
६७ ज० मति० ज्यो० २	,,	,,	४	३	२०	१तु५	६
६८ म० ,, ,, २	,,	,,	४	३	२०	६	६
६९ उ० ,, ,, २	,,	,,	४	३	२०	१तु५	६
८५ ज० च० ,, २	,,	,,	४	३	२०	१तु८	६
८६ म० ,, ,, २	,,	,,	४	३	२०	९	६
८७ उ० ,, ,, २	,,	,,	४	३	२०	१तु८	६

९३ एवं अचक्षु० अवधिके ६ बोल ।

ज्योतिषीके माफिक वैमानिकके भी ९३ सूत्र समझना ।

सिद्धोंमें शरीर अवगाहना नहीं हैं किन्तु आत्मप्रदेश जो आकाशप्रदेश अवगाहे हैं उस अपेक्षासे ।

१ ज० अव० सिद्ध २	तुल्य	तुल्य	तुल्य	०	०	२	तुल्य
२ म० ,, ,, २	,,	,,	३	०	०	२	,,
३ उ० ,, ,, २	,,	,,	तु०	०	०	२	,,
४ केवलज्ञानी केवल-दर्शनी सिद्ध २	,,	,,	३	०	०	२	,,

सर्व सूत्र संख्या भी २५-९३-९३०-३७५-८१=८१-८४-९३-९८-९३-९३-४ एवं २०५० बोल जाणवा ।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० १४०

श्री पन्नवणासूत्र पद ५ (अजीवपर्यव).

थोकडा नं० १३७ में जो जीव पर्यवकी परिभाषा बतलाई है उसी परिभाषासे इस थोकडाको समझ लेना इसमें उपयोग १२ नहीं है क्योंकि उपयोग जीवका गुण है अजीवका नहीं।

हे भगवान ! अजीव पर्यव क्या संख्याते, असंख्याते या अनंते हैं ? गौतम ! संख्याते, असंख्याते नहीं किन्तु अनंते हैं। क्योंकि अजीव पांच प्रकारके है। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय और काल जिसमें धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकायके असंख्यात २ प्रदेश है। और आकाशास्ति-काय और पुद्गलास्तिकायके अनंत प्रदेश हैं तथा कालके भी अनंते समय है और एकेक प्रदेशके अंदर अगुरुलघुपर्याय अनंती २ हैं इसलिये अनंते पर्यव हैं। यहां पर मुख्यता पुद्गलास्तिकायकी ही व्याख्या समझनी। और उसीकों ही आगे बतलावेंगे।

अजीव पर्यवकों शास्त्रकारने दशद्वार करके बतलाये है। (१) द्रव्य (२) क्षेत्र (३) काल (४) भाव (५) अवगाहना (६) स्थिति (७) भाव (८) प्रदेशअवगाहना (९) प्र०स्थिति (१०) प्र०भाव।

(१) द्रव्यपर्यव.

[illegible]र मर्गणा	द्रव्य	प्रदेश	अवगाहना	स्थिति	वर्ण	तरतमता
१ परमाणु पुद्गल २	तुल्य	तुल्य	तुल्य	४	१६	६
२ दो प्रदेशी स्कंध २	,,	,,	तुल्यस्यात् १	४	१६	६
३ तीन ,, ,,	,,	,,	प्रदेशन्यूनाधिक	४	१६	६
४ चार ,, ,,	,,	,,	एवं यावत् १०	४	१६	६
५ पांच ,, ,,	,,	,,	प्रदेशकी पृच्छा	४	१६	६
६ छे ,, ,,	,,	,,	में क्रमशः ९	४	१६	६
७ सात ,, ,,	,,	,,	प्रदेशन्यूनाधिक	४	१६	६
८ आठ ,, ,,	,,	,,	समझना	४	१६	६
९ नौ ,, ,,	,,	,,	,,	४	१६	६
१० दश ,, ,,	,,		,,	४	१६	६
११ संख्यात प्र०,,	,,	२	२	४	१६	६
१२ असंख्यात,, ,,	,,	४	४	४	१६	६
१३ अनन्त ,, ,,	,,	६	४	४	२०	६

(२) क्षेत्रापेक्षापर्यव.

१ एक आकाशप्र. अव. २	तुल्य	६	तुल्य	४	१६	६
२ दो ,, ,,	,,	६	,,	४	१६	६
३ तीन ,, ,,	,,	६	,,	४	१६	६
४ चार ,, ,,	,,	६	,,	४	१६	६

५ पांच आकाशप्र० अवगाहा २	तुल्य	६	तुल्य	४	१६	६
६ छे ,, ,,	,,	६	,,	४	१६	६
७ सात ,, ,,	,,	६	,,	४	१६	६
८ आठ ,, ,,	,,	६	,,	४	१६	६
९ नौ ,, ,,	,,	६	,,	४	१६	६
१० दश ,, ,,	,,	६	,,	४	१६	६
११ संख्यात ,, ,,	,,	६	२	४	१६	६
१२ असंख्यात,, ,,	,,	६	४	४	२०	६

(३) कालापेक्षापर्यव.

१ एक समयकी स्थितिका पुद्गल २	तुल्य	६	४	तुल्य	२०	६
२ दो ,, ,, ,,	,,	६	४	,,	२०	६
३ तीन ,, ,, ,,	,,	६	४	,,	२०	६
४ चार ,, ,, ,,	,,	६	४	,,	२०	६
५ पांच ,, ,, ,,	,,	६	४	,,	२०	६
६ छे ,, ,, ,,	,,	६	४	,,	२०	६
७ सात ,, ,, ,,	,,	६	४	,,	२०	६
८ आठ ,, ,, ,,	,,	६	४	,,	२०	६
९ नौ ,, ,, ,,	,,	६	४	,,	२०	६
१० दश ,, ,, क्षेत्र (	,,	६	४	,,	२०	६
११ संख्याता ,, ,, ,,)	,,	६	४	२	२०	६
१२ असं० ,, ,, ,,	,,	६	४	४	२०	६

(४) भावापेक्षापर्यव.

१ एक गुण काला पु० २	तुल्य	६	४	४	१ तुल्य	१९	६
२ दो ,, ,,	,,	६	४	४	स्वगुण,,	१९	६
३ तीन ,, ,,	,,	६	४	४	,, ,,	१९	६
४ चार ,, ,,	,,	६	४	४	,, ,,	१९	६
५ पांच ,, ,,	,,	६	४	४	,, ,,	१९	६
६ छे ,, ,,	,,	६	४	४	,, ,,	१९	६
७ सात ,, ,,	,,	६	४	४	,, ,,	१९	६
८ आठ ,, ,,	,,	६	४	४	,, ,,	१९	६
९ नौ ,, ,,	,,	६	४	४	,, ,,	१९	६
१० दश ,, ,,	,,	६	४	४	,, ,,	१९	६
११ संख्यात,, ,,	,,	६	४	४	,, ,,	१९	६
१२ असं० ,, ,,	,,	६	४	४	,, ,,	१९	६
१३ अनन्त ,, ,,	,,	६	४	४	,, ,,	१९	६

२६० एवं शेष निलवर्णादि १९ बोलोंमें पूर्ववत् २४७ बोल लगा लेना.

(५) अवगाहनापेक्षापर्यव.

१ ज० अव० दो प्र० स्कन्ध २ +	तुल्य	तुल्य	तुल्य	४	१६	६
२ उ० ,, ,, ,,	,,	,,	,,	४	१६	६
३ ज० ,, तीन ,,	,,	,,	,,	४	१६	६
४ म० ,, ,, ,,	,,	,,	,,	४	१६	६

+ दोप्रदेशीकी मध्यम अवगाहना नहीं होती ।

५ उ०	अव०	तीन	स्कन्ध	२	तुल्य	तुल्य	तुल्य	४	१६
६ ज०	,,	चार	,,		,,	,,	,,	४	१६
७ म०	,,	,,	,,		,,	,,	,,	१ न्यू	१६
८ उ०	,,	,,	,,		,,	,,	,,	४	१६

२६ एवं ५-६-७-८-९-१० प्रदेशीस्कन्ध भी समझना परन्तु मध्यम अवगाहना चारप्रदेशीस्कन्धसे यावत् दशप्रदेशी स्कन्धकी, पृच्छामें क्रमशः एकप्रदेशसे यावत् सातप्रदेश न्यूनाधिक कहना ।

२७ ज०	अव०	सं० प्र०	स्कन्ध	२	तुल्य	२	तुल्य	४	१६	६
२८ म०	,,	,,	,,		,,	२	२	४	१६	६
२९ उ०	,,	,,	,,		,,	२	तु०	४	१६	६
३० ज०	,,	असं०	,,		,,	४	,,	४	१६	६
३१ म०	,,	,,	,,		,,	४	४	४	१६	६
३२ उ०	,,	,,	,,		,,	४	तु०	४	१६	६
३३ ज०	,,	अनं०	,,		,,	६	,,	४	१६	६
३४ म०	,,	,,	,,		,,	६	४	४	२०	६
३५ उ०	,,	,,	,,		,,	६	तु०	तु०	१६	६

(६) स्थितिअपेक्षापर्यव.

१ ज०	स्थितिका	परमाणु	२	तुल्य	तुल्य	तुल्य	तुल्य	१६	६
२ म०	,,	,,		,,	,,	,,	४	१६	६
३ उ०	,,	,,		,,	,,	,,	तु०	१६	६

४ ज० स्थितिका दो० प्र० २	तुल्य	तुल्य	एकप्र०न्यू०	तुल्य	१६	६
५ म० ,, ,,	,,	,,		४	१६	६
६ उ० ,, ,,	,,	,,		,,	१६	६

३० एवं ३–४–५–६–७–८–९–१० प्रदेशीकी पृच्छा परन्तु अवगाहनामें १ प्रदेशसे क्रमशः यावत् ९ प्रदेश न्यूनाधिक कहना शेष द्विप्रदेशीवत् ।

११ ज० स्थितिका सं० प्र० २	तुल्य	२	२	तुल्य	१६	६
१२ म० ,, ,, ,,	,,	२	२	४	१६	६
१३ उ० ,, ,, ,,	,,	२	२	तु०	१६	६
१४ ज० ,, असं० ,,	,,	४	४	,,	१६	६
१५ म० ,, ,, ,,	,,	४	४	४	१६	६
१६ उ० ,, ,, ,,	,,	४	४	तु०	१६	६
१७ ज० ,, अनं० ,,	,,	६	४	,,	२०	६
१८ म० ,, ,, ,,	,,	६	४	तु०	२०	६
१९ उ० ,, ,, ,,	,,	६	४	,,	२०	६

(७) भावापेक्षापर्यव.

१ ज० कालागुण परमाणु २	तुल्य	तुल्य	तुल्य	४	१तु११	६
२ म० ,, ,,	,,	,,	,,	४	१२	६
३ उ० ,, ,,	,,	,,	,,	४	१तु११	६
४ ज० ,, दोप्रदेशी २	,,	,,	एकप्र०न्यू०	४	,,	६
५ म० ,, ,,	,,	,,		४	१२	६
६ उ० ,, ,,	,,	,,		४	१तु११	६

३० एवं ३-४-५-६-७-८-९-१० प्रदेशी भी समझना परन्तु अवगाहनामें १ प्रदेशसे यावत् ९ प्रदेश न्यूनाधिक कहना शेष द्विप्रदेशीवत् ।

३१ ज० कालागुण सं० प्र० २	तुल्य	२	२	४	१तु११	६
३२ म० ,, ,, ,,	,,	२	२	४	१२	६
३३ उ० ,, ,, ,,	,,	२	२	४	१तु११	६
३४ ज० ,, असं० ,,	,,	४	४	४	,,	६
३५ म० ,, ,, ,,	,,	४	४	४	१२	६
३६ उ० ,, ,, ,,	,,	४	४	४	१तु११	६
३७ ज० ,, अनं० ,,	,,	६	४	४	१तु१५	६
३८ म० ,, ,, ,,	,,	६	४	४	१६	६
३९ उ० ,, ,, ,,	,,	६	४	४	१तु१५	६

३५१ एवं पांच वर्ण, पांच रस । कुल ३९०

३५२ ज०अनं०प्र०कक्खडा स्पर्श २	तुल्य	६	४	४	१तु१८	६
३५३ म० ,, ,, ,,	,,	६	४	४	१९	६
३५४ उ० ,, ,, ,,	,,	६	४	४	१तु१८	६

२६३ एवं मृदु, गुरु, लघु यह चारस्पर्श सदृश समझना.

३६४ ज० सुरभिगन्ध परमाणु २	तुल्य	तुल्य	तुल्य	४	१तु१४	६
३६५ म० ,, ,,	,,	,,	,	४	१५	६
३६६ उ० ,, ,,	,,	,,	,,	४	१तु१४	६

१६७ ज०	,,	दो० प्र०	तुल्य	तुल्य	एक प्र० हीं०	४	१ तू १४	६
१६८ म०	,,	,,	,,	,,		४	१५	६
१६९ उ०	,,	,,	,,	,,		४	१ तू १४	६

एवं ३ प्र० से १० प्र० तक समझना परन्तु अवगाहनामें १ प्र० से यावत् ९ प्रदेश न्यूनाधिक कहना.

ज० सुरभिगंध सं० प्रदेशी २	तु०	२	२	४	१ तू	१४	६
म० ,, ,, ,,	,,	२	२	४		१५	६
उ० ,, ,, ,,	,,	२	२	४	१ तू	१४	६
ज० ,, असं० ,,	,,	४	४	४	१ तू	१४	६
म० ,, ,, ,,	,,	४	४	४		१५	६
उ० ,, ,, ,,	,,	४	४	४	१ तू	१४	६
ज० ,, अनं० ,,	,,	६	४	४	१ तू	१८	६
म० ,, ,, ,,	,,	६	४	४		१९	६
उ० ,, ,, ,,	,,	६	४	४	१ तू	१८	६

एवं, दुरभिगंध, शीत, उष्ण, स्निग्ध और रुक्ष भी समझ लेना।

(८-९-१०) प्रदेश अव० स्थिति० भाव पर्यव द्वार.

ज० प्रदेशी स्कन्ध २	तु०	तु०	१ प्र० वि	४	१६	६
म० ,, ,,	,,	६	४	४	२०	६
उ० ,, ,,	,,	तु०	४	४	२०	६
ज० अव० पुद्गल २	,,	६	तु०	४	१६	६
म० ,, ,,	,,	६	४	४	२०	६
उ० ,, ,,	,,	३	तु०	तु०	१६	६

ज० स्थिति पुद्गल	,,	६	४	तू०	१०
म० ,, ,,	,,	६	४	४	२०
उ० ,, ,,	,,	६	४	तू०	१०
ज० काला गुण पुद्गल २	,,	६	४	४	१तू०१९
म० ,, ,,	,,	६	४	४	२०
उ० ,, ,,	,,	६	४	४	१तू०१९

एवं पांच वर्ण पांच रस भी समझना.

ज० सुरभिगंध पुद्गल २ तु०	६	४	४	१ तू १८
म० ,, ,, ,,	६	४	४	१९
उ० ,, ,, ,,	३	४	४	१ तू १८

एवं दूर्भिगन्ध तथा ८ स्पर्श भी समझ लेना.

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकड़ा नं० १४१

श्री पन्नवणा सूत्र पद ६ (विरहद्वार)

जिस योनि में जीव हैं वह उस योनि से निकल कर अन्य योनि में जावे । अगर उस योनि से नहीं निकले तो कितने काल तक नहीं निकले । यह इस थोकड़ेद्वारा बतलावेंगे । सब योनि में जघन्य एक समय का विरहकाल हैं, उत्कृष्ट नीचे प्रमाणे—

समुच्चय चारगति, संज्ञीमनुष्य, संज्ञीतिर्यंचमें निकलनेका विरह पड़े तो उत्कृष्ट १२ मुहूर्त । पहिलीनारकी, १० भुवनपति १ व्यंतर, १ ज्योतिषी, सौधर्म, ईशान दे० और असंज्ञी मनुष्य में २४ मुहूर्त का विरहकाल हैं ।

दूसरी नारकी में ७ दिन,
तीजी नारकी में १५ दिन
चौथी ,, ,, १ मास
पांचमी ,, ,, २ ,,
छट्ठी ,, ,, ४ ,,
सातमी नरक और ६४ इन्द्र } ६ मास
पांचस्थावर विरह नहीं
तीन विकलेंद्रिय असन्नी तिर्यंच } अंतर-मुहूर्त
संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय व मनुष्य } १२ मुहूर्त

तीजा देवलोकमें ९दिन २०मुहूर्त
चौथा ,, १२ दिन २० ,,
पांचमा ,, २२॥ दिन
छट्ठा ,, ४५ दिन
सातमा ,, ८० दिन
आठमा ,, १०० दिन
नौवा दशवा देवलोक सेंकडो मास
११-१२ वा ,, सेंकडो वर्ष
पहला त्रिक ग्रैवेक सं०सेंकडो वर्ष
दूसरा ,, सं०हजारो वर्ष
तीसरा ,, सं० लखो ,,
चारानुत्तर वैमान पल्यो. अ० भाग

सर्वार्थसिद्ध पल्यो० सं० भाग.

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० १४२

श्री पन्नवणासूत्र पद ६

नारकीके नैरीये सान्तर उत्पन्न होते हैं या निरन्तर ? सान्तर भी उत्पन्न होते हैं और निरंतर भी उत्पन्न होते हैं. एवं पांचस्थावरवर्जके शेष १९ दंडकके जीव समझना, एवं सिद्ध भगवान् । और पांचस्थावर निरंतर उत्पन्न होते हैं. इसी माफिक

वैमानिकके दंडकमें नौवा देवलोकसे सर्वार्थसिद्धतक १-२ यावत संख्याते उत्पन्न होते है । सिद्धावस्थामें १-२ यावत् १०८ उत्पन्न होते हैं ।

निकलनेका भी सूत्र कहना, परन्तु सिद्धोंका प्रश्न नहीं करना क्योंकि सिद्ध पीछे नहीं आते हैं।

नारकीके नैरिये एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ? एक समय १-२-३ यावत् संख्याते असंख्याते उत्पन्न होते हैं, एवं पांचस्थावरवर्जके शेष १९ दंडक समझना। पांचस्थावरमें प्रतिसमय असंख्याते उत्पन्न होते हैं किन्तु वनस्पतिकायमें स्वकायापेक्षा प्रतिसमय अनंत भी उत्पन्न होते हैं. इसी माफिक चौवीस दंडकका चवण द्वार भी समझना किन्तु सिद्ध भगवान् उत्पन्न होते हैं पर चवते नहीं हैं.

कौनसे दंडकके जीव परभवका आयुष्य किस समय बांधते हैं ? नारकी, देवता और युगल मनुष्य अपने आयुष्यके शेष ६ मास रहनेपर परभवका आयु बांधते हैं और वह सब निरूपक्रमी होते हैं. शेष जीवोंका आयुष्य दो प्रकारका है—एक सोपक्रमी, दूसरा निरुपक्रमी. जो निरुपक्रमी होता है. वह नियमा अपने आयुष्यके तीजे भाग अर्थात् दो भाग आयुष्य बीतजानेपर तीजे भागकी सुरुमें परभवका आयुष्य बांधते हैं; और सोपक्रमी आयुष्यवाले जीव तीजे भाग नौमेंभाग सतावीसमें भाग इकीयासीमें भाग २४३ में भाग यावत् आयुष्यका शेष अन्तरमुहूर्त रहतेहुवे परभवका आयुष्य बांधते है.

आयुष्यकर्मके साथ छ बोलोका और भी बंध होता है.

(१) जातिनाम=एकेन्द्रियादि

(२) गतिनाम=नरकादि

(३) स्थितिनाम=अन्तर मुहूर्त से यावत् ३३ सागर.

(४) अवगाहनानाम=शरीरका प्रमाण.

(५) प्रदेशनाम=परमाणुादि प्रदेश.

(६) अनुभागनाम=शुभाशुभ प्रकृतियोका रस.

समुचय एक जीव और नरकादि चौवीसदंडकके एकैक जीव आयुष्यकर्मके साथमें उपर कहे छ बोलबांधते हैं. एवं २५ को छ गुना करनेसे १५० भागे एवं बहुवचनकी अपेक्षा भी १५० कुल ३००, इसी तरह तीनसौ निद्धस और तीनसौ निकाचित बंधके एवं ६००, यह छसौ नामकर्म छसौ गोत्रकर्म छसौ नामगोत्रकर्मके साम्मिल करनेके सब मिलाके १८०० भागे आयुष्य कर्मके हुवे.

जीव जातीनाम, निद्धसआयुष्य बांधते है, वे कितनी आकर्षनासे पुद्गल ग्रहण करते हैं, अर्थात् आयुष्यकर्मके पुद्गलोंको खेचते हैं. जैसे पाणी पीती हुई गाय पानीको खेचे वैसे जीव पुद्गलोंको खेचता है. वह कितनी आकर्षनासे खेचता है ?

एक दो तीन यावत् उत्कृष्ट आठ आकर्षनोसे कर्मपुद्गल खेंचते है. इसमें एकसे यावत् आठ आकर्षन करनेवाले जीवोंमें ज्यादा कम कौन है वे अल्पाबहुत्व करके बताते है.

(१) आठ आकर्षना कर कर्मबंधने वाले जीव सबसे स्तोक—

(२) सात ,, ,, जीव संख्यातगुणा

(३) छ ,, ,, ,, ,,

(४) पांच ,, ,, ,, ,,

(५) चार ,, ,, ,, ,,

(६) तीन ,, ,, ,, ,,
(७) दो ,, ,, ,, ,,
(८) एक ,, ,, ,, ,,

जैसे जातिनाम निद्धत्तकी समुचयजीवापेक्षा एक अल्पाबहुत्व बताई है इसी माफिक गतिनामादि छ बोलोंकी अल्पाबहुत्व समुचय जीवकी और नरकादि २४ दंडक पर छ छ अल्पाबहुत्व करनेसे १५० अल्पाबहुत्व यावत् उपरवत् १८०० भागोंकी अल्पाबहुत्व समझना । इति.

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० १४३

श्री पन्नवणासूत्र पद १० (चरमपद)

चरमकी अपेक्षा अचर्म होता हैं और अचर्मकी अपेक्षा चरम होता हैं. इसमें कमसे कम दो पदार्थ अवश्य होना चाहिये. यहांपर रत्नप्रभादि एकेक पदार्थका प्रश्न है. इसके उत्तरमें एक अपेक्षा नास्ति है और दूसरी अपेक्षा अस्ति है. इसीको स्याद्वाद कहते है.

पृथ्वी कितने प्रकारकी है ? आठ प्रकारकी है. यथा=रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, वालुप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमप्रभ, तमस्तमाप्रभा और इशीत्प्रभारा (सिद्धशीला)

रत्नप्रभा नरक क्या (१) चरम है. (२) अचरम है (३) बहुत चरम है (४) बहुत अचरम है (५) चरम प्रदेश है (६) अचरम प्रदेश है ? रत्नप्रभा नरक द्रव्यापेक्षा एक हैं इस लिये

चर्मादि ३ बोल नहीं हो सकते, दूसरी अपेक्षा यदि रत्नप्रभा नरकके दो विभाग कर दिये जाय एक मध्यविभाग, दूसरा अन्तविभाग, और फिर उत्तर दिया जाय तो इसमें चरमपदका अस्तित्व होता है. यथा यह रत्नप्रभा नरक द्रव्यापेक्षा (१) चर्म है क्योंकि मध्यके भागकी अपेक्षा बाहर (अन्त) का भाग चर्महैं. (२) अचर्म भी है क्योंकि अन्तकेभागकी अपेक्षा मध्यकाभाग अचर्महै. क्षेत्रकी अपेक्षा (३) चर्मप्रदेश हैं (४) अचर्मप्रदेश भी है क्योंकि अन्तके प्रदेशकी अपेक्षा मध्यके प्रदेश अचर्म है.

जैसे रत्नप्रभा नारकी कही वैसेही सातों नरक १२ देवलोक ९ ग्रैवेक ५ अनुत्तरवै १ इसीत्प्रभारापृथ्वी १ लोक और १ अलोक एवं ३६ बोलों को उपरवत् चार चार बोल लगानेसे १४४ बोल होते हैं.

उपर बताये हुवे रत्नप्रभादि ३६ बोलोंके चर्मप्रदेशमें तारतम्यता है, उसकी अल्पाबहुत्व कहते हैं.

(१) रत्नप्रभा नारक के चर्माचर्म द्रव्य और प्रदेशकी अल्पा०

[१] द्रव्याल्पा०

(१) सबसे स्तोक अचर्मद्रव्य (२) चर्मद्रव्य असं० गु०
(३) चर्माचर्म द्रव्य वि० ।

[२] प्रदेशाल्पा०

(१) सबसे स्तोक चर्मप्रदेश (२) अचर्मप्रदेश असं०गु०
(३) चर्माचर्म प्रदेश वि०

[३] द्रव्य और प्रदेशकी सामिल अल्पा०

(१) सबसे स्तोक अचर्मद्रव्य (२) चर्मद्रव्य असं० गु०

(३) चर्माचर्म द्रव्य वि० (४) चर्म प्रदेश असं० गु०
(५) अचर्मप्रदेश असं० गु० (६) चर्माचर्म प्र० वि०

इसी तरह अलोक छोडके शेष ३५ बोलों की अल्पाबहुत्व समझ लेना.

[४] अलोकके द्रव्यकी अल्पा०

(१) सबसे स्तोक अलोकमें अचर्मद्रव्य (२) चर्मद्रव्य असं० गु० (३) चर्माचर्म द्रव्य वि०

[५] प्रदेशकी अल्पा०

(१) सबसे स्तोक अलोकमें चर्म प्रदेश (२) अचर्म प्रदेश अनन्त गु० (३) चर्माचर्म प्रदेश वि०

[६] द्रव्य प्रदेशकी अल्पा०

(१) सबसे स्तोक अलोकमें अचर्म द्रव्य (२) चर्म द्रव्य असं० गु० (३) चर्माचर्म द्रव्य वि० (४) चर्मप्रदेश असं० गु० (५) अचर्मप्रदेश अनन्त गु० (६) चर्माचर्म प्रदेश वि०

[८] लोका लोकके चर्माचर्म द्रव्यकी अल्पा०

(१) सबसे स्तोक लोकालोकका चर्मद्रव्य
(२) लोकका चर्म द्रव्य असं० गु०
(३) अलोकका चर्म द्रव्य वि०
(४) लोका लोकका चर्माचर्म द्रव्य वि०

[९] लोकालोकके चर्माचर्म प्रदेशकी अल्पा०

(१) स्तोक लोकका चर्मप्रदेश (२) अलोकका चर्मप्रदेश विशेषा
(३) लोकका अचर्म प्रदेश असं० गु०
(४) अलोकका अचर्मप्रदेश अनन्त गु०

(५) लोकालोकका चर्माचर्म प्रदेश वि०

[१०] लौकालौक द्रव्य प्रदेश चर्माचर्म की अल्पा०

(१) सर्वसे स्तोक लौकालौकका चर्म द्रव्य

(२) लौकका चर्म द्रव्य असं० गु०

(३) अलौकका चर्म द्रव्य वि०

(४) लौकालौकका चर्माचर्म द्रव्य विशेषा०

(५) लौकका चर्मप्रदेश असंख्यात गु०

(६) अलौकका चर्मप्रदेश विशेषा

(७) लौकका अचर्मप्रदेश असंख्यात गु०

(८) अलौकका अचर्मप्रदेश अनन्त गु०

(९) लौकालौकका चर्माचर्म प्रदेश विशेषा०

[११] ऊपरके नव और सर्व द्रव्य, सर्व प्रदेश, सर्व पर्याय एवं १२ बोलोंकी अल्पाबहुत.

(१) सर्वसे स्तोक लोकालोकका चर्म द्रव्य

(२) लोकका चर्म द्रव्य असं० गु०

(३) अलोकका चर्म द्रव्य विशेषा

(४) लोकालोकका चर्माचर्म द्रव्य विशेष

(५) लोकका चर्म प्रदेश असं० गु०

(६) अलोकका चर्म प्रदेश विशेष

(७) लोकका अचर्म प्रदेश असं० गु०

(८) अलोकका अचर्म प्रदेश अनन्त गु०

(९) लोकालोकका चर्माचर्म प्रदेश विशेषा०

(१०) सर्व द्रव्य विशेषा

(११) सर्व प्रदेश अनन्ता गु०
(१२) सर्व पर्याय अनन्ता गु०

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० १४४

सूत्र श्री पन्नवणा पद १०

रत्नप्रभादि नरक में सापेक्षा चर्म, अचर्म कहा है परन्तु परमाणुके दो विभाग हो नहीं सक्ते हैं इसलिये शास्त्रकारोंने चरम अचरम और अवक्तव्य यह तीन विकल्प किये हैं वह इस थोकड़े द्वारा बतलावेंगे ।

चर्माचर्म और अवक्तव्य इन तीनोंके २६ भांगे होते हैं. इसको नीचे यंत्रमें लिखेंगे जहां एकका अंक है वहां एकवचन और तीनका अंक है वहां बहुवचन समझना ।

असंयोगी भागा ६

नं०	चर्म	नं०	अचर्म	नं०	अवक्तव्य
(१)	१	(३)	१	(५)	१
(२)	३	(४)	३	(६)	३

द्विसंयोगी भांगा १२

चर्म	अचर्म	चर्म	अवक्तव्य	अचर्म	अवक्तव्य
१	१	१	१	१	१
१	३	१	३	१	३
३	१	३	१	३	१
३	३	३	३	३	३

त्रिकसंयोगी भांगा ८

चर्म	अचर्म	अव०	चर्म	अचर्म	अव०
१	१	१	३	१	१
१	१	३	३	१	३
१	३	१	३	३	१
१	३	३	३	३	३

उपर लिखे २६ भांगोसे कौनसा भांगा किस जगह मिलता है सो बतलाते हैं.

(१) परमाणु पुद्गलमें एक भांगा पावे—अवक्तव्य ०

(२) दो प्रदेशी स्कंधमें दो भांगा पावे—पहिला और तीसरा (दोनो एकेक प्रदेश रोका हो तो तीसरा और दोनो एक प्रदेश रोका हो तो पहिला.) ० ० |०

(३) तीन प्रदेशीमें चार भांगा—यथा १—३—९—११ स्थापना १—३ पूर्ववत् नवमा ००० इग्यारहवां ००|०

(४) चार प्रदेशीमें सात भांगा यथा १-३-९-१०-११-१२-१३ जिसमें चार पूर्ववत् दसमों ०००० इग्य ००० बारमों ०००० तेरमें ००० ०

(५) पांच प्रदेशी में इग्यारह भांगा यथा १—३—७—९—१०—११—१२—१३—२३—२४—२५ जिसमें सात पूर्ववत् शेष सातमों ०००० तेवीसमां ०० ०० ० चौवीसमों ००० ०० पचीसमों ००००० ०

(६) छे प्रदेशीमें १५ भांगा यथा १-३-७-८-९-१०-
११-१२-१३-१४-१६-२३-२४-२५-२६-जिसमें १
भांगा पूर्ववत्, आठमो oooo चौदहमो o oo o उगणीसमो
o o
o o o छवीसमो oooo
o

(७) सात प्रदेशीमें १७ भांगा जिसमें १५ पूर्ववत् २०-२१
वीसमो ooo इकीसमो o o o
o o

(८) आठ प्रदेशीमें १८ भांगा जिसमें १७ पूर्ववत्
बाईसमो o o o
o o

(९) नवे प्रदेशीसे अनंतप्रदेशी स्कन्ध तक पूर्ववत् ३८
भांगा समझना.

पूर्वके २६ भांगा में से १८ भांगा काममें आते है और
शेष ८ भांगा २-४-५-६-१५-१६-१७-१८ यह आठ
भांगा काममें नहीं आते; केवल परूपणारूप ही हैं।

इस भांगोको कंटस्थ कर फिर गितार्थके पास खूब अच्छी
तरहसे समझोंगे तो द्रव्यानुयोगमें रमणता करते हुवे अनंत
कर्मोंकी निर्जरा करोगे किं बहुना.

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० १४९

श्री पन्नवणा सूत्र पद १०

(संस्थान)

संसारमें जितने पुद्गगल हैं वह किसी न किसी आकारमें अवश्य है. उस आकारको शास्त्रकारोंने संस्थान कहा है वह इस थोकडे द्वारा कहेंगे.

हे भगवान ! संस्थान कितने प्रकारके हैं ? संस्थान पांच प्रकारके हैं यथा—

(१) परिमंडल—गोल चूड़ीके आकार प्रदार्थ
(२) वट्ट—गोल लड्डूके आकार पुद्गल
(३) त्रंस—तिखूने सिंघोडेके आकार पुद्गगल
(४) चौरंस—चोखूने चौकीके आकार पुद्गल
(५) आयतन—लम्बा—बांसके आकार पुद्गल*

हे भगवान ! परिमण्डल संस्थान इस लोकमें क्या संख्याते, असंख्याते वा अनंते हैं ? संख्याते, असंख्याते नहीं किंतु अनंते हैं एवं यावत् आयतन संस्थान पर्यंत कहना वह पांचो संस्थान लोकमें अनंते अनंते हैं.

हे भगवान् ! परिमण्डन संस्थान क्या संख्याते, असंख्याते वा अनंत प्रदेशी है ? परिमण्डल संस्थान स्यात् संख्यात, स्यात्

---

*भगवती सूत्र श २५ उ० ३ में संस्थान छ प्रकारके कहे हैं. जिसमें पांच तो उपरोक्त और छट्टा अनवस्थित जो इन पांचोसे विलक्षण हो वह सब अनवस्थित संस्थान कहलाता है ।

असंख्यात्, स्यात् अनंत प्रदेशी है. एवं यावत् आयतन संस्थान भी समझना.

हे भगवान् ! संख्यातप्रदेशी परिमण्डलसंस्थान क्या संख्यातप्रदेश अवगाह्या हैं या असंख्यात या अनंतप्रदेश अवगाह्या हैं ? संख्यातप्रदेशावगाह्या हैं पर असंख्यात अनन्त प्रदेश नहीं एवं यावत् आयतन संस्थान भी कहना.

हे भगवान् ! असंख्यातप्रदेशी परिमंडलसंस्थान क्या संख्या० असं० या अनन्त प्रदेश अवगाह्या हैं ? स्यात् संख्यात् स्यात् असंख्यातप्रदेश अवगाह्य; परन्तु अनंतप्रदेश नहीं एवं यावत् आयतन संस्थान भी कहना.

हे भगवान् ! अनन्तप्रदेशी परिमंडलसंस्थान क्या सं० असं० या अनन्तप्रदेश अवगाह्या है? स्यात् संख्यात० स्यात्० असं० प्रदेश अवगाह्या है; किन्तु अनन्ता नहीं। क्योंकि लोक असंख्यात प्रदेशी हैं. एवं आयतन०

हे भगवान् ! संख्यातप्रदेशी परिमंडलसंस्थान संख्यात प्रदेश अवगाह्या क्या चरम है अचर्म है ? घणा चर्म है ? घणा अचर्म है ? घणा चर्मप्रदेश है ? घणा अचर्म प्रदेश है ? रत्नप्रभा नारकीके माफिक प्रथम पक्षसे छ पद निषेद करना. दूसरी अपेक्षा चार पदका उत्तर दिया है. एवं—

(२) असंख्यात प्रदेशी परिमंडल संख्यात प्रदेश अवगाह्या

(३)	,,	,,	,,	असं०	,,	,,
(४)	अनंत	,,	,,	सं०	,,	,,
(६)	,,	,,	,,	असं०	,,	,,

यह पंच सूत्र रत्नप्रभा नारकीके माफिक समझना एवं यावत् आयतन संस्थान भी कहना. अब अल्पाबहुत्व कहते हैं।

(१) सं० प्रदेशी परिमंडल सं० प्र० अवगाहाकी अल्पा०

(द्रव्य)

(१) सबसे स्तोक अचर्म द्रव्य (२) चरम द्रव्य सं० गु०
(३) चरमाचर्म द्रव्य वि०

(प्रदेश)

(१) सबसे स्तोक चर्म प्रदेश (२) अचर्म प्रदेश सं० गु०
(३) चर्माचर्म प्रदेश वि०

(द्रव्य प्रदेश सामिल)

(१) सबसे स्तोक अचर्म द्रव्य (२) चर्म द्रव्य सं० गु०
(३) चर्माचर्म द्रव्य वि० (४) चर्म प्रदेश सं० गु०
(५) अचर्म प्रदेश सं० गु० (६) चर्माचर्म प्रदेश वि०

एवं आयतन संस्थान तक भी कहना.

(२) असं० प्रदेशी परिमंडलसंस्थान संख्यात प्रदेश अवगाहोंकी अल्पा० तीनों उपरवत् समझ लेना।

(३) असं० प्रदेशी परिमण्डलसंस्थान असं० प्रदेश अवगाहोंकी तीनों अल्पा० उपरवत् समझ लेना परन्तु जहाँ संख्याता कहा है वहां असंख्याता कहना रत्नप्रभावत्।

(४) अनंतप्रदेशी परिमंडलसंस्थान संख्यात प्रदेश अवगाहोंकी तीनों अल्पाबहुत्व संख्यात प्रदेशी संख्यात प्रदेश अवगाहोंकी माफिक समझना परन्तु संक्रमण अनंतगुणा कहना।

(५) अनंत प्रदेशी परिमंडल संस्थान असंख्यात प्रदेश अवगाह्योंकी तीनों अल्पाबहुत्व रत्नप्रभावत् परन्तु संक्रमण अनंतगुणा कहना एवं यावत् आयतन संस्थान भी कहना।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० १४६

श्री पन्नवणा सूत्र पद १०

(चर्माचर्म)

द्वार—(१) गति (२) स्थिति (३) भव (३) भाषा (५) श्वासोश्वास (६) आहार (७) भाव (८) वर्ण (९) गंध (१०) रस (११) स्पर्श।

(१) हे भगवान्! एक जीव गतिकी अपेक्षा क्या चर्म है या अचर्म है? स्यात् चर्म है स्यात् अचर्म है अर्थात् जिन्हों जीवोंको तद्‌भव मोक्ष जाना है वे गतिकी अपेक्षा चरम हैं कारण वे जीव अब फिर गतिमें न आवेंगे और जिसको अभी मोक्ष जाने में देरी है या न जावेगा वे गतिकी अपेक्षा अचर्म है कारण वारंवार गतिमें भ्रमण करेगा।

नारकीके नेरीया गतिकी अपेक्षा चर्म है या अचर्म है? स्यात् चर्म स्यात् अचर्म भावना उपरवत् इसी माफिक २४ दंडक यावत् वैमानिक तक कहना।

घणा जीवकी अपेक्षा क्या चर्म है या अचर्म हैं? चर्म भी घणा अचर्म भी घणा एवं यावत् २४ दंडक समजना।

(२) स्थितिकी अपेक्षा नारकी चर्म है या अचर्म है ? स्यात् चर्म स्यात् अचर्म एवं यावत् २४. दंडक ।

घणा नारकी स्थितिकी अपेक्षा चर्म हैं या अचर्म हैं ? चर्म भी घणा अचर्म भी घणा एवं यावत् २४ दंडक कहना ।

(३) भवकी अपेक्षा नारकी चर्म है या अचर्म है ? स्यात् चर्म है स्यात् अचर्म है एवं यावत् २४ दंडक भी कहना।

घणा नारकीकी अपेक्षा ? चर्म भी घणा और अचर्म भी घणा एवं यावत् २४ दंडक समझ लेना ।

(४) नारकी भाषाकी अपेक्षा चर्म है या अचर्म है ? स्यात् चर्म है स्यात् अचर्म है एवं पांच स्थावर वर्जके १९ दण्डक भी समझ लेना । घणा जीवोंकी अपेक्षा चर्म भी घणा और अचर्म भी घणा ।

(५) श्वासोश्वासकी अपेक्षा नारकी चर्म है या अचर्म है ? स्यात् चर्म स्यात् अचर्म एवं यावत् २४ दंडक । घणा जीवोंकी अपेक्षा चर्म भी घणा और अचर्म घणा ।

(६) आहारकी अपेक्षा नारकी चर्म है या अचर्म है ? स्यात् चर्म है स्यात् अचर्म है एवं यावत् २४ दंडक। घणा जीवों की अपेक्षा चर्म भी घणा अचर्म भी घणा ।

(७) भाव (औदयकादि) अपेक्षा नारकी चर्म है कि अचर्म है ? स्यात् चर्म है स्यात् अचर्म है एवं यावत् २४ दंडक। घणा जीवोंकी अपेक्षा चर्म भी घणा अचर्म भी घणा ।

(८) वर्ण, गंध, रस, स्पर्शके २० बोलोंकी अपेक्षा नारकी चर्म है या अचर्म है ? स्यात् चर्म है स्यात् अचर्म है एवं २४ दंडक भी समझ लेना। घणा जीवोंकी अपेक्षा चर्म भी घणा और अचर्म भी घणा।

सेव भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नंबर. १४७

सूत्र श्रीपन्नवणाजी पद ११

(पांच शरीर)

जीव अनादिकालसे इस घोर संसारके अन्दर परिभ्रमण कर रहा है, जिन्हींका मूल कारण जीव स्वगुणोंको छोडके पर-गुणों (पुद्गलोंमें) में रमणता करते हुवे पुराणे संयोगको छोडते है और नये नये संयोगको धारण करते हैं। "संजोगा मूल जीवाणं पत्तो दुःखं परंपरा" सबसे निकट संबन्ध जीवके शरीरसे है इन्हीं शरीरके लिये चैतन्य इतना तो विचारशून्य बन जाता है कि उचित, अनोचित, हिताहित, भक्षाभक्षका भी भान नहीं रहता है। परन्तु यह ख्याल नहीं है कि इस जीवने ऐसा नासमान कितने शरीर कीया होगा वह इस थोकडेद्वारा बताये जावेगा।

शरीर पांच प्रकारका है यथा—

(१) औदारिक शरीर—हाड—मांसादि संयुक्त
(२) वैक्रीय शरीर—हाड—मांस रहित कपूर या पारावत
(३) आहारिक शरीर—पूर्वधर मुनियोंके होता है

(४) तेजस शरीर–आहारकी पाचनक्रिया करे

(५) कार्मण शरीर–कर्मोंका खजाना रूप।

इन पांचो शरीरोंका स्वामी कौन है ? नारकी देवतामें तीन शरीर हैं–वैक्रय, तेजस, कार्मण। तथा पृथ्वी० अप० तेउ० वनस्पति० बेइन्द्रिय० तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय० इन्ही सात बोलोंमें औदारिक० तेजस० कार्मण० तीन शरीर पावे तथा वायुकाय और तिर्यंच पांचेन्द्रियमें शरीर चार पावे–औदारिक० वैक्रय० तेजस० कार्मण० और मनुष्यमें शरीर पांचों पावे, औदारिक० वैक्रय० आहारिक० तेजस० कार्मण इति।

प्रत्येक शरीरके दो दो भेद होते है (१) बन्धेलक–वर्तमान में बन्धा हुवे हैं (२) मुकेलक–भूतकालमें बान्ध बान्ध कर छोड आये थे वह।

(१) **औदारिक शरिरके दो भेद है** (१) बन्धेलक (२) मुकेलक. जिसमें बंधेलक औदारिक शरीर असंख्यात है अर्थात् वर्तमानमें सर्व जीवापेक्षा औदारिक शरीर असंख्याते है वह प्रत्येक समय एकेक औदारिक शरीर गीना जावे तो गीनते २ असंख्याती अवसर्पिणी उत्सर्पिणी पुरण हो जाय और क्षेत्रसे एकेक औदारिक शरीरको एकेकाकाश पर रखा जावे तो असंख्याते लोक पूरण हो जा इतना औदारिक शरीरका बन्धेलक है

नोट–जीव दो प्रकारके है (१) प्रत्येक शरीरी (२) साधारण शरीरी. जिसमें प्रत्येक शरीरी जीव असंख्यात है वह असंख्याते शरीरके बंधक है और साधारण शरीरवाले जीव

अनंता है, परन्तु साधारण अनन्तो जीव भी एक ही शरीरके बंधक है वास्ते अनन्त जीवोंका भी असंख्यात ही शरीर हैं।

(२) मुकेलगा--औदारिक शरीरके मुकेलगा अनन्त शरीर हैं, वे कितना अनन्ते हैं ? एकेक समय एकेक औदारिक शरीरका मुकेलगा निकाले तो अनन्ती उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी व्यतीत हो जाय। क्षेत्रसे—एकेक औदारिक शरीरका मुकेलगाको एकेक आकाशप्रदेश पर रखे तो सम्पूर्ण लोक और लोक जैसे अनन्ते लोक पूर्ण हो जाय। द्रव्यसे—अभव्यसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तमें भाग इतने औदारिकके मुकेलगा हैं।

(२) वैक्रीय शरीरका दो भेद—एक बंधेलगा, दूसरा मुकेलगा। जिसमें बंधेलगा असंख्यात है। एकेक समय एकेक वैक्रीय शरीर निकाले तो असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी व्यतीत हो। क्षेत्रसे—चौदह राजलोका घन चौतरा करने पर सात राज लम्बा और सात राज चौडा होता है. (देखो शीघ्रबोध भाग ८) उसके उपरके परतरकी एकप्रदेशी श्रेणी है—जिसके असंख्यातमें भागमें जितने आकाशप्रदेश आवे उतने वैक्रीय शरीर के बंधेलगा हैं दूसरे मुकेलगा अनन्ते हैं औदारिक शरीरवत्।

(३) आहारक शरीरका दो भेद—बंधेलगा और मूकेलगा. जिसमें बंधेलगा स्यात् मिले स्यात् न मिले. अगर मिले तो जघन्य १—२—३ यावत् उत्कृष्ट प्रत्येक हजार. मूकेलगा अनंते औदारिक शरीरवत्, क्योंकि भूतकाल अनन्त हैं उसमें अनन्ते जीवोंने आहारक शरीर करके छोडा हैं।

(४) **तेजस शरीरका दो भेद**–बंधेलगा और मूकेलगा. जिसमें बंधलगा अनन्ते हैं. कालसे एकेक समय एकेक तेजस शरीर निकाले तो अनन्ती उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी, व्यतीत होती हैं. क्षेत्रसे–एकेक तेजस शरीर एकेक आकाशप्रदेश पर रखे तो लोक जैसे अनन्ते लोक पूर्ण होते हैं. द्रव्यसे–सिद्धोंसे अनन्त गुणे सर्व जीवके अनन्तमें भाग हैं. कारण सिद्धोंके तेजस शरीर नहीं हैं इसलिये अनन्तमें भाग कम कहा और मुकेलगा अनन्ते हैं। काल, क्षेत्र पूर्ववत् द्रव्यसे सब जीवोंसे अनन्त गुणे, और सर्व जीवोंका वर्गमूल करनेसे अनन्तमें भाग कम, वर्ग उसे कहते हैं के बराबरी की संख्याको परस्पर गुणा करना।

(५) **कार्मण शरीरके दो भेद**-तेजस् शरीरवत् समझ लेना, कारन तेजस शरीर है वहां कार्मण शरीर नियमा है इसलिये बराबर समझना।

इति समुचय जीव.

नारकीमें औदारिक, आहारक शरीरका बंधेलगा नहीं है और मूकेलगा अनन्ते हैं। समुच्चयवत् और वैक्रीयका दो भेद हैं–बंधेलगा और मूकेलगा. जिसमें बंधेलगा असंख्याते हैं. कालसे–असंख्याती उत्सार्पिणी अवसर्पिणी, क्षेत्रसे–चौदह राजलोकका घन चौतरा सात राज प्रमाण हैं, उसके एकप्रदेशी श्रेणीका परतर लीजे जिसमें विषम सूचि अंगुल क्षेत्रमें जितने आकाशप्रदेश आवे उसके प्रथम वर्गमूलको दूसरे वर्गमूलसे गुणा करे उतना हैं, याने असत्य कल्पनासे २५६ आकाशप्रदेश हैं उसका

पहिला वर्गमूल सोलहे हुवा और दूसरा सोलहका वर्गमूल चार हुवा और तीसरा चारका वर्गमूल दो हुवा। यहां पहलेसे और दुसरेसे गुणा करना है इसलिये पहिला वर्गमूल १६ और दूसरा ४को परस्पर गुणा करनेसे ६४ हुवे इतने वैक्रिय शरीर हैं अर्थात् विषमसुचि अंगुलके प्रदेशका वर्गमूल करके प्रथम वर्गमूलको दूसरे वर्गमूलसे गुणा करे उतना हैं और वे भी असंख्याते होते हैं और वैक्रीय शरीरका मूकेलगा अनन्ते हैं। समुचयवत् तेजस, कर्मणका बंधेलगा वैक्रीयवत् और मूकलेगा समुचयवत्.

असुरकुमार देवताओंमें औदारिक आहारकका बंधेलगा नहीं हैं. मूकेलगा अनन्ते हैं। समुचयवत् और वैक्रीयका दो भेद, (१) बंधेलगा, (२) मूकलेगा जिसमें बंधेलगा असंख्याते हैं. कालसे असंख्याती उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी क्षेत्रसे ७ राजघन* चौतराकीजे जिसकी श्रेणी परतर एक प्रदेशीके असंख्यातमें भाग क्षेत्रसे विषम सूची अंगुलमें जितना प्रदेश (असंख्याता) आवे

---

* घन एटले चारो बाजु लंबो चोडो माप में बराबर होवो जोइए.

सातराज

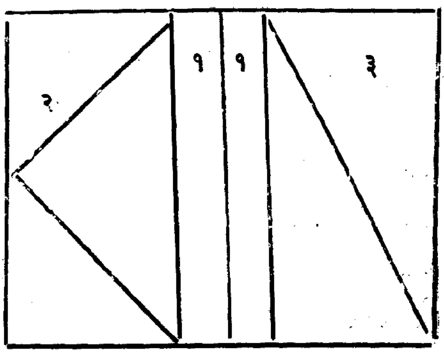

घन चौतरो

इसका प्रथम वर्गमूल निकालना और जितना प्रदेश प्रथम वर्गमूलमें आवे उतने असूरकुमारके वैक्रिय शरीरका बंधेलेगा है। जैसे असत्य कल्पनासे प्रदेश २५६ है जिसका प्रथम वर्गमूल १६ दूसरा ४ और तीसरा २ है तो यहां प्रथम वर्गमूलके असंख्यातमें भाग जितना आकाशप्रदेश आवे उतने असुरकु० हैं और तैजस, कार्मणका बंधेलगा वैक्रियवत् तीनोंका मुकेलगा अनन्ते समुच्चयवत्.

एवं नागादि नव निकायके देवता भी समझना.

पृथ्वीकायमें वैक्रीय, आहारकि के बंधेलगा नहीं हैं, मुकेलगे अनन्ते हैं। समुचयवत् पृथ्वीकायमें औदारिक शरीरके दो भेद हैं (१) बंधेलगा (२) मूकेलगा जिसमें बंधेलगा असंख्याते हैं. कालसे एकेक समयमें एकेक औदारिक शरीर निकाले तो असं० उत्सर्पिणि, अवसर्पिणि व्यतीत हो जाय. क्षेत्रसे एकेक आकाशप्रदेशपर एकेक औदारिक शरीर रखते २ सम्पूर्ण लोक और ऐसे असंख्याते लोक पूर्ण हो जाय। मुकेलगा अनन्ते अभव्यसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तमें भाग हैं. तेजस् कार्मणका बंधेलगा औदारिक जितना और मूकेलगा अनन्ते समुचयवत् इसी माफक अपकाय, तेऊकाय, वायुकाय और वनस्पतिकाय भी समझना, परन्तु वायुकायमें वैक्रीय शरीरका बंधेलगा असं० हैं। वे समय २ निकाले तो क्षेत्र पल्योपमके असंख्यातेमें भाग समय हो उतना और वनस्पतिमें, तेजस कार्मणका बंधेलगा अनन्ते हैं। कालसे अनन्ती उत्सर्पिणि, अवसर्पिणि, क्षेत्रसे अनन्ते लोकाकाश जितना, द्रव्यसे सर्व जीवसे अनन्ते

गुणे और सर्वजीवोंका वर्गमूल करनेसे अनन्तमें भाग ऊणा (न्यून) हैं.

बेइन्द्रियमें औदारिक शरीरके दो भेद हैं। बंधेलगा और मूकेलगा. जिसमें बन्धेलगा असंख्याते हैं। कालसे—असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी। क्षेत्रसे—सातराजका घनचौतरा कराना जिसके श्रेणी परतरके असंख्यातमें भाग जिसका विषमसूचि असंख्याता कोडाकोडी योजन क्षेत्र लीजे उसमें आकाशप्रदेश आवे उनको वर्गमूल कीजे। जैसे ६५५३६ का वर्गमूल २५६ और २५६ का वर्गमूल १६ और इसका वर्ग ४ इसका २। सर्व वर्ग-मूलोंको इकठा करनेसे २७८ प्रदेश होते हैं। इतनी २ जगह एकेक बेइन्द्रियको रखते २ सम्पूर्ण परतर भर जाय ओर मूकेलगा समुच-यवत् इसी माफक तेजस कार्मणका बंधेलगा मूकेलगा भी समझना।

बीन्द्रियमें वैक्रीय आहारकका बंधेलगा नहीं हैं। मूकेलगा समुचयवत् एवं तीन्द्रियय, चौरिन्द्रिय और तिर्यंचपंचेंद्रिय भी समझना, परन्तु तिर्यंचपंचेन्द्रियमें वैक्रीय शरीरका बंधेलगा भुवनपतिकी माफक तथा क्षेत्रके वर्गमूलमें १६ प्रदेश आया था जिसके असंख्यातमें भाग तिर्यंचपंचेन्द्रियमें वैक्रीय शरीरका बंधेलगा हैं। शेषाधिकार बीरिंद्रियवत्.

मनुष्यमें औदारिक शरीरका दो भेद है—बंधेलगा और मूके-लगा। जिसमें औदारिक शरीरका बंधेलगा स्यात् संख्याते स्यात् असंख्याते कारण मनुष्य संज्ञी संख्याते है और असंज्ञी असंख्याते। जो संख्याते हैं वे तीजा जमल परतरके ऊपर और चौथा जमल

परतरके अन्दर (जमल परतरके आठ अंक होते हैं) अर्थात् २९ अंक जितने संज्ञी मनुष्य हैं–७९२२८१६२५१४२६४३३७-५९३५४३९५०३३६ इतनी संख्याके मनुष्य हैं अथवा १ को छिन्नव (९६) वारगुणा करे इतना मनुष्य है और जो असंख्याते औदारिक हैं वे कालसे असंख्याती उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी और क्षेत्रसे लोकका धन चौतरा कीजे जिसके एक आकाशकी श्रेणी परतर जिसमें आकाशप्रदेशकी असत्य कल्पना ६५५३६ जिसका वर्गमूल–२५६–१६–४–२ दूजेको चौथेसे गुणा करनेसे ३२ प्रदेशप्रमाण एकेक मनुष्यको बैठनेके लिये स्थान दे तो सम्पूर्ण परतर भर जाय, परन्तु एक रूप कम रहे। मूकेलगा समुचयवत्। इसी माफक तेजस कार्मण भी समझना। वैक्रिय शरीरका बंधेलगा स्यात् मिले स्यात् न मिले अगर मिले तो संख्याते मिले क्योंकि संज्ञी मनुष्य ही वैक्रिय करते हैं। मूकेलगा समुचयवत्। आहारिकका बंधेलगा स्यात् मिले स्यात् न मिले अगर मिले तो सख्याते मिले और मूकेलगा समुचयवत्।

व्यंतर देवतामें औदारिक और आहारिकके बन्धेलगा नहीं हैं और मुकेलगा समुचयवत्। वैक्रियके बन्धेलगा असंख्याते हैं। कालसे–असंख्याती अवसर्पिणी, उत्सर्पिणी, क्षेत्रसे–७ राजका-चौतरा कीजे श्रेणी परतरसे विषम सूचि अंगुल क्षेत्र लीजे जिसमें संख्याते सौयोजन (तीन सौ योजन) का क्षेत्र एकेक व्यंतरको बैठनेके लिये जगह दी जावे तो सम्पूर्ण परतर भर जावे। मुकेलगा समुचय माफक अनंते, तेजस कार्मण वैक्रियकी माफक।

ज्योतिषीमें औदारिक आहारिकके बन्धेलगे नहीं हैं और

मुकेलगे समुचयकी माफक अनन्ते हैं। वैक्रिय शरीरका दो भे हैं (१) बन्धेलगा (२) मूकेलगा जिसमें बन्धेलगे असंख्याते हैं कालसे–असंख्याती अवसर्पिणी उत्सर्पिणी, क्षेत्रसे–७ घनराजक चौतरा कीजे जिसमें विषम सूची अंगुल क्षेत्र लीजे, उसमें आकाशप्रदेश आवे जिसमें २५६ प्रदेश आते है। एकेक जोतिषीको बैठनेके लिये जगह दी जावे तो संपूर्ण परतर भर जाये इतना वैक्रिय शरीरका बन्धेलगे हैं। मुकेलगे अनन्ते समुचयवत्। तेजस कार्मणका बन्धेलगा मुकेलगा वैक्रियकी माफक.

वैमानिक देवोंमें औदारिक आहारिक के बन्धेलगे नहीं हैं और मुकेलगे अनंते समुचयवत्। वैक्रिय शरीरका बन्धेलगे असंख्याते हैं। कालसे–असंख्याती अवसर्पिणी उत्सर्पिणी, क्षेत्रसे–७ घनराजके परतर श्रेणीमेसे विषम सूची अंगुल क्षेत्र लीजे जिसमें आकाशप्रदेश आवे जैसे २५६ जिसका विर्गमूल कीजे सो प्रथम १६–४–२। दूजा और तीजेका गुणा करनेसे ८ प्रदेश आते हैं इतना (असं०) वैक्रियका बन्धेलगे हैं। मुकेलगे अनन्ते समुचयवत्। एवं तेजस कार्मण भी समझना। इति।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० १४८

श्री पन्नवणासूत्र पद १३

(परिणाम पद)

जिस परिणतीपने प्रणमें उसे परिणाम कहते हैं। जैसे

जीव स्वभावसे निर्मल, सद्चिदानंद हैं परंतु पर प्रयोग कषायमें प्रणमणेसे कषाई कहलाता है यह उपचरित नयकी अपेक्षा हैं, इसका विवरण इस थोकडेद्वारा कहा जायगा वह परिणाम दो प्रकारके होते हैं. (१) जीव परिणाम (२) अजीव परिणाम। हे भगवन् ! जीव परिणाम कितने प्रकारके हैं ? जीव परिणाम दश प्रकार के है यथा–(१) गति परिणाम (२) इन्द्रिय० (३) कषाय० (४) लेश्या० (५) योग० (६) उपयोग० (७) ज्ञान० (८) दर्शन० (९) चारित्र० (१०) वेद० ये दश द्वार चौवीस दंडक पर उतारे जावेगे।

(१) गति परिणामके ४ भेद हैं–(१) नरकगति (२) तिर्यंचगति (३) मनुष्य (४) और देवगति.

(२) इन्द्रिय परि०के ५ भेद हैं=(१) श्रोत्रेन्द्रिय (२) चक्षु० (३) घ्राण० (४) रस० (५) और स्पर्शेन्द्रिय.

(३) कषाय परि०के ४ भेद हैं=क्रोध, मान, माया और लोभ

(४) लेश्या परि०के ६ भेद हैं=(१) कृष्ण, (२) नील, (३) कापोत, (४) तेजो, (५) पद्म (६) शुक्ल.

(५) योग परि०के ३ भेद हैं–(१) मनयोग, (२) वचनयोग और (३) काययोग.

(६) उपयोग परि०के २ भेद हैं–साकार और अनाकार.

(७) ज्ञान परि०के ८ भेद हैं–मतिज्ञान, श्रुति० अवधि० मनपर्यव० केवल० मतिअज्ञान, श्रुतिअज्ञान और विभंगज्ञान

(८) दर्शन परि० के ३ भेद हैं—सम्यग्दर्शन, मिथ्यादर्शन और मिश्रदर्शन.

(९) चारित्र परि० के ७ भेद हैं—सामायिक चा०, छेदोपस्थापनीय०, परिहारविशुद्धी, सुक्ष्मसंपराय० यथाख्यात० अचारित्र और चरिताचारित्र.

(१०) वेद परि० ३ भेद हैं—स्त्री, पुरुष, नपुंसक.

उपर लिखे दश द्वारोंके ४५ बोल हैं और समुचय जीवमें (१) अनेन्द्रिय (२) अकषाय (३) अलेशी (४) अयोगी (५) अवेदी ये ५ बोल भी मिलते हैं इनको मिलानेसे ५० बोल होते हैं।

समुचय जीव पूर्वोक्त ५० बोलपने प्रणमते हैं। इसलिये ५० बोल अस्ति भाव माना है.

(१) नारकीके दंडकमें २९ बोल=गति एक नारकी, इन्द्रिय पांचों ५, कषाय ४, लेश्या ३, योग ३, उपयोग २, ज्ञान ६, (ज्ञान ३ अज्ञान ३), दर्शन ३, चारित्र एक असंयम, वेद एक नपुंसक कुल २९ बोल पावे.

(११) भुवनपति और व्यन्तरमें ३१ बोल=२९ पुर्वोक्त और एक लेश्या और एक वेद अधिक.

(२) ज्योतिषी, सौधर्म, ईशान देवलोकमें २८ बोल=तीन लेश्या कम करनी.

(९) तीजेसे बारहवें देवलोकमें २७ बोल=एक वेद कम करना.

(१) नौग्रैवेकमें २६ बोल=एक दृष्टि कम करनी.

(१) पांच अनुत्तर विमानमें २२ बोल–एक दृष्टि और तीन अज्ञान कम करना.

(३) पृथ्वी, पानी, वनस्पतिमें १८ बोल–१–१–४–४–१ १–२–१–१–१ एवं १८

(२) तेउ, वाउमें १७ बोल–एक लेश्या कम करनी

(१) बींद्रिय में २२ बोल–जिसमें १७ पूर्ववत् और एक रसेंद्रिय, एक वचनयोग, दो ज्ञान, एक दृष्टि, एवं ५ बोल अधिक

(१) तींद्रियमें २३ बोल–एक घ्राणेन्द्रिय अधिक

(१) चोरिन्द्रियमें २४ बोल–एक चक्षुन्द्रिय अधिक

(१) तिर्यंचपंचेन्द्रिमें २९ बोल–क्रमशः १–५–४–६–२ २–६–३–२–३

(१) मनुष्यमें ४७ बोल–तीन गति कम करना.

विशेष विस्तार गुरुगमसे समझो.

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नंबर. १४९

श्रीपन्नवणासूत्र पद १४

(अजीव परिणाम)

अजीव–जो पुद्गल है उसका भी स्वस्वभाव परिणमने का है और उनके दश भेद हैं. (१) बन्दन (२) गति (३) संस्थान (४) भेद (५) वर्ण (६) गंध (७) रस (८) स्पर्श (९) अगुरु-लघु (१०) शब्द.

(१) बन्धन—स्निग्ध, स्निग्धका बन्ध नही होता, रुक्ष रूक्षका बन्ध नहीं होता. जैसे राखसे राखका और और घृतसे घृतका बन्ध नहीं होता. स्निग्ध और रुक्षका बन्ध होता है वह भी सममात्राका बंध नहीं होता परन्तु विषममात्राका बंध होता है। जैसे परमाणु परमाणुका बन्ध नहीं होता परमाणु दो प्रदेशीका बन्ध होता है।

(२) गति—पुद्गलोंकी गति दो प्रकारसे होती है। एक स्पर्श करता हुआ जैसे पानी पर तीतरी चले, और दूसरी अस्पर्श करता हुवा जैसे आकाशमें पांखी।

(३) संस्थान=संस्थान आकारको कहते हैं जो कमसे कम दो परमाणु और जादामें संख्याते, असंख्याते या अनन्ते परमाणुवोंसे बनता है। जिसके परिमंडलसंस्थान वट सं० त्रस सं० चौरस सं० अयतन सं० एवं पांचे भेद हैं।

(४) भेद—पुद्गलों के छेद भेद होता हैं वह पांच प्रकारसे भेदाता है। यथा (१) खन्डा भेद—जैसे काष्टादि जो भेदनेके बाद फिर न मिले। (२) परतर—भोडल, जलपोसादि। (३) चूर्ण—गहुं, बाजरी, सूंठ, मरिचादि। (४) उकलीया—मूंग, मोठादिकी फली जो तापसे फटे। (५) अणुतूडीया—पानी सूख जानें पर मट्टीकी रेखा फट जाती हैं।

(६) वर्ण—काला, नीला, लाल, पीला, सफेद—ये मूल वर्ण पांच हैं, और इनके संयोगसे अनेक होते हैं. जैसे बैगनी, मला-गरी, बदामी, केसरीयादि.

(६) गन्ध—सुगन्ध और दुर्गन्ध.

(७) रस—तिक्त, कटुक, कषायत, खटा और मधुर (मीठे) मूल रस पांच हैं, और नमकको सामिल करनेसे षट्रस कहे जाते हैं.

(८) स्पर्श—कर्कश, मृदुल, गुरु, लघु, शीत, उष्ण, स्निग्ध और रुक्ष.

(९) अगुरुलघु—न हलका और न भारी. जैसे परमाणवादि प्रदेश, मन, भाषा और कार्मण शरीरादिके पुद्गल.

(१०) शब्द—दो भेद, सुस्वर, दुस्वर.

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० १५०

श्रीपन्नवणासूत्र पद १५.

(इन्द्रिय पद)

इन्द्रिय पदका पहिला उद्देशा शिघ्रबोध भाग ९ में छप चुका है.

इस संसारार्णवमें परिभ्रमण करते हुवें एकेक जीवने भूतकालमें कितनी २ इन्द्रियां की ? वर्तमानमें कौनसा जीव कितनी इन्द्रिया बांधके बैठा है ? भविष्यमें कौनसा जीव कितनी इन्द्रिय बांधेगा ? यह सब इस थोकड़े द्वारा कहेंगे ।

इन्द्रिय दो प्रकारकी है. *द्रव्येन्द्रिय और भावेन्द्रिय. जिसमें द्रव्येन्द्रियके ८ भेद यथा. कान दो, नेत्र दो, घ्राण दो (घ्राणके दो स्वर होते हैं) जिह्वा एक, स्पर्श एकं एव आठ इन्द्रियोंको चौवीस दण्डक पर चार २ द्वारसे उतारेंगे।

नारकी १ भुवनपति १० व्यंतर १ ज्योतिषी १ वैमानिक १ तिर्यंच पंचेन्द्री १ मनुष्य १ एवं १६ दंडकमें द्रव्येद्रिय आठ पावे. एकेन्द्रिय के पांच दंडकमें द्रव्येन्द्रिय एक स्पर्शेन्द्रिय पावे. बीन्द्रिय में (२) रस और स्पर्श. तीन्द्रियमे ४ दो घ्राण जादा. चौरिन्द्रियमें ६ दो चक्षु जादा (चक्षु २ घ्राण २ रस १ स्पर्श १)

हे भगवान! एक नारकीके नेरीयाने भूतकालमें द्रव्येन्द्रिय कितनी की वर्तमानमें कितनी हैं भविष्यमें कितनी करेगा? एक नारकीके नेरीया भूतकालमें नारकीपने अनंती वार उत्पन्न हुवा इस लिये अनन्ती इन्द्रिया की है. वर्तमान कालमें ८ इन्द्रिय बांधके बैठा है. भविष्यमें द्रव्येंद्रिय ८-१६-१७ संख्याती, असंख्याती या अनन्ती करेगा क्योंकि जो नारकीसे निकलके मनुष्यका भव कर मोक्ष जायगा उसकी अपेक्षा ८ इंद्रिय कही और जो नारकीसे त्रियंच पंचेंद्रियका भवकर मनुष्य भवमें मोक्ष जायगा उसकी अपेक्षा १६ कही और नारकीसे त्रियंच पंचें-द्रियका भव कर फिर पृथ्वीकायका भव करे और वहांसे मनु-

---

* द्रव्येन्द्रिय दोनो कानो द्वारा इष्ट अनिष्ट शब्द श्रवण करना कथंचित कोई पंचेन्द्रिय जीव एक कानसे न भी सुने तो द्रव्यापेक्षा एक द्रव्येन्द्रिय सुन्य कही जाती हैं. और शब्द सुनके राग द्वेष करना यह भावेन्द्रिय है.

इस भवमें मोक्ष जानेवाला जीव १७ इंद्रिय करेगा और जिसको ज्यादा भव भ्रमण करना है वह संख्याती, असंख्याती या अनन्ती इंद्रियां करेगा इसी तरह सब जगह समझ लेना.

एक असुरकुमारके देवताका प्रश्न—भूतकालमें अनन्ती इन्द्रिया, वर्तमान कालमें आठ, भविष्य कालमें ८–६–१७ संख्याती, असंख्याती या अनन्ती इसमें नौ कहनेका कारण यह है कि असुरकुमारसे निकल पृथ्वीकायमें उत्पन्न हो फिर मनुष्य भवकर मोक्ष जायगा उसकी अपेक्षासे कहा, शेष पूर्ववत्—एवं यावत् स्तनितकुमार भी कहना.

एक पृथ्वीकायके जीवकी पृच्छा—भूतकालमें अनन्ती इंद्रियां, वर्तमानकालमें एक स्पर्शेंद्रिय, भविष्यमें ८–९–१७ संख्याती, असं० या अनन्ती भावना पूर्ववत्—एवं अपूकाय तथा वनस्पतिकाय भी समझ लेना.

एक तेउकायके जीवकी पृच्छा—भूतकालमें अनन्ती इन्द्रियां, वर्तमानमें एक, और भविष्यमें ९–१० सं० असं० या अनन्ती एवं वायुकाय भी समझना.

एक बीन्द्रिय जीवकी पृच्छा—भूतकालमें अनन्ती, वर्तमानमें दो, भविष्यमें नव, दश, सं० असं० या अनन्ती, भावना पूर्ववत्. एवं तीन्द्रिय परन्तु वर्तमानमें ४. एवं चौरिन्द्रिय परंतु वर्तमानमें ८ (यहां आठ नहीं कहनेका कारण यह है कि तेऊ, वायु और विकलेन्द्रि अनन्तर भाव मोक्षगामी नहीं होते हैं।

एक तिर्यच पंचेंदियकी पृच्छा—भूतकालमें अनन्ती, वर्तमानमें ८, भविष्यमें ८—९—१७ सं० असं० या अनन्ती भावना पूर्ववत् ।

एक मनुष्यकी पृच्छा—भूतकालमें अनन्ती, वर्तमानमें ८, भविष्यमें कोई करेगा कोई न करेगा (तद्भव मोक्षगामी) जो करेगा वह ८—९—१० सं० असं० या अनन्ती भावना पूर्ववत् ।

व्यन्तर देवकी पृच्छा—भूतकालमें अनन्ती वर्तमानमें ८ भविष्यमें ८—९—१० सं० असं० या अनन्ती भावना पूर्ववत्—एवं ज्योतिषी, पहिला, दूसरा देवलोक भी समझ लेना ।

तीजा देवलोककी पृच्छा—भूतकालमें अनन्ती, वर्तमानमें ८, भविष्यमें ८—१६—१७ सं० असं० या अनन्ती एवं यावत् नौ ग्रेवेक तक कहना ।

एकेक विजय वैमान देवकी पृच्छा—भूतकालमें अनन्ती, वर्तमानमें ८, भविष्यमें ८—१६—२४ संख्याती करेगा क्योंकि विजय वैमानके देवता पृथ्व्यादिमें नहीं उत्पन्न होते एवं विजयन्त, जयन्त, अपराजित ।

सर्वार्थसिद्ध वैमानके एकेक देवताकी पृच्छा—भूतकालमें अनंती, वर्तमानमें आठ, भविष्यमें आठ, कारण एकावतारी है.

इतिद्वारम्

घणा नारकीके नेरीयोंकी पृच्छा—भूतकालमें अनन्ती, वर्तमान कालमें असंख्याती क्योंकि असंख्याते नारकी है और

भविष्यमें अनंती इन्द्रियां करेगा. क्योंकि नारकीके जीवोंमें भव्याभव्य दोनों हैं एवं यावत् नौग्रैवेक तक कहना, परन्तु वनस्पतिमें जीव अनन्ते हैं तथापि औदारिक शरीर असंख्याते हैं. इस लिये इन्द्रिय असंख्याती कही और मनुष्यमें वर्तमानापेक्षा स्यात् संख्याती स्यात् असंख्याती समझना.

घणा विजय वैमानके देवोंकी पृच्छा—भूतकालमें अनन्ती, वर्तमान कालमें असंख्याती और भविष्यमें असंख्याती करेगा. एवं विजयन्त, जयन्त और अपराजित भी समझना.

घणा सर्वार्थसिद्ध वैमानके देवोंकी पृच्छा—भूतकालमें अनन्ती, वर्तमानमें संख्याती और भविष्यमें संख्याती इन्द्रियां करेंगे।

इतिद्वारम्

एकेक नारकीके नेरीया नारकीपने द्रव्येंद्रियोंकी पृच्छा—भूतकालमें अनंती, वर्तमानमें आठ, भविष्यमें कोई करेगा कोई न भी करेगा. करेगा वह ८–१६–२४ सं० असं० या अनन्ती इन्द्रियां करेगा.

एकेक नारकी के नेरीया असुरकुमारपने द्रव्येन्द्रियां कितनी?—भूतकालमें अनन्ती, वर्तमानमें एक भी नहीं और भविष्यमें कोई करेगा कोई न भी करगा. जो करेगा वह ८–१६–२४ सं० असं० या अनन्ती इन्द्रियां करेगा एवं यावत् स्तनितकुमार ।

एक नारकीका नेरीया पृथ्वीकायपने द्रव्येन्द्रिया कितनी?—भूतकालमें अनंती, वर्तमानमें एक भी नही, भविष्यमें जो करेगा

तो १–२–३ संख्याती असंख्याती अनंती एवं यावत् वनस्पतिकाय, एवं बेइंद्रिय परंतु भविष्यमें अगर करेगा तो २–४–६ संख्याती, असंख्याती, अनंती एवं तीद्रिंय परन्तु भविष्यमें अगर करेगा तो ४–८–१२ संख्याती, असंख्याती, अनंती एवं चौरिंद्रिय परंतु भविष्यमें करेगा तो ६–१२–१८ संख्याती, असंख्याती, अनंती एवं तिर्यंच पंचेन्द्रिय परंतु भविष्यमें करेगा तो ८–१६–२४ संख्याती असंख्याती अनंती एवं मनुष्यमें परंतु, भविष्यमें नियमा करेगा वह स्यात् ८–१६–२४ संख्याती, असंख्याती, अनंती।

व्यंतर ज्योतिषी वैमानिक यावत् नौग्रैवेक तक भूतकालमें अनंती वर्तमानमें एक भी नहीं, भविष्यमें कोई करे कोई न करे अगर करे तो ८–१६–२४ संख्याती० असं० अन०।

एकेक नारकीका नेरिया विजय वैमानपने द्रव्येन्द्रिय कितनी?– भूतकालमें एक भी नहीं की थी, वर्तमान कालमें एक भी नहीं, भविष्यमें कोई करेगा कोई न करेगा अगर करेगा तो ८–१६ कारण विजय वैमानके देवता दो भवसे अधिक नहीं करते एवं विजयन्त, जयन्त, अपराजित.

एवं सर्वार्थसिद्ध परंतु भविष्यमें जो करेगा वह आठ कारण एक भव ही करता है. यह एक नारकीके नेरियेको २४ दंडक पर काहा है इसी माफक १० भुवनपतियोंको भी कह देना. स्वस्थान पर वर्तमान आठ द्रव्योंद्रिय हैं, परस्थानमें नहीं है, शेष नारकीवत् समझना. इसी माफक पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय और तिर्यंच

सर्वेंद्रिय भी समझना परन्तु वर्तमान स्वस्थानमें जितनी इंद्रिय है उतनी कहना। एवं मनुष्य नारकीपणे कितनी द्रव्येन्द्रियां करेगा? भूतकालमें अनंती, वर्तमानमें एक भी नहीं, भविष्यमें कोई करेगा, कोई नहीं, अगर करेगा वह ८–१६–२४ संख्याती, असंख्याती, अनंती एवं असुरादि १० भुवनपति भी कहना। पृथ्वीपणे भूतकाले अनंती, वर्तमानमें एक भी नहीं, भविष्यमें जो करेगा तो १–२–३ यावत् संख्याती असंख्याती अनंती एवं यावत् वनस्पति एवं बीन्द्रिय परन्तु भविष्यमें करेगा तो २–४–६ तीन्द्रिय ४–८–१२ चौरिन्द्रिय ६–१२–१८ तिर्यंच पांचेन्द्रिय ८–१६–२४ यावत् संख्याती असंख्याती अनंती करेगा।

एक मनुष्य–मनुष्यपणे द्रव्योंद्रिय कितनी करेगा? भूत० अनंती, वर्तमान आठ, भविष्यमें कोई करे, कोई न करे अगर करे तो ८–१६–२४ संख्याती असंख्याती अनंती करेगा. व्यंतर ज्योतिषी वैमानिक यावत् नौग्रैवेक तक भूत० अनंती, वर्तमान एक भी नहीं, भविष्ये अगर करेगा तो ८–१६–२४ संख्याती असंख्याती अनंती। एकेक मनु० चार अनुत्तर वैमान के देवतापणे कितनी द्रव्येंद्रियां करेगा? भूतकालमें किसीने की किसीने नहीं की जिसने की उसने आठ तथा सोला की, वर्तमान में नहीं, भविष्य में कोई करेगा, कोई नहीं करेगा, जो करेगा वह ८–१६ करेगा और सर्वार्थसिद्धपणे मनुष्य भूतकालमें किसीने की किसीने नहीं की और जो करी

उसने नियमा आठ, वर्तमान में नहीं, भविष्यमें करेगा तो आठ करेगा।

व्यंतर ज्योतिषीका अलावा २४ दंडक पर असुरकुमारकी माफक कह देना

सौधर्म देवलोकसे नौग्रैवेक तकके एक एक देवता कितनी द्रव्येंद्रियां करेगा ? असुरकुमारके माफक परन्तु इतना विशेष है कि विजयादिक वैमानमें भूतकाल किसीने करी, किसीने नहीं करी, जिसने करी है तो ८ करी है. वर्तमान नहीं, भविष्यमें आठ या सोलह करेगा और सर्वार्थसिद्ध वैमानमें भूतकाले नहीं, वर्तमाने नहीं, भविष्यमें करेगा तो आठ करेगा।

एकेक विजय वैमानका देवता नारकीपणे भूतकाल द्रव्येंद्रिय अनंती की, वर्तमान नहीं, भविष्य नहीं करे, एवं यावत् पांचेंद्रिय तिर्यंच तक। मनुष्यपणे भूतकाल अनंती, वर्तमान नहीं, भविष्यमें नियमा-करेगा स्यात् ८-१६-२४ संख्याती। वाणव्यंतर ज्योतिषीमें भूतकाले अनंती, वर्तमाने और भविष्यमें नहीं।

सौधर्म देवलोकपणे भूतकालमें अनंती, वर्तमान नहीं, भविष्यमें करेगा तो ८-१६-२४ संख्याती एवं यावत् नौग्रैवेक तक समझना. विजयादि ४ अनुत्तर वैमानपणे भूतकालमें करी हो तो ८ भविष्यमें करेगा तो आठ। सर्वार्थसिद्धपणे भूत और वर्तमानमें नहीं। भविष्यमें करेगा तो आठ करेगा. इसी माफक विजयन्त व जयन्त, अपराजीत।

एकेक सर्वार्थसिद्ध वैमानके देवता नारकीपणे द्रव्येन्द्रिय भूतकाले अनंती, वर्तमान और भविष्यमें नहीं, एवं यावत् मनुष्यवर्जके नौग्रैवेक तक समझना, मनुष्यमें अतीता अनंती, वर्तमान नहीं, भविष्यमें नियमा आठ करेगा। विजयादि ४ अनुत्तर वैमानके देवपणे भूतकाल किसीने की, किसीने नहीं की, जिसने की तो आठ. वर्तमान और भविष्यमें एक भी नहीं और सर्वार्थसिद्धपणे भूतकाले नहीं, वर्तमान आठ, भविष्यमें नहीं।

इति द्वारम्

घणा जीव आपसमें द्रव्येन्द्रियों ?

घणा नारकीका नेरिया नारकीपणे द्रव्येन्द्रियां कितनी करी ? भूतकाले अनंती, वर्तमाने असंख्याती, भविष्यकालमें अनंती करेगा, एवं यावत् नौग्रैवेक परन्तु परस्थानमें वर्तमान एक भी नहीं कहना।

घणा नारकीका नेरिया पांच अनुत्तर वैमानपणे द्रव्येन्द्रिय भूतकाल और वर्तमानमें एक भी नहीं करी, भविष्यमें असंख्याती करेगा।

यह नारकीका दंडक, २४ दंडक पर कहा इसी माफक तिर्यंचपांचेन्द्रिय तक भी कह देना, परन्तु वनस्पतिके दंडकका जीव भविष्यमें सर्व ठेकाणे यावत् सर्वार्थसिद्ध तक अनंती द्रव्येंद्रिय करेगा, कारण जीव अनंते हैं।

घणा मनुष्य नारकीपणे द्रव्येंद्रिय भूतकाले अनंती, वर्त-

मानमें नहीं, भविष्यमें अनंती, एवं यावत् नौग्रैवेक तक परन्तु मनुष्य स्वस्थाने वर्तमान स्यात् संख्यात स्यात् असंख्यात कहना.

चार अनुत्तर वैमानपणे० भूतकाल संख्यात, वर्तमान नहीं, भविष्य स्यात् संख्यात, स्यात् असंख्यात और सर्वार्थसिद्धपणे भूतकाले, वर्तमान नहीं, भविष्य स्यात् संख्याती, स्यात् असंख्याती एवं व्यंतर ज्योतिषी वैमानिक यावत् नौग्रैवेक तक समझना। घणा च्यार अनुत्तर वैमानके देवता नारकीपणे द्रव्येंद्रिय भूतकाले अनंती, वर्तमान और भविष्य नहीं एवं ज्योतिषी तक समझना; परन्तु मनुष्यपणे भविष्यमें असंख्याती करेगा एवं सोधर्मसे यावत् नौग्रैवेक तक।

च्यार अनुत्तर वैमानपणे अतीता असंख्याती, वर्तमाने असंख्याती, भविष्यमें असंख्याती, सर्वार्थसिद्धपणे भूतकाल नहीं, वर्तमान नहीं, भविष्य असंख्याती। घणा सर्वार्थसिद्धका देवता नारकीपणे द्रव्येन्द्रिय भूतकालमें अनंती, वर्तमान और भविष्यमें एक भी नहीं एवं मनुष्यवर्जके यावत् नौग्रैवेक तक समझना. मनुष्यपणे अतीता अनंती, वर्तमान नहीं, भविष्य संख्याती।

च्यार अनुत्तर वैमानपणे भूतकाल संख्याती, वर्तमान और भविष्य नहीं, सर्वार्थसिद्ध वैमानके घणे देवता घणा सर्वार्थसिद्ध वैमानका देवतापणे द्रव्येन्द्रिय भूतकालमें एक भी नहीं, वर्तमानमें संख्याती, भविष्यकालमें एक भी नहीं करेगा।

इति द्वारम्

हे भगवान्! भाव इंद्रियां कितनी हैं? भाव इन्द्रियां ५ हैं.

यथा-श्रोतेन्द्रिय, चक्षु इन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसेन्द्रिय, स्पर्शेन्द्रिय जैसे द्रव्येन्द्रियां ८ को २४ दंडक पर च्यार द्वार करके समझाई गई हैं इसी माफक भाव इन्द्रियां ५ हैं उसको २४ दंडक पर उपरवत् च्यार २ द्वार समझना चाहिये. यदि द्रव्येन्द्रिय कंठस्थ हो जायगी तब भावइंद्रियका उपयोग सहजमें हो जायगा. इस लिये यहांपर इसका विवरण नहीं किया इति ।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० १५१

श्रीपन्नवणासूत्र पद १६

(प्रयोगपद)

जिसका चलन स्वभाव है उसको प्रयोग कहते हैं, वे प्रयोग दो प्रकारके हैं (१) शुभ (२) अशुभ. दोनों प्रकारकी क्रियामें प्रवृ करते हैं प्रयोगकी प्रेरणा प्रथमसे तेरहवां गुणस्थान तक है जिसमें प्रथमसे दशमें गुणस्थान तक प्रयोगके साथ कषायका संयोग होनेसे संपरायकी क्रिया लगती है और ११-१२-१३ गुणस्थानमें प्रयोगके साथ कषायका संयोग नहीं है अर्थात् वहां अकषायी है वास्ते इर्यावहीकी क्रिया लगती है. इस लिये प्रथम प्रयोगके स्वरूप को खूब दीर्घदृष्टीसे समझना जरूरी है ।

हे भगवान् ! प्रयोग कितने प्रकारके है ?

प्रयोग १५ प्रकारके हैं यथा-(१) सत्यमनयोग,

(२) असत्यमनयोग, (३) मिश्रमनयोग, (४) व्यवहारमनयोग, (५) सत्यवचनयोग, (६) असत्यवचनयोग, (७) मिश्रवचनयोग, (८) व्यवहारवचनयोग, (९) औदारिककाययोग, (१०) औदारिकमिश्रकाययोग, (११) वैक्रियकाययोग, (१२) वैक्रियमिश्रकाययोग, (१३) आहारिककाययोग, (१४) आहारिकमिश्रकाययोग, (१५) कारमणकाययोग, इन्हीं (१५) प्रयोगोंको २४ दंडक पर उतारेंगे।

समुचय जीवमें प्रयोग १५ पावे.

नारकी और देवताओंमें प्रयोग पावे ११ (४) मनके (४) वचनके (१) वैक्रियकाययोग (१) वैक्रियमिश्रकाययोग (१) कारमणकाययोग। एवं ११.

पृथ्वीकाय, अपूकाय, तेउकाय, वनस्पति, बीन्द्रिय, तीन्द्रिय, चौन्द्रिय, इन ७ बोलोंमें प्रयोग (३) पावे. औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, कारमाणकाययोग परन्तु तीन वैकलेंद्रिमें व्यवहार भाषाधिक होनासे (४) योग। वायुकायमें प्रयोग पावे ५ (३) पूर्वोक्त वैक्रिय और वैक्रियमिश्रकाययोग एवं पांच तथा तिर्यंच पांचेंद्रियमे प्रयोग १३ पावे. आहारिककाययोग, आहारिकमिश्रकाययोग दो वर्जके; और मनुष्यमें १५ प्रयोग पावे.

किस दंडकमें कितने प्रयोग शाश्वते हैं?

समुचय जीवोमें प्रयोग १५ हैं जिसमें १३ शाश्वते मिलते हैं और आहारिककाययोग तथा आहारिकमिश्रकाययोग ये दोनो

प्रयोग कभी मिलते हैं कभी नहीं भी मिलते. कारण यह दोनों प्रयोग पूर्वधर मुनिराजके होते हैं अगर इनका विकल्प किया जाय तो ९ भांगें होते हैं।

(१) तेरह योग सर्वकालमें शाश्वते मिले.
(२) तेरह शाश्वता और आहारिकका एक
(३) „ „ घणा
(४) „ आहारिकके मिश्रका एक
(५) „ „ „ घणा
(६) „ आहारिकका एक मिश्रका एक
(७) „ „ „ „ घणा
(८) „ „ घणा „ एक
(९) „ „ घणा „ घणा

नारकीमें प्रयोग ११ है जिसमें १० शाश्वते हैं और कारमण अशाश्वता है जिसका भांगा ३ है (१) दश प्रयोग शश्वता (२) दश प्रयोग शाश्वता, और कारमण एक मिले (३) दश प्रयोग साश्वता और कारमण घणा मिले—एवं देवताओंके १३ दंडकमें तीन तीन भांगा सर्व ४२ भांगे हुए।

पांच स्थावरमें भांगा नहीं होता है.

तीन विकलेंद्रियमें प्रयोग ४ पावे जिसमें ३ शाश्वता कारमण अशाश्वता भांगा ३ (१) तीन प्रयोगवाला घणा (२) तीन प्रयोगवाळा घणा और कारमण एक (३) तीन प्रयोगवाळा घणा कारमणका भी घणा एवं ९ भांगा.

तिर्यंच पांचेन्द्रियमें प्रयोग पावे १३ जिसमें १२ शाश्वता कारमण अशाश्वता जिसका भांगा ३ (१) बारहका घणा (२) बारहका घणा कारमण एक (३) बारहका घणा कारमण घणा।

मनुष्यमें प्रयोग १५ पावे जिसमें ११ शाश्वता ४ अशाश्वता सो (१) आहारिक (२) आहारिकमिश्र (३) औदारिकमिश्र (४) कारमण जिनके भांगा ८१ सर्व भांगोके अंदर ११ प्रयोग का शाश्वता बोलना चाहिये।

असंयोगी ९ भांगा.

(१) इग्यारे योग सदाकाल शाश्वता

(२) इग्यारहका घणा आहारिकका एक

(३) ,, ,, ,, घणा

(४) ,, ,, आहारिकका मिश्र एक

(५) ,, ,, ,, घणा

(६) ,, ,, औदारिकका मिश्र एक

(६) ,, ,, घणा

(७) ,, ,, कर्मणका एक

(९) ,, ,, ,, घणा

द्विक संयोगी २४ भांगा.

आहारिक०	मिश्र०	आहारिक०	औ० मिश्र	आहारिक०	कार्मण
१	१	१	१	१	१
१	२	१	२	१	२
२	१	२	१	२	१
२	२	२	२	२	२

आ० मिश्र	औ० मिश्र	आ० मिश्र०	कार्मण	औ०	कार्मण
१	१	१	१	१	१
१	२	१	२	१	२
२	१	२	१	२	१
२	२	२	२	२	२

त्रिक संयोगी ३२ भांगा.

आ०	आ० मिश्र	औ० मिश्र	आ०	आ० मिश्र	कार्मण
१	१	१	१	१	१
१	१	२	१	१	२
१	२	१	१	२	१
१	२	२	१	२	२
२	१	१	२	१	१
२	१	२	२	१	२
२	२	१	२	२	१
२	२	२	२	२	२

आ०	औ० मिश्र	का०	आ० मिश्र	औ० मिश्र	कार्मण
१	१	१	१	१	१
१	१	२	१	१	२
१	२	१	१	२	१
१	२	२	१	२	२
२	१	१	२	१	१
२	१	२	२	१	२
२	२	१	२	२	१
२	२	२	२	२	२

चतुष्क संयोगी भांगा १६.

आ०	आ० मिश्र	औ०मिश्र	कार्मण	आ०	आ० मिश्र	औ० मिश्र	का०
१	१	१	१	२	१	१	१
१	१	१	२	२	१	१	२
१	१	२	१	२	१	२	१
१	१	२	२	२	१	२	२
१	२	१	१	२	२	१	१
१	२	१	२	२	२	१	२
१	२	२	१	२	२	२	१
१	२	२	२	२	२	२	२

इति भांगा ८१

एवं भांगा ९–४२–९–३–८१ सर्व १४४ भांगा हुवा इति

नोट–मनुष्यमें वैक्रियमिश्रकाययोगको शाश्वत कहा है सो टीकाकार कहतेहैं कि विद्याधर वैक्रिय करते हैं इस अपेक्षासे है,

और औदारिकके मिश्रको अशाश्वता कहा है वह मनुष्यमें उत्पन्न होनेका १२ मुहूर्तका विरहकालकी अपेक्षा है।

हे भगवन ! गति कितने प्रकारकी हैं ? गति पांच प्रकारकी है।

(१) प्रयोग गति–जो पूर्व १४४ भांगे कह आये हैं इसी माफक समझना.

(२) तंतगति–जो ग्राम नगर आदिको जा रहा है परन्तु जहां तक नगरमें प्रवेश न हुवा अर्थात रास्ते चलता है उसको तंतगति कहते हैं.

(३) बन्दण छेदण गति–जीवसे शरीरका अलग होना शरीरसे जीवका अलग होना.

(४) उववाय गति–उत्पन्न गतिके तीन भेद हैं (१) क्षेत्र उत्पन्न गति (२) भवो उत्पन्न गति (३) नो भवो उत्पन्न गति। जिसमें (१) क्षेत्र उत्पन्न गतिके पांच भेद हैं यथा—

(१) नरकमें उत्पन्न जिसका रत्नप्रभादि सात भेद हैं.

(२) तिर्यंचमें उत्पन्न जिसका एकेंद्रियादि पांच भेद हैं.

(३) मनुष्यमें उत्पन्न जिसका गर्भज समुत्सम दो भेद हैं.

(४) देवतामें जिसका भुवनपति आदि ४ भेद हैं.

(५) सिद्ध उत्पन्न गतिके अनेक भेद हैं. जम्बूद्वीपादि अढाई द्वीप ४५ लक्ष योजनमें कोई भी प्रदेश ऐसा नहीं है कि वहांसे सिद्ध न हुवा हो अर्थात् सर्व स्थानसे सिद्ध हुवे हैं. अब यहां पर अढाई द्वीप दो समुद्रमें जितने पर्वत और क्षेत्र है उनका नाम सर्व वहां पर कह देना.

(२) भवो उत्पन्न गति—नरकादि चार गतिमें उत्पन्न होना

(३) नो भव उत्पन्न गति—पुद्गलोंका चय उपचय तथा सिद्ध भगवान् सिद्धक्षेत्रमें उत्पन्न होते हैं वह भी नो भव उत्पन्न गति है। जिसमें पुद्गल नोभव उत्पन्न गतिके अनेक भेद हैं लोकके पूर्वका चरमान्तसे परमाणु एक समयमें लोकके पश्चिम के चरमान्तमें गति करता है एवं दक्षिण उत्तर उर्ध्व अधोलोकमें उत्पन्न करता है और सिद्धोंके दो भेद है (१) अणंतर सिद्ध जिसके १५ भेद हैं (१) परम्पर सिद्ध जिसके अनेक भेद हैं.

(४) विहायगति—जिसके १७ भेद है.

(१) फूसमाण गति—एक दूसरेको स्पर्श करता हुवा जावे जैसे परमाणुवादि अनन्तप्रदेशी स्कंध परमाणुवादिको स्पर्श करता हुवा गति करे.

(२) आफूसमाण गति—प्रथमसे विपरीत अस्पर्श करते हुवे गति करे.

(३) उवसंपज्जमण गति- जैसे राजा, युवराज, सेठ, सेनापति आदिको अंगीकार कर गति करे अर्थात् अपने पर मालक करके गति करे।

(४) अणुवसंपज्जमणागति—किसीका भी आश्रय न लेवे जैसे चक्रवर्तादि।

(५) पोगल गति—जैसे परमाणु यावत् अनन्त प्रदेशी पुद्गलोंकी गति है।

(६) मंडूयागति—जैसे मेडक कुदते हुवे चलते है वैसी गति।

(७) **नावागति**—जैसे पाणीमें नावा (नौका) धीरे धीरे चाले

(८) **नयगति**—तत्त्व विचारमें नैगमादि ७ नय अर्थात् जिस नयकी अपेक्षासे बोले वह उन्ही नयकी गति कही जाती है

(९) **छायागति**—जैसे अश्व, गज, मनुष्य, किन्नरादि देव तथा वृषभ रथ छात्रादिकी छाया चाले अर्थात् इन्होंकी छायाकी गति.

(१०) **छायाणुगति**—जैसे पुरुष स्त्रि नोपुरुषकी छाया पीछे पीछे गति करे.

(११) **लेस्सागति**—जैसे कृष्णलेश्या निललेश्याके वर्ण रूप पणे परिणमे एवं नील कापोतपणे कापोत तेजो पणे यावत् पद्म शुक्ल पणे परिणमे इत्यादि.

(१२) **लेस्साणुवायगति**—जैसे मरती वखत जिस लेश्या का द्रव्य गृहन करता है उसी लेश्याके स्थानमें उत्पन्न होता है.

(१३) **उद्दिस पविभत्तगति**—जैसे आचार्य पद्वि, उपाध्याय पद्वि, स्थिवर पद्वि, प्रवृतक पद्वि, गणि पद्वि, गणधर पद्वि, गणविच्छेदक पद्वि, देवे और पद्वि प्रमाणे गति करे.

(१४) **चउपुरिसपविभतगति**—जैसे चार पुरुष होते है

(१) साथमें निकले और साथमें प्रवैश हो.

(२) साथमें निकले और विषम प्रदेश हो.

(३) विषम निकले और साथमें प्रवेश हो.

(४) विषम निकले और विषम प्रवेश हो.

(१५) वंकगति–जिसके चार भेद हैं अर्थात् वंकोवं गति करे, वंको ऋजु गति करे एवं ४

(१६) पंकगति–जैसे कर्दममें गति करे पाणीमें गति करे,

(१७) वंधणविमोयण गति–जैसे अम्र अवडी बिजोरा बीला कवीट इत्यादि पक जाने पर भूमि पर पड़ते है यह अन्तराले गति करते हैं उन्हींको बन्धण विमोयण गति कहते हैं.

कण्ठस्थ करनेके लिये स्वल्प लिखा है विशेष विस्तार गुरु मुखसे समझो. इति.

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

इति शीघ्रबोध ११ वां भाग समाप्त.

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला पुष्प नं० ४७

श्री रत्नप्रभसूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः।

अथ श्री

शीघ्रबोध

या

थोकडा प्रबन्ध

भाग १२ वां

संग्राहक-

श्रीमदुपकेश (कमला) गच्छीय मुनि

श्रीज्ञानसुन्दरजी (गयवरचन्दजी)

प्रकाशकः-

श्रीसंघफलोधी सुपनादिकिआंवदसे

प्रबन्ध कर्ता-

शाहा मेघराजजी मोणोयत मु० फलोधी

प्रथमावृत्ति १००० वीर सं० २४४८

विषयानुक्रमणका ।

नंबर	विषय				पृष्ठ.
१	लेश्यापद उदेशो १....	....	....		९
२	„ „ २....	....	....		१४
३	„ „ ३....	....	....		२१
४	„ „ ४....	....	....		२४
५	„ „ ६....	....	....		३०
६	दर्शनपद....	....	....	....	३३
७	तेजस अवगाहना	....	....	....	३५
८	कर्मप्रकृति उदेशो २....	....	....		३७
९	आहारपद उदेशो २....	....	....		४२
१०	उपयोग पद	....	....	....	५०
११	पासणी या पद	....	....	....	५१
१२	संज्ञी पद....	....	....	....	५३
१३	संयति पद	....	....	....	५४
१४	परिचारणा पद	....	....	....	५६
१५	वेदना पद....	....	....	....	६१
१६	समुद्घात पद	....	....	....	६४
१७	„ कषाय समु०....	....	....		७४
१८	छद्मस्थ समु०	....	....	....	७७
१९	केवली समु०	....	....	....	८१
२०	सम्यक्त्वना द्वार	....	....	....	८४
२१	ब..की अल्पा०	....	....	....	८६

भूमिका ।

प्यारे वाचक वृन्दो !

श्री जिनेन्द्रदेवोंके फरमाये हुवे जैनागमों स्याद्वाद गंभीर शैली जिन्होंके प्रत्येक व्याख्यासे चारों अनुयोगका ज्ञान हो शक्ता था परन्तु कालके प्रभावसे बुद्धि-बलकी हानि देखके श्रीमदार्य रक्षत सूरीजी महाराजने चारों अनुयोगोंको भिन्न भिन्न रूपसे रच कर भव्यात्माओं पर परमोपकार किया है ।

(१) **द्रव्यानुयोग**—जिसमें नय निक्षेप स्याद्वाद षट् द्रव्य जीव अजीव चैतन्यके साथ कर्मोका संयोग या वियोग आत्मा या पुद्गलोंकी शक्ति इत्यादि वस्तु धर्मका प्रतिपादन है ।

(२) **गीणतानुयोग**—जिसमें नरकके नरका वासा देव-लोंके वैमान या क्षेत्रका लम्बा चौडा ऊर्ध्व अधो तीरछा क्षेत्र तथा ज्योतिषी देवोंके चलन क्षेत्रका परिमाण इत्यादि ।

(३) **चरणानुयोग** जिसमें साधू श्रावकोंकी क्रिया कल्प कायदा आदि ।

(४) **धर्म कथानुयोग**—जिसमें महा पुरुषोंके प्रभावीक चरित्र है इन्ही च्यारों अनुयोगके अंदर प्रवेश करनेके लिये प्रथम च्यार व्यवहारीक शास्त्रोंकी आवश्यकता है ।

(१) द्रव्यानुयोगके लिये-न्यायशास्त्र

(२) गणतानुयोगके लिये-गणत शास्त्र

(३) चरणानुयोगके लिये-नीतिशास्त्र

(४) धर्म कथानुयोगके लिये-अलंकार शास्त्र

इन्ही च्यारों व्यवहारीक शास्त्रोंकि साहितासे च्यारों अनुयोगमें सुखपूर्वक प्रवेश कर शक्ते हैं। पूर्वोक्त च्यारानुयोगमें शास्त्रकारोंने मौख्य आत्मकल्याणके लिये द्रव्यानुयोग फरमाया है सिवाय इन्होंके ज्ञान है वह सर्व शुष्क ज्ञान है इसी लिये आत्मरसीक भाइयोंको जहां तक बने वहां तक स्वशक्ति माफीक द्रव्यानुयोगके लिये प्रयत्न करना चाहिये।

यह बात आप लोक अच्छी तरहसे जानते हैं कि उच्च पदार्थको प्राप्त करनेको पुरुषार्थ भी उच्च कोटीका होना चाहिये। परन्तु जमाने हालमें कीतनेक भाइ ऊपरसे अच्छा डोल रखनेवाले अच्छी सुन्दर टाईटलके कीताबो बहुतसी एकत्र कर अलमारीमें रख देते हैं कभी कीसी किताबके ४–५ पेज और कभी किसी किताबके पेज देखते हैं पढना अच्छा है परन्तु उन्होंसे जहां तक स्वल्प ही ज्ञान कण्ठस्थ न कीया जावेंगे वहां तक बढके आगेके लिये इतना लाभ नहीं उठा सकेगा उन्हीं द्रव्यानुयोग रसीक भाइयोंसे हम नम्रता पूर्वक निवेदन करते हैं कि आप एक तरहका व्यशन हीडाल दो कि इतना पाठ प्रतिदिन कण्ठस्थ करेगे या प्रतज्ञा करलो।

कण्ठस्थ ज्ञान करानेके लिये लेखकोंकी लेखक शैली भी ऐसी होनि चाहिये कि जिसमें ज्यादा विस्तार न करते हुवे मूल वस्तु और वस्तुका स्वरूप थोडा हीमें बतला दिया जाकि स्वल्प परिश्रममें कण्ठस्थ हो जा बाद मे विस्तारवाले ग्रन्थ भी सुख पूर्वक पढता जा और उन्हीका मूल रहस्य को समझता जा यह काम तब ही प्राप्ती होगा कि कुछ ज्ञान कण्ठस्थ करोगे।

नय भांग पमाणेहिं, जे आया सायवायण,
सम्मदिठि उस नाओं, भणिय वीयरायहिं ॥१॥

जो नय भांगा परिमाण और स्याद्वाद कर आत्माको जाणि है उन्हींको ही वीतराग देवोंने सम्यग्दृष्टि कहा है वास्ते पूर्वोक्त द्रव्यानुयोगमें प्रवेश होनेके लिये वर्तमानमें जो आगम है जिन्हींके अंदर श्री **पन्नवणाजी** सूत्र जिन्होंका ३६ पद हैं वह सूत्र श्री वीरप्रभुके २३वें पाट पर श्री श्यामाचार्य महाराज वीर निर्वाण तीनसो वर्ष बाद रचा था वह सूत्र केवल द्रव्यानुयोगमय है जिस्की विस्तार वृति श्री मलियागिरी आचार्य महाराजने करी है वह पन्नवण सूत्र बहूत कठिन है परन्तु उन्हींको सुगम अर्थात् एकेक विषयको एकेक थोकडा रूप बनाके कुल ३६ पदोंका ६९ थोकडे इतने तो सुगम है कि जिन्होंको स्वल्प परिश्रमसे कण्ठस्थ करनेवाला मानों एक पन्नवण सूत्रको ही कण्ठस्थ किया हो वह ६९ थोकडे सबके सब आज तक छप चुके हैं परन्तु कोनसा भागमें कोनसा-कोनसा थोकडा छपा है उन्हीके लिये निचे अनुक्रमणका दि जाती है।

नम्बर थोकडे	पन्नवणा सूत्रके पद	थोकडेकि विषय	शीघ्रबोधके भागोंमें छपा
१	पद १	जीव विचार	भाग २जोंमें
२	,, २	स्थान पद	भाग ११मोंमें
३	,, ३	दिशाणुवाइ	भाग १में
४	,, ३	अल्पाब० १०२	भाग ९में

५	,,	३	इन्द्रिय अल्प०	भाग ११ में
६	,,	३	छेकाया अल्प०	भाग ११ ,,
७	,,	३	षट्द्रव्य अल्पा०	भाग ८ ,,
८	,,	३	ढिगला ९९६	भाग ११ ,,
९	,,	३	६९ अल्पा०	भाग ८ ,,
१०	,,	३	खेताणुवाइ	भाग ११ ,,
११	,,	३	९८ अल्पा०	भाग १ ,,
१२	,,	४	स्थिति पद	भाग ११ ,,
१३	,,	५	जीव पर्यव	भाग ११ ,,
१४	,,	५	अजीव पर्यव	भाग ११ ,,
१५	,,	६	विरहद्वार	भाग १ ,,
१६	,,	६	उवठणाद्वार	भाग ११ ,,
१७	,,	६	गत्यागिधार	भाग ९ ,,
१८	,,	६	आयुष्यकाभांगा	भाग ११ ,,
१९	,,	७	श्वासोश्वास	भाग ३ ,,
२०	,,	८	संज्ञापद	भाग ३ ,,
२१	,,	९	योनिपद	भाग ३ ,,
२२	,,	१०	चरमपद	भाग ११ ,,
२३	,,	१०	चरमभागा२६	भाग ११ ,,
२४	,,	१०	संस्थानचरथ	भाग ११ ,,
२५	,,	११	चरमद्वार १०	भाग ११ ,,
२६	,,	११	भाषाद्वार १८	भाग ३ ,,
२७	,,	१२	शरीर परिमाण	भाग ११ ,,

२८	,,	१३	परिणमजीव	भाग ११	,,
२९	,,	१३	अजीवपरिणाम	भाग ११	,,
३०	,,	१४	कषायपद	भाग ९	,,
३१	,,	१५	इन्द्रियपद	भाग ९	,,
३२	,,	१५	इन्द्रियद्रव्यादि	भाग ११	,,
३३	,,	१६	प्रयोगपद	भाग ११	,,
३४	,,	१७	लेश्या उदेशो १	भाग १२	,,
३५	,,	१७	,, ,, २	,,	,,
३६	,,	१७	,, ,, ३	,,	,,
३७	,,	१७	,, ,, ४	,,	,,
३८	,,	१७	,, ,, ६	,,	,,
३९	,,	१८	कायस्थिति	भाग ९	,,
४०	,,	१९	दिष्टीपद	भाग १२	,,
४१	,,	२०	अन्तक्रिय	भाग ९	,,
४२	,,	२०	पद्विधार	भाग ९	,,
४३	,,	२०	सिद्धधार	भाग ९	,,
४४	,,	२१	पांचशरीर	भाग ९	,,
४५	,,	२१	मरणांतिसमु०	भाग १२में	,,
४६	,,	२२	क्रियापद	भाग २	,,
४७	,,	२३	कर्मप्रकृति	भाग १२	,,
४८	,,	२३	अबाधकाल	भाग ५	,,
४९	,,	२४	बन्धता बंधे	भाग ५	,,
५०	,,	२५	बंधता वेद	,, ५	,,

५१	,,	२६	वेदतो बंधे	,,	५	,,
५२	,,	२७	वेदतो वेदे	,,	९	,,
५३	,,	२८	आ० द्वार ११	,,	१	,,
५४	,,	२८	आ० द्वार१२	,,	१२	,,
५५	,,	२९	उपयोगपद	,,	१२	,,
५६	,,	३०	पासणियापद	,,	१२	,,
५७	,,	३१	संज्ञीपद	,,	१२	,,
५८	,,	३२	संयतिपद	,,	१२	,,
५९	,,	३३	अवधिपद	,,	१२	,,
६०	,,	३४	परिचारणापद	,,	१२	,,
६१	,,	३५	वेदनापद	,,	१२	,,
६२	,,	३६	समुदघाता	,,	१२	,,
६३	,,	३६	छदमस्थसमु०	,,	१२	,,
६४	,,	३६	कषायसमु०	,,	१२	,,
६५	,,	३६	केवलीसमु०	,,	१२	,,

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला ओफिस तीर्थ ओशिया। इन्हीं संस्थाद्वारे स्वल्प समयमे आजतक निम्न लिखित पुष्प प्रसिद्ध हो चुके है कार्य चालु है।

नंबर	पुष्पोंके नाम	आवृति	पुष्प संख्या
१	प्रतिमा छतिशी	३	१९०००
२	गयवर विलाश	२	२०००
३	दानछतिशी	२	३०००
४	अनुकम्पा छतिशी	२	३०००

५	प्रश्नमाला	२	२०००
६	स्तवन संग्रह भाग १ लो	४	४०००
७	पैंतीस बोल थोकड़ो	१	१०००
८	दादा साहिबकी पूजा	१	२०००
९	देवगुरु वन्दनमाला	१	५०००
१०	स्तवन संग्रह भाग २ जो	२	२०००
११	लिंग निर्णय	१	१०००
१२	स्तवन संग्रह भाग ३ जो	२	३०००
१३	चर्चाकी पब्लिक नोटीश	१	१०००
१४	सिद्ध प्रतिमा मुक्तावली	१	१०००
१५	बत्तीस सूत्र दर्पण	१	५००
१६	जैन नियमावली	१	१०००
१७	चौरासी आशातना	१	१०००
१८	डंके पर चोट	१	५००
१९	आगम निर्णय प्रथमांक	१	१०००
२०	चैत्यवन्दन स्तवनादि	१	१०००
२१	जैन स्तुति	१	१०००
२२	सुबोध नियमावली	२	७०००
२३	प्रभु पूजा	२	२०००
२४	जैन दीक्षा	१	१०००
२५	व्याख्या विलास	१	१०००
२६	शीघ्रबोध भाग १	२	२०००
२७	,, ,, २	१	१०००
२८	,, ,, ३	१	१०००

२९	,, ,, ४	१	१०००
३०	,, ,, ५	१	१०००
३१	सुख विपाकसुत्र मूल	१	५००
३२	शीघ्रबोध भाग ६	१	१०००
३३	दश वैकालीकसूत्र मूल	१	१०००
३४	शीघ्रबोध भाग ७	१	१०००
३५	मेझर नामो	२	४५००
३६	तीन निर्नामा लेखका उत्तर	१	१०००
३७	ओशीय ज्ञान लिष्ट	१	१०००
३८	शीघ्रबोध भाग ८	१	१०००
३९	,, ,, ९	१	१०००
४०	श्री नन्दीसूत्र मूल पाठः	१	१०००
४१	श्री तीर्थयात्रा स्तलन	१	२०००
४२	शीघ्रबोध भाग १०	१	१०००
४३	अमे साधु शा माटे थया	१	१०००
४४	विनंति शतक	१	१०००
४५	द्रव्यानुयोग प्रथम प्रवेशिका	१	६०००
४६	शीघ्रबोध भाग ११	१	१०००
४७	,, ,, १२	१	१०००
४८	,, ,, १३	१	१०००
४९	,, ,, १४	१	१०००

कुल एक लक्ष पुष्प (१००००००)

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला पु० नं० ४७

श्री रत्नप्रभसूरी सद्गुरुभ्यो नमः

अथ श्री

शीघ्रबोध या थोकडा प्रबंध।

भाग १२वां

थोकडा नं० १

सूत्र श्री पन्नवणाजी पद १७ उ० १

(लेश्याके ९ द्वार)

(१) शरीर (२) आहार (३) उश्वास (४) कर्म (५) वर्ण (६) लेश्या (७) वेदना (८) क्रिया (९) आयुष्य इति।

(१) शरीर (२) आहार (३) उश्वास यह तीन द्वार साथमें ही कहते हैं।

(प्र) नारकी सर्व बराबर शरीराहारोश्वास वाला है।

(उ) नारकी दो प्रकारके हैं (१) महाशरीरा (२) स्वल्प शरीरा जिसमें महाशरीरा नारकी है वह बहुतसे पुद्गलोंका आहार लेते हैं परिणमाते हैं या उश्वास भी बहुत लेते हैं या बारबार पुद्गलोंको लेते हैं परिणमाते हैं और जो स्वल्प शरीरा नारकी हैं वह स्वल्प पुद्गलोंको लेते हैं परिणमाते हैं या ठेर ठेरके लेते हैं परिणमाते हैं या स्वल्प श्वासोश्वास लेते हैं वास्ते बराबर नहीं हैं।

(४) **कर्म**—सर्व नारकीके क्या कर्म बराबर है ?

नारकी दो प्रकारके है (१) पहले उत्पन्न हुवे (२) पीछेसे उत्पन्न हुवे जिस्मे जो पेहले उत्पन्न हुवे नारकी है वह विशुद्ध कर्मवाले हैं कारण वह बहुतसे अशुभ कर्म भोगव चुका है शेष स्वल्प कर्म राहा और जो पीछेसे उत्पन्न हुवे है वह अविशुद्ध कर्मवाला है कारण उन्हींको हाल सर्व अशुभ कर्म भोगवणा रहा है जेसे दो केदी केदखानामे है जिस्से एक तो ११ मास केदमे रहा अब एक ही मासमे छूट जावेगा दुसरा एक ही मास केदमे रहा और ११ माससे छूटेगा इन्ही दोनों केदियोंमे परिणामोंकी विशेषता अवश्य होती है।

(५) **वर्ण** (६) **लेश्या (कान्ति)**—यह दोनों द्वार कर्म माफीक समझना।

(७) **वेदना**—सर्व नारकीके वेदना क्या बराबर है।

नारकी दो प्रकारके है (१) सञ्ज्ञी भूत (२) असंज्ञी भूत (अर्थात् यहसे संज्ञी जीव थरके नारकीमें जाधे या नारकीमें पर्याप्ता तथा सम्यग्दृष्टी हो इन्ही तीनोंको संज्ञीभूत कहते है इन्हीसे विप्रीतको असंज्ञीभूत कहते है उन्होंको स्वल्प वेदना जेसे यहांपर इजतदार आदमीको स्वल्प भी ठाका मीलने पर बड़ा ही रंज होता है और जो नो लायकको केद तक भी होना पर भी कुच्छ नहीं इसी माफीक सम्यग्दृष्टी नारकीको मानसी महावेदना होती है इतनी मिथ्यादृष्टीको नही होती है.

(८) **क्रिया**—सर्व नारकीको क्रिया बराबर है ?

नारकी तीन प्रकारके हैं (१) सम्यग्दृष्टी (२) मिथ्यादृष्टी (३) मिश्रदृष्टी जिस्मे सम्य०को आरंभ कि, परिगृह कि, माया कि, और अपच्चरकांण कि, एवं च्यार क्रिया लागे और मिथ्या० मिश्र० को ४ पूर्ववत् और पांचमी मिथ्यात्व कि एवं पांच क्रिया लागे।

(९) आयुष्य–सर्व नारकीके आयुष्य बराबर है.

नारकी च्यार प्रकारके हैं (१) बराबर आयुष्प और साथहीमें उत्पन्न हुवे (२) बराबर आयुष्य और विषमोत्पन्न हूवे (३) विषमायुष्यं और साथमें उत्पन्न हूवे (४) विषम आयुष्य और विषमही उत्पन्न हूवे ॥ १ ।

यह नारकी के दंडकपर नौ द्वार उतारे गये हैं इसी माफक २४ दंडकोंपर भी नौ नौ द्वार उतार देना परन्तु जो विशेषता है वाह निचे लिख देते है। (१३) देवतोंका १३ दंडक नारकी माफीक है परन्तु कर्म वर्ण लेश्या नारकीसे विप्रीत समझना कारण पहले उत्पन्न हूवे देवता शुभ कर्म बहूतसा भोगव चुका है शेष रहा है वास्ते अविशुद्ध है ओर पीच्छेसे उत्पन्न हूवे उन्होंको बहुतसे शुभ कर्म बाकी है इसी माफीक वर्ण और लेश्याजी समझना.

(८) पांच स्थावर तीन वैकलेन्द्रिय नरकवत परन्तु वह सर्व असंज्ञी होनासे असंज्ञीभूत वेदना ओर मिथ्याद्रष्टी होनासे क्रिया पांचों लगती है।

(१) तीर्यंच पांचेन्द्रिय नारकीवत् परन्तु क्रियाधिकारे तीर्यच तीन प्रकारका है (१) सम्यग्द्रष्टी (२) मिथ्या० (३) मिश्र० जिस्मे सम्यग्द्रष्टीके दो भेद है (१) असंयति (२) संयता

संयति जिस्मे संयतासंयति (श्रावक) को आरंभी की परिग्रहकि ओर मायाकि यह तीन क्रिया लागे कारण अन्तानुबन्धी चोकडीसे मिथ्यात्वकि क्रिया ओर अप्रत्याख्यानाकि चोकडीसे अपच्चखा- णकि क्रिया लगती है वह दोनो चोकडी श्रावकके न होनासे दोनों क्रियाके अभाव है अगर अन्य स्थानपर श्रावकको व्रता- व्रती कहा है वह परिग्रहकी अपेक्षा कहा है। शेष नरकवत्।

(१) मनुष्य–मनुष्य दो प्रकारके होते है (१) महाशरीरा वह बहुत पुद्गलोंका आहार करते है परन्तु ठेर ठेरके (युगल मनु- ष्यापेक्षा) (२) स्वल्प शरीरा नरकवत् तथा क्रियाधिकारे मनुष्य तीन प्रकारका (१) सम्यग्दृष्टी (२) मिथ्या (३) मिश्र० जिसमें भी संयतिका दो भेद हैं (१) सरागी (२) वीतरागी जिसमें वीत- रागीके पांच क्रियासे कोई भी क्रिया नहीं है जो सरागी है उन्होंका दो भेद है (१) प्रमत संयति (२) अप्रमत संयति जो अप्रमत० उन्होंको एक मायकी क्रिया है जो प्रमत है उन्होंको आरंभ कि और माया कि यह दो क्रिया है संयतासंयतके तीन सम्यग्दृष्टीके चार मिथ्यात्वी मिश्रके पाचों क्रिया लागे पूर्ववत्।

एवं २४ दंडकपर ९ द्वार उतारणासे २१६ भांगा हूवे।

। अब, लेश्याके साथ ९ द्वार केहते है ।

नरकादि २४ दंडक। लेश्या संयुक्त पर नौ नौ द्वार पूर्ववत् केहनेसे २१६ भांगा होता है।

(१) कृष्णलेश्यामें—ज्योतिषी वैमानि वर्जके २२ दंडक है ५ पूर्ववत् ९ द्वार कहनेसे १९८ भांगा होते हैं परन्तु नरकादिमें

वेदनाधिकारे संज्ञी भूतके स्थान अमयी सम्यग्दृष्टी और असंज्ञी भूतके स्थान मायी मिथ्यात्वदृष्टी कहना तथा मनुष्यमें क्रियाफिकारे सरागी वीतरागी या प्रमादि अप्रमादीका भेद नहीं कहना कारण कृष्ण लेश्यावाले सर्व प्रमादि होते हैं शेष पूर्ववत् एवं १९८

(३) निल लेश्याके १९८ भांगा कृष्णवत्

(४) कपोत लेश्याके १९८ भांगा कृष्णवत्

(५) तेजो लेश्यामें १८ दंडक है (तेउ वायु तीन वैकलेन्द्रीय नारकी एवं ६ वर्जके) विशेष है कि मनुष्यमें क्रियाधिकारे सरागी वीतरागी नहीं हो परन्तु प्रमादी अप्रमादीमें क्रिया पूर्ववत् कहना एवं १८ कोनौ गुण करनासे १६२ भांगा होता है।

(६) पद्मलेश्यामें दंडक तीन—तीर्यंच पांचेन्द्रिय मनुष्य और वैमानिक देवे सर्वाधिकार तेजो लेश्यावत् तीनको नौ गुण करनेसे २७ भांगा होता है।

(७) शुक्ललेश्या ये तीन दंडक पूर्ववत् परन्तु मनुष्यमें क्रियाधारे सरागी वीतरागी प्रमादि अप्रमादिका भेद और क्रिय समुच्चयवत् कहेना तीनकों नौ गुण करनेसे २७ भागा होते हैं

एवं भांगा २११–२१६–१९८–१९८–१९८–१६२
२७–२७ सर्व १२४२

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्

थोकडा नं० १

सूत्र श्री पन्नवणाजी पद १७ उ० २

(लेश्याकी ४६ अल्पबाहूत्व)

कौनसे कौनसे दंडकमें कितने २ लेश्या मिले या मिले उन्होंमें कौनसी कौनसी लेश्यावाले जीव न्यूनाधिक है वह सर्व इस थोकडे द्वारे बतावेगा—

(१) समुच्चय जीवोंके ८ बोल ।

(१) स्तोक शुक्लेश्यावाले जीव हैं । (२) पद्म० संख्यात गु० (३) तेजो० सं० गु० (४) अलेश्यावाले (सिद्ध) अनन्त गु० (५) कापोत लेश्या० अनंत गु० (६) निल लेश्या० वि० (७) कृष्ण लेश्या० विशेषः (८) सलेश्या० विशेषाः ।

(२) नारकीमें लेश्या ३ पावे ।

(१) स्तोक कृष्ण लेश्या० (२) निल सं० असं० गु० (३) कापोत० असं० गु० ।

(३) समु० तीर्यंचमें लेश्या ६ पावे ।

(१) स्तोक शुक्ल लेश्या० (२) पद्म० सं गु० (३) तेजो० सं० गु० (४) कापोत० अनन्त गु० (५) निल० वि० (६) कृष्ण वि० !

(४) समु० एकेंद्रियमें लेश्या ४ पावे

(१) स्तोक तेजो० (२) कापोत० अनन्तगु० (३) निल० वि० (४) कृष्ण० वि० ।

(५) एवं वनास्पतिमें लेश्या ४ पावे

(६) पृथ्वी कायमें लेश्या ४ पावे

(१) स्तोक तेजो० (२) कापोत० असं० गु० (३) निल० वि० (४) कृष्ण० वि० ।

(७) एवं अपकायमें लेश्या ४ पृथ्वीवत्

(८) तेउकायमें लेश्या ३ पावे

(१) स्तोक कापोत० (२) निल० वि० (३) कृष्ण० वि०

(९) एवं वायुकायमें लेश्या ३ पावे

(१०) (११) (१२) एवं बेरिंद्रिय तेरिंद्रिय चौरिंद्रिय

(१३) तीर्यंच पांचेन्द्रियमें लेश्या ६ पावे ।

(१) स्तोक शुक्ल लेश्या० (२) पद्म० सं० गु० (३) तेजो सं० गु० (४) कापोत० असं० गु० (५) निल लेश्या० वि० (६) कृष्ण० वि० ।

(१४) तीर्यंचणिमें लेश्या ६ पावे ।

(१) स्तोक शुक्ल लेश्या० (२) पद्म० सं० गु० (३) तेजो० सं० गु० (४) कापोत० सं० गु० (५) निल० वि० (६) कृष्णा वि० ।

(१५) तीर्यंच तीर्यंचणीके १२ बोल ।

(१) स्तोक शुक्ल लेश्या० तीर्यंच (२) शुक्ल लेश्या० तीर्यंचणि सं० गु० (३) पद्म० तीर्यंच सं० गु० (४) पद्म० तीर्यंचणि सं० गु० [५] तेजो तीर्यंच सं० गु० (६) तेजो तीर्यंचणि सं० गु० (७) कापोत तीर्यंचणि सं० गु० (८) निल० तीर्यंचणि वि० (९) कृष्ण० तीर्यंचणि० वि० [१०] कापो० तीर्यंच अनन्ता गु० (११) निल० तीर्यंच वि० (१२) कृष्णा० तीर्यंच वि० ।

(१६) संज्ञी तीर्यंचमें लेश्या ६ पावे।

(१) स्तोक शुक्ल० (२) पद्म० सं० गु० (३) तेजो० सं० गु० (४) कापोत० असं० गु० (५) निल० वि० (६ कृष्ण० वि०

(१७) असंज्ञी तीर्यंचमें लेश्या ३ पावे

(१) स्तोक कापोत० (२) निल० वि० (३) कृष्ण० वि०।

(१८) संज्ञी तीर्यंच संज्ञी तीर्यंचणिके १२

(६) अल्पाबहुत्व न० १५के माफिक (७) कापोत० तीर्यंच असं० गु० (८) निल० तीर्यंच वि० (९) कृष्ण तीर्यंच वि० (१०) कापो० तीर्यंचणि असं० गु० (११) निल० तीर्यंचणि वि० (१२) कृष्ण० तीर्यंचणि वि०

(१९) संज्ञी तीर्यंचके ६ असंज्ञी ती० पां ३

(६) अल्पाबहुत्व सोलमीवत् (७) कापोत ले० असंज्ञी ती० असं० गु० (८) निल० असंज्ञी ती० पा० वि० (९) कृष्ण० असंज्ञी० ती० पा० वि०।

(२०) संज्ञी तीर्यंचणि असंज्ञी ती० पा० पूर्ववत्

(२१) संज्ञीतीर्यंच तीर्यंचणि और असंज्ञी तीर्यंच

(१२) अल्पा० अठारवींवत् (१३) कापो० असंज्ञी ती० पा० असं० गु० (१४) निल० असंज्ञी ती० पा० वि० (१५) कृष्ण० असंज्ञी० ती० पां० वि०।

(२२) समु० तीर्यंच संज्ञीतीर्यंचणिका १२

(६) अल्पा० १९ वत् (७) कापोत० तीर्यंचणि सं० गु० (८) निल० तीर्यंचणि० वि० (९) कृष्ण० तीर्यंचणि वि०

(१०) कापो० तीर्यंच असंगु० (११) निल० तीर्यंचवि० (१२) कृष्ण तीर्यंच वि० ।

(२३) समु० मनुष्यके ६ बोल

(१) स्तोक शुक्ल० (२) पद्म० सं० गु० (३) तेजो० सं० गु० (४) कापोत० असं० गु० (५) निल० वि० (६) कृष्ण वि०

(२४) मनुष्यणिका ६ बोल

पूर्ववत परन्तु चोथो बोअसं० गुणा।

(२५) मनुष्य मनुष्यणिका १२ बोल.

(१) स्तोक शुक्ल० मनुष्य (२) शुक्ल स्त्रि० सं० गु० (३) पद्म० पु० सं० गु० (४) पद्मस्त्रि संगु० (५) तेजो० पु० सं० (६) तेजो० स्त्रि० सं० गु० (७) कापो० स्त्रि० सं० गु० (८) निल० स्त्रि वि० (९) कृष्णस्त्रि० वि० (१०) कापो० मनुष्य असं० गु० (११) निल० म० वि० (१२) कृष्ण० म० वी०

(२६) संज्ञी मनुष्यके ६ बोल

(१) स्तोक शुक्ल० (२) पद्म० सं० गु० (३) तेजो० सं० गु० (४) कापोत० सं० गु० (५) निल० वि० (६) कृष्ण० वि० ।

(२७) असंज्ञी मनुष्यके ३ बोल

(१) कापोत० स्तोक (२) निल० वि० (३) कृष्ण० वि०

(२८) संज्ञी मनुष्यके ६ असंज्ञीके ३

(अल्पा० न० २६ वत् (७) कापोत० असंज्ञीमनुष्य अपं० गु० (८) निल० असंज्ञी मनु० वि० (९) कृष्ण० असंज्ञी० मनु० वि।

(२९) मनुष्यणि और असंज्ञी मनु० उपरवत

(३०) मनुष्य मनुष्यणिके १२ बोल

(१) स्तोक शुक्ल लेश्या० मनुष्य पुरुष (२) शुक्ल० मनुष्य स्त्रि० सं० गु० (३) पद्म पु० सं० गु० (४) पद्म० स्त्रि सं० गु० (५) तेजो० पु० सं० गु० (६) तेजो स्त्रि० सं० गु० (७) कापो० पु० सं० गु० (८) कापो० स्त्रि० सं० गु० (९) निल० पु० वि० (१०) निल० स्त्रि० सं० गु० (११) कृष्ण पु० वि० (१२) कृष्ण० स्त्रि० सं० गु० ।

(३१) मनुष्य मनुष्यणि और असंज्ञी मनुष्य

(१२) अल्प० मं० ३० वत् (१३) कापोत० असंज्ञी मनुष्य० असं० गु० (१४) निल० असंज्ञी० मनु० वि० (१५) कृष्ण० असं० मनु० वि० ।

(३२) समु० देवतोंमें लेश्या ६ पावे

(१) स्तोक शुक्ल० (२) पद्म० असं० गु० (३) कापोत० असं० गु० (४) निल० वि० (५) कृष्ण० वि० (६) तेजो० संख्यात गु० ।

(३३) समु० देवीमे लेश्या ४ पावे

(१) स्तोक कापोत० (२) निल० वि० (३) कृष्ण० वि० (४) तेजो० संख्या० गु० ।

(३४) समु० देवता देवीका १० बोल ।

(१) स्तोक शुक्ल० देवता० (२) पद्म० देवता असं० गु० (३) कापोत० देवता० असं० गु० (४) निल० देवता वि० (५) कृष्ण० देवता वि० (६) कापोत० देवीसं० गु० (७)निल० देवी० वि० (८) कृष्ण० देवी० वि० (९) तेजो० देवता० सं० गु० (१०) तेजो० देवी० सं० गु०

(३६) भुवनपति देवोंमे ४ लेश्या पावे

(१) स्तोक तेजो लेश्या० (२) कापोत० असं० गु० (३) निल० वि० (४) कृष्ण० वि०

(३६) भुवन० देवीमे ४ लेश्या देववत्

(३७) भुवन०देव-देवीका ८ बोल।

(१) स्तोक तेजो० देव (२) तेजो० देवीसं० गु० (३) कापोत० देव असं० गु० (४) निलदेव वि० (५) कृष्ण० देव वि० (६) कापोत० देवीसं० गु० (७) निल० देवी० वि० (८) कृष्ण० देवी वि०।

(३८) ३९–४० वाणमित्र देव भुवन० वत्

(४१) ज्योतिषी देव देवीके

(१) स्तोक तेजो० देव० (२) तेजो० देवीसं० गु०

(४२) वैमानिक देवके ३ बोल

(१) स्तोक शुक्ल० (२) पद्म० असं० गु० (३) तेजो० असं० गु०

(४३) वैमानिक देवी देवके ४ बोल

(३) अल्प० नं० ४२ वत् (४) तेजो० देवीसं०गु०

(४४) समु० चार जातके देवतोंके १२ बोल

(१) स्तोक शुक्ल० वैमानिक देव (२) पद्म० वैमानिक देव असं० गु० (३) तेजो० वैमनिक देव असं० गु० (४) तेजो० भुवन० देव असं० गु० (५) कापोत० भुवन० असं० गु० (६) निल० भुवन० वि० (७) कृष्ण० भुवन० वि० (८) व्यंतर तेजो० असं० गु० (९) कापोत० व्यंतर० असं०गु० (१०) निल० व्यंतर वि० (११) कृष्ण० व्यंतर० वि० (१२) ज्योतिषी तेजो० सं० गु० ।

(४५) समु० च्यार जातिकी देवीका १० बोल

(१) स्तोक तेजो० वैमानिक देवी (४) बोल भुवनपति (४) व्यंतर (१) जोतीषीका देवतोंवत् समझाना ।

(४६) समु० देवी देवताओंके २२ बोल

(१) स्तोक शुक्ल लेश्या० वैमानिक देव			
(२) पद्म लेश्या०	,,	असं० गु०	
(३) तेजो लेश्या०	,,	,,	
(४) ,,	,,	देवी० सं० गु०	
(५) तेजो०	भुवन०	देव० असं० गु०	
(६) कापोत०	,,	,,	,,
(७) निल०	,,	,,	विशष
(८) कृष्ण०	,,	,,	,,
(९) तेजो०	,,	देवी० सं० गु०	
(१०) कापोत०	,,	,,	असं० गु०
(११) निल०	,,	,,	वि०

(१२) कृष्ण	,,	,,	,,
(१३) तेजो०	वाणमित्रा	देव	असं०गु०
(१४) कापोत	,,	,,	,,
(१५) निल०	,,	,,	वि
(१६) कृष्ण०	,,	,,	,,
(१७) तेजो०	,,	देवी०	सं० गु०
(१८) कापोत०	,,	,,	असं० गु०
(१९) निल०	,,	,,	वि०
(२०) कृष्ण०	,,	,,	वि०
(२१) तेजो०	ज्योतिषी देव०		सं० गु०
(२२) तेजो	,,	देवी	सं० गु०

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्

थोकड़ा नं० ४

सूत्रश्री पन्नवणाजी पद १७ उ० ३

(लेश्याधिकार)

हे भगवान् ! नारकीमें क्या नेरीया उत्पन्न होते हैं या अनेरीया ? गौतम ! नारकीमें नेरीया उत्पन्न होते हैं अनेरीया नहीं. याने जो मनुष्य, तीर्यंचमें बैठा हुवा जीव जिसने नारकी का आयुष्य बांधा है वह भविष्यमें नारकीमें ही जावेगा इस लिये शास्त्रकारोंने भवि नारकी कहा इसी माफक २४ दंडक भी समझना ।

हे भगवान् ! नारकीसे नेरीया निकलते है के अनेरीया ? गौतम ! नेरीया नही निकलते अनेरीया निकलते हैं क्योंकी नारकीसे निकलकर फिर तद् भव नारकीमें उत्पन्न नहीं होगा परन्तु मनुष्य, तीर्यंचमें उत्पन्न होगा इस लिये अनेरीया कहा। एवं १३ दंडक देवताओंका भी कहना. और पांच स्थावर, तीन विकलेन्द्री तीर्यंच पंचेन्द्री और मनुष्य एवं १० दंडक औदारिक शरीरके हैं ये स्वकाय तथा परकाय दोनोंमें उत्पन्न होते हैं इसलिये पृथ्वीकायकी पृच्छामें पृथ्वीकायसे पृथ्वीकाय भी निकले और अपृथ्वीकाय भी निकले एवं यावत् मनुष्य भी कहना।

मनुष्य तीर्यंच मरके नारकीमें जानेवाला है उसको अगर मरते समय जो कृष्ण लेश्या आगई तो वह नारकीमें भी कृष्ण-लेश्यामे ही उत्पन्न होगा और नारकीसे निकलेगा वह भी कृष्ण-लेश्यामें ही निकलेगा अर्थात् नारकी, देवताओंके [1]तीनो स्थान पर एक ही लेश्या रहती है, एवं नारकी अपेक्ष कृष्ण, नील, कापोत और देवताओंकी अपेक्ष छेओं लेश्या कहनी यह १४ दंडक कहे.

जो जीव कृष्णलेश्यामें मरके पृथ्वी कायपने उत्पन्न हुवा है वह क्या कृष्णलेश्यामें हीं मरेगा ? पृथ्वीकायके लिये यह नियमा नहीं है वह स्यात् कृष्ण, नील, कापोत इन तीन लेश्याओंको परस्पर तेजो लेश्यावाला जीव नियमा लेश्या बदलता है क्योंकी तेजोलेश्या अपर्याप्त अवस्थामें ही रहती है पर्याप्ति अवस्थामें नहीं

---

१ मरते वखत, उत्पन्न होते वखत और समपुर्ण आयुष्य ।

रहती एवं अप्प० वनस्पतिकाय भी कहना और तेऊ, वाऊ तीन विकलेन्द्रीमें तीन लेश्या रहती हैं। और तीर्यच पंचेन्द्री तथा मनुष्यमें छे लेश्या होती है और वे अपनी २ लेश्यामें मरते और उत्पन्न भी होते हैं।

कृष्ण लेशी नारकी अवधी ज्ञानसे नील लेशीकी अपेक्षा स्वल्प क्षेत्र जाणे देखे वह भी अविशुद्ध जाणे देखे जैसे कोई पुरुष धरतीके तले खडा है और दूसरा पुरुष शम भूमीपर खडा रहे तो शम भूमीकी अपेक्षा धरतीके तलेका मनुष्य कमक्षेत्र देख शका है।

निल लेशी अवधीज्ञानी नारकी कापोत लेशी अवधी०की अपेक्षा कम क्षेत्र सोभी अविशुद्ध देखता है जैसे एक पुरुष धरती पर और दूसरा पर्वत पर खडा है तात्पर्य यह है कि विशुद्ध लेश्यासे ज्ञान भी विशुद्ध होता है। यहां पर देवताओंका अधिकार नहीं है परन्तु देवताओंमें भी विशुद्ध लेश्याओंको विशुद्ध ज्ञान होता है।

कृष्ण, नील, कापोत, तेजो और पद्म इन पांच लेश्यावालोंको ज्ञान हो तो स्यात् दो स्यात् तीन स्यात् चार होते हैं जैसे—

दो-मति, श्रुति ज्ञान

तीन-मति, श्रुति, अवधिज्ञान

तीन-मति, श्रुति, मनः पर्यवज्ञान

चार-मति, श्रुति, अवधि, मनः पर्यज्ञान

शुक्ल लेश्यामें पूर्ववत् २-३-४ या केवल ज्ञान भी होता है कारण शुक्ल लेश्या १३ वें गुणस्थान तक होती है।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

थोकड़ा नं० ५

सूत्र श्री पन्नवणाजी उ० ४

(लेश्याद्वार १५)

(१) परिणामद्वार (२) वर्णद्वार (३) गन्धद्वार (४) रसस्पर्शद्वार (५) शुद्धद्वार (६) प्रशस्थ० (७) संक्लष्ट० (८) शीतोष्ण० (९) गतिद्वार (१०) परिणाम० (११) प्रदेश० (१२) अवगाहा० (१३) वर्गणा० (१४) स्थान० (१५) अल्पाबहु० ।

(प्र) लेश्या कितने प्रकारकि है ।

(उ) लेश्या छे प्रकारकी है यथा—(१) कृष्ण लेश्या० (२) निल लेश्या (३) कापोत लेश्या० (४) तेजो लेश्या (५) पद्म लेश्या (६) शुक्ल लेश्या० ।

(१) **परिणामद्वार**—कृष्ण लेश्याके वर्ण गन्ध रस और स्पर्श निल लेश्या पणे परिणामता है जैसे दुधके अंदर खटाइ (छास) देनासे वह दुद्ध दहि पणे परिणमता है तथा वस्त्रके नया नया रंग देनासे वर्णान्तर होता है इसी माफिक अध्यवसायोंकी प्रेरणासे अर्थात् शुद्ध अध्यवशासे पूर्व जो अशुभ वर्णादि था उन्होंके शुभ वर्णादि पणे परिणामते हैं और अशुद्ध अध्यवशासे पूर्वमें शुभ वर्णादि था उन्होंकों अशुभ पणे परिणमायें इसी माफीक पेहला कृष्ण लेश्याके अशुभ वर्णादि थे उन्हीकों शुभाध्यवशाकि प्रेरणासे निललेश्या पणे परिणमावे । इसी माफीक अधिक २ तर शुभ प्रेरणासे कृष्ण कापोत पणे एवं तेजो लेश्या पणे एवं पद्म लेश्या पणे एवं शुक्ल लेश्या पणे परिणमे । एवं निल लेश्याका परिणाम अशुभाध्यवशासे कृष्ण लेश्या परिणमते है और शुभाध्यावशासे कापोत—तेजो—पद्म—शुक्ल लेश्यापणे परिणमते है एवं

छे लेश्याको परस्पर बदलानेसे ३६ भांगा होता है। यह द्रव्य लेश्याका पलटण सभाव है वह औदारीक शरीरवाले १० दंडकके लिये है परन्तु नारकी देवतोंके १४ दण्डकके लिये नहीं है कारण नारकी देवतोंके द्रव्य लेश्या भव प्रत्य होती है अध्यव-शाकी प्रेरणासे भाव लेश्या परिणाम रूपमे तफावत होती है परन्तु वर्ण गन्ध रस स्पर्श रुप जो पुद्गल है वह नहीं बदलते है हां पुद्गलोंमे तीव्र मन्दता गुण होता है परन्तु मूलसे नहीं बदलते है। जैसे मणि रत्नके अंदर जेसा रङ्गका तागा पोया जाय वैसा ही रङ्ग कि प्रभा उन्हीं मणिके अन्दर भापमान होगा परन्तु मणि आपका स्वरूपको कबी नही छोडेगा.

(२) **वर्ण द्वार**—लेश्याके प्रेरणासे पुद्गल एकत्र होता है उन्ही पुद्गलोंके अंदर वर्णादि होते है।

(१) कृष्ण लेश्याका श्याम काजलसा वर्ण है.

(२) निल०का निला शुक पांखवान् निला वर्ण है।

(३) कापोत० का पारेवाकी ग्रीवा जेसा वर्ण है

(४) तेजो० हींगलुके माफिक लाल वर्ण है

(५) पद्म० हलदिके माफिक पेत वर्ण है

(६) शुक्ल मोक्ताफलके हार माफिक श्वेत वर्ण है

(३) **गन्द धार**—कृष्ण० निल० कापोत० इन्ही तीनो लेश्याका गंध जैसे मृत्यु सर्प श्वान खर नर इत्यादि इन्होंसे ही अधिक दुर्गन्ध होते है और तेजो० पद्म० शुक्ल इन्ही तीनों लेश्याकी अच्छी सुगन्ध पदार्थ जेसे कोष्ट चम्पा चम्पेली जाइ मोगरादिसे भी अधिक सुगन्ध है।

(४) **रस द्वार**–

(१) कृष्ण० कडवा तुंबा जेसा कटुक रस है

(२) निल० सुठ पीपर जेसा तीखा रस है

(३) कापोत० कचा आम्र जेसा खाटा रस है

(४) तेजो० पका हुवे आम्र या कविट जेसा रस है।

(५) पद्म० उतम जातके वारूणिमद् जेसा रस है

(६) शुक्ल० शकर खीजुर पकी द्राख जेसा रस है।

(५) **स्पर्शद्वार**–कृष्ण० निल० कापोत इन्ही तीनों लेश्याका स्पर्श करवोतकी धार शाकवनास्पतिसे भी अधिक स्पर्श है और तेजो० पद्म शुक्ल इन्ही तीनों लेश्याके स्पर्श कोमल जेसेमखन बुरवनास्पति और सरसवके पुष्पोंसे अधिक कोमल है।

(६) **शुद्ध** (७) **प्रशस्थ** (८) **संक्लिष्ट**-कृष्ण० निल० कापोत यह तीनों लेश्या अशुद्ध–अप्रशस्थ और संक्लिष्ट है और तेजो० पद्म० शुक्ल यह तीनों लेश्या शुद्ध प्रशस्थ–असंक्लिष्ट है।

(९) **शीतोष्णा**–कृष्ण० निल० कापोत यह तीनों लेश्या शीत और रूक्ष है और तेजो पद्म शुक्ल उष्ण और स्निग्ध है।

(१०) **गतिद्वार**–कृष्णादि तीन लेश्या दुर्गति ले जानेवाली है और तेजो पद्म शुक्ल यह तीनों लेश्या सुगति लेजानेवाली है।

(११) **परिणामद्वार**–आयुष्यबन्ध समय जो लेश्या जाति है उन्हीको परिणाम कहते है वह आयुष्यका बन्ध आयुष्यके ३–९–२७–८१ या २४३ मे भागमें होते है अगर न हो तो आयुष्यका अन्तम अन्तर महूर्तमें तो आवश्य होता है।

(१२) **प्रदेशद्वार**-एकेक लेश्याके अनंत अनंत प्रदेश है कारण स्थुल अनंत प्रदेशी स्कंध होता है वह लेश्याके गृहनयोग होता है।

(१३) **अवगाहा**-एकेक लेश्याके जो अनन्ता अनन्ता प्रदेश है वह असंख्याते असंख्याते आकाश प्रदेश अवगाह्या (रोका है)

(१४) **वर्गणाद्वार**-एकेक लेश्याके स्थानोंमें अनंत अनंति वर्गणा वों हैं।

(१५) **अल्पाबहुत्वद्वार**—(स्थानापेक्षा)

(१) द्रव्य जघन्य स्थान

(१) स्तोक कापोत लेश्याका जघन्य द्रव्यस्थान
(२) नील लेश्याका जघन्य द्रव्य असंख्यात गुणा
(३) कृष्ण ,, ,, ,, ,,
(४) तेजो ,, ,, ,, ,,
(५) पद्म ,, ,, ,, ,,
(६) शुक्ल ,, ,, ,, ,,
(७) एवं छे बोलो कि प्रदेशकी अल्पा० भी समझना

(३) द्रव्य और प्रदेशकी शामिल स्थान

(१) स्तोक कापोत लेश्या जघन्य द्रव्य
(२) नील लेश्याका जघन्य द्रव्य असंख्यात गुणा
(३) कृष्ण ,, ,, ,, ,,
(४) तेजो ,, ,, ,, ,,

(५) पद्म ,, ,, ,, ,,

(६) शुक्ल ,, ,, ,, ,,

(७) कपोत लेश्यका जघन्य प्रदेश अनन्त गुणा

(८) नील ,, ,, ,, असंख्यात गुणा

(९) कृष्ण ,, ,, ,, ,, ,,

(१०) तेजो ,, ,, ,, ,, ,,

(११) पद्म ,, ,, ,, ,, ,,

(१२) शुक्ल ,, ,, ,, ,, ,,

जैसे तीन अल्पा बहूत जघन्य स्थानकि कही है वैसे ही तीन उत्कृष्ट स्थानकि कहना ६ ।

(७) द्रव्य जघन्य उत्कृष्ट स्थान

(१) कापोत लेश्या जघन्य द्रव्य स्थान स्तोक

(२) नील ,, ,, ,, असंख्यात गुणा

(३) कृष्ण ,, ,, ,, ,, ,,

(४) तेजो ,, ,, ,, ,, ,,

(५) पद्म ,, ,, ,, ,, ,,

(६) शुक्ल ,, ,, ,, ,, ,,

(७) कापोत ,, उत्कृष्ट ,, ,, ,,

(८) नील ,, ,, ,, ,, ,,

(९) कृष्ण ,, ,, ,, ,, ,,

(१०) तेजो ,, ,, ,, ,, ,,

(११) पद्म ,, ,, ,, ,, ,,

(१२) शुक्ल ,, ,, ,, ,, ,,

(८) एवं जघन्य उत्कृष्ट प्रदेशकी अल्पा बहुतका स्थान

(९) द्रव्य प्रदेशके जघन्य उत्कृष्ट स्थान

(१) कापोत	लेश्या	जघन्य	द्रव्य	स्थान	स्तोक
(२) नील	,,	,,	,,	,,	असंख्यातगु०
(३) कृष्ण	,,	,,	,,	,,	,,
(४) तेजो	,,	,,	,,	,,	,,
(५) पद्म	,,	,,	,,	,,	,,
(६) शुक्ल	,,	,,	,,	,,	,,
(७) कापोत	,,	उत्कृष्ट	,,	,,	,,
(८) नील	,,	,,	,,	,,	,,
(९) कृष्ण	,,	,,	,,	,,	,,
(१०) तेजो	,,	,,	,,	,,	,,
(११) पद्म	,,	,,	,,	,,	,,
(१२) शुक्ल	,,	,,	,,	,,	,,

(१३) कापोत	लेशी	जघन्य	प्रदेश	अनन्तगुणा
(१४) नील	,,	,,	,,	असंख्यातगुणा
(१५) कृष्ण	,,	,,	,,	,,
(१६) तेजो	,,	,,	,,	,,
(१७) पद्म	,,	,,	,,	,,
(१८) शुक्ल	,,	,,	,,	,,
(१९) कापोत	,,	उत्कृष्ट	,,	,,
(२०) नील	,,	,,	,,	,,
(२१) कृष्ण	,,	,,	,,	,,

(२२) तेजो „ „ „ „
(२३) पद्म „ „ „ „
(२४) शुक्ल „ „ „ „

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्

थोकडा नंबर ६

सूत्र श्रीपन्नवणाजी पद १७ उ० ६

[गर्भकी लेश्या]

कितनेक लोक कहते हैं कि जेसे माता पिताकि लेश्या होती है वैसे ही उन्होंकि गर्भके जीवोंकि लेश्या होती परन्तु यह बात एकांत नहीं है कारण जीव सर्व कर्माधिन है और कर्म सर्व जीवोंके स्वकृत विचित्र प्रकारका है वह इस थोकडेद्वार बताया जायगे।

(प्र) हे भगवान्। लेश्या कितने प्रकारकि है।

(उ) लेश्या छे प्रकार कि है यथा कृष्ण लेश्या, निल० कापोत लेश्या० तेजो० पद्म० शुक्ल लेश्या।

१२ समुच्चय मनुष्य–मनुष्यणि समुच्चय कर्मभूमि मनुष्य मनुष्यणी, भरतक्षेत्रके कर्मभूमि मनुष्य–मनुष्यणि एवं एरवरतके मनुष्य मनुष्यणी, पूर्व विदेहके मनुष्य मनुष्याणे एव पश्चिम विदेहके मनुष्य मनुष्यणि एवं १२ बोलोंमें लेश्या छेछे पावे।

२४ पूर्ववत् धातकिखण्डद्विपमें दुगुण क्षेत्र होनासे १२ कों दुगुण करनेसे २४ बोल होता है.

२४ पुष्कर्द्ध द्विपमें भी धातकि खण्ड बराबर ही समझना

१६ समुच्चय अकर्म भूमि (युगल) मनुष्य–मनुष्यदुणि छपन्न अन्तर द्विपके मनुष्य–मनुष्यणि एवं हेमयके मनुष्य मनुष्यणि एवं एरण वयके २ हरिवासके २ रम्यकवासके २ देवकूरूके २ उत्तर कूरूके २ एवं सर्व १६ बोलोंमे लेश्या पावे च्यार च्यार कृष्ण निल कापोत तेजो लेश्या पावे

३२ घातकि खण्ड द्विपमे दुगुणक्षेत्र होनासे १६से दुगुण होनासे ३२ बोलोंमे च्यार च्यार लेश्या पावे

३२ पुष्करर्द्ध द्विपमे भी ३२ बोलोंमे लेश्या च्यार च्यार पावे।

॥ कर्म भूमियोंके गर्भका विचार ॥

(१)	कृष्ण लेश्यावाली मातासे		कृष्ण	लेश्या०	पुत्रका	जन्म
(२)	,,	,,	निल	,,	,,	,,
(३)	,,	,,	कापोत	,,	,,	,,
(४)	,,	,,	तेजो०	,,	,,	,,
(५)	,,	,,	पद्म	,,	,,	,,
(६)	,,	,,	शुक्ल	,,	,,	,,
(१२)	एवं निल लेश्यावाली माता		६	लेश्यावाला	पुत्रका	जन्म
(१८)	एवं कापोत ,,	,,	६	,,	,,	,,
(२४)	एवं तेजो ,,	,,	६	,,	,,	,,
(३०)	पद्म ,,	,,	६	,,	,,	,,
(३६)	शुक्ल ,,	,,	६	,,	,,	,,
(३७)	कृष्णले० पितासे०		कृष्ण०		पुत्रका	जन्म
(३८)	,,	,,	निल		,,	,,

(३९) ,, ,, कापोत ,, ,,
(४०) ,, ,, तेजो ,, ,,
(४१) ,, ,, पद्म ,, ,,
(४२) ,, ,, शुक्ल ,, ,,
(४८) निल ,, ६ लेश्याके छेसूत्र
(५४) कापोत ,, ६ ,, ,,
(६०) तेजो ,, ६ ,, ,,
(६६) पद्म ,, ६ ,, ,,
(७२) शुक्ल ,, ६ ,, ,,
(१०८) मातापिता दोनोंको सेमील ३६ सूत्र

पूर्वजो कर्म भूमिका २॥ द्विपके १२–२४–२४ एवं ६० बोल कहा था उन्हीकों १०८ गुणा करनेसे ६४८० भांगा होता है।

अकर्म भूमि मनुष्योंके गर्भ

(१) कृष्णलेश्या० मातासे कृष्णलेश्या० गर्भ
(२) ,, ,, निल ,, ,,
(३) ,, ,, कापोत ,, ,,
(४) ,, ,, तेजो ,, ,,
(८) निललेश्या मातासे ४ सूत्र
(१२) कापोत लेश्या० मातासे ४ सूत्र
(१६) तेजोलेश्या० मातासे ४ सूत्र
(३२) मातावत् पिताका भी १६ सूत्र
(४८) माता और पिता दोनोंके साथ गर्भका १६ सूत्र

एवं ४८ सूत्र होता है जिन्होंको पूर्वोक्त ८० के साथ गुणा करनेसे ३८४० भांगा होता है

६४८० कर्मभूमिका भांगा ३८४० अकर्म भूमिका

सर्व गर्भके भांगा—१०३२०

सेवंभंते सेवंभंते तमेवसच्चम् ।

थोकडा नंबर ७

सूत्र श्रीपन्नवणाजी पद १९.

(दर्शन पद)

वस्तुकों अवलोकन कर उन्हीपर श्रद्धा (प्रतित) करना उन्हीका नाम दर्शन है। दर्शनमें मौख्य हेतू भूत मोहनिय कर्म है। मोहनिय कर्मका मूलसे क्षय होजानेपर सम्यग्दर्शनकि प्राप्ती होती है उन्हीको क्षायक दर्शन भी केहते है तथा मोहनिय कर्मको उपशम करनेसे उपशम दर्शनकि प्राप्ती होती है इन्ही दोनों दर्शनोंकों सम्यग्दर्शन कहा जाते है तथा मोहनिय कर्मका प्रबलोदय होनेपर वस्तुकी विप्रीत श्रद्धना होती है उन्हीको मिथ्या दर्शन केहते हैं तथा मिश्र मोहनिय कर्मोदय वस्तुमें सत्यासत्यकी कल्पना होती है उन्हीकों मिश्र दर्शन केहते है अर्थात् ।

(१) सम्यग्दर्शन=वस्तुको यथार्थ श्रद्धना ।

(२) मिथ्या दर्शन-वस्तुकों विप्रीत श्रद्धना ।

(३) मिश्र दर्शन=वस्तुमे सत्यासत्यका विकल्प करना अर्थात् सत्य वस्तु होनेपर सत्यासत्यकि कल्पना या असत्य वस्तु होनेपर भि सत्यासत्यकि कल्पना करना ।

प्रत्येक दंडकके जीवोंमें कितने २ दर्शन है।

(१) सातोनरकमे पूर्वोक्त तीनो दर्शन है परन्तु सातवी नरकके उपर्याप्तामें एक मिथ्या दर्शन मीलता है।

(२) दश भुवनपतियोंमें पूर्वोक्त तीनों दर्शन है परन्तु पन्दरा परमाधामी देवोंमें एक मिथ्या दर्शन है।

(३) पांचस्थावर=पृथ्वीकाय अपूकाय तेउकाय वायुकाय बनास्पति काय इन्होंमें एक मिथ्या दर्शन है।

(४) तीन वैकलेन्द्रिय=बेरिन्द्रिय तेरिन्द्रिय चौरिन्द्रिय तथा असंज्ञी तीर्यंच पांचेन्द्रिय=जलचर स्थलचर खेचर उरपुर भुजपुर इन्ही आठबोलोंके अपर्याप्ती अवस्थामें सम्यग्दर्शन और मिथ्यादर्शन और पर्याप्तावस्थामें दर्शन एक मिथ्यादर्शन है।

(५) संज्ञी तीर्यंच पांचेन्द्रियमें दर्शन तीन पूर्ववत्।

(६) मनुष्य=असंज्ञी मनुष्य तथा छपन्न अन्तरद्विपोंके मनुष्योंमें दर्शन एक मिथ्या दर्शन, और तीस अकर्म भूमि युगल मनुष्योंमें दर्शन दो (१) सम्यग्दर्शन (२) मिथ्यादर्शन शेष पन्दरा कर्म भूमि मनुष्योंमें तीनों दर्शन पूर्वोक्त पावे

(७) वांणमित्र और ज्योतीषी देवोंमें तीनों दर्शन पूर्ववत्

(८) वैमानिक देवोंमें तीन, किल्बिषी देवोंमें दर्शन एक मिथ्या दर्शन, नौग्रीवैगके देवतोंमें दर्शन दो पावे (१) सम्यग्दर्शन (२) मिथ्यादर्शन और पांचाणुत्तर वैमानके देवोंमें दर्शन एक स० शेष वैमानिक देवोंमें दर्शन तीनों पावें।

उपर कये हूवे सर्वस्थानोंके अपर्याप्ता जीवोंमें मिश्र दर्शन नहीं मीलता है कारन मिश्र दर्शन हमेंसों पर्याप्ती अवस्थामें ही

होता हैं और सम्यग्दर्शन तथा मिथ्या दर्शन मृत्यू होके परभव गमन करते समय साथ ही चलता है परन्तु मिश्र दर्शन परभव साथ नही चलता है।

(९) सिद्ध भगवान्में दर्शन एक सम्यग्दर्शन है। इति।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्

थोकडा नम्बर ८

सूत्र श्री पन्नवणाजी पद २१

(मरणांति समुद्घात)

जीव मरणांतिक समुद्घातकर परभव गमन करते है उन्ही समय रहस्तेमें तेजस कारमण शरीर ही रहते है उन्हीं समय तेजस शरीर कि कितने विस्तारवाली अवगाहाना होती है वह इस थोकडा द्वारा बतलावेगा।

। मरणांतिक समुद्घात और तेजसावगाहाना।

समुच्चय जीव समु० एकेंद्रिय और पांच स्थावर जो मरणांतिक समुद्घात करे तो विस्कंभ पहूलपने जाडी तो शरीर परिमाणे और लंबाईमें जघन्य अंगुलके असंख्यातमें भाग उत्कृष्ट लोकान्त तक होती है—

तीन वैकलेंद्रिय और तीर्यंच पांचेंद्रिय जाडी पहुली तो शरीर परिमाणे लंबाईये ज० अंगु० असं० भाग उ० तीरच्छा लोकान्त तक एवं मनुष्य परन्तु उत्कृष्ट मनुष्यलोक परिमाण

नारकी और देवतोंमें विस्कंभ और जाडी तो शरीर परिमाणे लम्बाईमें निचे यंत्र परिमाणे समझना

मार्गणा	जघन्य	उत्कृष्ट		तीरछा लोक
		अधोलोक	ऊर्ध्वलोक	
सातों नरक	१०००० जो०	सातवी नरक तक	पांडग वन तक	संभूरमणसमुद्र
१० भुवन० व्यंतर जोतीषी	अंगुलके	तीजी नरकका	इसी पभारा पृथ्वी	संभूरमणसमुद्रकी
सुधर्म इशान देवलोक	असं० भाग	चरमान्त	तक	बाहारकि वेदिका
तीजासे आठवा देवलोक	,,	पाताल कलशों	बारहा देवलोक	संभूरमणसमुद्र
		केदुजे तीजे भाग	तक	तक
नवामासे बारहवा देव	,,	शलीलावती	स्व स्व वैमान	मनुष्य क्षेत्र
लोक तक				
		विजयातक	तक	
नौग्रीवैग नव जोरवान	विद्याधरों	अधोलोक	स्व स्व वैमान	मनुष्य क्षेत्र
अनुतर वैमान	कि श्रेणी			
		ग्राम	तक	तक

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्

थोकड़ा नं० ९

श्री पन्नवणा सूत्र पद २३ उ० १

(कर्मप्रकृती)

द्वार—कितनी प्रकृती १ कैसे बांधे २ कितने स्थान ३ कितनी प्रकृति वेदे ४ अनुभाग कितने ५

हे भगवान् ! कर्मोकी प्रकृती कितनी है ? कर्मोकी प्रकृती आठ हैं यथा ज्ञानावर्णीय, दर्शनावर्णीय, वेदनिय, मोहनीय, आयुष्य, नाम, गोत्र और अंतराय.

नरकादि २४ दंडकके जीवोंके कर्म प्रकृती आठ आठ है यावत् वैमानिक.

जीव आठ कर्मोंकी प्रकृती किससे बांधता है ? ज्ञानावर्णिय कर्मके उदयसे दर्शनावर्णिय कर्मकी इच्छा करता है अर्थात् ज्ञानावर्णिय कर्मके प्रबल उदय होनेसे सत्य वस्तुका ज्ञान नहीं होता इससे सत्य वस्तुको असत्य देखे. यह दर्शनावर्णियकी इच्छा की. और दर्शनावर्णिय कर्मके उदयसे दर्शन मोहनीय कर्मकी इच्छा हुई अर्थात् असत्यको सत्य कर मानना. इस दर्शन मोहनियसे मिथ्यात्वका प्रबलोदय होता है और मिथ्यात्वसे आठों कर्मोका बंध होता है इस वास्ते कर्मोंके बंधका मूल कारण मिथ्यात्व है और मिथ्यात्वका मूल कारण अज्ञान है एवं नरकादि २४ दंडकके जीवोंके आठ २ कर्मोका बंध समझना।

ज्ञानावर्णिय कर्मोका बन्ध कितने स्थानपर होता है ? रागसे (माया लोभ) द्वेषसे (क्रोधमान) इन राग द्वेषकी चार प्रकृतियोंको अर्थात् क्रोधमान माया लोभ इस चंडल चौकड़ीसे ज्ञाना

वर्णीय कर्मका बंध होता है एवं नरकादि २४ दंडकमें समझना इसी माफक बहुवचनापेक्षा भी राग द्वेषसे कर्म बन्धता है नरकादि २४ दंडकमें एक वचनके २५ बोल और बहुवचनके २५ बोल कुल ५० बोल इतने ज्ञानावरणीयके हुए। इसी माफिक दर्शनावर्णी आदि आठ कर्मोंके ५०-५० बोल लगानेसे ४०० बोल हुवे।

एक जीव ज्ञानावर्णीय कर्मवेदे ! कोई वेदे कोई नहीं वेदे (केवली) और नरकादि २३ दंडक नियमा वदे. मनुष्य कोई वेदे कोई नहीं वेदे (केवली) एवं २५ बोल बहु वचनका भी समझना एवं दर्शना वर्णिय मोहनिय तथा अन्तराय और वेदनिय, आयुष्य, नाम, गोत्र इन चार कर्मोंका एक वचन या बहुवचनापेक्षा सब जीव निश्चय वेदे एवं ८ कर्मोके ४०० भांगे होते हैं.

अनुभाग द्वारा–हे भगवान ! जीव ज्ञानावर्णिय कर्म बान्धे रागद्वेषसे स्पर्शे. आत्माके प्रदेशोंके साथ. विशेष कर बांधे और स्पर्श किये ज्ञानावर्णिय कर्मका संचय किये चितके एकत्र किये, ज्ञानावर्णिय कर्म उदय आने योग्य हुवे. विपाक प्राप्त हुवे. फलदेनेके सन्मुख हुवे. यहां भावार्थ यह है के जीवके कर्मोंका प्रेरक कोन है ? निश्चय नयसे जीव कर्मोंका आकर्ता है. कर्मोका कर्ता कर्म ही है परन्तु यहां पर व्यवहार नयकी अपेक्षासे उत्तर देते हैं। जीवने ही कर्म किया है. (रागद्वेषसे) यावत् जीवने ही कर्म उदय निष्पन्न किये हैं. जीवने ही भोग रस पने प्रणमाये हैं. जीवने ही उन कर्मोको उदीर्णा की है. अन्य जीवके भी कर्मोकी उदीर्णा होती है. वह अन्य जीव ही करते हैं. कर्मोका उदय उदीर्णासे

प्राप्त होनेपर असाता (नरकादि गति) साता (देवादि गति) और जितनी स्थिति बन्धी है वह और जिस भवका बन्ध है वह भोगने लगता है. जो पुद्गल अच्छे या खराब उदयमें आते हैं वे भोगने और इसी माफक जीवको कर्म भोगने पडते हैं. यह ज्ञाना-वर्णिय कर्मका विपाक अनुभाग दश प्रकारसे भोगता है यथा

(१) श्रोत्रेन्द्रिय द्वारा शब्द सुने नहीं.

(२) अगर सुन भी ले तो समझे नहीं.

(३) चक्षु इन्द्रिय द्वारा रूप देख सके नहीं.

(४) अगर देखले तो समझे नहीं.

(५) घ्राणेन्द्रियद्वारा पुद्गलोंको सूंघ न सके.

(६) अगर सूंघ भी ले तो समझ न सके.

(७) रसेन्द्रिय द्वार स्वाद न ले सके.

(८) अगर स्वादले भी तो समझे नहीं.

(९) अच्छे स्पर्शको वेदे नहीं

(१०) अगर वेदे तो समझे नहीं

जो वेदते हैं वे पुद्गल एक या अनेक विशेषा. स्वभावसे बादलवत् प्रणमते हैं. और उसे भोगते हैं. परन्तु ज्ञानवर्णीय कर्मके प्रबल उदयसे जान नहीं सकते यह ज्ञानवर्णिय कर्मका फल याने विपाक है कि जीवको अज्ञानी बना देता है.

(२) दर्शनावर्णिय कर्म उदय होनेसे जीवको नौ प्रकारका अनुभाग होता है.

(१) निद्रा सुखसे सोवे सुखसे जागे.

(२) निद्रा निद्रा–सुखसे सोवे दुःखसे जागे.

(३) प्रचला—बैठा बैठा निद्राले

(४) प्रचला प्रचला—चलता हुवा निद्राले.

(५) स्थनद्धि—दिनका चिन्तन किया कार्य निद्रामें करे. इस निद्रामें वासुदेव जितना बल होता है.

(६) चक्षुदर्शनावर्णिय- बराबर देख नही सकता.

(७) अचक्षु दर्शनावर्णिय—चक्षुके सिवाय चार इन्द्रियोंसे सम्पूर्ण काम न ले सके ।

(८) अवधिदर्शनावर्णिय—अवधिदर्शनहोने न दे.

(९) केवल दर्शनावर्णिय—केवल दर्शन होने नदे.

(३) इसी माफक वेदनी कर्म भी समझना परन्तु वेदनी कर्मके दो भेद है. साता वेदनी और असातावेदनी जिसमें साता वेदनी का अनुभाग ८ प्रकारका है.

(५) मनोज्ञशब्द, रूप, गन्ध, रस, स्पर्श.

(६) मन हमेसा अच्छा रहना (समाधीसे)

(७) वचन हमेसा अच्छा रहना (मधुर बोलनेसे)

(८) काय—अंगोपांग अच्छा होना (हाथकी चतुरतादि) असाता वेदनीका इससे विप्रीत अशुभ फल समझना.

(४) मोहनिय कर्मके उदय अनुभागके पांच भेद हैं यथा.

(१) मिथ्यात्व मोहनीय-इसके उदयसे वस्तुकी विप्रीत श्रद्धा होती है.

(२) मिश्रमोहनीय—इसके उदयसे मिश्रभाव होता है.

(३) सम्यक्त्व मोहनीय—इसके उदयसे वस्तुकी यथार्थ श्रद्धा होती है परन्तु क्षायक सम्यक्त्व प्राप्त नहीं होने देता.

(४) कषाय मोहनिय-इसके उदयसे अन्तानुबन्धी आदि १६ प्रकृतियोंका उदय होता है.

(५) नोकषाय मोहनीय-इसके उदयसे हास्यादि नौ प्रकृतियोंका उदय होता है.

(५) आयुष्य कर्मके उदय अनुभागके चार भेद है.

(१) नारकीका आयुष्य वैदे

(२) त्रियंचका ,,

(३) मनुष्यका ,,

(४) देवताका ,,

(६) नाम कर्मके उदय अनुभागके दो भेद हैं. शुभ नाम कर्म और अशुभ नाम कर्म जिसमें शुभ नाम कर्मके अनु भाग १४ प्रकारके हैं.

(१) इष्ट शब्दका मिलना

(२) इष्ट रुपका मिलना

(३) इष्ट गन्धका मिलना

(४) इष्ट रसका मिलना

(५) ,, स्पर्शका मिलना

(६) ,, गति (देवादि)

(७) ,, स्थिति

(८) ,, शरीर लावण्य

(९) इष्ट यशोकीर्ति

(१०) इष्ट उत्थानादि वीर्य

(११) इष्टाकार

(१२) इष्ट स्वर

(१३) क्रन्त स्वर

(१४) प्रीय स्वर

(१५) मनोज्ञ स्वर

(१६) विशेष मनोज्ञ

अशुभ नाम कर्मके १६ बोल इससे विप्रीत समझना. (७) गोत्र नाम कर्मके उदय अनुभागके दो भेद हैं. ऊंच गोत्र और

नीच गोत्र. जिसमें ऊंच गोत्रके ८ भेद है तथा निचगोत्रके आठ भेद.

	(ऊंचगौत्र)			(नीचगौत्र)
(१)	जाति विशेष उत्तम			जातिमद
(२)	कुल	,,	,,	कुलमद
(३)	बल	,,	,,	वलमद
(४)	रुप	,,	,,	रुपमद
(५)	तप	,,	,,	तपमद
(६)	सूत्र	,,	,,	सूत्रमद
(७)	लाभ	,,	,,	लाभमद
(८)	एश्वर्य	,,	,,	एश्वर्यमद

(८) **अन्तराय कर्मके उदय** अनुभाग ५ प्रकारके हैं यथा

(१) दानान्तराय–दान दे न सके.

(२) लाभान्तराय–लाभकी प्राप्ति न हो.

(३) भोगा ,,–छती वस्तु भोग न सके.

(४) उपभोगा ,,–वार २ भोग न सके.

(५) वीर्या ,,–कोई काममें पुरुषार्थ कर न सके.

इति

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० १०

सूत्र श्री पन्नवणा पद २८ उ० २

(आहार पद)

(१) जीव (२) भव्य (३) संज्ञी (४) लेश्या (५) द्रीष्ट

(६) संज्ञि (७) कषाय (८) ज्ञान (९) योग (१०) उपयोग (११) वेद (१२) शरीर (१३) पर्याप्ती इति.

समुच्चय जीव तथा २४ दंडक और सिद्ध भगवान् एवं २६ बोलके एकवचनापेक्षा और बहु वचनापेक्षा सर्व २६ बोल प्रत्येकद्वारके प्रत्येक बोलपर उतारे जावेंगे परन्तु जिन्हीं बोलमें जो दंडक पावेगा उन्हीको ही गृहन किया जावेगा.

(१) **जीवद्वार**—एक जीव क्या आहारीक है या अनाहारीक है ? स्यात् आहारीक है स्यात् अनाहारीक है कारण यहांपर समुचय जीवका प्रश्न होनासे स्यात् शब्द रखा गया है क्योंकि परभवगमन करते समय या चौदवा गुणस्थान या सिद्धोंके जीवानाहारीक है शेषाआहारीक है.

एवं २४ दंडक भी समझना तथा सिद्ध भगवान् अनाहारी है। समुच्चय घणा जीव आहारीक भी घणा अनाहारीक भी घणा घणासिद्ध अनाहारीक है घणा नारकीके जीवोंके उत्तरमे तीन भांगा होते है यथा (१) घणा नारकी मे आहारीक जीवों सदाकाल शास्वता है (२) आहारीक नारकी घणा और अनाहारीक एक जीव मीले (३) आहारीक नारकी घणा और अनाहारीक भी घणा एवं पांच स्थावर वर्जके १९ दंडकमें तीन तीन भांगा करनेसे ५७ भाणा हुवे पांच स्थावरोंके बहू वचनमें आहारीक भी घणा अनाहारीक भी घणा इतिद्वारम् भांगा ५७.

(२) **भव्य**—समुच्चय एक भव्य जीव और २४ दंडकोंके एकेक जीव, स्यात् आहारीक स्यात् अनाहारीक। बहू वचन समुच्चय

जीव ओर पांच स्थावरमें आहारीक भी घणा अनाहारीक भी घणा शेष १९ दंडकोंमें तीन तीन भांगा पूर्ववत् एवं ५७ भांगा एवं अभव्य जीवोंका भी पूर्व भव्यवत् ५७ भांगा समझना। नो भव्य नो अभव्य एक जीव ओर घणा जीवों अपेक्षा आहारीक नही किंतु अनाहारीक है एवं सिद्ध भी समझना इतिद्वारम् ११४ भांगा.

(३) **संज्ञीद्वार**–समु० जीव १ और १६ दंडक एक वचन स्यात् आहारीक स्यात् अनाहारीक बहू वचनापेक्षा जीवादि १७ दंडकमें तीन तीन भांगा होनासे ५१ भांगा होता है। असंज्ञी समु० जीव ओर २२ दंडक एक वचनापेक्षा स्यात आहारीक स्यात अनाहारीक। बहू वचनापेक्षा समु० जीव ओर पांच स्थावरमें आहारीक घणा अनाहारीक भी घणा.

तीन वैकलेन्द्रिय और तीर्यंच पांचेन्द्रिय इन्ही च्यार बोलोंमे तीन तीन भांगा पूर्ववत् एवं १२ भांगा तथा नारकी दश भुवनपति व्यंतर मनुष्य इन्ही तेरहा दंडकके प्रत्येक दंडकमें छे छे भांगा होते है। यथा—

(१) आहारीक एक (२) अनाहारीक एक
(३) आहारीक एक अनाहारिक एक युगम्
(४) ,, ,, ,, घणा
(५) ,, घणा ,, एक
(६) ,, ,, ,, घणा

एवं १३ दंडकके ७८ भांगा हूवे। नोसंज्ञी नोअसंज्ञी समु० जीव और मनुष्य स्यात् आहारीक स्यात् अनाहारीक।

बहू वचनापेक्षा समु० जीवमें आहारीक घणा अनाहारीक भी घणा। मनुष्यमें भांगा ३ सिद्ध भगवान् एक या बहू वचन अनाहारी है सर्व भांगा ५१-१२-७८-३ एवं १२४ भांगे।

(४) **लेश्याद्वार**—सलेश्या समु० जील और २४ दंडक एक वचनापेक्षा स्याताहारीक स्यातानाहारीक बहुत वचनापेक्षा समु० जीवों और पांच स्थावरमें आहारीक घणा अनाहारीक त्रिघणा शेष १९ दंडकके तीन तीन भांगा करनेसे ५७ एवं कृष्ण लेश्या परन्तु दंडक २१ ज्योतीषी वैमानिक वर्जके वास्ते भाग १७ दंडकका ५१ एवं निल लेश्याका ५१ कापोत लेश्याका ५१ एवं तेजो लेश्यामें दंडक १८ समु० जीव और १८ दंडक एक वचनापेक्षा स्याताहारीक स्यातानाहारीक बहू वचनापेक्षा समु० जीव और १५ दंडकमें तीन तीन भांगा ४८ और पृथ्वी पाणी बनास्पतिमें छे छे भागा (असंज्ञीवत्) एवं १८ मीलके ६६॥ पद्मलेश्या समु० जीव और तीन दंडक एक वचन पूर्ववत् बहू वचनापेक्षा तीन तीन भागा १२ एवं शुक्ल लेश्याका भी भांगा १२ तथा अलेश्य समु० जीव मनुष्य और सिद्ध एकवचन वा बहू वचन सर्व अनाहारीक है भांगा ५७-५१-५१-५१-६६-१२-१२ कुल भागा ३०० द्वारम्।

(५) **द्रीष्टीद्वार**—सम्यग्द्रीष्टी समु० जीव और १९ दंडक एक वचनापेक्षा स्याताहारीक स्यातना हारीक बहु वचनापेक्षा समु० जीव और १६ दंडकमें तीन तीब भांगा ५१ और तीन वैकलेन्द्रियमें छे छे भाग एवं १८ भांगा। मिथ्या द्रीष्टी समु०

जीव और २४ दंडक एक वचनापेक्षा पूर्व बहु बहू वचनापेक्षा समु० जीव और पांच स्थावर ये आहारीक घणा और अनाहारीक भी घणा शेष १९ दंडक ये भागा तीन तीन (५७) मिश्र द्रीष्टी समु० जीव और १६ दंडक एक वचन या बहू वचन आहारीकहै तथा सिद्ध भगवान् एक या बहू वचनापेक्षा अनाहारीक है सर्व भांगा ५१-१८-५७ कुल १२६ द्वारम्.

(६) **संयतिद्वार**-संयति समु० जीव ओर मनुष्य एक वचनापेक्षा स्याताहारीक स्यातनाहारीक (केवली अपेक्षा) बहू वचनापेक्षा तीन तीन भागा ६. असंयति सो मिथ्यातिवत् ५७ भांगा. संयतासंयति समु० जीव और मनुष्य तथा तीर्यंच पांचेन्द्रिय एक या बहु वचनापेक्षा आहारीक है। नोसंयति नोअसंयति नोसंयतासंयति समु० जीव और सिद्ध भगवान् एक या बहू वचनापेक्षा अनाहारीक है। ६-५७ कूल ६३ भांगा हूवे इतिद्वारम्.

(७) **कषायद्वार**-सकषाय क्रोधकषाय मान माया लोभ कषाय प्रत्येकके समु० जीव और चौवीस चौवीस दंडक एक वचनापेक्षा स्याताहारीक स्याताऩाहारीक। बहू वचनापेक्षा सकषाय १९ दंडको तीन तीन भांगा ५७ क्रोध कषाय छे दंडकमें तीन तीन १८, १३ दंडक देवतावोंमें छे छे भांगा ७८ एवं मान कषाय माया कषाय पांच दंडकमें तीन तीन भांगा १५-१५ नारकी देवतोंका १४ दंडकमें छे छे भांगा ८४-८४ एवं लोभ कषाय परन्तु नारकीमें छे भागां शेष १८ दंडकमें तीन तीन भांगा ५४ शेष सर्वकषायवे समु० जीव और पांच स्थावरमें आहारीक घणा और अनाहारीक

भी घणा । अकषाय समु० जीव मनुष्य और सिद्ध है जिसमें समु० जीव और मनुष्य एक वचनापेक्षा स्यात् आहरिक स्यात् अनाहारीक बहूवचन समु० आहारीक घणा अनाहारीक भी घणा मनुष्यमें भांगा ३ सिद्ध भागवान् एक या बहू वचन अनाहारीक है। एवं ५७-१८-७८-१९-१९-८४-८४-६-५४-३ कुल ४१४ भांगा हूवे.

(८) **ज्ञानद्वार**-सज्ञानी, मतिज्ञानी, श्रुतिज्ञानी समु० जीव और १९ दंडक एक वचन पूर्ववत् बहू वचन जीवादि तीन तीन भांगा परन्तु तीन वैकलेन्द्रिमें छे ले भांगा १८-१८-१८ ५१-५१-५१ अवधिज्ञानमें समु० जीव और १६ दंडक है जिसमें तीर्यंच पांचेन्द्रि एक या बहू वचन आहारीक है शेष एक वचन पूर्ववत् बहू वचन तीन तीन भांगा ४८ । मनःपर्यव ज्ञान समु० जीव और मनुष्य एक या बहूवचन आहारीक है। केवल-ज्ञान समु० जीव मनुष्य और सिद्ध जिसमें समु० जीव और मनुष्य एक वचनापेक्षा स्यात् आहारीक स्यात् अनाहारीक बहू वचनापेक्षा समु० आहारीक घणा अनाहारीक भी घणा मनुष्यमें भांगा ३ सिद्ध एक या बहूत वचन अनाहारीक है। समु० अज्ञान मति अज्ञान श्रुतिअज्ञान जीवादि २४ दंडक एक वचनापेक्षा स्यात् आहारीक स्यात नाहारीक बहू वचनापेक्षा समु० जीव और पांच स्थावरमें आहारीक घणा अनाहारीक भी घणा शेष १९ दंडकमें तीन तीन भांगा ५७-५७-५७। विभंगा ज्ञानी समु० जीव १६ दंडक जिसमें तीर्यंच पांचेन्द्रिय और मनुष्य तो एक या बहू वचनापेक्षा आहारीक है शेष समु०

जीव और १४ दंडक एक वचन पूर्व वत् बहू वचनापेक्षा तीन तीन भांगा ४९ । एवं ५४–१११–४८–३–१७१–४५ कुल भांगा ४७४ द्वारम् ।

(९) **योगद्वार**—सयोगि समु० जीव और २४ दंडक मिथ्यात्वी वत् ५७ एवं काययोगिका भी ५७ । वचनयोगि समु० जीव और १९ दंडक और मनयोगमें समु० जीव और १६ दंडक एक या बहू वचनाहारीक है । अयोगि समु० जीव मनुष्य और सिद्ध अलेश्या कि माफीक कुल भांगा ११४ द्वारम् ।

उपयोगद्वार—साकर और मनाकार दोनोंमें समु० जीव और २४ दंडक एक वचनापेक्षा स्याताहारीक स्यातना हारीक बहू वचना पेक्षा समु० जीव पांच स्थावर आहारीक घणा अनाहारीक भी घणा शषे १९ दंडकये तीन तीन भांगा ५७-५७ कुल ११४ भांगा और सिद्ध भगवान् एक या बहू वचन आना हारी है इति द्वारम् ।

(११) **वेदद्वार**—सवेद समु० जीव और २३ दंडक सयोगि माफीक भांगा ५७ । स्त्रिवेदमें समु० जीव दंडक १५ एवं पुरुष वेद एक वचन पूर्व वत् बहू वचन जीवादि तीन तीन भांगा ४८--४८ नपुंसक वेदमें समु० जीव ११ दंडक एक वचन पूर्ववत् बहू वचन समु० जीव पांच स्थावरमें आहारीक घणा अनाहारीक घणा छे दंडकये तीन तीन भांगा १८ अवेदी जेसे अकषायवत् भांगा ३ एवं ५७–९६–१८–३ कुल भांगा १७४ हूवे इति द्वारम् ।

(१२) **शरीरद्वार**–सशरीरमे समु० जीव और २४ दंडक सयोगीवत् १७ भांगा एवं तेज शरीरका ५७ एवं कारमाण शरीरका १७ भांगा औदारीक शरीर समु० जीव और १० दंडक जिस्मे समु० जीव और मनुष्यका तीन तीन भांगा ६ (केवली अपेक्षा) शेष नव दंडक, एक या बहूवचनापेक्षा आहारीक है। वैक्रय शरीर समु० जीव और १७ दंडक आहारिक शरीर समु० जीव ओर मनुष्य, एक या बहू वचनापेक्षा आहारीक है तथा अशरीर समु० जीव ओर सिद्ध अनाहारिक है कुल भेगा १७७ द्वारम्।

(१३) **पर्याप्तिद्वार**–आहार पर्याप्ती शरीर पर्याप्ती इन्द्रिय पर्याप्ती श्वासोश्वास पर्याप्ती भाषा पर्याप्ती मन पर्याप्ती एवं छे पर्याप्ती समु० जीव ओर स्व स्व दंडकापेक्षा एक या बहू वचनापेक्षा आहारीक है परन्तु समु० जीव ओर मनुष्यमे एक वचनापेक्षा स्याताहारीक स्याननाहारीक है ओर बहूत वचनापेक्षा तीन तीन भांगा होतां है कारण केवली समुद्घात समय तीन समयनाहारीक भी होते है। भांगा ३६। आहार अपर्याप्ती समु० जीव ओर २४ दंडक, एक या बहू वचनापेक्षा अनाहारी है शरीर अपार्याप्ती स्यात् आहारीक स्यातनाहारीक उपरकी च्यार अप-र्याप्तीमे नारकी देवता ओर मनुष्य इन्ही १९ दंडकोंमे छे छे भांगा होना ९० शेषमे समु० जीव पांचस्थावर वर्जके तीन तीन भांगा होना १२, भाषा ओर मनापर्याप्ती १९ दंडकमे छे छे भांगा ९० शेषमे तीन तीन भांगा १२ सर्व स्थान पर एक बचन स्याताहारीक स्यात् अनाहारीक बहू वचनापेक्षा उपर बताये भांगे होते हैं एवं ३६-१६०-१२-१८०-१२ कुल भांगा ६००-हुवे इति द्वारम्।

आहार पदके ११ द्वारके कुल भांगा।

(१) समुच्चयद्वार भांगा	९७	(८) ज्ञानद्वार ,,	४७१
(२) भव्यद्वार ,,	११४	(९) योगद्वार ,,	१११
(३) संज्ञीद्वार ,,	१४४	(१०) उपयोगद्वार	१११
(४) लेश्याद्वार ,,	३००	(११) वेदद्वार	१७१
(५) द्रष्टीद्वार ,,	१२६	(१२) शरीरद्वार	१७०
(६) संयतिद्वार ,,	६३	(१३) पर्याप्तीद्वार	६००
(७) कषायद्वार	४१४	कुल भांगा २८७१ हूवे।	

इति।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्

थोकड़ा नं० ११

सूत्र श्रीपन्नवणाजी पद २९

(उपयोग पद)

(प्र) उपयोग कितने प्रकारके हैं ?

(उ) उपयोग दो प्रकारके है यथा (१) साकर उगयोग (२) अणाकार उपयोग जिसमें साकर उपयोग ८ प्रकारके हैं यथा (१) मतिज्ञान (२) श्रुतज्ञान (३) अवधिज्ञान (४) मनःपर्यवज्ञान (५) केवलज्ञान (६) मतिअज्ञान (७) श्रुतअज्ञान (८) विभंगज्ञान और अनाकार उपयोग ४ प्रकारका है (१) चक्षूदर्शन (२) अचक्षूदर्शन (३) अवधिदर्शन (४) केवलदर्शन।

अब नरकादि २४ दंडक पर इन्हींको उतारते हैं।

दंडक	उपयोग	साकार	अनाकार
समुचय जीवमें	२	८	४
१ नारकी	२	६	३
१३ देवता	२	६	३
५ स्थावर	२	२	१
१ वेन्द्रिय	२	४	१
१ तेन्द्रिय	२	४	१
१ चौरेन्द्रिय	२	४	२
१ तिर्यच पांचेंद्रिय	२	६	३
१ मनुष्य	२	८	४

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्।

थोकड़ा नं० १२

सूत्र श्री पन्नवणाजी पद ३०

(पासणिया उपयोग)

(प्र) पासणिया (देखनेवाला) उपयोग कितने हैं।

(उ) पासणिया उपयोग दो प्रकारके हैं (१) साकर पासणिया (२) अनाकार पासणिया, जिसमें साकर पासणियाके ६ भेद हैं यथा श्रुतिज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान, श्रुतिअज्ञान विभंगज्ञान और अनाकार पासणिया उपयोगके ३ भेद हैं

यथा चक्षूदर्शन अवधिदर्शन, केवलदर्शन ये दोनों उपयोग नरकादि दंडक पर उतारा जावेगा।

दंडक	उपयोग	साकार पासणिया	अनाकार पासणिया
समुचय जीव	२	६	३
१ नारकी ७	२	४	२
१३ देवता	२	४	२
५ पांच स्थावर	१	१	०
२ बेंद्रिय तेन्द्रिय	१	२	०
१ चौरेंद्रिय	२	२	१
१ तिर्यंच पाचेन्द्रिय	२	४	२
१ मनुष्य	२	६	३

(प्र) केवली है सो इस रत्नप्रभा नरकको आकार हेतु ओपमा द्राष्टांत वर्ण संस्थान परिमाण—करके जिस समयमें जानते हैं उसी समय देखते हैं या नही ?

(उ) केवली जिस समय रत्नप्रभा नारकीको पूर्वोक्त आकारसे जानते है उसी समय नहीं देखे।

(प्र) क्या कारण है !

(उ) जो केवलियोंके साकार उपयोग है वह ज्ञान है और अनाकार उपयोग है वह दर्शन है इस वास्ते जिस समयमें जानते हैं उस समय न देखे और जिस समयमें देखते हैं उस समय

नहीं जाने भावार्थ यह है कि समय बहुत सुक्षम है एक समयमें दो उपयोग (ज्ञान और दर्शन) नहीं होशक्ते हैं परंतु जिसी समय केवलियोंके केवल ज्ञान है. उसी समय केवल दर्शन मौजूद है ज्ञान और दर्शन युगपत् समय मोजूद है जैसे रत्नप्रभा नारकी कही है वैसे ही ७ नारकी १२ देवलोक नौग्रैवैक अनुत्तर वैमान इस पभारा पृथ्वी और परमाणु द्विपदेशी यावत् अनंत प्रदेशी स्कन्ध भी समझना. इस विषय पूर्वाचार्योंका भी मत्तन्तर हे देखो प्रज्ञापना सूत्र ।

(प्र) हे भगवान् । केवली अनाकार अहेतु यावत् अप्रमाणकर जिस समय रत्नप्रभा नरकको जानते हैं उसी समय देखें !

(उ) जिस समय जाने उस समय नहीं देखे भावना पूर्ववत् यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध तक समझना.

सेवंभंते सेवंभंते तमेवसच्चम् ।

थोकडा नम्बर १६

सूत्र श्री पन्नवणाजी पद ३१

(संज्ञी पद)

(१) **संज्ञी**–संज्ञी जीवोंका आयुष्य बन्धा हूवा हो तथा मनके साथ इन्द्रियोंके उपयोगमें वर्तता हो वह जीव पहेला गुणस्थानसे बारहवां गुणस्थान तक मीलते है ।

(२) **असंज्ञी**–असंज्ञी पणाका आयुष्य बन्धा है मन रहित इन्द्रियमें वर्तें यह जीव पेहले दुसरे गुणस्थानमें मीलते हैं ।

(३) नोसंज्ञी नोअसंज्ञी–इन्द्रियका उपयोग रहित अर्थात

केवलज्ञान होनेपर इन्द्रियोंके उपयोगकी जरूरत नही है वह जीव १३–१४ गुणस्थान या सिद्धोंके जीवोंको नोसंज्ञीनो असंज्ञी कहा जाता है ।

समुचय जीव और मनुष्य तीनों प्रकारके होते हैं संज्ञी–असंज्ञी–नोसंज्ञी नोअसंज्ञी ।

पांच स्थावर तीन वैकलेन्द्रिय समुत्सम तीर्यंच पांचेन्द्रिय और मनुष्य यह सर्व असंज्ञी मन रहीत है ।

पेहली नरक दशभुवनपति व्यंतरदेव और छप्पन अन्तर द्विपोंका मनुष्य संज्ञी होता है परन्तु कितनेक जीव अपर्याप्तावस्थामें असंज्ञी भी पाया जाते है कारण यहांसे असंज्ञी तीर्यंच मरके उक्त स्थानोंमें जाते है उन्हीकों अपर्याप्ती अवस्थामें शास्त्रकारोंने असंज्ञी गीना है इसापेक्षा ।

ज्योतीषी देव, वैमानिकदेव और संज्ञीतीर्यंच पांचेन्द्रि तथा तीस अकर्मभूमि युगल मनुष्य यह सर्व संज्ञी मनवाले है ।

सिद्ध भगवान् नोसंज्ञी नोअसंज्ञी है ।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नम्बर १४

सूत्र श्री पन्नवणाजी पद ३२

(संयति पद)

(१) **संयति**–जिन्होंके अन्तानुबन्धीचोक, अप्रत्याख्यानिचोक, प्रत्याख्यानीचोक, एवं १२ तथा मिथ्यात्वमोहनि, मिश्रमोहनि, सम्यक्त्वमोहनिय, एवं १५ प्रकृतियोंका क्षय या उपशम

होनापर साधु मार्ग स्वकारकर समिति गुप्ती पांचमहाव्रत चरण सतरी, करणसतरिके पालक हो उन्होंको संयति कहते है। वह छटा गुणस्थानसे चौदवा गु० तक मीलते है।

(२) **असंयता**=जिन्होंके व्रत पच्चरकाण कुछ भी न हो वह जीव पेहलेसे चोथा गुणस्थान तक मीलते है जिन्होंके तीन भेद हैं।

(१) अनादि अनान्त अभव्यापेक्षा प्र० गु०

(२) अनादि सान्त भव्यापेक्षा ,, ,,

(३) सादि सान्त–पांचवेसे इग्यारवे गुणस्थान जाके पीछा पडे हूवे पेहलासे चौ०था गु० तक

(३) **संयतासंयत**–कुच्छ व्रत हों कुच्छ अव्रत न हो एसा जो पांचवे गुणस्थान व्रतते हूवे श्रावक लोक।

(४) **नोसंयति नोअसंयति नोसंयतासंयता**–सिद्धभागवान्।

समुच्चय जीव संयति है असंयति है संयतासंयत है नोसंयति नोअसंयति नोसंयतासंयत यह च्यारो प्रकारका है

नारकी देवता पाचस्थावर तीन वैकलेन्द्रिय असंज्ञी मनुष्य तीर्यंच तथा युगल मनुष्य यह सर्व असंयति है कारण इन्होंके व्रत नही होते हैं।

संज्ञीतीर्यंच पांचेन्द्रिय असंयति है तथा संयतासंयती भी हैं कारण तीर्यंचोंको जातिस्मर्ण ज्ञान होनासे पूर्व भवमे जो व्रत लिया हो वह व्रत तीर्यंचके भवमे भी पालण करते है वास्ते तीर्यंचमे भी श्रवक मीलते है।

संज्ञी मनुष्यमे संयति असंयति संयतासंयति तीनो प्रकारके जीव मीलते है ।

सिद्ध भगवान् नोसंयति नोअसंयति नोसंयतासंयति है ।

(१) स्तोक संयति जीव (२) संयतासंयति असंख्यातगुण (३) नोसंयति नोअसंयति नोसंयतासंयति अनंतगुणा (४) असंयति अनन्तगुणा । इति ।

सेवंभंते सेवंभंते तमेवसच्चम् ।

थोकड़ा नं० १९

सूत्र श्री पन्नवणाजी पद ३४

(परिचारणा पद)

(१) अणन्तर आहार (२) अभोगाहार (३) आहारके पुद्गलोंका जानना (४) अध्यवशाय (५) सम्यक्त्व द्वार (६) परिचारणा द्वार ।

(१) **अणन्तर**—नारकीके नैरिया उत्पन्न होते समय जो आहारके पुद्गल गृहन करते हैं फिर शरीरको उत्पन्न करते है फिर पुद्गलोंको यथायोग्य परिणमाते है फिर इन्द्रियों निपजाते है फिर उर्ध्व अधोगमन या शब्दादि परिचारणा करते है फिर उत्तर वैक्रय रुप वैक्रय बनाते है इसि माफिक १३ दंडक देवतोंको भी समझना परन्तु देवतोंमें पेहले वैक्रय करे बादमें शब्दादि परिचारणा करते है च्यार स्थावर तीन वैकलेन्द्रिय यह सात बोलोंमें वैक्रय न होना से नरकवत् पांच बोल केहना और वायुकाय तथा तीर्यंच पांचेंद्रि और मनुष्यमे नरकवत् छे बोल केहना द्वारम् ।

(१) **अभोग**-समु० जीव आहार लेते है वह जानते हुवे या अजानते हुवे दोनों प्रकारसे लेते है, नरकादि १९ दंडकके जीवों दोनों प्रकार तथा पांच स्थावर अजानते हुवे भी आहार करते है।

(२) **आहारके पुद्गल**-नारकी आहार करते है वह आहारके पुद्गलोंको नारकी न देखते है न जानते है कारण नारकी के रोम आहार है और पुद्गलोंका बहुत सूक्ष्मपणा होनासे उपयोगकि इतनी तीव्रता नहीं है कि उन्हीं सूक्ष्म पुद्गलोंको जाने या देखे। इसी माफीक १० भुवनपति व्यंतर और जोतीषी देव तथा पांच स्थावर ए रोमाहारी है तथा बेरिन्द्रिय तेन्द्रियके चक्षू अभाव है। चौरिन्द्रिय कितनेक जीव न जाने न देखे परन्तु आहार करे और कितनेक जीव न जाने परन्तु देखे और आहार करते है। तीर्यंच पाचेन्द्रियको च्यार भांगा होते है।

(१) न जाने न देखे परन्तु आहार करे (असंज्ञी नैत्र हीन)

(२) न जाने देखे आहार करे (असंज्ञी नैत्रोंवाला)

(३) जाने न देखे ,, ,, (संज्ञी नेत्र हीन)

(४) जाने देखे आहार करे (संज्ञी नैत्रोंवाला)

इसी माफीक मनुष्यमें भी च्यार भांगा समझना और वैमानिक देव दो प्रकारके है (१) मायावान् वह मिथ्यात्वी (२) अमायवान् सम्यग्द्रीष्टी जो मिथ्यत्ववाला न जाने न देख आहार करे। सम्यग्द्रीष्टीके दो भेद है। (१) अणन्तर उत्पन्न हुवा न जाने न देखे ,, (२) परंपर उत्पन्न हुवा जिन्होंका दो भेद (१) अपर्याप्ता न जाने न देखे० (२) पर्याप्ता जिन्होंका दो भेद है (१) अनो-

पयोगवान् न जाने न देखे० (२) उपयोग वाले हैं वह जाने देखे ओर आहार करे विशेषो उपयोगवान् होनासे ।

(४) **अध्यवशाय**–अध्यवशा प्रत्येक जीवोंके असंख्याते असंख्याते हे वह प्रशस्थ अप्रशस्थ दोनों प्रकारके होते है वह २४ दंडकोंके जीवोंके हैं ।

(५) **अभिगम**–सम्यक्त्ववान् जीव होते है वह वस्तुकों यथार्थ जानते है (२) मिथ्यात्ववान् वस्तुको विप्रीत जानें (३) मिश्रवान् वस्तुको मिश्रभावे जाने नरकादि १६ दंडक मनवालोंको तीनों प्रकारका जान पणा होता है शेष ८ दंडक अर्थात् पांच स्थावर तीन वैकलेन्द्रियको एक मिथ्यात्व होनासे मिथ्याभिगम होता है अगर वैकलेन्द्रिय अपर्याप्तावस्थामें सम्यग्द्रष्टी होता है परन्तु स्वल्पकाल होनेसे गौणपण है ।

(६) **परिचारण**–यह द्वार विशेष देवतावोंकि अपेक्षाहै देवता तीन प्रकारके है जिस्मे(१) भुवनपति व्यंतर ज्योतिषी सौधर्मे-शान देव लोकके देव, देवी और परिचारणा (मैथुन) सहित है (२) तीजासे बारहवा देवलोकके देव हे वह देवी रहीत और परिचारणा सहीत है (३) नौग्रीवैग और पांचानुतर वैमानके देव हैं वह देवी और परिचारण रहीत है परन्तु एसा देव नही हैं कि जिन्होंके देवी हो और परिचारणा रहीत हो ।

परिचारणा पांच प्रकारकि है और उन्होका स्वामी

(१) कायपरिचारणा (मनुष्यकि माफीक) स्वामि भुवनपति व्यंतरज्योतीषी सौधर्मा ईशानदेवलोक के देव

(२) स्पर्श परिचारण हस्तादिसेस्वामि तीजा चोथा देव लोकके देव ।

(३) रूप परिचारणा–स्वामि पांचवा छठा देवलोकके देव ।

(४) शब्द परिचारणा–स्वामि सातवा आठवा दे० देव ।

(५) मन–परिचारणा स्वामि–नव–दश इग्यारवा बारहवा दे० देव, शेष नौग्रीवैग वा पांचाणुत्तर वैमानका देव अपरिचारणा-वान् है ।

परिचारणा–जब देवतावोंको काय परिचारणाकि इच्छा होती है तब देव मनसे देवीकों स्मरण करते ही देवीका अंग फुरुकता है या आसनसे कुच्छ संकेत होनासे देवीको ज्ञान होता है कि मेरा मालीक देव मुजे याद करते है यह देवी उसी समय उत्तर वैक्रयसे अच्छा मनोहर द्रव्य शृंगार कर देवके पास हाजर होती है तब वह कामातुर देव उन्हीं देवीके साथ मनुष्यकी माफीक काय परिचरणा (मैथून) सेवन करते है ।

(प्र) हे स्वामिन् उन्हीं देवतावोंके वीर्यके पुद्गल है ।

(उ) देवतोंके वीर्य है किन्तु मनुष्योंके जो गर्भ धारण वीर्य है वेसा देवोंके नहीं है परन्तु काम शान्त वीर्य देवतोंके है वह वीर्य देवीके श्रोत्तेन्द्रि चक्षूइन्द्रिय घ्रणेन्द्रिय रसेन्द्रिय स्पर्शेन्द्रिय इन्हीं पांचों इन्द्रयपणे या मनपणे इष्टपणे मनोज्ञपणे विशेष मनो-ज्ञपणे शुभ शोभाग्य रुप योवन गुण(विषय) लावण्य कन्दर्प इन्हीं १७ बोलोपणे वारवार परिणमता है अर्थात् देवी देवताकोंको उन्हीं समय कामसे शान्ती होती है ।

स्पर्शपरिचारण वाले देवों कि इच्छा होते ही देवी द्रव्य मनोहर रूप शृंगारकर पूर्ववत् तीजे चोथे देवलोकमें अपने स्वामि देवोंकी सेवामें हाजर होती है वह देवता देवीके स्तनादिसे स्पर्श करतो ही कामसे शान्ती हो जाते है। देवताके वीर्यका पुद्गल देवीके १७ बोलपणे परिणमते है अर्थात् हस्तादि स्पर्शसे देव देवीको शान्तपाण होता है।

रुप परिचारण वाला देवोंको इच्छा होते ही देवी द्रव्य मनोहर रूप वैक्रय अतित सुन्दराकार बनाके पांचवे छठे देवलोकके देवों पासे हाजर होती है वह देव उन्ही देवीका रूप देखतोंही मनको शान्त कर लेते है। देवके वीर्यके पुद्गल देवीके १७ बोल पण परिणमते है।

शब्द परिचारणा वाला देवोंकी इच्छा होते ही देवी वैक्रयसे मनोहर वैक्रय बनाके सातवा आठवा देवलोकके देवोंकी सेवामें हाजर होती है वहांपर अति मनोहर कण्ठ सुस्वर अर्थात् पञ्चम स्वरसे इस कदरका ग्यान करे कि वह कामोतुर देव उन्ही देवीका शब्द सुनते ही कामसे शान्त हो जाते हैं। देवके वीर्यका पुद्गल देवीके १७ बोल पणे परिणमते है।

मनपरिचारणा-वालेके काम इच्छा होते ही देवीयों पेहला दूसरे देवलोकमें उन्हीं देवोंके सदिशा उभी रहे के अपना द्रव्य मनसे ही देवतावोंकी कामाग्निकों मन हीसे शान्त कर देती है। देवता देवीके मन मीलनेसे देवतोंकी शान्तपणा होते ही उन्होंका वीर्यका पुद्गलों वहासे छूटते है वह असंख्याते योजनके

अन्तरे पर रही हुइ देवीयोंके पूर्वोक्त १७ बोलोंपणे परिणमते है अर्थात देवी उत्पन्न होनाका स्थाना पेहले दूसरे देवलोकमें है और देवता बोलानेसे आठवा देवलोक तक जा शक्ती है आगे जानेकी विषय देवीकी नहीं है। पेहले दूसरे देवलोकके देवोंके काममें आति है अर्थात् उन्हीं देवीयोंको अपरिगृहीता देवीयोंके नामसे आलेखाइ जाती है।

देवोके काममे	देवलोकमे	देवीकी स्थिति
सुधर्म देवोंके	सौधर्ममे	१ पल्योपमसे ७ पल्योपम
इशान देवोंके	इशानमे	१ पल्यो०से ९ पल्योपम
सनत्कुमारके	सौधर्ममे	७ पल्यो०से १० पल्यो०
महेन्द्र देवोंके	इशानमे	९ ,, १५ ,,
ब्रह्म देवोंके	सौधर्ममे	११ ,, २० ,,
लंकत ,,	इशानमे	२१ ,, २५ ,,
महाशुक्र देवोंके	सौधर्ममे	२६ ,, ३० ,,
सहस्त्र ,,	इशानमे	३१ ,, ३५ ,,
आणत ,,	सौधर्ममे	३६ ,, ४० ,,
प्रणत ,,	इशानमे	४१ ,, ४५ ,,
आरण ,,	सौधर्ममे	४६ ,, ५० ,,
अचुत देवोंके	इशानमे	५१ ,, ५५ ,,

देवतावोंमे परिचारणके सुखोंकि अल्पा०

(१) स्तोक काय परिचारणवालोंका सुख

(२) स्पर्श ,, ,, अनंतगुणा

(३) रुप ,, ,, ,,

(४) शब्द ,, ,, ,,

(५) मन ,, ,, ,,

(६) अपरिचारणवालाका सुख ,, ,,

परिचारणवाला देवोंकी अल्प०

(१) स्तोक अपरिचारणवाला देव

(२) मन परिचारणवाला देव संख्यातगुणा

(३) शब्द ,, ,, असंख्यातगुणा

(४) रुप ,, ,, ,,

(५) स्पर्श ,, ,, ,,

(६) काय ,, ,, ,,

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० १६

श्री पन्नवणा सूत्र पद ३५

(वेदना पद)

शीत १ द्रव्य २ शरीर ३ साता ४ दुःख ५ अभुगमीया ६ निंदा ७

(१) वेदना तीन प्रकारकी है—शीत वेदना, उष्ण वेदना, और शीतोष्ण वेदना। समुच्चय जीव तीनो प्रकारकी वेदना वेदते हैं।

पहिली, दूजी, तीजी नारकीमें उष्ण वेदना है कारण इन तीनों नरकके नेरीया शीत योनीके है। चौथी नारकीमें उष्ण वेदनावाले नेरीया बहुत है और शीत वेदनावाले नेरीया कम है

अर्थात् शीत, उष्ण दोनों वेदना है। पांचवींमें उष्ण वेदनावाले कम और शीत वेदनावाले जादा है। छठ्ठी नारकीमें शीत वेदना है और सातमी नारकीमें महाशीत वेदना है। शेष असुरादि २३ दंडकमें तीनों प्रकारकी वेदना है। द्वारम्।

(२) वेदना चार प्रकारकी है—द्रव्य, क्षेत्र, काल और भवसे-समुच्चय जीव और २४ दंडकमें चारों प्रकारकी वेदना पावे।

(१) द्रव्य वेदना—इष्ट अनिष्ट पुद्गलोंकी वेदना

(२) क्षेत्र वेदना—नरकादि क्षेत्रकी वेदना

(३) काल वेदना—शीत, उष्ण कालकी वेदना

(४) भाव वेदना—अनुभाग रस मंद तिव्रादि। द्वारम्

(३) वेदना तीन प्रकारकी है-शरीरिक, मानसिक और शरीरी मानसिक। समुच्चय जीवोमें तीनो प्रकारकी वेदना है और संज्ञी सोलह (१६) दंडकमें भी तीन प्रकारकी वेदना पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रियमें एक शरीरिक वेदना है। द्वारम्

(४) वेदना तीन प्रकारकी है-साता, असाता और साता-असाता समुच्चय जीव और २४ दंड़कमें तीनों प्रकारकी वेदना है। द्वारम्

(५) वेदना तीन प्रकारकी है-सुख, दुःख और सुखदुःख-समुच्चय जीव और २४ दंडकमें तीनो प्रकारकी वेदना है। द्वारम्

(६) वेदना दो प्रकारकी है-आप्लूवगमीया (उदीर्णाकरके-शीर लोच तथा तपश्चर्यादि करके) औपक्रमीया (उदय आनेसे)

तीर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्यके दोनो प्रकारकी वेदना है। शेष २१ दंडकमें एक औपक्रमीय वेदना है द्वारम् ।

(७) **वेदना दो प्रकारकी है**–निदा और अनिदा, नारकी १ भुवनपती १० व्यन्तर १ इन बारह दंडकमें दोनों प्रकारकी वेदना है। कारण संज्ञी भूत (जो यहांसे संज्ञी मरके गया है वह) निदावेदना वेदे और असंज्ञी भूत (असंज्ञी मरके गया है वह) अनिदावेदना वेदे ।

पांच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय एक अनिदा वेदना वेदे कारण असंज्ञी है तिर्यंच पंनेन्द्री और मनुष्यमे दोनों प्रकारकी वेदना है। तथा ज्योतिषी वैमानिकमें भी दोनो प्रकारकी वेदना है। कारण ये देवता दो प्रकारके होते है।

(१) अमाई सम्यक् दृष्टी–निदा वेदना वेदते हैं।

(२) माई मिथ्यादृष्टीअ–निदावेदना वेदते हैं।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नंबर १७

श्री पन्नवणाजी सूत्र पद ३६

(समुद्घात)

संसारी जीवोंके साथ अनादिकालसे पुद्गलोंका संबन्ध है जो पुद्गल जिस कार्यपणे परिणमते है उन्हीं पुद्गलोंको उसी नामसे बतलाये जाते हैं, जैसे कोइ पुद्गल वेदनिपणे परिणमे तथा कषाय पणे परिणमें तो इसी नाम (वेदनी या कषाय)से बतलाया जावे।

जो पुद्गल ग्रहन किया जाता है वह आत्माका प्रदेशोंसे ग्रहन करते है। ग्रहन किये हुवे पुद्गलोंको शमकों विशषपणे परिणमाना उन्हीकों समुद्घात केहते है वह इस थोकडा द्वारे बतलावेगा।

(१) नामद्वार–

समुद्घात सात प्रकारकी है यथा–

(१) वेदनी समु०–अत्यन्त वेदनाका होना

(२) कषाय समु०–अति क्रोधादि कषाय करना

(३) मरणान्तिक समु०–मरती वखत आत्म प्रदेशोंका चलना

(४) वैक्रिय समु०–आत्म प्रदेशोंको निकलके वैक्रिय बनावे

(५) तेजस समु०–आत्मप्रदेशोकोनिकालके तेजस समु० करे

(६) आहारिक समु०–पूर्वधर मुनि आहारिक शरीर करे

(७) केवली समु०–केवली महाराज करते हैं

यह सातों समुद्घातको अब प्रत्येक दंडकपर उतारते हैं कि किस २ दंडकमें कौन २ समुद्घात होती है।

(१) समुच्च जीवमें सातों समु० पावें

(१) नारकीमें समु० चार पावे वेदनी, कषाय, मर्णांतिक, और वैक्रिय

(२) देवताके १३ दंडकमें समु० ५ पावे तेजस समु० अधिक

(३) वायु कायमें चार पावे नारकीवत्

(४) चार स्थावर, तिन विकलेन्द्रिमें तीन समु० पावे वेदनी, कषाय, मरण०

(५) तिर्यंच पंचेन्द्रिमें पांच पावे देवतावत्

(१) मनुष्यमें सात पावे

(२) कालद्वार–

वेदनी समुदूघातका काल असंख्याते समयके अन्तर मुहूर्त का एवं कषाय समु मर्णातिक समु० वैक्रिय समु० आहारिक समु० इन प्रत्येक छेओं समुदूघातोंका काल अन्तर मुहूर्त अन्तर मुहूर्तका है और केवली समुदूघातका काल आठ समयका है

(३) चौवीस दंडक एक वचनापेक्षा–

एक नारकीके नेरीयेने वेदनी समुदूघात भूतकालमें अनन्ती की है भविष्यमें कोई करेगा कोई नही करेगा जो करेगा वह १–२–३ यावत संख्याती असंख्याती अनन्ती करेगा एवं यावत २४ दंडकमें कहना। कोई जीव नारकीका भविष्यमें वेदनी समुदूघात नहीं करेगा कारण यह प्रश्न नारकीके चर्म समय वालोंकी अपेक्षाका है फिर मनुष्यमें आकर वहां वेदनी समुद्घात न करके मोक्ष जाने वाला है।

जैसे वेदनी समु० कहा है वैसे ही कषाय, मर्णान्तिक, वैक्रिय, तेजस समु० भी समझ लेना अर्थात् यह पांचों समु० २४ दंडकमे भूतकालमें अनन्ती की है भविष्यमें जो करेगा वह १–२–३ यावत् संख्याती असंख्याती अनन्ती करेगा।

एक नारकीके नेरियाने आहारिक समुद्घात भूतकालमें स्यात् की स्यात् नहीं की अगर करी है तो १–२–३ भविष्यमें करेगा तो १–२–३ ४ करेगा एवं यावत् २४ दंडक कहना परन्तु मनुष्यमें भूतकाल अपेक्षा १–२–३–४ करी है कहना।

एक नारकीका नेरियाने भूतकालमें केवली समुद्घात नहीं करी भविष्यमें करेगा तो एक एवं यावत १४ दंडक कहना परन्तु मनुष्यमें भूतकालमें करी हो तो १ भविष्यमें करेगा तो भी एक ही करेगा। इति सामान्य सूत्र।

(४) घणा जीवोंकी अपेक्षा २४ दंडक।

घणा नारकी भूतकालमें वेदनी समु० अनन्ती करी और भविष्यमें भी अनन्ती करेगा एवं यावत २४ दंडक कहना और इसी तरह कषाय, मर्णान्तिक, वैक्रिय, तेजस समु० भी समझ लेना।

घणा नारकी भूतकालमें आहारिक समुद्घात असंख्याती और भविष्यमें असंख्याती करेगा एवं वनस्पति, मनुष्य छोड़के शेष २१ दंडक समझना। वनास्पतिमें भूत भविष्य अनन्ती तथा मनुष्यमें भूत भविष्यमें स्यात् संख्याति स्यात् असंख्याति। केवली समु० नरकादि २२ दंडक भूतकालमें करी नहीं भविष्यमें असंख्याति एवं वनास्पति भू० नहीं भवि० अनन्ती एवं मनुष्य भूतमें जो करी हो तो १-२-६ उ० प्रत्यक सो भविष्यमें स्यात् संख्याती स्यात् असंख्याती।

(५) चौवीस दंडक पर्स्परकी अपेक्षा।

एक एक नारकी भूतकालमें नारकीपणे वेदनी समु० कितनी करी? अनन्ती, भविष्यमें कोई करेगा कोई न करेगा जो करेगा वह स्याते १-२-३ यावत् संख्याती, असंख्याती स्यात् अनन्ती

१ नारकी नारकीपने भविष्यमें १-२-३ कहा है सो विचारने योग्य है टीकाकार संख्याती असंख्याती कहते है कारण १०००० वर्षसे कम स्थिति नहीं है और प्रचुर वेदना वेदते है।

करेगा। एवं नारकी असुरकुमारपणे यावत् वैमानिकपणे भी कहना।

एकैक असुरकुमार देवता भूतकालमें नारकीपणे वेदनी समु० अनंती की है भविष्यमें करेगा तो स्यात् संख्याती स्यात् असंख्याती अनन्ती करेगा।

असुरकुमार असुरकुमारपने वेदनी समु० भूतकालमें अनन्ती भविष्यमें करेगा तो १-२-३ यावत् संख्याती, असंख्याती या अनन्ती भी करेगा एवं यावत् वैमानक तक समझना।

नागादि नौ कुमार भी असुरकुमारकी माफक समझना भविष्यके लिये स्वस्थानमें और औदारिकके दश दंडकमें १-२-३ यावत् अनन्ती परस्थान और वैक्रियके १६ दंडकमें स्यात् संख्याती स्यात् असंख्याती स्यात् अनंती समझना।

एवं यावत् वैमानिक तक २४ दंडक २४ दंडक पने लगा लेना भावना पूर्ववत्

एक १ नारकी नारकीपने भूतकालमें कषाय समु० अनंती करी भविष्यमें करेगा तो १-२-३ यावत् संख्याती, असंख्याती यावत् अनन्ती करेगा।

एक २ नारकी असुर कुमार पने भूतकालमें कषाय समु० अनन्ती करी और भविष्यमें करेगा तो स्यात् संख्याती, असंख्याती अनन्ती करेगा एवं व्यन्तर, ज्योतिषी, तथा वैमानिक पने परन्तु भविष्यमें स्यात् असंख्याती अनन्ती करेगा (संख्यातीका स्थान नहीं है)

पृथ्व्यादि औदारकके १० दंडकमें भूतकालमें अनन्ती भविष्यमें स्यात् करेगा स्यात् न करेगा करेगा वह स्यात् १-२-३

यावत् अनन्ती करेगा एवं १० भुवनपती भी कहना परन्तु स्व-स्थान और औदारिकके १० दंडकमें भविष्यमें १–२–३ यावत् अनन्ती कहना परस्थान और वैक्रियके १३ दंडकमें नारकी वत् कहना।

एकेक पृथ्वीकाय नारकी पने कषाय समु० भूतकालमें अनन्ती करी और भविष्यमें जो करेगा वह स्यात् संख्याती, असंख्याती, अनन्ती करेगा एवं दश भुवनपती, व्यन्तर ज्योतिषी और वैमानिक परन्तु भविष्यमें स्यात् असंख्याती अनन्ती करेगा पृथ्व्यादि औदारिकके १० दंडकमें भविष्यमें स्यात् १–२–३ यावत् संख्याती, असंख्याती, अनन्ती करेगा। एवं औदारिकके १० दंडक तथा व्यंतर, ज्योतिषी, वैमानिक असुर कुमारकी माफक समझना।

एकेक नारकी नारकी पने मर्णांतिक समु० भूतकालमें अनन्ती करी भविष्यमें, स्यात करेगा स्यात् न करेगा जो करेगा वह स्यात् १–२–३ यावत् संख्याती, असंख्याती या अनन्ती करेगा एवं यावत् वैमानिक तक २४ दंडक कहना स्वस्थान पर-स्थान सब जगह १–२–३ कहना कारण मर्णांतिक समु० एक भवमें एक ही वार होती है

एकेक नारकी नारकी पने वैक्रिय समु० भूतकालमें अनंती करी भविष्यमें स्यात् करेगा स्यात् न करेगा जो करेगा वह स्यात् १–२–३ यावत् संख्याती असंख्याती अनंती करेगा एवं २४ दंडक सतरा दंडक पने जैसे कषाय समु० कही है वैसे ही वैक्रिय

समु० समझना परन्तु वैक्रिय १७ दंडकमें ही कहना कारण ५ स्थावर ३ विकलेंद्रियमें वैक्रिय नहीं है।

एकेक नारकी नारकी पने तेजस समु० भूतकालमें एक भी नही करी और भविष्यमें एक भी नही करेगा कारण वहां है ही नही।

एकेक नारकी असुर कुमार पने भूतकालमें तेजस समु० अनन्ती करी और भविष्यमें जो करेगा तो १–२–३ यावत् संख्याती' असंख्याती अनन्ती करेगा एवं तेजस समु० १५ दंडकमें मर्णान्तिक समु०की माफक कहना।

मनुष्य वर्जके एकेक २३ दंडकके जीव २३ दंडक पने आहारिक समु० नही करी और न करेगा।

एकेक तेवीस दंडकके जीव मनुष्य पने आहारिक समु० करी हो तो १–२–३ भविष्यमें करेगा तो १–२–३–४

एकेक मनुष्य २३ दंडकमें आहारिक समु० नकरी न करेगा। मनुष्य पने करी होतो १–२–३–४ और करेगा तो भी १–२–३–४ करेगा।

मनुष्य वर्जके एकेक २३ दंडकके जीव २३ दंडक पने केवली समु० न करी न करेगा मनुष्य पने नही करी परन्तु करेगा तो १ करेगा।

एकेक मनुष्य २३ दंडक पने केवली समु० न करी न करेगा।

एकेक मनुष्य मनुष्य पने केवली समु० करी हो तो एक और करेगा तो भी एक ही करेगा।

(६) घणा जीव आपसमें।

घणा नारकी घणा नारकी पने वेदनी समु० भूतकालमें अनन्ती करी और भविष्यमें अनन्ती करेगा एवं २४ दंडक पने भी समझना शेष २३ दंडक भी नारकीवत् समझना।

जैसे वेदनी समु० २४ दंडक पर कहा है इसी तरह कषाय, मर्णान्तिक, वैक्रिय, तेजस समु० भी समझ लेना परन्तु वैक्रिय समु०में १७ दंडक और तेजस समु०में १५ दंडक कहना।

घणा नारकी मनुष्य वर्जके शेष २३ दंडक पने आहारिक समु० न करी और न करेगा। मनुष्य पने भूतकालमें असंख्याती भविष्यमें भी असंख्याती करेगा। एवं वनस्पति वर्जके शेष २३ दंडक समझना वनस्पतिमें अनन्ती कहना।

एकेक मनुष्य २३ दंडक पने आहारिक समु० न करी न करेगा और मनुष्य पने भूतकालमें स्यात् संख्याती स्यात् असंख्याती और भविष्यमें भी स्यात् संख्याती स्यात् असंख्याती कहना।

घणा नरकादि २३ दंडकके जीव नरकादि २३ दंडकपने केवली समु० न करी न करेगा मनुष्यपने नहीं करी अगर करेगा तो स्यात संख्याती स्यात असंख्याती।

घणा मनुष्य २३ दंडकपने केवली समु० न करी न करेगा और मनुष्यपने करी हो तो स्यात संख्याती असंख्याति और भविष्यमें भी करेगा तो स्यात् संख्याती असंख्याती करेगा।

(७) अल्पा बहुत्व-द्वार

(१) समुचय अल्पा०

(१) सबसे स्तोक आहारिक समु० का धणी

(२) केवली समु० वाला सं० गुणा
(३) तेजस ,, ,, असं० गुणा
(४) वैक्रिय ,, ,, असं०
(५) मर्णान्तिक,, ,, अनं०
(६) कषाय ,, ,, असं०
(७) वेदनी ,, ,, वि०
(८) असमोईया,, ,, असं०

(२) नरककी अल्पाबहुत्व ।

(१) सबसे स्तोक मर्णान्तिक समु० वाला
(२) वैक्रिय समु० वाला असं० गुणा
(३) कषाय ,, ,, सं०
(४) वेदनी ,, ,, सं०
(५) असमोईया,, ,, सं०

(३) देवतामें समु० ५ अल्पा०

(१) सबसे स्तोक तेजस समु० वाला
(२) मर्णान्तिक समु० वाला असं०
(३) वेदनी ,, ,, ,,
(४) कषाय ,, ,, सं०
(५) वैक्रिय ,, ,, ,,
(६) असमोईया ,, ,, ,,

(४) पृथ्व्यादि ४ स्थावरकी अल्पा०

(१) सबसे स्तोक मर्णान्तिक समु० वाला
(२) कषाय समु० वाला सं० गुणा

(३) वेदनी „ „ वि०
(४) असमोईया „ असं०

(५) वायु कायकी अल्पा०

(१) सबसे स्तोक वैक्रिय समु० वाला
(२) मर्णात्मिक समु० वाला असं०
(३) कषाय „ „ सं०
(४) वेदनी „ „ वि०
(५) असमोईया „ असं०

(६) वैकलेन्द्रियकी अल्पा०

(१) सबसे स्तोक मर्णातिक समु० वाले
(२) वेदनी समु० वाले असं० गुणा
(३) कषाय समु० वाले सं० „
(४) असमोईया असं० „

(७) तिर्यंच पंचेन्द्रियकी अल्पा०

(१) सबसे स्तोक तेजस समु० वाले
(२) वैक्रिय समु० वाले असं०
(३) मर्णातिक „ „ असं०
(४) वेदनी „ „ „
(५) कषाय „ „ सं०
(६) असमोईया सं०

(८) मनुष्यकी अल्पा बहुत्व

(१) सबसे स्तोक आहारिक समु० वाला
(२) केवली समु० वाला सं० गुणा

(३) तेजस ,, ,, सं०

(४) वैक्रिय ,, ,, सं०

(५) मर्णांतिक ,, ,, असं०

(६) वेदनी ,, ,, असं०

(७) कषाय ,, ,, सं०

(८) असमोईया ,, सं०

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नंबर १८

श्री पन्नवणाजी सूत्र पद ३६

(कषाय समुद्घात)

कषाय समुद्घात चार प्रकारकी है यथा—

(१) क्रोध=अति क्रोधके उत्पन्न होनेसे

(२) मान=अति मानके ,, ,,

(३) माया=अति मायाके ,, ,,

(४) लोभ=अति लोभके ,, ,,

नरकादि २४ दंडकमें कषाय समु० चारोंपावे इसका काल अन्तर मुहूर्तका है ।

(१) एकेक जीवकी अपेक्षा २४ दंडकमें

एकेक नारकी क्रोध समु० भूतकालमें अनन्ती करी है भविष्य कालमें कोई करेगा कोई न करेगा जो करेगा वह १-२-३ यावत् संख्याती, असंख्याती, अनन्ती करेगा एव

यावत् वैमानिक तक २४ दंडक भी समझना। इसी तरह मान माया लोभ भी समझना चाहिये।

(२) घणा जीवोंकी अपेक्षा २४ दंडकमें।

घणा नारकी क्रोध समु० भूतकालमें अनन्ती करी भविष्यमें अनन्ति करेगा एवं वैमानिक तक २४ दंडक समझना और शेष मान, माया, लोभको भी क्रोध समु० वत् समझना।

(३) एकेक जीव आपसमें २४ दंडकपर।

एक नारकी नारकी पने क्रोध समु० भूतकालमें अनन्ती करी। भविष्यमें स्यात् करे स्यात् न करे जो करे वह १-२-३ यावत् सं० असं० या अनन्ति करेगा।

एकेक नारकी असुर कुमार पने क्रोध समु० भूतकालमें अनन्ती करी भविष्यमें कोई करेगा कोई न करेगा जो करेगा वह १-२-३ यावत् सं० असं० अनन्ती करेगा एवं यावत् वैमानिक तक २४ दंडक पने भी समझ लेना।

शेष २३ दंडकको वेदनी समु० की माफक २४ दंडक पर लगा लेना एवं मान, माया मर्णान्तिक समु० की माफक और लोभ कषाय समु० की माफक समझना परन्तु लोभमें नारकी असुर कुमार पने १-२-३ सं० असं० अनन्ती कहना।

(४) घणा जीव परस्पर २४ दंडक पर

घणा नारकी घणा नारकी पने क्रोध समु० भूतकालमें अनन्ती करी भविष्यमें अनन्ती करेगा इसी तरह यावत् वैमानिक तक २४ दंडकपने भी समझना एवं मान, माया, लोभी भी क्रोधवत् समझना।

घणा असुर कुमार नारकीपने क्रोध समु० भूतकालमें अनन्ती करी और भविष्यमें कोई करेगा कोई नहीं करेगा जो करेगा वह सं० अ० अनन्ती करेगा इसी तरह यावत वैमानिक तक कहना एवं मान, माया, लोभी समझना।

असुर कुमार वत शेष २२ दंडक भी २४ दंडकपर क्या लेना।

अल्पाबहुत्व।

(१) समुच्चय जीवकी

(१) सबसे स्तोक अकषाय वाले
(२) मान समु० वाले अनन्तगुणा
(३) क्रोध ,, ,, वि०
(४) माया ,, ,, वि०
(५) लोभ ,, ,, वि०
(६) असमोईया ,, सं०

(२) नारकीकी अल्पा०

(१) सबसे स्तोक लोभ समु० वाले
(२) माया समु० वाले सं० गुणा
(३) मान ,, ,, सं०
(४) क्रोध ,, ,, सं०
(५) असमोईया सं०

(३) देवताकी अल्पा०

(१) सबसे स्तोक क्रोध समु० वाले
(२) मान समु० वाले सं० गुणा

(३) माया ,, ,, सं०

(४) लोभ ,, ,, सं०

(५) असमोईया सं०

(४) तिर्यंचकी अल्पा०

(१) सबसे स्तोक मान समु० वाले

(२) क्रोध समु० वाले वि०

(३) माया ,, ,, वि०

(४) लोभ ,, ,, वि०

(५) असमोईया सं०

(५) मनुष्यकी अल्पा०

(१) सबसे स्तोक अकषाई वाले

(२) मान समु० वाले असं० गुणा

(३) क्रोध ,, ,, वि०

(४) माया ,, ,, वि०

(५) लोभ ,, ,, वि०

(६) असमोईया सं०

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकड़ा नं० १९

श्री पन्नवणाजी सूत्र पद ३६

(छद्मस्त समुद्घात)

छदमस्त समुद्घात छे हैं (१) बेदनी (२) कषाय (३)

मर्णान्तिक (४) वैक्रिय (५) तेजस (६) आहारिक समुद्घात इति ।

नारकी और वायुकायमें समु० चार पावें, तेजस, आहारिक वर्जके देवता तिर्यंचमें समु० पांच पावे, आहारिक वर्जके और चार स्थावार तीन विकलेन्द्रिमें तीन वेदनी, कषाय, मर्णान्तिक मनुष्यमें ६ पावे ।

(प्र०) हे भगवान् ! समुच्चय जीव वेदनी समु० करके छोडे हुवे पुद्‌गल कितने क्षेत्रको स्पर्शे और कितना क्षेत्र अस्पर्शा रहे ?

(उ०) हे गोतम ! वेदनी समु० करतों विष्कंभ पने और पहूलपने अपने शरीर प्रमाणे होता है और उतने ही क्षेत्रको स्पर्श करता है शेष रहा हुवा क्षेत्र अस्पर्श है जो क्षेत्र स्पर्श किया है वह नियमा छेदिशीका हैं ।

(प्र०) काल अपेक्षा पृच्छा ?

(उ०) वेदनी समु० करनेवाला १-२-३ समयके कालको स्पर्शे शेष काल अस्पर्श अर्थात् वेदनी समु० का काल अन्तर मुहूर्तका है परन्तु कृत काल १-२-३ समयका है वेदनी समु० कियेके बाद वे पुद्गल शरीरमें अन्तर मुहूर्त रहते हैं बाद शरीरसे छूटते हैं याने अलग होते हैं ।

(प्र०) वेदनी समु० से छुटे हुवे पुद्गलोंसे किसी प्रण, भूत, जीव, सत्वको तकलीफ होती है जब० समु० करने वालेको कितनी क्रिया लगती है ।

(उ०) स्यात ३-४-५ क्रिया लगती है

(१) अपने खराब योगोंसे तीन क्रिया (काईया, अधिकरणीया, पावसीया)

(२) पर जीवको तकलीफ होनेसे चार क्रिया (परितापनीया)

(३) पर जीवकी घात होनेसे पांच क्रिया लगती है (पाणईवाय) अधिक

इसके चार भांगो।

(१) एक जीवको एक जीवकी स्यात् ३-४-५ क्रिया

(२) एक जीवको घणा जीवोकी स्यात् ३-४-५ ,,

(३) घणा जीवोंको एक जीवकी स्यात ३-४-५ ,,

(४) घणा जीवोंको घणा जीवोकी घणी ३-४-५ ,,

इसी माफक समुच्चय जीवोंकी तरह २४ दंडक भी समझना

(प्र०) समुच्चय जीव मर्णान्तिक समु० करते हुए की पृच्छा ?

(उ०) क्षेत्र विष्कंभ और पहूलतो शरीर प्रमाणे लम्बा एक दिशामें जघन्य अंगुलके असंख्य भाग उत्कृष्ट असंख्याता जोजन इतना क्षेत्र स्पर्शे शेष क्षेत्र अस्पर्शी रहे कालकी अपेछा १-२-३ समय और विग्रह गती करे ते १-२-३-४ समयका काल स्पर्शे शेष काल अस्पर्शी हुआ रहे।

मर्णान्तिक समु० के पुद्गल अन्तर मुहूर्त शरीर पने रहके पीछे वे पुद्गल छूटते है उनसे किसी भी प्राण, भूत, जीव, सत्वको तकलीफ हो तो समु० करनेवालेकी क्रिया स्यात् ३-४-५ लगे जिसके पूर्वोक्त ४ भांगे कर लेना।

एवं नारकी परन्तु क्षेत्रसे ज० १००० जोजन साधिक उ० असंख्याता जोजन (कारन पाताल कलशोंमें उत्पन्न हो तो) कालसे १–२–३ समय शेष समुच्चयकी माफक।

इसी तरह शेष २२ दंडक समुच्चय वत परन्तु पांच स्थावर में काल विग्रहापेक्षा १–२–३–४ समयका कहना। बाकीमें १–२–३ समय काही है।

(१०) समुच्चय जीव वैक्रिय समुद्घातकी पृच्छा

(उ०) लम्बा ज० अंगुलके सं० भाग उ० सं० जोजन प्रमाणे एक दिशा वा विदिशा। कालसे १–२–३ समयका स्पर्शेर शेष अस्पर्शा और क्रिया पूर्वोक्त कहनी। स्यात् ३–४–५ औ. इनके भांगा ४ पूर्ववत्।

इसी तरह नारकी परन्तु आयाम एक दिशामें।

एवं वायु काय और तिर्यंच पंचेन्द्रि भी समझना। बाकी-देवता मनुष्य समुच्चय वत्।

इसी तरह तेजस समु० वैक्रिय समु० वत् समझना। आ-याम अंगुलके असं०में भांग होता है। एवं यावत् वैमानिक तक २४ दंडकमें परन्तु तिर्यंच पंचेन्द्रियमें एक ही दिशा कहना। आ-हारिक समु० समुच्चजीव और मनुष्य करे तो विष्कंभ और बाहु-ल्यपने तो शरीर प्रमाणे आयाम ज० अंगुलके असं०में भाग उ० सं० जोजन प्रमाण एक दिशीमें कालसे १–२–३ समय छोडनेका काल अन्तर मुहूर्त क्रिया पूर्वोक्त ३–४–५ और भांगा चार भी पूर्ववत् समझ लेना।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नम्बर १०

सूत्र श्री पन्नवणाजी पद ३६

(केवली समुद्घात)

(प्र०) हे भगवान् ! अनगार भावित आत्माका धणी केवली समुद्घात करे जिसमें निर्जरा किये हुवे कर्म पुद्गल होते हैं वह सर्व लोक स्पर्श करे अर्थात् सर्व लोकमें व्यापक हो जाते हैं ! उन सुक्ष्म पुद्गलोंको छद्मस्त जीव वर्ण, गंध, रस स्पर्श करके जाणे देखे !

(उ०) छद्मस्त नहीं जाणे नहीं देखे ।

कारण जैसे (दृष्टांत) यह जम्बूद्वीप १ लक्ष योजनका है जिसकी परिधी ३१६२२७ योजन ३ गाउ १२८ धनुष्य १३॥ अंगुल १ जव १ जूँ १ लीख ६ बालाग्रह ५ व्यवहारीया परमाणू साधिक होती है जिसको कोई महान ऋद्धिवान्, शक्तीवान् देवता हस्तगत सुगन्ध पदार्थका डिब्बा लेकर तीन चिपटी बजावे इतनेमें उस सुगन्धी डिबेको हाथमें लिये हुवे २१ वार जम्बूद्वीपकी प्रदक्षिणा दे और उस सुगन्धी डिब्बीमेंसे निकले हुवे पुद्गल जो जम्बूद्वीपमें व्याप्त है उन पुद्गलोंको छद्मस्त नहीं देख सकता। वे आठ स्पर्शी होने पर भी इतने सुक्ष्म है तो कर्मोंके पुद्गल तो चौ स्पर्शी है उसको छद्मस्त कैसे देख सकता है अर्थात् चौ स्पर्शी बहुत ही सुक्ष्म होते है उसको छद्मस्त नहीं देख सकता ।

केवली समु० किस वास्ते करते है ? जिनके चार कर्म (वेदनी, आयुष्य, नाम, गोत्र) बाकी रहे हैं इसमेंसे आयुष्य कर्म अल्प हो और वेदनी कर्म जादा हो उसको सम करनेके लिये केवली समुद्घात करते है।

(प्र०) सब केवली समु० करते हैं ?

(उ०) सब केवली समु० नहीं करते, अनन्ते केवली बिना ही समु० किये जन्म, जरा मर्णके रोगको मिटा कर मोक्षमें गये है।

(प्र०) मोक्ष जाते समय कितने समयका आयुज करणा होता है ?

(उ०) असंख्याता समयका होता है

(प्र०) केवली समु० को कितना समय लगता है ?

(उ०) आठ समय लगता है

(प्र०) किस समय किस योग पर प्रयूंजता है (प्रवृते) ?

पहिले समय—औदारिक काय योग (दंड १४ राजलोक प्रमाण)

दूसरे समय—औदारिक मिश्र काय योग (कपाट करे)

तीसरे समय—कार्मण काय योग (मथन प्रदेश)

चौथे समय— ,, ,, ,, (आंतरा पूरे)

पांचवे समय— ,, ,, ,, (आंतरा संग्रह)

छठे समय—औदारिक मिश्र काय योग (मथनसंग्रह)

सातवें समय— ,, ,, ,, (कपाट संग्रह)

आठवें समय औदारिक काय योग (दंड संग्रह)

(प्र०) केवली समु० करता हुवा मोक्ष जावे ?

(उ०) नहीं जावे

जिनके आयुष्यका छे महीना शेष रहनेपर केवल ज्ञान प्राप्त हुवा हो उनमेंसे कोई केवली समु० करे कोई न करे

(प्र०) केवली समुदघातसे निवृत होने बाद कौनसे योग पर प्रयूजे ?

(उ०) मनयोग (सत्य व्यवहार), वचनयोग (सत्य व्यवहार) काययोग (हलन चलन तथा पहिले लिये हुवे पाट पटल संथारादि ग्रहस्थको पीछा दे ।

(प्र०) सयोगी केवली मोक्ष जावे ?

(उ०) नहीं जावे कारण अयोगी होनेसे मोक्ष होती है।

(प्र०) मोक्ष जानेवाले पहिले योगोंका निरोध करते है ?

(उ०) (१) मनयोग–संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्ताके जघन्य योगसे असंख्यातमें भाग मनका योग रहा था उसका निरोध करे।

(२) **वचनयोग**–बेरिन्द्रिय पर्याप्ताके जघन्य योगसे असंख्यात भाग बाकी रहा था उसका निरोध करे।

(३) **काययोग**–सुक्ष्म पणग (निगोद) जीवके पर्याप्ताके जघन्य योगसे असंख्यात भाग हीन काययोग था उसका निरोध करे।

अर्थात् पहिले मनयोग पीछे वचनयोग पीछे काययोग इस तरह निरोध करे। असंज्ञी (संग रहित) अयोगी, अलेशी चौदवें गुणस्थान पर अ इ उ ऋ ऌ यह पांच लघु अक्षर उच्चारण करे। इतनी स्थिति पूर्ण करके जन्म, जरा, रोग, सोग, भयको दूर करके केवली मोक्ष जाते है। इस लिये सयोगी केवली मोक्ष नही जाते है परन्तु अयोगी ही मोक्ष जाते है। श्रीरस्तु, कल्याणमस्तु।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

थोकड़ा नं० २१

(सम्यक्त्वके ११ द्वार)

(१) नामद्वार (२) लक्षणद्वार (३) आवणद्वार (४) पावण-द्वार (५) परिमाणद्वार (६) उच्छेदद्वार (७) स्थितिद्वार (८) अन्तरद्वार (९) निरन्तरद्वार (१०) आगरेसद्वार (११) क्षेत्र स्पर्शनाद्वार (१२) अल्पाबहुतद्वार इति

(१) **नामद्वार**—सम्यक्त्व च्यार प्रकारकी होती है यथा क्षायक सम्यक्त्व, उपशमसम्य०, वेदकसम्य०, क्षोपशमसम्य० ।

(२) **लक्षणद्वार**–क्षायक सम्यक्त्वके लक्षण जैसे अनंतानुबंधी क्रोध मान माया लोभ और मिथ्यात्वमोहनिय, मिश्रमोहनिय, सम्यक्त्वमोहनिय एवं ७ प्रकृतियोंका मूलसे क्षय करनेसे क्षायक सम्यक्त्व की प्राप्ती होती हैं। पूर्वोक्त ७ प्रकृतियोंको उपशमानेसे उपशम सम्यक्त्वकि प्राप्ती होती है। पूर्वोक्त ७ प्रकृतियोंसे ६ प्रकृतियोंको उपशमावे और एक सम्यक्त्वमोहनियको वेद उन्हीको वेदक सम्यक्त्व कहेते हैं। पूर्वोक्त ७ प्रकृतियोंसे अनन्तानुबन्धी चौकको क्षय करे और तीनमोहनियोंको उपशमावे उन्हीको क्षयोपशम सम्यक्त्व कहते है।

(३) **आवणद्वार**—क्षायकसम्यक्त्व एक मनुष्यके भवमें आवे, शेष तीन सम्यक्त्व चारों गतिमें आवे।

(४) **पावण द्वार**—च्यारो सम्यक्त्व च्यारों गतिमें पावे। कारण क्षायक सम्यक्त्व मनुष्यके भवमें ही आति है परन्तु सम्यक्त्व आनेके पेहला कीसी भी गतिका आयुष्य बन्ध गया हो

फिर सम्यक्त्व आइ हो तो पूर्व बन्धे हूवे आयुष्यके माफिक उन्हीं गतिमें जाना ही पड़ता है।

(५) परिमाण द्वार—क्षायक सम्य०के धणी अनन्ते मीले (सिद्धोंकी अपेक्षा) शेष तीन सम्यक्त्ववाले असंख्याते असंख्याते जीव मीले।

(६) उच्छेद द्वार—क्षायक सम्य०का उच्छेद कभी भी नहीं होता है शेष तीनों सम्य०कि भजना है।

(७) स्थिति द्वार—क्षायक सम्य० सादि अन्त है अर्थात् आदि है परन्तु अन्त नहीं है कारण क्षायक सम्य० आनेके बाद नहीं जाती है शेष दोय सम्य०कि स्थिति जघन्य अन्तरमहूर्त उत्कृष्ट ६६ सागरोपम साधिक और उपशम सम्य०की जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरमहूर्त है।

(८) अन्तर द्वार—क्षायक सम्य०का अन्तर नहीं है शेष तीनों सम्य०का अन्तर पडे तो जघन्य अन्तर महूर्त और उत्कृष्ट अनन्तकाल यावत् देशोना आर्द्ध पुद्गल परावर्तन करते है अर्थात् सम्य० आनेके बाद पीच्छी चली जावे और मिथ्यात्वमें रहे तो देशोना अर्द्ध पुद्गलसे अवश्य सम्य०को प्राप्ती हो मोक्ष जावे।

(९) निरंतर द्वार—जो जीवोंको सम्य० आति है तो कहा तक आवे? क्षायक सम्य० आठ समय तक निरंतर आवे। फिरतो अन्तर पडे ही। शेष तीन सम्य० आवलिकाके असंख्यातमें भाग समय हो इतनी टैम तक निरंतर आवे।

(१०) आगरेस द्वार—क्षायक सम्य० एक जीवको एक भव या घणा भवमें एक ही दफे आवे। आनेके बाद पीच्छी जावे

नहीं, उपशम सम्यक्त्व एक जीवको एक भवमें जघन्य एक वार उत्कृष्ट दोय वार आवे और घणा भाव अपेक्षा जघन्य दोय वार उत्कृष्ट पांच वार आवे शेष दोय सम्य० एक भवापेक्षा जघन्य एक वार, घणा भवापेक्षा दोय वार और उत्कृष्ट असंख्यात वार आवे। कारण जीवोंके अध्यवशाय क्षोपशमयक भावमें हर समय बदलते रहेते है।

(११) **क्षेत्रस्पर्शना द्वार**—क्षायक सम्य० सर्व लोक क्षेत्रकों स्पर्श करे कारण केवली समुद्घात करते है उन्हीं समय सर्व लोकमें अपना आत्म प्रदेश फेला देते है इसापेक्षा। शेष तीनों सम्यक्त्व सात राज कुच्छ न्यून क्षेत्र स्पर्श करे।

(१२) **अल्पा बहुत्व द्वार** (१) स्तोक उपशम सम्यक्त्व वाले जीव है। (२) वेदक सम्य० वाले जीव संख्याअ गुणे है (३) क्षोपशम सम्य० वाले जीव असंख्यात गुणे है (४) क्षायक सम्य० वाले अनन्त गुणे है (सिद्धापेक्षा) इति।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० २२

(बलकि अल्पाबहुत)

पूर्वाचार्योंके हस्तलिखित प्राचीन पत्रसे

(१) स्तोक सूक्ष्म निगोदके अपर्याप्ताका बल

(२) बादर निगोदके अपर्याप्ताका बल असंख्यातगु०

(३) सूक्ष्म निगोदके प्रर्याप्ताका बल ,,

(४) बादर निगोदके ,, ,, ,,

(५) सूक्ष्म पृथ्वी कायके अपर्याप्ताका ,, ,,
(६) ,, ,, पर्याप्ताका ,, ,,
(७) बादर पृथ्वी कायके अपर्याप्ताका बल ,,
(८) ,, ,, पर्याप्ताका ,, ,,
(९) ,, वनस्पतिके अपर्याप्ताका ,, ,,
(१०) ,, ,, पर्याप्ता ,, ,,
(११) तृण वायुका बल ,,
(१२) घणोदधिका ,, ,,
(१३) घणवायुका ,, ,,
(१४) कुंथवाका ,, ,,
(१५) लीखका बल पांचगुणो
(१६) जु (युक) का बल दशगुणो
(१७) कीडामकीडाका बल वीसगुणो
(१८) माखीका बल पांचगुणो
(१९) डंस मसगका बल दशगुणो
(२०) भ्रमरका बल वीसगुणो
(२१) तीडीका बल पचासगुणो
(२२) चीडीका बल साठगुणो
(२३) पारेवाकों ,, पन्दरागुणो
(२४) कागकों बल सौगुणो
(२५) कुर्कटको ,, सोगुणो
(२६) सर्पको ,, हजारगुणो
(२७) मयूरको ,, पांचसोगुणो
(२८) बंदरको ,, हजारगुणो

(२९) गेटाको ,,	सौगुणो
(३०) मिडाको बल	हजारगुणो
(३१) पुरुष (मनुष्य) को बल	सौगुणो
(३२) वृषभको बल	बारहगुणो
(३३) अश्वको बल	दशगुणो
(३४) भेसाको बल	बारहगुणो
(३५) हस्तीको बल	पांचसोगुणो
(३६) सिंहको बल	पांचसोगुणो
(३७) अष्टापदको बल	दोयहजार गुणो
(३८) बलदेवको बल	दशलक्षगुणो
(३९) वासुदेवको बल	दोयगुणो
(४०) चक्रवर्तको बल	दोयगुणो
(४१) व्यंतरदेवोंका बल	क्रोड़गुणो
(४२) नागादि भुवनपति देवोंका बल	असं० गु०
(४३) असुरकुमारके देवोंका बल	असं गु०
(४४) तारादेवोंका बल	,,
(४५) नक्षत्रदेवोंका ,,	,,
(४६) गृहदेवोंका ,,	,,
(४७) व्यन्तर इन्द्रका बल	,,
(४८) नागादि देवोंके इन्द्रोंका बल	,,
(४९) असुरदेवोंके ,, ,,	,,
(५०) ज्योतिषी ,, ,,	,,
(५१) वैमानिक देवोंका बल	,,
(५२) ,, इंद्रोंका ,,	,,

(५३) तीनकालके इंद्रोंसे भी श्री नेमिनाथ प्रभुके कनिष्टा अंगुलीका बल अनन्तगुणा है । तत्त्वकेवलीगम्यम् ।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

मरूस्थलमें मुनि विहारका लाभ।

मारवाड फलोधी नगरमें मुनिश्री ज्ञानसुन्दरजी महाराजका चतुर्मास होनेसे धर्म कृत्यमें वृद्धि।

(१) सं० १९७७ का चतुर्मासा

१ तपस्या कि पंचरंगी एक

१ तपस्याका शिरपेच एक

२०१ पर्युषणमें पौषद

६६५।) पेहले पर्युषणमें सुपनोकि आवन्द

१२०९।) दुसरे पर्युषणमें सुपनोकि आवन्द

(२) सं० १९७८ का चतुर्मासा

१ तपस्याकि पंचरंगी दोय

२ पौषदका शिरपेच दोय

५०१ पर्युषणोंमें पौषद

१ स्वामिवत्सल पौषदके

२ स्वामिवत्सल खीचंदमें

२१००) पर्युषणोंमें सुपनोंकि आवन्द

४४१) श्री भगवती और नन्दीसूत्रकि पूजाका

२४००० पुस्तकों छपी

और भी पुजा प्रभावना वरघोडा तथा जिर्णोद्धारकि टीपें तथा ३४ आगमोंकि वांचनादि धर्मकृत्य अच्छा हूवा है

जी

प्रकाशक—
मेघराज मुणोत
फलोधि (मारवाड)

॥ जल्दि किजिये ॥

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला संस्थासे स्वल्प समयमें आज तक ९० पुष्प प्रसिद्ध होचुके है कार्य चालु है।

जैन सिद्धांतके तत्त्वज्ञान मय शीघ्रबोध भाग १-२-३-४-५-६-७-८-९-१०-११-१२-१३-१४

हिन्दी गेझर नामो-२०३ आगमोका प्रबल प्रमाणसे ३१ विषयका प्रतिपादन किया गया है साथमें त्रणनिर्नामा लेखोंका उत्तर भी दिया गया है। किंमत फक्त आठ आना।

द्रव्यानुयोग प्रथम प्रवेशिका खास पाठशालाओंमें पढाने लायक है। पाठशालामें टीपल खरचासे ही भेजी जाती है।

लिखो=**श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला**

मु० फलोधी-मारवाड़।

मुद्रक—
मूलचन्द किसनदास कापड़िया,
"**जैन विजय**" प्रिन्टींग प्रेस,
सेवं खपाटिया चकला, लक्ष्मीनारायणकी वाड़ी-**सूरत**।

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला पुष्प नं. ४८-४९

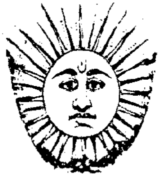

शीघ्रबोध भाग १३-१४ वा

लेखक मुनिश्री ज्ञानसुन्दरजी

श्रीरत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला पुष्प न. ४८-४९

श्रीरत्नप्रभसूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः

अथ श्री

शीघ्रबोध या थोकडा प्रबंध.

भाग १३-१४ वा.

संग्राहक.

श्रीमदुपकेश (कमला) गच्छीय मुनिश्री

ज्ञानसुन्दरजी (गयवरचन्दजी)

प्रकाशक,

श्रीसंघफलोधी सुपनादिकी आवंदसे.

प्रबन्धकर्ता,

शाह मेघराजजी मोणोयत मु. फलोधी.

प्रथमावृत्ति १०००   विक्रम संवत् १९७८

भावनगर—श्री आनंद प्रिन्टींग प्रेसमां शा. गुलाबचंद ललुभाइए छाप्युं.

विषयानुक्रमणिका

शीघ्रबोध भाग १३ वा.

१ चौदा राजलोक.... ....१
२ नारकी के द्वार २१.... ....६
३ भुवनपतियों के द्वार २१.... ....१३
४ व्यंतर देवों के द्वार २१.... .... .. २१
५ ज्योतिषी देवों के द्वार ३१.... ....२७
६ वैमानिक देवों के द्वार २७ ... .३७
७ जम्बुद्विप खंडादि १० द्वार.... ....४७

शीघ्र बोध भाग १४ वा.

१ लवण समुद्र अधिकार.... ....८३
२ घातकिखंडादि ८६
३ नन्दीश्वर द्विप.... ....९५
४ निगोद अल्पा० ....१०१
५ द्रव्यादिशा १८.... ....१०७
६ आहार प्रज्ञा.... ....११३
७ बाष्टीया के बोल ४१.... ....११६
८ ,, ,, ४५.... ....१२२
९ ,, ,, ५२.... ..१२४
१० ,, ,, ३५.... ..१२८
११ ,, ,, २७ ....१३०
१२ ,, ,, ४७ ....१३६
१३ ,, ,, ५१.... ....१३५
१४ ,, ,, २५.... ....१३८
१५ लब्धि ,, २८.... ....१४०
१६ पुद्गल ,, ...१४२
१७ संख्यातादि २१ बोल ... .१४६

संवत् १९७७ कि शालमें मुनिश्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज का चतुर्मासा फालोधी नगरमे हूवा था आपश्री का सदूउपदेशसे ज्ञानवृद्धि के लिये निम्न लिखत पुस्तके प्रकाशित हूई है.

१००० शीघ्रबोध भाग ५वा शाहा रेखचन्दजी लीछमीलालजी कोचर की तर्फसे

१००० शीघ्रबोध भाग १ शाहा हीरचन्दजी फुलचन्दजी कोचर की तर्फसे (आवृति २ जी)

१००० शीघ्रबोध भाग ८ वा शाहा अगरचन्दजी जोगराजजी लोढाकि तर्फ से.

१००० शीघ्रबोध भाग ९ वा शाहा सेसमलजी मीसरीलालजी गोलेच्छा तथा सुगनमलजी ढढाकी तर्फ से.

५००० सुबोधनियमावली अवृतिदुजी शाहा जुहारमलजी दीपचन्दजी वेदाकि तर्फ से.

४५०० द्रव्यानुयोग प्रथम प्रविशका शाहा धनसुखदासजी आसकरणजी गोलेच्छाकि तर्फ से.

१००० हिंदी मेजकर नामो श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमालाकि तर्फ से.

१००० ऋण निर्नामा लेखों का उत्तर श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमालाकि तर्फ से.

१००० आनंदघन चौवीशी शाहा अगरचन्दजी जोगराजजी लोढाकी तर्फ से.

१७५०० श्रीसंघ फलोधी सुपनो आदि कि आवंदसे.

२००० तीर्थयात्रा स्तवन.

१००० अमे साधु शामाटे थया.

१००० नन्दीसूत्र मूलपाठः

१५०० द्रव्यानुयोग प्रथम प्रवेशिका

७००० सात पुष्पो का गुच्छा एकजील्द

१००० स्तवन संग्रह भाग १ चो. आ.

१००० स्तवन संग्रह भाग २ द्वि० आ.

१००० स्तवन संग्रह भाग ३ ,,

१००० दान छत्तिसी ,,

१००० अनुकंपा छत्तिसी ,,

१००० प्रश्नमाला स्तवन ,,

१००० विनति शतक

१००० शीघ्रबोध भाग १० वा

१००० शीघ्रबोध भाग ११ वा

१००० शीघ्रबोध भाग १२ वा

१००० शीघ्रबोध भाग १३ वा

१००० शीघ्रबोध भाग १४ वा

१७५००

३५००० कार्य चलु है ॥

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला पुष्प नं. ४८.

श्री रत्नप्रभसूरी सद्गुरुभ्यो नमः

अथ श्री

शीघ्रबोध या थोकडाप्रबंध.

भाग १३ वा.

थोकडा नम्बर १.

बहुश्रुती कृत १४ राज.

जहाँपर पांचास्तिकाय है उन्हीकों लोक कहा जाते है वह लोक असंख्याते कोडनकोड योजनके विस्तारवाला है उन्हीका परिमाणके लिये राजसंज्ञा दी गइ है. वह राज भी असंख्य कोडोनकोड जोजनका है उन्ही राजका परिमाणसे १४ राज परिमाण लोक कहे जाते है, वह उर्ध्व-अधोलोककि अपेक्षा है, परन्तु कितना उर्ध्व वा अधोजानेपर कितने विस्तार आता है. वह सर्व इन्ही थोकडे द्वारा कहेंगे ।

वस्तुनिर्देशमें नय कि अपेक्षा अवश्य होती है, वह नय मौख्य दो प्रकारकि है. (१) निश्चयनय, (२) व्यवहारनय. जिस्मे निश्चयनयसे लोकका मध्यभाग प्रथम रत्नप्रभा नरकके अवकाश अन्तराके असंख्यातमे भागमें है. वास्ते अधोलोक संभूमितलासे साधिक सात राज है, और उर्ध्वलोक कुच्छ न्यून सात राज है तथा तीरच्छालोक जाडा १८०० योजनका है, परन्तु व्यवहारनयसे सात राज अधोलोक और सात राज उर्ध्वलोक और तीरच्छालोक उर्ध्वलोकके सेमल माना जाता है, वह व्यवहारनयकि अपेक्षासे ही यहापर बतलाये जावेगा.

प्रथम च्यार प्रकारके राज होते है उन्हीकों ठीक (२) समझना.

(१) घनराज–एक राज लंबा, एक राज चोडा, एक राज जाड हो.

(२) परतरराज–एक घनराजका च्यार परतरराज होता है.

(३) सूचिराज––एक परतरराजका च्यार सूचिराज होता है.

(४) खण्डराज-एक सूचिराजका च्यार खण्डराज होता है.

अधोलोक सात राजका जाडपणामें है और अधोलोकमें सात नरक है, वह प्रत्यक नरक एकेक राजकि जाडी है विस्तार यंत्रसे देखो.

नाम.	जाडी.	पहूंली.	घनराज.	परतर.	सूचि.	खण्ड.
रत्नप्रभा	१ राज	१ राज	१ राज	४ राज	१६ राज	६४ राज
शार्करप्रभा	१ ,,	२॥ ,,	६। ,,	२५ ,,	१०० ,,	४०० ,,
वालुप्रभा	१ ,,	४ ,,	१६ ,,	६४ ,,	२५६ ,,	१०२४ ,,
पंकप्रभा	१ ,,	५ ,,	२५ ,,	१०० ,,	४०० ,,	१६०० ,,
धूमप्रभा	१ ,,	६ ,,	३६ ,,	१४४ ,,	५७६ ,,	२३०४ ,,
तमप्रभा	१ ,,	६॥ ,,	४२। ,,	१६९ ,,	६७६ ,,	२७०४ ,,
तमतमा०	१ ,,	७ ,,	४९ ,,	१९६ ,,	७८४ ,,	३१३६ ,,

अधोलोकमें सर्व घनराज १७५ परतरराज ७०२ सूचिराज २८०८ खण्डराज ११२३२ होते हैं.

संभूमितलासे १॥ राजउर्ध्व जावे तब पेहला दुसरा देवलोक आता है जिस्मे आदो राजउर्ध्व जावे तब एक राजविस्तार है वहांसे आदो राजउर्ध्व जाव तब १॥ राजविस्तार है वहांसे पाव राज जावे तब २ राजविस्तार वहांसे पाव राज जावे तब २॥ राजविस्तार है वहां पर सुधर्म इशान देवलोक है.

सौधर्म इशान देवलोकसे उर्ध्व एक राज जाते हैं वहांपर तीजा चोथा देवलोक आते है जिस्में आदा राज जावे तब तीन राजविस्तार है वहांसे आदा राज जावे

वहां च्यार राजविस्तार है वहां पर सनत्कुमार महेन्द्र देवलोक आता है,

सनत्कुमार महेन्द्र देवलोकसे पुण ०।।। राज उर्ध्व जावे तब पांचवा ब्रह्मदेवलोक आता है वह पांच राजका विस्तारवाला है।

पांचवा देवलोकसे पाव ०। राज उर्ध्व जावे तब छठा लंतक देवलोक आता है वह भी पांच राजके विस्तावाला है।

छठा देवलोकसे पाव ०। राज उर्ध्व जावे तब सातवा महाशुक्र देवलोक आता है वह च्यार राजके विस्तारवाला है वहांसे पाव राज उर्ध्व जावे तब आठवा सहस्र देवलोक च्यार राजके विस्तारवाला आता है।

आठवा देवलोकसे आदा ०।। राजउर्ध्व जाता है तब नवमा दशवा देयलोक आता है वह तीन राजके विस्तारवाला है वहांसे आदा ०।। राज उर्ध्व जाता है तब इग्यारवा बारहवा देवलोक आता है वह अढाइ राजविस्तारवाला है।

इग्यारवा बारहवा देवलोकसे एक राज उर्ध्व जाता है तब नव ग्रीवेग आता है जीस्मे ०। राज तो आढाइ राजका और ०।।। राज दो राजके विस्तारवाला है।

नव ग्रीवेगसे एक राज उर्ध्व जाता है तब पांचानुत्तर वैमान आता है जिस्में आदा ०।। राज तो दोढ १।। राज और आदा ०।। राज एक राजविस्तारवाला है एवं सात राज उर्ध्व लोक है जिस्के धनराजादि देखो यंत्रसे.

देवलोक	जाडपण.		विस्तार.		घन०		परतर.		सूचि.		खण्ड०	
संभूमिसे	०॥	राज	१	राज	०॥	राज	२	राज	८	राज	३२	राज
वहांसे	०॥	,,	१॥	,,	१ १/८	,,	४॥	,,	१८	,,	७२	,,
वहांसे	०।	,,	२	,,	२	,,	४	,,	१६	,,	६४	,,
सुधर्म इशान	०।	,,	२॥	,,	१॥ १/१६		६।	,,	२५	,,	१००	,,
वहांसे	०॥	,,	३	,,	४॥	,,	१८	,,	७२	,,	२८८	,,
३–४ देवलो	०॥	,,	४	,,	८	,,	३२	,,	१२८	,,	५१२	,,
५ देवलो	०॥।	,,	५	,,	१८॥।	,,	७५	,,	३००	,,	१२००	,,
६ देव०	०।	,,	५	,,	६।	,,	२५	,,	१००	,,	४००	,,
७ देव०	०।	,,	४	,,	४	,,	१६	,,	६४	,,	२५६	,,
८ दे०	०।	,,	४	,,	४	,,	१६	,,	६४	,,	२५६	,,
९–१० दे०	०॥	,,	३	,,	४॥	,,	१८	,,	७२	,,	२८८	,,
११–१२ दे०	०॥	,,	२॥	,,	३ १/८	,,	१२॥	,,	५०	,,	२००	,,
वहांसे	०।	,,	२॥	,,	१॥ १/१६		६।	,,	२५	,,	१००	,,
९ ग्री० वै	०॥।	,,	२	,,	३	,,	१२	,,	४८	,,	१९२	,,
वहांसे	०॥	,,	१॥	,,	१ १/८	,,	४॥	,,	१८	,,	७२	,,
अणुत्तर ५०	०॥	,,	१	,,	०॥	,,	२	,,	८	,,	३२	,,

उर्ध्वलोकके सर्व घनराज ६३।। परतर २५४ सूचि १०१६ खण्डराज ४०६४ तीरच्छो लोक एक राजविस्तार वाला है जिस्में असंख्यातद्वीप समुद्र है परन्तु १८०० जोजनका जाडपणामें होनासे किसी राजकी संख्या नहीं है.

सम्पुरण लोकके घनराजादि संख्या.

(१) घनराज २३९ (३) सूचिराज ३८२४

(२) परतरराज ९५६ (४) खण्डराज १५२९६

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

इति.

थोकडा नम्बर २

बहूतसूत्र संग्रहकर.

(नारकीके २१ द्वार)

(१) नामद्वार (२) गोत्रद्वार (३) जाडपणा

(४) पाहूलपणा० (५) पृथ्वीपण्ड (६) करंडद्वार

(७) पात्थडेद्वार (८) अन्तराद्वार (६) पात्थडेरअन्तरो०
(१०) घणोदद्धि० (११) घणवायु० (१२) तुणवायु०
(१३) आकाशद्वार (१४) नरकरअन्तरो० (१५) नरकावास०
(१६) अलोकान्तरो०(१७) वलीयाद्वार (१८) चेत्रवेदना०
(१६) देववेदना० (२०) वैक्रयद्वार (२१) अल्पबहूतद्वार

(१) नामद्वार—गमा वनशा शीला अञ्जना रीठा मघा माधवती·

(२) गोत्रद्वार—रत्नप्रभा शार्कर० वालुकाप्रभा पंकप्रभा धूमप्रभा तमप्रभा और तमतमाप्रभा।

(३) जाडपणो—प्रत्यक नरक एकेक राजाकी जाडी है

(४) पाहूलपणो—पहेली नरक एक राजविस्तारवाली है, दुसरी २॥ राज, तीसरी च्यार राज, चोथी पांच राज, पांचमी छे राज, छठी साडाछे राज, सातमी नरक सात राज के विस्तारमें है परन्तु नारकिके नैरिया एक राजके विस्तारमें है उन्हीकों त्रसनाली कही जाती है।

(५) पृथ्वीपण्डद्वार—प्रत्यक नारकी असंख्यात असंख्यात जोजनकि है परन्तु पृथ्वीपण्ड पेहली नरकका १८०००० दुसरीका १३२००० तीसरीका १२८००० चोथीका १२०००० पांचमीका ११८००० छठीका ११६००० सातमीका १०८००० योजनका है.

(६) करंडद्वार-पेहली नरकमें ३ करंड है. (१) खरकांड शोला जातका रत्नमय १६००० जोजनका (२) आयुलबहूल पाणीमय ८०००० जोजनका (३) पंकबहूल कर्दममें ८४००० जोजनका सर्व १८०००० जोजनका पेहली नरकका पण्ड है शेष ६ नरकमें करंड नहीं है.

(७) पात्थडद्वार (८) अन्तराद्वार पेहली नरक १८०००० जोजनकी है जिस्में एक हजार जोजन उपर एक हजार जोजन निचे छेडके मध्यमें १७८००० जो० है, जिस्में १३ पात्थडा ओर १२ अन्तरा है अन्तरोंमें २ उपरका अन्तरावर्जके शेष १० अन्तरोंमें दश जातका भुवनपतिदेव निवास करते हैं शेष नरकमें भुवनपतिदेव नहीं है. पात्थडा है वह प्रत्यक पात्थड ३००० जोजनका है जिस्में उपर ओर निचे हजार हजार जोजन छोडके मध्यमें १००० जोजन पण्ड है जिस्में नारकीके उत्पन्न होने योगकुंभीयो है इसी माफीक छठी नरक तक अपने अपने पृथ्वीपण्डसे १००० जो० उपर १००० जो० निचे छेडके शेप मध्यमें दुसरी नरकमें ११ पात्थडा १० अन्तर. तीसरीमें ९ पात्थडा ८ अन्तरा, चोथीमें ७ पात्थड ६ अन्तर, पांचमिमें ५ पात्थडा ४ अन्तरा, छठीमें ३ पात्थडा २ अन्तरा, सातमी नरक १०८००० जिस्में ५२५०० उपर ५२५०० जो० निचे छोडके मध्यमें ३००० जोजनका एक पात्थडा है परन्तु अन्तरा नहीं है.

(९) पात्थडेपात्थडे अन्तरद्वार-पेहली नरकके पात्थडे पात्थडे ११५८३⅓ दुसेरा ९७०० तीसरी १२७५० चोथी १६१६६⅔ पांचमी २५२५० छठी ५२५०० सातमी नरकमें पात्थडा एक ही है.

(१०) घणोदद्धिद्वार प्रत्यक नरकपण्डके निचे २०००० जो० कि घणोदद्धि पकाबन्धा हूवा पाणी है.

(११) घणवायु-प्रत्यक नरकके घणोदद्धिके निचे असंख्यात २ जोजनकि घनवायु है पकाबन्धा हूवा वायु है.

(१२) तृणवायु-प्रत्यक नरकके घणवायुके निचे असंख्यात २ जोजनके तृणवायु पातला वायु है.

(१३) आकाश-प्रत्यक नरकके तृणवायुके निचे असंख्यात २ जो० का आकाश है अर्थात् आकाशके आधार तृणवायु है तृणवायुके आधार घनवायु है घनवायुके आधार घनोदद्धि है घनोदद्धिके आधारसे पृथ्वीपण्ड है.

(१४) नरक नरकके अन्तरा-एकेक नरकके विचमें असंख्यात असंख्यात जोजनका अन्तरे है.

(१५) नरकावासाद्वार-नरकावासा दो प्रकारके है (१) असंख्यात जोजनके विस्तारवाला जिस्में असंख्यात नेरीया है (२) संख्यात जो० जिस्में संख्यात नेरीया है सर्व नरकावासोंका पांच विभाग कर दीया जाय जिस्में च्यार विभाग तो

असंख्याता जोजनका है और एक विभाग संख्याते जोजन वाले है नरकावास पेहली नरकमें ३० लक्ष, दुसरीमें २५ लक्ष तीसरीमें १५ लक्ष, चोथीमें १० लक्ष, पांचमीमें ३ लक्ष छठीमें पांचकम लक्ष, सातमी नरकमें ५ महानरकावास है संख्याता जोजनका नरकावासाका परिमाण जेसे कोइ शीघ्रगतिका देवता तीन चीमटी बजावे इतनामें जम्बुद्वीपके २१ प्रदिक्षणा दे आवे इसी शीघ्रगतिसे चाले वह देवता जघन्य १-२-३ दिन उत्कृ० ६ मास तक चले तो कितनेक संख्यात जोजनके नरकावासोंका अन्त आवे और कितनेकके अन्तभी नहीं आवे.

(१६) अलोक अन्तरा० (१७) बलीयाद्वार-अलोक और नारकीके अन्तर है जिस्में तीन तीन प्रकारका गोल चुडी माफीक बलीया है वह यंत्रसे देखो.

नरक	रत्न०	शा०	वा०	पं०	धूम०	तम०	तम०
अलोकअन्तरो	१२जो.	१२ $\frac{१}{३}$	१३ $\frac{२}{३}$	१४	१४ $\frac{१}{३}$	१५ $\frac{२}{३}$	१६
बलीयासंख्या	३	३	३	३	३	३	३
घणोदाद्धि	६	६ $\frac{१}{३}$	६ $\frac{२}{३}$	७	७ $\frac{१}{३}$	७ $\frac{२}{३}$	८
घणवायु	४।।	४।।।	५	५।	५।।	५।।।	६
तनुवायु	१।।	१।। $\frac{१}{१२}$	१।। $\frac{२}{१२}$	१।।।	१।।। $\frac{१}{१२}$	१।।। $\frac{२}{१२}$	२

(१८) क्षेत्रवेदनाद्वार-प्रत्यक नरकमें क्षेत्रवेदना दश दश प्रकारकी है अनन्त क्षुधा, पीपासा, शीत, उष्ण, रोग, शोक, ज्वर, कुडाशपणे, कर्कशपणे, अनन्त पराधिनपणे यह वेदना हमेसो होती है पेहली नरकसे दुसरी नरकमें अनन्त गुणी वेदना है एवं यावत् छठीसे सातमी नरकमें अनन्त गुणी वेदना है अथवा नरकोंके नामानुस्वारभी नरकमें वेदना है जेसे रत्नप्रभामें खरकरंड रत्नोंका है तथा वह वेदना बहूत है और शार्करप्रभामें जमीनके स्पर्श तरवारकी धारासे अनन्त गुण तीक्षण है वालुकाप्रभाकी रेती अग्निके माफीक जल रही है, पंकप्रभा रौद्रमेद चरवीका किचमचा हूवा है धूमप्रभामें शोमलनिबआकसे अनन्त गुण खारो धूम है, तमप्रभामें अन्धार, तमतमाप्रभामें घोरोनघोर अन्धार है इत्यादि अनन्त वेदना नरकमें है.

(१९) देवकृतवेदना-पेहली, दुसरी, तीसरी नरकमें परमाधामी देवता पूर्वभव कृत पापोंको उदेश २ के मरते है चोथी पांचमी नरकमें अगर वैमानि देवोका वैर हो तो वैर लेनेको जाके वैदना करते है छठी सातमी नारकीमें नारकी आपसमे ही श्वान माफीक मरते कटते है देवकृत वेदनावाला नरकसे आपसमें वेदनावाला नारकी असंख्यातगुणा है.

(२०) वैक्रयद्वार—नारकी जो वैक्रय बनता है वह

बीलकुल खराब शस्त्रादि बनाते है या वज्रमुख कीडा बनाके दुसरे नारकीके शरीरमें प्रवेश होता है फीर बडा रूप बनाके शरीरके खण्ड खण्ड कर देते है.

(२१) अल्पाबहुत्वद्वार.

(१) स्तोक सातमी नरकके नैरिया.

(२) छठी नरकके नैरिया असं० गुणा.

(३) पांचमी नरकके नैरिया असं० गुणा

(४) चोथी नरकके नैरिया असं० गुणा

(५) तीजी नरकके नैरिया असं० गुणा।

(६) दुसरी नरकके नैरिया असं० गुणा

(७) पेहली नरकके नैरिया असं० गुणा

इन्हीके सिवाय और भी द्वार है परन्तु वह लघु दंडकादि थोकडोंमें आजानेके सबबसे यह नहीं लीखा है. इति.

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्.

थोकडा नम्बर ३

बहूत सूत्रोंसे संग्रह.

(भुवनपतियोंके २१ द्वार.)

(१) नामद्वार	(८) चन्हद्वार	(१५) देवीद्वार
(२) वासाद्वार	(९) इन्द्रद्वार	(१६) परीषदा०
(३) राजधानी	(१०) सामानीक०	(१७) परिचारणा
(४) सभाद्वार	(११) लोकपाल०	(१८) वैक्रयद्वार
(५) भुवनसंख्या	(१२) तावतेसका	(१९) अवधिद्वार
(६) बर्णद्वार	(१३) आत्मरत्तक	(२०) सिद्धद्वार
(७) वस्त्रद्वार	(१४) अनकाद्वार	(२१) उत्पन्नद्वार

(१) नामद्वार--असुरकुमार नागकुमार सुवर्णकुमार बिद्युत्कुमार अग्निकुमार द्वीपकुमार दिशाकुमार उदद्धिकूमार वायुकुमार स्तत्कुमार.

(२) वासाद्वार--भुवनपति देवोका निवास कहां पर है ? यह रत्नप्रभानरक १८०००० जोजनकी है जिस्में १००० जो० उपर १००० जो० नीचे छोडके मध्यमें १७८००० जो० जिस्में १३ पात्थडा और १२ अन्तरा है उन्होंसे ऊपरका दो अन्तरा छोडके १० अन्तरोमें दश जातके भुवनपतियोंकी

राजधानी तीरच्छा लोकके द्वीप समुद्रमें है यथा चमरेन्द्रकी राजधानी इस जम्बुद्वीपके मेरुपर्वतसे दक्षिणकी तर्फ असंख्यात द्वीप समुद्र चला जाने पर एक अरुणवर द्वीप आता उन्हीमें ४२००० जोजन जाने पर रूचक उत्पात पर्वत आवे वह पर्वत १७२१ जो० उंचा है ४३० जो० १ गाउ० धरतीमें है १०२२ मूल विस्तार ७२३ मध्यमें ४२४ उपर विस्तारवालो है। वनखण्ड वेदीकासे सुशोभीत है उन्ही पर्वतके उपर एक मनोहर देवप्रासाद है उन्हीके अन्दर एक देव योग्य शय्या है देवता मृत्युलोकमें आने जानेके समय वहांपर ठेरते है। उन्ही पर्वतसे ६३५५५५५०००० जोजन आगे चले जावे वहांपर एक दादरा आता है उन्हीके अन्दर ४०००० जोजन जावे वहांपर चमरेन्द्रकि चमरचंचा राजधानी आती है वह राजधानी १ लक्ष जोजन विस्तारवाली है ३१६२२७। ३। १२८। १३ साधिक परद्धि वह कोट १५० जो० उंचा है मूलमें ५० जो० मध्यमें २५ जो० उपरसे १२॥ जो० उन्ही कोट उपर कोशीषा है एक गाउ विषम आदा गाउका उंचा है अच्छा शोभनिक है एकेक दिशीमें पांचसो पांचसो दरवाजा है वह २५० जो० उंचा १२५ पहूला सर्व रत्नमय है राजधानीके मध्यभागमें १६०००० जो० विस्तारवाला एक गोल चौतरा है उन्हीके उपर ३४१ प्रासाद है मध्य प्रासाद २५० जो० का उंचा १२५ पहूला है अनेक स्थंभ पुतली मौक्तफलकी मालासे

शोभनीक है इत्यादि और भी १० निकायदेवोंकी राजधानी दक्षिणकी तर्फ है इसी माफीक उत्तरदिशामें भी समझना परन्तु उत्तरदिशामें तीगच्छउत्पात पर्वत है.

(४) सभाद्वार एकेक इन्द्रके पांच पांच सभा है (१) उत्पात सभा (२) अभिशेष सभा (३) अलंकार सभा (४) व्यवाय सभा (५) सौधर्मी सभा.

(१) उत्पात सभा–देवता उत्पन्न होनेका स्थान है.

(२) अभिशेष सभामें इन्द्रका राजअभिशेष कीया जाता है.

(३) अलंकार सभा–देवतोंके श्रृंगार करते योग्य वस्त्र-भूषण रहते है.

(४) व्यवाय सभा–देवतोंके योग धर्मशास्त्रका पुस्तक रहते है.

(५) सौधर्मी सभा–जहां जिनमन्दिर चैत्यथ्थंभ शस्त्रकोष आदि है और सुधर्म सभामें देवतोंके इन्साफ कीया जाता है इत्यादि.

(५) भुवनसंख्याद्वार-भुवनपतियोंके भुवन ७७२००००० है जिस्में ४०६००००० भुवन दक्षिणदिशामें है ३६६००००० उत्तरकी तर्फ है. देखो यंत्रमें--

१० भुवनपति.	दक्षिणदिशा.		उत्तरदिशा.		कुलभुवन.	
असुरकु०	३४	लक्ष	३०	लक्ष	६४	लक्ष
नागकु०	४४	,,	४०	,,	८४	,,
सुवर्णकु०	३८	,,	३४	,,	७२	,,
विद्युत्कु०	४०	,,	३६	,,	७६	,,
अग्निकु०	४०	,,	३६	,,	७६	,,
द्विपकु०	४०	,,	३६	,,	७६	,,
दिशाकु०	४०	,,	३६	,,	७६	,,
उदद्धिकु०	४०	,,	३६	,,	७६	,,
पवनकु०	५०	,,	४६	,,	९६	,,
स्तनत्कु०	४०	,,	३६	,,	७६	,,

(६) वर्ण, (७) वस्त्र, (८) चन्ह, (९) इन्द्र.

दश भु०	वर्ण द्वार	वस्त्र द्वार	चन्ह द्वार	दक्षिणेन्द्र	उतरेन्द्र
(१) अ०	कालो	राता	चुडामणि	चमरेन्द्र	बलेन्द्र
(२) ना०	धोवला	निला	नागफण	धरणेन्द्र	भूताइन्द्र
(३) सु०	सुवर्ण	धोला	गरुड	वेणुदेव ,,	वेणुदाली ,,
(४) वि०	राता	निला	वज्र	हरिकंत ,,	हरिसिंह ,,
(५) अ०	राता	निला	कलश	अग्निसिंह,,	अग्नि—मानव,,
(६) द्वि०	राता	निला	सिंह	पूर्ण ,,	विशेष्ट ,,
(७) दि०	पंडुर	निला	अश्व	जलकंत ,,	जलप्रभ ,,
(८) उ०	सुवर्ण	सुपेत	गज	अमृतगति,,	अमृतवहान,,
(९) प०	श्याम	पांच वर्ण	मगर	वेलंब ,,	प्रभंजन ,,
(१०) स्त०	सुवर्ण	सुपेत	वर्द्धमान	घोष ,,	महाघोष ,,

(१०) सामानीकदेव-इन्द्रके उमराव मार्फीक देव होते है चमरेन्द्रके ६४००० देव, बलेन्द्रके ६०००० शेष १८ इन्द्रोंके छे छे हजार देव.

(११) लोकपाल-इन्द्रके कोतवाल मार्फीक देव-सब इन्द्रोंके च्यार च्यार लोकपाल होते है.

(१२) तावतेसीका-राजगुरु मार्फीक शान्तिकारक देव-सर्व इन्द्रोंके तेतीस तेतीस देव तावतिसका होते है

(१३) आत्मरत्नक देव-इन्द्रोंके आत्माकी रत्ना करनेवाले देव-चमरेन्द्रके २५६००० बलेन्द्रके २४०००० शेष इन्द्रोंके २४०००=२४००० देव.

(१४) अनिका-हस्ति, अश्व, रथ, महेष, पेदल, गंधर्व नृत्यकारक एवं ७ अनिका सर्व इन्द्रोंके होती है प्रत्यक अनिकके देवसंख्या चमरेन्द्रके ८१२८००० देव, बलेन्द्रके ७६२०००० शेष १८ इन्द्रोंके ३५५६००० देव होते है.

(१५) देवीद्वार-चमरेन्द्रके पांच अग्रमहेषी एकेकके ८००० का परिवार एवं ४०००० एकेक देवी आठ आठ हजार वैक्रय करे ३२०००००००० एवं बलेन्द्रके शेष १८ इन्द्रोंके छे छे देवी एकेक के छे छे हजारका परिवार एवं ३६००० एकेक देवी छे छे हजाररूप वैक्रय २१६०००००

(१६) परिषदा—परिषदा तीन प्रकारकी है (१) अभिंतर—खास शला विचार करने योग वडेआदरसे बोलानेपर आवे भेजनमे जावे, (२) मध्यम—सामान्य विचार करने योग बोलानेपर आवे परन्तु विगर भेज जावे, (३) बाह्य—उन्होंको हूकम दिया जाय की अमूक कार्य करो विगर बुलायों आना जाना अर्थात् टैमपर आ के हाजर होना ही पडता है.

परिषदा	चमरेन्द्र	बलेन्द्र	दक्षण नवेन्द्र	उत्तर नवेन्द्र
देव अभिंतर	२४०००	२००००	६००००	५००००
,, स्थिति	२॥ पल्यों	३॥ पल्यों	१ पल्यों	०॥ साधि
,, मध्यम	२८०००	२४०००	७००००	६००००
,, स्थिति	२ पल्यों	३ पल्यों	०॥ साधि	०॥ प०
,, बाह्य	३२०००	२८०००	८००००	७००००
,, स्थिति	१॥ पल्यों	२॥ पल्यों	०॥ प०	०॥ प० न्यू
देवी अभिंतर	३५०	४५०	१७५	२२५
,, स्थिति	१॥ पल्यों	२॥ प०	०॥ प० न्यू	०॥ प०
,, मध्यम	३००	४००	१५०	२००
,, स्थिति	१ प०	२ प०	०। प० सा०	०॥ न्यून
,, बाह्य	२५०	३५०	१२५	१७५
,, स्थिति	०॥ प०	१॥ प०	०। प०	०। साधिक

(१७) परिचारण—भुवनपति देवोंके परिचारणा (मैथुन पांच प्रकारकी है यथा मनपरिचारणा रूप० शब्द. स्पर्श० कायपचारण—मनुष्यकी माफीक देवांगनाके साथ भोगविलाश करे इति. देखो परिचारणापद.

(१८) वैक्रयद्वार—चमरेन्द्र वैक्रयकर भुवनपति देव-देवीसे सम्पुरण जम्बुद्वीप भरदे असंख्यातेकी शक्ति है एवं समानिक लोकपाल तावतीसका ओर देवी परन्तु लोकपाल देवीकी शक्ति संख्यातेद्विपकी है एवं बलेन्द्र परन्तु एक जम्बु-द्विप साधिक समझना शेष १८ इन्द्र एक जम्बुद्विप भरे ओर सबके संख्यातेद्विपकी शक्ति है देवतोंके वैक्रयका काल उ० १५ दिनका है.

(१९) अवधिद्वार—असुरकुमारके देवता अवधिज्ञानमे ज० २५ जोजन उ० उर्ध्व सौधर्म देवलोक अधो० तीसरी नरक तीर्य० असंख्याते द्वीप समुद्र शेष ९ देव उ० उर्ध्व जोतीषीयोंके उपरका तला अधो० पेहला नरक तीर्य० संख्यातद्विप समुद्र देखे.

(२०) सिद्धद्वार—भुवनपतियोंमे निकल मनुष्य हो के एक समयमे १० जीवमोक्ष जावे देवीसे निकलके एक समय ५ जीव मोक्ष जावे.

(२१) उत्पन्न—सर्व प्राण भूत जीव सत्व भुवनपति देवों देवी पणे पूर्व अनन्ति अनन्तिवार उत्पन्न हूवे अर्थात् देव होनेपर भी जीवकी कुच्छ भी गरज सरे नही वास्ते ज्ञाना-ध्यमकर आत्माको अमर बनानी चाहिये इति.

सेवंभंते सेवंभंते-तमेवसच्चम्.

थोकडा नं. ४

बहूत सूत्रसे संग्रह.

(व्यंतर देवोंके द्वार २१)

(१) नामद्वार	(८) चन्हद्वार	(१५) वैक्रयद्वार
(२) वासाद्वार	(९) इन्द्रद्वार	(१६) अवधिद्वार
(३) नगरद्वार	(१०) सामानीक देव	(१७) परिचारणा
(४) राजधानी	(११) आत्मरक्षक	(१८) सुखद्वार
(५) सभाद्वार	(१२) परिषदाद्वार	(१९) सिद्धद्वार

(६) वर्णद्वार	(१३) देवीद्वार	(२०) भवद्वार
(७) वस्त्रद्वार	(१४) अनिकाद्वार	(२१) उत्पन्नद्वार

(१) नामद्वार—पिशाच, भूत, यक्ष, राक्षस, किंनर, किंपुरष, मोहग, गभर्व, आणपुन्य, पाणपुन्ये इशीवाइ, भुइवाइ, कंडे, महाकंडे, कोहंड, पयंगदेवा, इति.

(२) वासाद्वार—व्यंतर देव काहापर रेहते है ? यह रत्नप्रभा नरक जो १८०००० जोजनकी जाडपणावाली है जिस्मे एकहजार उपर ओर एकहजार निच छोडनेमे मध्यमे १७८००० जोजन रहेती है इस्मे उपर जो एकहजार जोजनका पण्ड था उन्हीकों एकसो जोजन उपर और एकसो जोजन निचे छोड देनासे मध्य ८०० जोजनका पण्ड है इन्हीके अन्दर वांणमित्र आठ जातका देवता निवास करते है यथा पिशाच यावत् गंधर्व और जो उपर १०० जोजनका पण्ड था जिस्मे १० जोजन उपर और दश जोजन निचे छेडकर मध्यमे ८० जोजनका पण्ड है जिस्मे आठ जताका व्यंतर देव निवास करते हैं.

(३) नगरद्वार—दुसरेद्वारमें बताये हूवे स्थानमे तीरच्छा लोकमे वांणमित्र और व्यंतर देवतोंके असंख्याते नगर है वह

नगर असंख्याते और संख्याते जोजनके विस्तारवाले है सर्व रत्नमय हैं परिमाण भुवनपतियों माफीक.

(४) राजधानीद्वार—बांणमित्र और व्यंतर देवोंकी राजधानीयों तीरच्छा लोकके द्वीप समुद्रोंमें है जेसे भुवनपतियोंके राजधानीका वर्णन कीया गया था उसी माफीक परन्तु विस्तारमे यह राजधानी कम है प्रायः १२ हजार जोजन के विस्तारवाली है सर्व रत्नमय है.

(५) सभाद्वार—एकेक इन्द्रके पांचपाच सभा है यथा (१) उत्पातसभा (२) अभिशेषसभा (३) अलंकारसभा (४) व्यवायसभा (५) सौधर्मसभा विस्तारभुवनपातिसे देखों.

(६) वर्णद्वार—देवतोंका शरीरका वर्ण–'यक्ष पिशाच मोहरग गंधर्व इन्ही च्यारोंका वर्ण श्याम है किंनरदेवोंको निलो वर्ण, राक्षस और किंपुरषको वर्ण धवलों भूतदेवोंको वर्ण कालो इसी माफीक व्यंतरदेवोंके समजना.

(७) वस्त्रद्वार—पिशाच राक्षस भूतके निलावस्त्र यक्ष किंन्नर किंपुरषके पीलावस्त्र मोहरग गंधर्वके श्यामवस्त्र.

(८) चन्हद्वार, (९) इन्द्रद्वार.

देव.	दक्षिण इन्द्र.	उत्तर इन्द्र.	ध्वजपरचंन्ह.
पिशाचके दो इन्द्र	कालेन्द्र	महाकालेन्द्र	कदंबवृक्ष
भूतके दो इन्द्र	सुरूपेन्द्र	प्रतिरूपेन्द्र	सुलक्षवृक्ष
यक्ष ,,	पूर्णेन्द्र	मणिभद्र ,,	वडवृक्ष
राक्षस ,,	भिम	महाभिम	खटंगउपकर
किंन्नर ,,	किंन्नर	किंपुरुष	आशोकवृक्ष
किंपुरुष ,,	सापुरुष	महापुरुष	चम्पकवृक्ष
मोहरग ,,	अतिकाय	महाकाय	नागवृक्ष
गन्धर्व ,,	गतिरति	गतियश	तुंबरूवृक्ष
आणपुन्ये,,	मनिहिंइन्द्र	सामानीइन्द्र	कदंबवृक्ष
पाणपुन्ये ,,	धाइइन्द्र	विधाइइन्द्र	सुलसवृक्ष
ऋषिवादी,,	ऋषिइन्द्र	ऋषिपाल०	वडवृक्ष
भूतवादी ,,	इश्वरइन्द्र	महेश्वरेन्द्र	खटंग
कंद ,,	सुविच्छ	विशाल	आशोकवृक्ष
महाकंद ,,	हास्येन्द्र	हास्यरति०	चम्पकवृक्ष
पयंग ,,	श्वेतेन्द्र	महाश्वेतेन्द्र	नागवृक्ष
कोहडदेवा,,	पतंगेन्द्र	पतंगपतिइन्द्र	तुंबरूवृक्ष

(१०) सामानीक द्वार सर्व इन्द्रोंके च्यार च्यार हजार देव सामानीक है.

(११) आत्मरक्षक–सर्व इन्द्रोंके सोले सोले हजार देव आत्मरक्षक है.

(१२) परिषदा द्वार–कायं भुवनपतियोंके माफीक.

परिषदा.	देव परिषदा.	देवी परि०
अभितर	८०००	१००
स्थिति	०॥ पल्यो०	०। साधिक
मध्यम	१००००	१००
स्थिति	०॥ प० न्यून	०। प०
बाह्य	१२०००	१००
स्थिति	०। साधिक	०। न्यून

(१३) देवी–प्रत्येक इन्द्रके च्यार च्यार देवी है एकेक देवीके हजार हजार देवीका परिवार है एकेक देवी हजार हजार रूप वैक्रय कर शक्ती है.

(१४) अनिका द्वार गजतुरंगादि सात सात अनिका है प्रत्येक अनिकाके ५०८००० देवता हैं सर्व इन्द्रोंके समझना.

(१५) वैक्रयद्वार—इन्द्र सामानीक और देवी एक

जम्बुद्विप व्यंतर देव देवीका रूप वैक्रय बना शक्ते है संख्यातेकी शक्ति है.

(१६) अवधिद्वार—वाणमित्र देव अवधिज्ञानसे ज० २५ जोजन उ० उर्ध्व जोतीषीयोके उपरका तला अधो० पेहली नरक तीर्य० संख्यातेद्विप समुद्र.

(१७) परिचारणाद्वार—सर्व देवोंके पाच प्रकारकि परिचारणा है यथा मन, रूप, शब्द, स्पर्श, और कायपरिचारणा अर्थात् मनुष्यकि माफीक भोगविलाश करते है.

(१८) सुखद्वार— यहा मनुष्यलोकमे कोइ मनुष्य युवक अवस्थामे मनमोहन युवक सुन्दर जोवन रूप लावण्यवानसे सादि कर विदेशमें द्रव्यार्थी गया था वहसे मनोइच्छत द्रव्य लाया दोनोंकी परिपक्व जोवन अवस्थामें अवादित सुख भोगते उन्होंसे व्यंतर देवोंका सुख अनन्तगुण है.

(१९) सिद्धद्वार—वाणमित्रोंसे निकलके मनुष्यभवकर एक समयमें १० और देवीसें निकलके ५ जीव एक समय मोक्ष जाते है.

(२०) भवद्वार—वाणमित्र देव अगर संसारमें भव करे तो १-२-३ उत्कष्ट अनन्त भव कर शक्ते है.

(२१) उत्पन्नद्वार—सर्व प्राण भूत जीव सत्व वाणमित्र देवतों पणे एकवार नही किन्तु अनन्ती अनन्तीवार उत्पन्न

हूवे हे इसीसें चैतन्यकि चैतनता प्रगट नही होती है वह तो पौद्गलीक सुख है खरा आत्मीक सुख श्री जिनेन्द्र देवोंके धर्मको अंगीकार करनेसे प्राप्त होता है. इति.

सेवंभंते सेवंभंते—तमेवसच्चम्.

थोकडा नं. ५

बहूत सूत्रोंसे संग्रह करके.

(जोतीषीयोंके द्वार ३१)

जोतीषी देव दो प्रकारके है (१) स्थिर, (२) चर जिस्में स्थिर जोतीषी पांच प्रकारके है चन्द्र सूर्य ग्रह नक्षत्र और तारा यह अढाइ द्वीपके बाहार अवस्थित है पकी इंटके संस्थान है सूर्य सूर्यके लक्ष जोजन ओर चन्द्र चन्द्रके लक्ष जोजनका अन्तर है तथा सूर्य चन्द्रके पचास हजार जोजनका अन्तर है, अन्दर का जोतीषीयोंसे आदी क्रन्तीवाला है हमेसोंके लिये चन्द्रके साथ अभिच नक्षत्र ओर सूर्यके साथ पुष्य नक्षत्र योग जोडते है. मनुष्य क्षेत्रकि मर्यादाका करनेवाला मानुसोतर पर्वतके बाहारकी तर्फसें लगाके अलोकसें ११११ जोजन उली तर्फ

तक सर्व जोतीषी स्थिर है इन्हीका परिवार विगरह अन्दरके जोतीषीयों माफीक समझना.

अढाइद्वीपके अन्दर जो जोतीषी है वह चर-भ्रमण करनेवाले है और भ्रमण करनेमें ही कुशी मानते है उन्हीका विस्तारके लिये जोतीषी चक्रका थोकडा चन्द्रप्रज्ञाप्ती और सूर्य-प्रज्ञाप्तीसें लिखेंगे परन्तु सामान्यतासें यहांपर ३१ द्वारसें जोती-षीयोंका थोकडा लिखा जाता है कि साधारण मनुष्यभि इन्हीका लाभ उठा सके.

(१) नामद्वार	(१२) गतिद्वार	(२२) देवीद्वार
(२) वासाद्वार	(१३) तापक्षेत्रद्वार	(२३) गतिद्वार
(३) राजधानी	(१४) अन्तर ,,	(२४) ऋद्धिद्वार
(४) सभा	(१५) संख्या ,,	(२५) वैक्रय ,,
(५) वर्णद्वार	(१६) परिवार ,,	(२६) अवधि ,,
(६) वस्त्रद्वार	(१७) इन्द्र ,,	(२७) परिचारणाद्वार
(७) चन्हद्वार	(१८) सामानीकद्वार	(२८) सिद्ध ,,
(८) वैमान पहूल	(१९) आत्मरक्षक,,	(२९) भव ,,
(९) वैमान जाडपणा	(२०) परिषदा ,,	(३०) अल्पाबहूत ,,
(१०) वैमान वहान	(२१) अनिका ,,	(३१) उत्पन्न ,,
(११) मांडलाद्वार		

(१) नामद्वार-चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, और तारा.

(२) वासाद्वार–जोतीषी देवोंका तीरच्छालोकमें असंख्याता वैमान है वह वैमान संभूमिसे ७९० जोजन उर्ध्व जावे तब तारोंका वैमान आवे उन्ही तारोंके वैमानसे १० जोजन उर्ध्व जावे तब सूर्यका वैमान आवे अर्थात् संभूमिसे ८०० जोजन उर्ध्व जावे तब सूर्यका वैमान आता है. संभूमिसे ८८० जोजन उर्ध्व जावे अर्थात् सूर्य वैमानसे ८० जोजन उर्ध्व जावे तब चन्द्र वैमान आवे चन्द्रवैमानसे ४ जोजन और संभूमिसे ८८४ जोजन उर्ध्व जावे तब नक्षत्रोंका वैमान आवे वहासे ४ जो० और संभूमिसे ८८८ जो० उर्ध्व जावे तब बुध नामा ग्रहका वैमान आवे वहासे ३ जो० संभूमिसे ८९१ जो शुक्र ग्रहका वैमान आवे, वहासे ३ जोजन और संभूमिसे ८९४ जो० बृहस्पतिग्रहका वैमान आवे, वहसे ३ जो० और संभूमिसे ८९७ मंगलग्रहका वैमान आवे, वहासे ३ जोजन और संभूमिसे ९०० जोजन उर्ध्व जावे तब शानिश्चर ग्रहका वैमान आवे अर्थात् ७९० जोजनसे ९०० जोजन बिचमें ११० जोजनका जाडपणे और ४५ लक्ष जोजनका विस्तारमें चर जोतीषी है.

जोतीषी	तारा	सूर्य	चन्द्र	नक्षत्र	बुध	शुक्र	बृह	मंग	शनि
संभूमिसे	७९०	८००	८८०	८८४	८८८	८९१	८९४	८९७	९००

जिस्मे तारोंके वैमान ११० जोजनमें सर्व स्थानपर है।

(३) राजधानी—जोतीषी देवों कि राजधानीयों तीरच्छलोकमें असंख्याती है जेसे इस जम्बुद्विपके जोतीषी देव है उन्हों कि राजधानी असंख्यात द्विपसमुद्र जानेपर दुसरा जम्बुद्विप आता है उन्ही के अन्दर ८० हजार जोजनके विस्तारवाली है वडीही मनोहार सर्व रत्नमय है विस्तार भुवनपतियोंके माफीक है और जोतीषी देवोंके द्विपा भी असंख्याते है परन्तु वह द्विपा सर्व द्विपसमुद्रोंके जोतीषीयोंका द्विपासमुद्रमें है जेसे जम्बुद्विपके जोतीषीयोंके द्विपालवण समुद्रमें है और लवण समुद्रके जोतीषीयोंका द्विपा भी लवणसमुद्रमें है तथा धात कि खण्डद्विपके जोतीषीयोंका द्विपा कालोदद्धि समुद्रमें है इसी माफिक सर्व स्थानपर समजना.

(४) सभाद्वार—जोतीषीदेवोंका इन्द्रोंके पांच पांच सभावों है (१) उत्पातसभा (२) अभिशेपसभा (३) अलंकारसभा (४) व्यवशायसभा (५) सौधर्मसभा यह सभा राजधानीयोंके अन्दर है वर्णन देखो भुवनपतियोंकों.

(५) वर्णद्वार—ताराके शरीर पांचों वर्णका है शेष तपा हूवा सुवर्ण जेसा है.

(६) वस्त्रद्वार—अच्छा सुन्दर कोमल सर्व वर्णका वस्त्र जोतीषीयोंके है.

(७) चन्हद्वार—चन्द्रके मुकटपर चन्द्रमांडलका चन्ह

है सूर्यके मुकटपर सूर्यमांडलका चन्ह है एवं नक्षत्र ग्रह तार उन्ही चन्हद्वारा वह देवता पेच्छाना जाता है.

(८) वैमानका पहूलपणा (९) वैमानका जाडपणा—एक जोजनका ६१ भाग किजे उन्हीमें ५६ भाग चन्द्रका वैमान पहूला है और २८ भाग जाडा है सूर्यका वैमान ४८ भागका पहूला २४ भागका जाडा है। ग्रहका वैमान दो गाउका पहूला एक गाउका जाडा है। नक्षत्रका वैमान एक गाउका पहूला आदा गाउका जाडा है। ताराका वैमान आदा गाउका पहूला पाव गाउका जाडा है सर्व स्फकट रत्नमय वैमान है.

(१०) वैमानवहान—यद्यपि जोतीषीयोंके वैमान आकाशके आधारसें रहेते है अर्थात् वैमानके पौद्गलोंके अगुरुलघु पर्याय है वह आकाशके आधारसें रहे शक्ते है। तद्यपि देव अपने मालकका बहूमानके लिये उन्ही वैमानोंको हमेशोंके लिये उठाये फीरते है कारन अढाइद्वीपके अन्दरके देवोंकि स्वभाव-प्रकृति गमन करनेकि है। चन्द्र सूर्यके वैमानकों शोला शोला हजार देव उठाते है जिस्में च्यार हजार पूर्व दिशाकी तर्फ मुह कीये हूवे सिंहके रूप, च्यार हजार दक्षिण दिशा मुह कीये हूवे हस्तिके रूप, च्यार हजार पश्चिम दिशामें मुह कीये हूवे वृषभके रूप, च्यार हजार उत्तर दिशामें मुह कीये हूवे अश्वके रूप एवं ग्रहवैमानकों ८००० देव उठाते है नक्षत्रके वैमानकों

४००० देव उठाते है ताराके वैमानकों २००० देव उठाते है पूर्वादि दिशा पूर्ववत् समझना.

(११) मांडलाद्वार-जोतीषीदेव दक्षिणायनसे उत्तरायन गमनागमन करते है उसे मांडला केहते है अर्थात् चलनेकि सडकको मांडला केहते है वह मांडलोंके क्षेत्र ५१० जोजन है जिस्में ३३० जोजन लवण समुद्रमें और १८० जोजन जंबु-द्वीपमें है कुल ५१० जोजन क्षेत्रमें जोतीषी देवोंका मांडला है चन्द्रका १५ मांडला है जिस्में १० मांडला लवणसमुद्रमें और ५ मांडला जंबुद्विपमें है एवं सूर्यके १८४ मांडला है जिस्में ११९ लवणसमुद्रमें और ६५ मांडला जंबुद्विपमें है ग्रहका ८ मांडला है जिस्में ६ मांडला लवणसमुद्रमें २ जंबुद्विपमें है जो जोती-षीयोंका जंबुद्विपमें मांडला है वह निषेड और निलवंत पर्वतके उपर है। चन्द्रमांडल मांडल अन्तर ३५ जोजन उपर ३०/६१। ४/७ और सूर्य मांडल मांडल अन्तर दो जोजनका है इति.

(१२) गतिद्वार-सूर्य कर्के शंक्रात अर्थात् आसाढ शुक्र पूर्णमाके रोज एक महूर्तमें ५२५१-२९/६० इतनों क्षैत्र चाले तथा मक्र शंक्रात अर्थात् पोष शुक्र पूर्णमाने एक महूर्तमें ५३०५ १५/६० इतने क्षेत्र चाल चले। चन्द्रमा कर्के शंक्रातमें एक महूर्तमें ५०७३ ७७४४/१३७२५ मक्रे शंक्रातने ५१२५-६९९०/१३७२५.

(१३) तापक्षेत्र-कर्के शंक्रातमें तापक्षेत्र ९७५२६। ३३/६०

उगते सूर्य ४७२६३ $\frac{२१}{६०}$ जोजन दुरोसें दृष्टिगोचर होता है मकंर संक्रात तापक्षेत्र ६३६६३ $\frac{१}{६०}$ । उगतो सूर्य ३१८३१ $\frac{३०}{६०}$ दृष्टिगोचर होते है इति.

(२४) अन्तरद्वार-अन्तरा दो प्रकारसे होता है व्याघात-किसी पदार्थकि विचमें ओट आवे निर्व्याघात कीसी प्रकारकी बाद न होय जिस्मे व्याघातापेक्षा जघन्य २६६ जोजनका अन्तरा है क्योंकी निषेड निलवन्तपर्वतके उपर कूटशिखरपर २५० जोजनका है उन्हीसे चौतर्फ आठ आठ जोजन जोतीषीदेव दुर चाल चालते है वास्ते २६६ जो० उत्कृष्ट १२२४२ जो० क्योंकि १०००० जो० मेरूपर्वत है उन्हीसे चौतर्फ ११२१ जो० दुर जोतीषी चाल चलते है १२२४२ जो० अन्तर है. अलोक और जोतीषीदेवोंके अन्तर ११११ जो०. मंडलापेक्षा अन्तरा मेरूपर्वतसे ४४८२० जो० अन्दरका मंडलका अन्तर है, ४५३३० जो० बाहारका मंडलके अन्तर है। चन्द्र चन्द्रके मंडलके ३५ $\frac{३०}{६१}$ अन्तर है सूर्य सूर्यके मंडलके दो जोजनका अन्तर है। निर्व्याघातापेक्षा जघन्य ५०० धनुष्यका अन्तर उत्कृष्ट दो गाउका अन्तर है इति.

(२५) संख्याद्वार-जम्बुद्विपमें दो चन्द्र दो सूर्य, लवणसमुद्रमें च्यार चन्द्र च्यार सूर्य, धातकिखण्डद्विपमें १२ चन्द्र १२ सूर्य, कालोदद्धि समुद्रमें ४२ चन्द्र ४२ सूर्य, पुष्का-

द्वंद्विपमें ७२ चन्द्र ७२ सूर्य, एवं मनुष्यक्षेत्रमें १३२ चन्द्र १३२ सूर्य। आगे चन्द्र सूर्यकि संख्या अम्नाय-जिस द्विप या समुद्रका प्रश्न करे उन्हीके पीच्छेका द्विपमें जितना चन्द्र हो उन्हीकों तीनगुणा कर शेष पिच्छलेको मेमल करदेना, जेसे घातकीखण्डद्विपमें १२ चन्द्र है उन्हीकों तीनगुणा करनासे ३६ और पिच्छले जंबुद्विपका २ लवणसमुद्रका ४ एवं ६ को ३६ के साथमें मीलादेनासे ४२ चन्द्र कालोदद्रिसमुद्रमें हुवे ४२ को तीन गुणकर १२६ पिच्छला २-४-१२ एवं १८ मीलानेसे १४४ चन्द्र पुष्करद्विपमें हुवा जिस्में आदा मनुष्य-लोकमें होनासे ७२ गीना गया है इसी माफीक सब स्थानपर भावना रखने इति.

(१६) परिवारद्वार-एक चन्द्र या सूर्यके २८ नक्षत्र ८८ ग्रह ६६९७५ क्रोडाक्रोड तारोंका परिवार है शंका-तारोंकी संख्याका क्षेत्रमान करनेसे इस लक्ष जोजनका क्षेत्रमें इतना तारा समावेस हो नहीं शक्ता है ? इसके लिये पूर्वाचार्योंने क्रोडाक्रोडीको एक संज्ञारूपसे मानी मालुम होते है या किसी आचार्योंने तारोंका वैमानको उत्सेदांगुलसे भी माना है तत्त्व केवलीगम्य। इसी माफीक सब चन्द्र सब सूर्योंके भि समझना। न क्षत्रग्रहदेवाका नाम वडेजोतीपी चक्रसे देखों

(१७) इन्द्रद्वार-असंख्याता चंद्र सूर्य है वह सर्व इन्द्र है परन्तु क्षेत्र कि अपेक्षा एक चन्द्र इन्द्र दुसरा सूर्य इन्द्र है.

(१८) सामानीकद्वार–एकेक इन्द्र के च्यार च्यार हजार सामानीक देव है.

(१९) आत्मरक्षक–एकेक इन्द्र के शोला शोला हजार आत्मरक्षक देव है.

(२०) परिषदा–एकेक इन्द्र के तीन तीन परिषदों है अभिंतर परिषदा के ८००० देव, मध्यम के १०००० बाह्य की १२००० देव है और देवी तीनों परिषदा मे १००–१००–१०० है.

(२१) आनिकाद्वार–एकेक इन्द्र के सात सात आनिका प्रत्यक आनिका के ५८०००० देवता है पूर्ववत्.

(२२) देवी–एकेक इन्द्र के च्यार च्यार अग्र महेषि देवीयों है एकेक के च्यार च्यार हजार देवीका परिवार है प्रत्यक देवी च्यार च्यार हजार रूप वैक्रयकर शक्ती है ४००० १६००० ६४०००००० कुल देवी है।

(२३) गति–सर्वसे मंद गति चन्द्रकी, उन्होंसे। शीघ्र गति सूर्यकी, उन्हों से शीघ्र गति ग्रहकी, उन्होसे शीघ्र गति नक्षत्र कि, उन्होंसे शीघ्र गति तारोंकी है, अर्थात् सर्वसे मन्द गति चन्द्रकी ओर शीघ्रगति तारोंकी है।

(२४) ऋद्धि–सर्व से स्वल्पऋद्धि तारोंकी, उन्होसे महाऋद्धि नक्षत्र कि, उन्होंसे महाऋद्धि ग्रहकी, उन्हीसे महा-

ऋद्धि सूर्यकी, उन्होसे महाऋद्धि चन्द्रकी अर्थात् सर्वसे स्वल्प ऋद्धि तारोंकी ओर सर्वसे महाऋद्धि चन्द्र देवों की है।

(२५) वैक्रय-जोतीषी देव वैक्रयसे जोतीषी देवी देवता बनाके सम्पुरण जम्बुद्विप भर दे ओर संख्याता जम्बुद्विप भर देने कि शी है एवं चन्द्र सूर्य सामानीक ओर देवी भी समझना.

(२६) अवधिद्वार-जोतीषी देव अवधिज्ञानसे ज० संख्याते द्विप समुद्र देखे उ० भी संख्याते द्विप समुद्र देखे उर्ध्व अपने अपने ध्वजा। अधो पेहली नरक देखे तीरच्छा संख्याते द्विपसमुद्र देखे।

(२७) परिचारणा-जोतीषी देवोंके परिचारणा पांच प्रकारकी है मनकी शब्दकी रूपकि स्पर्शकी कायाकी अर्थात जोतीषी देव मनुष्योंकी माफीक भोग विलाश करते है.

(२८) सिद्ध-जोतीषीयोंसे निकल मनुष्यभव कर एक समय १० जीव मोक्ष जावे, देवी से निकल एक समयमे २० जीव मोक्ष जावे.

[२९] भवद्वार-जोतीषी देवोंसे निकल १-२-३ भव ओर उत्कष्ट करे तो अनंन्ताभव भी कर शक्ते है।

[३०] अल्पाबहुत्वद्वार स्तोक चन्द्र सूर्य उन्होसे नक्षत्र संख्यात गु० उन्होसे ग्रहसंख्या० गु० उन्होसे तारादेव संख्यात गु०

[३१] उत्पन्न—हे भगवान् सर्व प्राणभूत जीव सत्व जोतीषी देवों पणे पूर्व उत्पन्न हूवा ? हे गौतम एकवार नहीं किन्तु अनन्ती अनन्ती वार जोतीषी देवो पण उत्पन्न हूवा है परन्तु देव होना पर भी जीवकों आत्मीक सुख नही मीला आत्मीक सुख के दाता एक वीतराग है वास्ते उन्होंकी आज्ञाका आराद्धि बनना चाहिये इति.

सेवभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्.

थोकडा नम्बर ६.

बहूतसूत्रसे संग्रहकर.

(वैमानिकदेवोंका द्वार २७)

१ नामद्वार	१० इन्द्रनाम द्वार	१९ देवीद्वार
२ वासाद्वार	११ इन्द्रवैमान ,,	२० वैक्रयद्वार
३ संस्थानद्वार	१२ चन्हद्वार ,,	२१ अवधिद्वार
४ आधारद्वार	१३ सामानीक ,,	२२ परिचारणा
५ पृथ्वीपण्ड०	१४ लोकपाल ,,	२३ पुन्यद्वार
६ वैमान उच्चपणो	१५ तावत्रिसका ,,	२४ सिद्धद्वार
७ वैमान संख्या	१६ आत्मरत्नक ,,	२५ भवद्वार
८ वैमान विस्तार	१७ अनिकाद्वार	२६ उत्पन्नद्वार
९ वैमान वर्णद्वार	१८ परिषदाद्वार	२७ अल्पाबहूत्व ,,

(१) नामद्वार-वैमानिकदेवोंका नाम यथा सौधर्मदेवलोक, इशान देवलोक सनत्कुमार० महेन्द्र० ब्रह्म० लंताक० महाशुक्र० सहस्र० अणत्० पाणत्० अरण० अचुतदेवलोक। ।१२। नौग्रीवैग भद्दे, सुभद्दे, सुजाये, सुमाणसे, सुदर्शने, प्रयदर्शने, आमोये, सुप्रतिबन्धे, यशोधरे, ।९। पाचाणुत्तर वैमान-विजय, विजयन्त, जयन्त, अप्राजित, सर्वार्थसिद्ध, ।५। पांचमा देवलोकके तीसरा परतरमें नव लोकान्तीक तथा तीन कब्लिषीदेव मीलके सर्व ३८ जातका देवोंको वैमानिकदेव कहा जाता है।

(२) वासाद्वार-संभूमिसे ७९० जोजन उर्ध्व जावे तब जोतीषीदेव आते है वह ११० जोजनके जाडपणामें अर्थात् ९०० जोजन संभूमिसे उर्ध्व जावे वहां तक जोतीषीदेव है वहांसे असंख्यात कोडनकोड उर्ध्व जावे तब वैमानिकदेवोंका वैमान आते है वहां वैमानिकदेवोंका निवास है उन्होंकि राजधानी और प्रत्यक इन्द्रके पांच पांच सभा स्वस्ववैमानमें है शक्रेन्द्र, ईशानेन्द्रके प्रासाद या इन्होंके लोकपाल तथा देवांगनाकि राजधानीयों तीरच्छालोकमें भी है।

[३] संस्थानद्वार-पेहला दुसरा तीसरा चोथा तथा नवमा दशमा इग्यारवा बारहवा यह आठ देवलोक आदा चन्द्रके संस्थान है अथवा कुंभकारका लागलके आकार है

५–६–७–८ देवलोक और नौग्रीवैग ९ यह पूर्णचन्द्र के आकार एक दुसराके उपरा उपर है च्यार अणुत्तर वैमान तीखुणा च्यार दिशामे है सर्वार्थसिद्ध वैमान गोलचंद्र संस्थान है.

[४] आधारद्वार–वैमान् और पृथ्वीपंड रत्नमय है परन्तु वह किसके आधार है? पेहला दुसरा देवलोक घणोदद्धि के आधार है तीजा चोथा पांचवा घण वायु के आधार है छटा सातवा आठवा देवलोक घणोदद्धि घण वायु के आधार है शेष वैमान यावत् सर्वार्थसिद्ध वैमनतक केवल आकाश के ही आधार है.

(५) पृथ्वीपण्ड (६) वैमानकाउचा (७) वैमान और परतर (८) वर्ण.

वैमान	पृथ्वीपण्ड	वै० उचा	वै० सख्या	वर्ण	परतर
१	२७०० जो	५०० जो	३२ लक्ष	५ वर्ण	१३
२	२७०० ,,	५०० ,,	२८ ,,	५ ,,	१३
३	२६०० ,,	६०० ,,	१२ ,,	४ ,,	१२
४	२६०० ,,	६०० ,,	८ ,,	४ ,,	१२
५	२५०० ,,	७०० ,,	४ ,,	३ ,,	६
६	२५०० ,,	७०० ,,	५०हजार	३ ,,	५

७	२४०० ,,	८०० ,,	४० ,,	२ ,,	४
८	२४०० ,,	८०० ,,	६०००	२ ,,	४
९	२३०० ,,	९०० ,,	४००	१ ,,	४
१०	२३०० ,,	९०० ,,		१ ,,	४
११	२३०० ,,	९०० ,,	३००	१ ,,	४
१२	२३०० ,,	९०० ,,		१ ,,	४
९ ग्री०	२२०० ,,	१००० ,,	३१८	१ ,,	९
५ अणु.	२१०० ,,	११०० ,,	५	१ ,,	१

(९) वैमान विस्तार–वैमान का विस्तार कितनेक (च्यार भागके) असंख्यात जोजनके विस्तारवाले है कितनेक (एक भागके) संख्यात जोजनके विस्तारवाले है परन्तु सर्वार्थसिद्ध वैमान एकलक्ष जोजन विस्तारवाले है ।

(१०) इन्द्रद्वार–बारह देवलोकोंका दश इन्द्र है और नौ ग्रीवैग तथा पांचाणुत्तर वैमानका देवोंके इन्द्र नहीं है अर्थात् अहमेन्द्र–सर्व देवता इद्र है वहापर छोटे वडेका कायदा नही है दश इन्द्रोका नाम यंत्रमें.

(११) वैमानद्वार–प्रत्यक इन्द्र तीर्थकरोंके जन्मादि कल्याणके लिये मृत्यु लोकमे आते है उन्ही समय वैमानमे बेठ के आते है उन्हीका नाम यथा–पालक वैमान, पुप्प वैमान,

सुमाणस, श्रीवत्स, नन्दीवर्तन, कामगमनामाविमान मणोगम प्रीयगम विमल सर्वतोभद्र.

(१२) चिन्ह, (१३) सामानीक, (१४) लोकपाल, (१५) ताय० (१६) आत्मरक्षकद्वार.

इन्द्र.	चिन्ह.	साम०	लो०	ता०	आत्म०
शक्रेन्द्र	मृग	८४०००	४	३३	३३६०००
इशानेन्द्र	महेष	८००००	४	३३	३२००००
सनत्कु०	सुयर	७२०००	४	३३	२८८०००
महेन्द्र	सिंह	७००००	४	३३	२८००००
ब्रह्मेन्द्र	बकरा	६००००	४	३३	२४००००
लंतकेन्द्र	दडका	५००००	४	३३	२०००००
महाशुक्रेन्द्र	अश्व	४००००	४	३३	१६००००
सहस्रेन्द्र	हस्ती	३००००	४	३३	१२००००
प्राणतेन्द्र	सर्प	२००००	४	३३	८००००
अच्युतेन्द्र	गरुड	१००००	४	३३	४००००

(१७) अनिकाद्वार–प्रत्यक इन्द्रके सात सात अनिका है, यथा–गज, तुरंग, रथ, वृषभ, पैदल, गन्धर्व नाटिक–नृत्य-कारक प्रत्यक अनिकाके देव अपने अपने सामानीकदेवोसे १२७ गुणे है जैसे शक्रेन्द्रके ८४००० सामानिकदेव है उन्होसे

१२७ गुण करनेसे १०६६८००० देव प्रत्यक अनिकाका होते है इसी माफीक सर्व इन्द्रोंके समझना.

(१८) परिषदाद्वार—प्रत्यक इन्द्रके तीन तीन प्रकारकि परिषदा होती है अभिंतर, मध्यम, बाह्यदेव देखो यंत्रमे.

इन्द्र.	अभिंतर.	मध्यम.	बाह्य.	देवी.
१	१२०००	१४०००	१६०००	शक्रेन्द्र
२	१००००	१२०००	१४०००	७००
३	८०००	१००००	१२०००	६००
४	६०००	८०००	१००००	५००
५	४०००	६०००	८०००	इशानेन्द्र
६	२०००	४०००	६०००	९००
७	१०००	२०००	४०००	८००
८	५००	१०००	२०००	७००
९	२५०	५००	१०००	शेष इन्द्रके
१०	१२५	२५०	५००	देवी नहीं.

(१९) देवीद्वार—शक्रेन्द्रके आठ अग्र महेषीदेवी है प्रत्यक देवीके शोला शोला हजार देवीका परिवार है १२८००० प्रत्यक देवी शोला शोला हजार रूप वैक्रय कर शक्ती है.२०४८००००००० इतनि देवी एक इन्द्रके भोगमें

आ शक्ती है एवं इशानेन्द्रके भी समझना. शेष देवलोकमें देवी उत्पन्न होनेका स्थान नहीं है उर्ध्व अचुत देवलोकके देवों तकके देवी पेहला दुसरा देवलोकमें रहेती है वह देवोंके भागमें आती है देवीका उर्ध्व आठमा देवलोक तक गमन होना है.

(२०) वैक्रयद्वार–शक्रेन्द्र वैमानीकदेवी देवतोंसे दो जम्बुद्विप भरदे असंख्यातेकी शक्ती है एवं सामानीक–लोकपाल–तावत्रिसका और देवी भी समझना. इशानेन्द्र दो जम्बुद्विप साधिक सपरिवार तथा सनत्कुमार ४ जम्बु० महेन्द्र ४ साधिक ब्रह्मेन्द्र ८ जम्बु० लांतकेन्द्र आठ साधिक महाशुक्र १६ जम्बु० सहस्र १६ साधिक पाणत् ३२ अचुतेन्द्र ३२ साधिक जम्बुद्विप वैक्रयसे देवी देव बनाके भरदे सबकि शक्ती असंख्या जम्बुद्विप भरदेनेकी है शेष वैक्रय नहीं करे.

(२१) अवधिद्वार–अवधिज्ञान सर्व इन्द्र ज० अंगुलके असंख्यातमो भाग उ० उर्ध्व अपने अपने वैमानके ध्वज तीरच्छा असंख्याते द्विप समुद्र अधो शक्रेन्द्र इशानेन्द्र पेहला नरक देखे. सनत्कु० महेन्द्र दुसरी नरक देखे, ब्रह्मेन्द्र लांतकेन्द्र तीसरी नरक देखे, महाशुक्र सहस्र चोथी नरक देखे. अणतपणत अरण अचुत पांचमी नरक देखे, नौग्रीवैगके देव छठी नरक च्यार अणुत्तर वैमान सातमी नरक तथा सर्वार्थसिद्ध वैमानका देवा तसनाली सम्पुर्ण जाने देखे.

(२२) परिचारणाद्वार–सौधर्मेशान देवलोकके देवोंको मन, शब्द, रूप, स्पर्श और कायपरिचारणा यह पांचो प्रकार कि परिचारणा है तीजा चोथा देवोंके स्पर्शपरिचारणा है पांचवा छठा दे० देवोंके रूपपरिचारणा है सातवा आठवा दे० देवोंके शब्दपरिचारणा है नव दश इग्यारा बारहवा देवलोकके देवोंके एक मनपरिचारणा है नौग्रीवेग और अनुत्तर वैमानके देवोंके परिचारणा नहि है विस्तार देखो परिचारणापदका थोकडामें.

(२३) पुन्यद्वार–जितना पुन्य व्यंतरदेव १०० वर्षमें क्षय करते है इतना पुन्य नागकुमारादि नव निकायके देव २०० वर्ष असुरकुमार ३०० वर्ष ग्रह नक्षत्र तारा ४०० चन्द्र सूर्य ५०० सौधर्मइशान १००० वर्ष सनत्कु० महेन्द्र २००० ब्रह्मेन्द्र लंतक ३००० महाशुक्र सहस्र ४००० अणतपणत अरण अचुत ५००० वर्ष पेहली त्रिक १ लक्ष दुसरी त्रिक २ लक्ष तीसरी त्रिक ३ लक्ष च्यार अणुत्तर ४ लक्ष सर्वार्थ-सिद्ध वैमानके देव ५ लक्ष वर्षमें इतना पुन्य क्षय करते है अर्थात् व्यंतरदेव भोगविलास हास्य कौतूल्यादिमें १०० वर्षमें जीतना पुन्य क्षय करते है इतना पुन्य क्रमसर सर्वार्थसिद्ध वैमानके देव पांच लक्ष वर्षोंमें पुन्य क्षय करते है.

(२४) सिद्धद्वार–वैमानिक देवोंसे निकलके मनुष्यका भवमे आके एक समय १०८ सिद्ध होते है एवं देवीसे २० जीव सिद्ध होते है.

(२५) भवद्वार–वैमानिक देवोंमे जाने पर भी जीव संसारमे भव करे तो जघन्य १–२–३ उ० संख्याते असंख्याते अनन्ते भव भी कर शक्ता है ।

(२६) उत्पन्नद्वार हे भगवान् सर्व प्राण भूत जीव सत्व वैमानिक देवता या देवीपणे पूर्व उत्पन्न हूवा ! हे गोतम एक वार नही किन्तु अनन्ति अनन्तिवार उत्पन्न हूवा है कहांतक कि० नौग्रीवैमनक । ओर च्यार अणुत्तर वैमानमे जाने के बाद संख्याते (२४) भवमे ओर सर्वार्थसिद्ध वैमान से एक भवमे निश्चय मोक्ष होता है ।

(२७) अल्पाबहूतद्वार.

(१) स्तोक पांच अणुत्तर वैमनके .व

(२) उपरकी त्रिकके देव संख्यातगुणा.

(३) मध्यम त्रिकके देव ,,

(३) निचेकी त्रिकके देव ,,

(४) बारहवा देवलोकके देव ,,

(५) इग्यारवे ,, ,, ,,

(६) दशवे ,, ,, ,,

(७) नवमे ,, ,, ,,

(८) आठवा असंख्यातगुणा

(६) सातवा ,, ,, ,,

(१०) छटे ,, ,, ,,

(११) पाचवे ,, ,, ,,

(१२) चोथे ,, ,, ,,

(१३) तीजे ,, ,, ,,

(१४) दुजे ,, ,, ,,

(१५) दुजे देवलोककी देवी संख्यातगुणी.

(१६) पेहला देवलोकके देवा ,,

(१७) ,, ,, देवी ,,

सेवंभंते सेवंभंते–तमेवसच्चम्.

थोकडा नं. ७

सूत्रश्री जम्बुद्विपप्रज्ञाप्ती.

(खण्डा जोयण)

गाथा—खंडा[१] जोयण[२] वासा[३],
पव्वय[४] कूडा[५] तित्थ[६] सेढीओ[७]।
विजय[८] दह[९] सलिलाओ[१०],
पिंडए होइ संगहणी ॥ १ ॥

इस लक्ष जोजनके विस्तारवाले जम्बुद्विपको १० द्वारसे बतलाये जावेगे.

(१) खंडा–जम्बुद्विपका भरतक्षेत्र परिमाण कितने खंड होते है.

(२) जोयण–जम्बुद्विपका जोजन परिमाणे कितना खंड होता है.

(३) वासा–जम्बुद्विपमें मनुष्य रेहनेका कितना वासा है.

(४) पव्वय-जम्बुद्विपमें सास्वता पर्वत कितने है.

(५) कूडा-जम्बुद्विपमें पर्वतों उपर कूट है वहा कितने है.

(६) तित्थ-जम्बुद्विपमें माघद्धादि तीर्थ कितने है.

(७) सेढी-जम्बुद्विपमें विद्याधरोंकि श्रेणि कहां या कितनी है.

(८) विजय-महाविदेहक्षेत्रमें मनुष्य रहेनेकि विजय कितनी है.

(९) द्दह-जम्बुद्विपमें पद्मादि द्रह कितने है.

(१०) सलिला-जम्बुद्विपमें गंगादि नदीयों कितनी है

उपर बतलाये हूवे १० द्वारकों शास्त्रकार विस्तारपूर्वक विवरण करते है.

(१) खंडा-तीरच्छालोकमें जम्बुद्विप असंख्याते है परन्तु यहांपर जो हम निवास कर रहे है इसी जम्बुद्विपकि व्याख्या करेंगे.

जंम्बुद्विप गोल चुडि-चक्र-तेलका पुवा-कमलकि कर्णिका और पूर्ण चन्द्रके आकार है वह पूर्व पश्चम एक लक्ष जोजनका पहूला है इसी माफीक दक्षिणोत्तर भी एक लक्ष जोजनका लम्बा है ३१६२२७ जोजन तीनगाउ १२८ धनुष्य

१३॥ अंगुल एक यव एक युक एक लिख छे बालाग्र पांच व्यवहारीय परमाणु इतना विस्तारवाली परद्धि है। एक जगति (कोट) एक पद्मवर वेदिका एक वनखंड च्यार दरवाजा कर अति शोभनिक है। इन्हीं जम्बुद्विपका दक्षिण उत्तर भरतक्षेत्र परिमाणसे खंड किया जाय तो १९० खंड होता है यंत्र।

नं.	क्षेत्र नाम.	खंड.	जोजन परिमाण.
१	भरतक्षेत्र	१	५२६ + ६
२	चुलहेमवन्तपर्वत	२	१०५२ + १२
३	हेमवयक्षेत्र	४	२१०५ + ५
४	महाहेमवन्तपर्वत	८	४२१० + १०
५	हरिवासक्षेत्र	१६	८४२१ + १
६	निषेडपर्वत	३२	१६८४२ + २
७	महाविदेहक्षेत्र	६४	३३६८४ + ४
८	निलवन्तपर्वत	३२	१६८४२ + २
९	रम्यकवासक्षेत्र	१६	८४२१ + १
१०	रूपीपर्वत	८	४२१० + १०
११	एरणवयक्षेत्र	४	२१०५ + ५
१२	सीखरीपर्वत	२	१०५२ + १२
१३	एरभरतक्षेत्र	१	५२६ + ६

जोजनका १९ वा भागकी कला कहित

९० + १००००० जोजन

प्रसंगोपात पूर्व पश्चिम लक्ष जोजनका मान.

नं.	क्षेत्रका नाम.	जोजन परिमाण.
१	मेरूपर्वत पहला	१०००० जोजन.
२	पूर्व भद्रशाल वन	२२००० ,,
३	,, आठ विजय	१७७०२ ,,
४	,, च्यार वस्कारपर्वत	२००० ,,
५	,, तीन अन्तरनदी	३७५ ,,
६	,, सीतामूख वन	२९२३ ,,
७	पश्चिम भद्रशाल वन	२२००० ,,
८	,, आठ विजय	१७७०२ ,,
९	,, च्यार वस्कार	२००० ,,
१०	,, तीन नदी	३७५ ,,
११	,, सीतामुख वन	२९२३ ,,

एवं १००००० जोजन--

(२) जोयणद्वार-एक लक्ष योजनके विस्तारवाले जम्बुद्विपका योजन योजन परिमाणके गोल खंड किया जाय तो १०००००००००० इतने खंड होते है अगर योजन परिमाण समचोरस खंड किये जाय तो ७९०५६९४१५० खंड होनापर ३५१५ धनुष ओर ६० अंगुल क्षेत्र वडजाता है इति द्वारम्.

(३) ग्रामाद्वार—इन्हीं लक्ष योजनके विस्तार वाले जम्बुद्विप मे मनुष्य रहनेका ग्रामक्षेत्र ७ तथा १० है यथा (१) भरतक्षेत्र (२) एरभरतक्षेत्र (३) महाविदहक्षेत्र इन्हीं तीनों क्षेत्रमे कर्मभूमि मनुष्य निवास करते है और (१) हेमवन्त (२) हरणवय (३) हरिवास (४) रम्यकवास इन्ही च्यार क्षेत्रोंमें अकर्मभूमि युगल मनुष्य निवास करते है एवं ७ तथा दश गीना जावे तो पूर्वजों महाविदहक्षेत्र गीना गया है उन्हींके च्यार विभाग करना (१) पूर्व महाविदह (२) पश्चिम महाविदह (३) देवकुरु (४) उत्तर कुरु एवं १० क्षेत्र होता है। विवरण—

लक्ष योजनके विस्तार वाला जो जम्बुद्विप है जिन्होंके च्यारों तर्फ एक जगति (कोट) है वह जगति आठ योजन की उंची है मूलमें १२ मध्यमें ८ उपर ४ योजनके विस्तार वाली है सर्व वज्ररत्नमय है उन्ही जगति के कीनारेपर एक गोख जाल अर्थात्—झरोखाकी लेन आगइ है वह आदा योजनकी उंची पांचसो धनुष कि चोडी कांगरा और कांगरा भी रत्नमय है।

जगति उपरमें च्यार योजनके विस्तारवाली है उन्ही के मध्यभागमें एक पद्मवरवेदिका आदा योजनकी उंची ५०० धनुष कि चोडी दोनो तर्फ निला पनों का थाभा पर अच्छा सुन्दर आकारवाली मनमोहक पुतलायों है और भि अनेक

सुन्दर रूप तथा मौक्तफल की मालावों से सुशोभित है मध्य-भागमे पद्मवर वेदिका आजानेसे दो विभाग हो गये है (१) अन्दर का विभाग (२) बाहार का विभाग जो अन्दर का विभाग है उन्ही के अन्दर अनेक जातिके वृक्ष आजानेसे अन्दरका वनखंड कहा जाते है उन्ही के अन्दर पांच वर्ण के तृण रत्नमय है पूर्वादि दिशीका मन्द वायु चलनेसे छे राग ३६ रागणी मन और श्रवणोंको आनन्दकारी ध्वनी निकलती है उन्ही वनखंड मे और भी छोटी छोटी वावी और पर्वत आगय है वह अनेक आसन पडे है वहाँ व्यंतर देव और देवीयों आते है पूर्वकृत पुन्यकों सुखपूर्वक भोगवते है इसी माफीक बाहारका वन भी समझना परन्तु वहा तृण नही है ।

मरू पर्वत के च्यारों दिशा पैतालीस पैतालीस हजार योजन जानेपर च्यारो दिशा उन्ही जगतिके अन्दर च्यार दरवाजा आते है वह दरवाजा आठ योजनके उचे च्यार योजन के चोड है दरवाजा उपर नवभूमि और सुपेतगुमट छत्रचमर ध्वजा और आठ आठ मंगलीक है। दरवाजाके दोनों तर्फ दो दो चौतरा है उन्हीके उपर प्रासाद तोरण चन्दनके कलसे झारी थाल आदि यावत् धूपके कुडच्छ और मनोहर रुपवाली पुतलीयोंसे सुशोभीत है.

(१) पूर्वदिशमें विजय नामको दरवाजो है.

(२) दक्षिणदिशमें विजयन्त नामको दर०

(३) पश्चिमदिशमें जयन्तनामा दर०

(४) उत्तरदिशमें अप्राजित नामा दर०

इन्हीं चारों दरवाजोंके नामके च्यारों देवता एकेक पल्योपमकि स्थितिवाले है उन्हीकी राजधानी अन्य जम्बुद्विपमें है। अधिक विस्तारवालोको जीवाभिगमसूत्र देखना चाहिये।

(१) भरतक्षेत्र—जहांपर हम बैठे है इन्हीकों भरतक्षेत्र केहते है। वह चुलहेमवन्तपर्वतसे दक्षिणाकि तर्फ विजयन्त दरवाजासे उत्तराकि तर्फ पूर्व और पश्चिम जगतिके बाहार लवणसमुद्र है अर्द्धचन्द्रके आकार है मध्यभागमें वैताडयपर्वत आनासे भरतक्षेत्रका दो विभाग कहाजाते है (१) दक्षिणभरत (२) उत्तरभरत।

चुलहेमवन्तपर्वतपर पद्मद्रहसे गंगा और सिन्धुनदी उत्तर भरतका तीन विभाग कराति हूइ तमस्रगुफा और खंडप्रभागुफाके निचे वैताडयपर्वतकों भेदके दक्षिणभरतका तीन विभाग कराति हूइ लवणसमुद्रमें प्रवेश हूइ है इन्हींसे भरतक्षेत्रका छे खंड भी कहाजाता है।

दक्षिणभरत २३८ जो० ३ कलाका है जिन्हींके अन्दर तीन खंड है मध्यखंडमें १४००० हजार देश है मौख्य मध्यभागमें कोशलदेश वनिता (अयोध्या) नगरि है वह परिमाण अंगुलसे १२ जोजन लम्बी ९ जोजन पहूली है वनितानगरीसे उत्तराकि तर्फ ११४॥+१॥ वैताडयपर्वत है और ११४॥+१॥

दक्षिणकी तर्फ बिजयन्त नामका दरवाजा है। पूर्व पश्चिमके दोनों खंडमें हजार हजार देश मीलाके दक्षिणभरतके तीनों खंडमें १६००० देश है इसी माफीक उत्तरभरतमें भि १६००० देश है इन्ही भरतक्षेत्रमें कालकि हानि वृद्धिरुप सर्पिणी उत्सर्पिणी मीलके कालचक्र है वह देखो. छे आरोका थोकडामें। एक सर्पिणीमें २४ तीर्थंकर १२ चक्रवरत ६ बलदेव ६ वासुदेव ६ प्रतिवासुदेव नियमत होते है। इति.

(२) एरभरतक्षेत्र—भरतक्षेत्राकि माफिक है परन्तु भरत-क्षेत्रकि मर्यादाकारक चुलहेमवन्तपर्वत है और एरभरतक्षेत्रकी मर्यादाकारक सीखरीपर्वत है शेष बराबर है इति.

(३) महाविदह क्षेत्र—निषेड और निलवन्त दोनों पर्वतोंकें विचमे महाविदहक्षेत्र है वह पलंक के संस्थान है चक्रवरताकि ३२ विजयसे अलंकृत है। अगर महाविदेहक्षेत्रका च्यार विभागकर दिया जावेगें तों (१) पूर्व विदह (२) पश्चिम विदह (३) देवकूरू (४) उत्तर कूरू.

विदहक्षेत्रके मध्य भागमे मेरू पर्वत पृथ्वीपर १०००० जो० के विस्तारवाला है उन्ही के पूर्व पश्चिम दोनुं तर्फ बावीस बावीस हजार योजनका भद्रशालवन है। उन्हीसे दोनों तर्फ (पूर्व पश्चिम) शोला शोला विजय है अर्थात् पूर्व विदहरूप १६ विजया और पश्चिम विदह रूप १६ विजय है।

मरू पर्वत १०००० जोजनका है उन्हीसे उत्तर दक्षिण

अढाइसो अढाइसो जोजनका भद्रशालवन है वहांसे दक्षिणकि तर्फ निषेडपर्वत तक देवकूरू क्षेत्र और निलवन्त पर्वत तक उत्तर कूरूक्षेत्र है। एकेक क्षेत्र दोदो गजदन्तों कर आदा चन्द्राकार है इन्ही क्षेत्रोंमे युगल मनुष्य तीनगाउ कि अवगाहना और तीन पल्योपम कि स्थिति वाले है देवकूरूक्षेत्रमें कुड सामली वृक्ष चितविचित पर्वत १०० कंचनगिरि पर्वत पांच-द्रह इसी माफीक उत्तरकूरूमे परन्तु वह जम्बु सुदर्शनवृक्ष है इति विदहेका च्यार भेद ।

निषेडपर्वत और महा हेमवन्तपर्वत इन्ही दोनो पर्वतोंके विचमे हरिवास नामका क्षेत्र है तथा निलवन्त और रूपी इन्ही दोंनों पर्वतों के विचमे रम्यक्वास क्षेत्र है इन्ही दोनों क्षेत्रोंमे दो गाउकी अवगाहना और दो पल्योपम कि स्थिति वाले युगल मनुष्य रहे ते है ।

महाहेमवन्त और चुलहेमवन्त इन्ही दोंनों पर्वतों के विचमे हेमवय नामका क्षेत्र है तथा रूपी और सीखरी इन्ही दोंनों पर्वतों के विचमे एरणवयक्षेत्र है इन्ही दोंनों क्षेत्रोंमें एक गाउकी अवगाहाना ओर एक पल्योपम कि स्थिति वाला युगल मनुष्य रेहेते है । एवं जम्बुद्विपमे मनुष्य रेहेने के दश क्षेत्र है इन्हीको शास्त्रकारोंने वासा काहा है अब इन्ही १० क्षेत्रोंका लंम्बा चोडा बाहा जीवा धनुषपीठ आदिका परिमाण यंत्रद्वारा लिखा जाता है ।

क्षेत्रनाम	दाक्षिणोतर पहूलापणो	बाह	जीवा	धनुषपीठ
दाक्षिणभरत	२३८ जो० ३	०	९७४८+१२	९७६६+१
उतरभरत	२३८+३	१८९२+७॥	१४४७१+६	१४५२८+११
हेमवयक्षेत्र	२१ ५+५	६७५५+३	३७६७४+१६	३८७४०+१०
हरिवासक्षेत्र	८४२१+१	१३३६१+६	७३९०१+१७	८४०१६+४
महाविदहक्षेत्र	३३६८४+४	३३७६७+७	१०००००	१५८११३+१६
देवकूरूक्षेत्र	११८४२+२	०	५३०००	६०४१८+१२
उत्तरकूरूक्षेत्र	११८४२+२	०	५३०००	६०४१८+१२
रम्यकूवासक्षेत्र	८४२१+१	१३३६१+६	७३९०१+१७	८४०१६+४
एरणवयक्षेत्र	२१०५+५	६७५५+३	३७६७४+६	३८७४०+१०
दाक्षिणएरभरत	२३८+३	१८९२+७॥	१४४७१+६	१४५२८+११
उत्तरएरभरत	२३८+३	०	९७४८+१२	९७६६+१

(४) पव्वयपर्वत–जम्बुद्विपमें २६६ पर्वत सास्वता है
(२००) कञ्चनगिरिपर्वत–देवकूरू युगलक्षेत्रमें पांच द्रह है उन्ही द्रहके दोनों तटपर दश दश कञ्चनगिरिपर्वत सर्व सुवर्णमय है दश तटपर १०० पर्वत है इसी माफीक उत्तरकूरू युगलक्षेत्रमें १०० कञ्चनगिरि है एवं २००

(३४) दीर्घवैताडच–चक्रवरतकी ३४ विजय अर्थात् महाविदेहकि ३२ विजय एक भरत एक एरभरत एवं ३४ विजयके मध्यभागमें ३४ वैताडचपर्वत है।

(१६) वस्कारपर्वत–महाविदेहक्षेत्रके मध्यभागमें मेरूपर्वत आजानेसे महाविदहक्षेत्रके शोला शोला विजयरुप दो विभाग हूवे शोला शोला विजयके विचमें सीता सीतोदानदी आजानासे आठ आठ विजयरुप च्यार विभाग हूवे उन्हीसे आठ विजयरुप एक विभागके सात अन्तर है जिस्मे च्यार वस्कारपर्वत और तीन अन्तर नदी है एक विभागमें च्यार वस्कारपर्वत है इसी मार्फीक च्यार विभागमें १६ वस्कारपर्वत है।

(६) वर्षधरपर्वत–मनुष्य रेहनेका जो ७ क्षेत्र बतलाये है जिन्होंके ६ अन्तरोंमें छे पर्वत है अथवा सात क्षेत्रोंकि मर्यादा करनेवाले ६ वर्षधरपर्वत है यथा चुलहेमवन्त, महाहेमवन्त, निषेड, निलवन्त, रूपी, और सीखरीपर्वत इति।

(४) गजदन्तापर्वत–निषेड और निलवन्तपर्वतके पाससे

निकलते हूवे देवकूरू उत्तरकूरू युगलक्षेत्र और विजयके विचमें मर्यादा करनेवाले हस्तिके दन्तके आकार मेरूपर्वतके पास जायलागे है.

(४) वृतलवैताढ्य पर्वत हेमवय, एरणवय, हरिवास, रम्यक्-वास वह च्यार युगल मनुष्योंका क्षेत्र है इन्हीके मध्यभागमें च्यार वृतल वैताड्यपर्वत है.

(४) चितविचितादि निषेडपर्वतके पासमें और सीतानदीके दोनो तटपर चित और विचित दो पर्वत है इसी माफिक निलवन्त पर्वतके पासमें सीतोदानदीके तटपर जमग समग दो पर्वत है.

(१) जम्बुद्विपके मध्यभागमें गिरिराज मेरूपर्वत है. इति.

(विवरण)

(१) दो सो (२००) कञ्चनगिरिपर्वत पचवीस जोजन धरतिमें १०० जोजन धरतिसें उंचा मूलमें १०० जो० लम्बा चोडा मध्यमें ७५ जो० उपरसे ५० जोजन विस्तारवाला है तीनगुणी जाझेरी पराद्धि सर्व कञ्चनमय है।

(२) चौतीस दीर्घ वैताड्यपर्वत पचवीस गाउ धरतीमें है पचवीस जोजन धरतीसें उंचा पचास जो० विस्तारवाला है। उन्होंकि दोनो तर्फ बाह ४८८ जो० १६ कला है जीवा १०७२० जो० १२ कला धनुषपीष्ट १०७४३ जो० १५ कला है प्रत्यक वैताड्यपर्वतके अन्दर दो दो गुफावों है (१) तमस-गुफा (२) खंडप्रभागुफा वह गुफा ५० जोजनाकि लम्बी १२

जोजनकि चोडी ८ जो० उंची है उन्ही गुफावोंके अन्दर दो दो नदीयों है (१) उमगजला (२) निगमजला–गुफावोंके दरवाजासें २१ जोजन गुफाके अन्दर जावे तब उगमजाल नदी आवे वह तीन जोजनका विस्तारमें पाणी वह रहा है उन्हीके अन्दर कीसी प्रकारका पदार्थ - कष्ट, कचरा, कलेवर पडजावे तो उन्हीकों तीन दफे इदर उदर भमाके बाहार फेंकदे इसी वास्ते उगमजला नाम है वहांसे दो जोजन आगे जानेपर निगमजला नदी तीन जोजनके विस्तारवाली जिस्के अन्दर कोइ भी पदार्थ पडे तो उन्हीकों तीन उच्छाला देके नदीके अन्दर रखलेवे वास्ते निगमजला नाम दीया है वहांसें २१ जो० जानेपर तमस्त्रगुफके उतरका दरवाजा आजाता है। परन्तु महाविदे क्षेत्रके ३२ वैताड्यके बाहार जीवा धनुषपीष्ट नहीं है केहना वह पलकके संस्थान है। लंबा विजयवत्।

(३) शोलावस्कार पर्वत–चित्र, विचित्र, निलन, एक· शेल, त्रिकुट, वैसमण, अञ्जन, मयाञ्जन, अंकावाइ, पवमावाइ, आसीविष, सुहावह, चन्द्र, सूर्य, नाग, देव एवं १६ पर्वत १६५६२ जो० २ कलाके लम्बा है पांचसो पांचसो जो० पहूला विस्तार है निषेड निलवन्तपर्वतोंके पासमें च्यारसो जोजनका उंचा और ४०० गाउका धरतीमें है वहांसें वढते वढते सीता सीतोंदा नदीयोंके पासमें उंचा पांचसो पांचसो जोजनका और ५०० पांचसो गाउका धरतीमें है। १६ वस्कारपर्वत अश्वके स्कन्धके आकार है.

(६) वर्षद्धारपर्वत यंत्रसें देखो.

पर्वत	उचा	धरतीमे	पहूलपणो	बाहा	जीवा	धनुष०
चूलहेमवन्त और सीखरी	१०० जोजन	२५ जो०	१०५२ जो १२ कला	५३५० जो १५ कला	२४९३२ जो ०॥ कला	२५२३० जो० ४ कला
महाहेमवन्त ओर रूपि	२०० जो०	५० जो०	४२१० जो १० कला	९२७६ जो ९ कला	५३९३१ जो ६ कला	५७२९३ जो० १० कला
निषेड और निलवन्त	४०० जो०	१०० जो०	१६८४२जो २ कला	२०१६५ जो २ कला	९४१५६ जो २ कला	१२४३४६ जो ९ कला

(४) गजदन्ता पर्वत च्यार—गधमदर्न, मालवन्त विद्युत्प्रभा और सुमानस एवं ४ गजदन्ता निषड निलवन्त पर्वत के पास च्यारों पर्वत च्यार च्यारसो जोजनका उचा और सोसो जोजनका धरतीमे उडा तथा पांच पांचसो जोजनका पहूला वहासे क्रमःसर हस्तीके दन्त कि माफीक उचापणे वढते वढते और पहूलपणे कम होते हूवे मेरू पर्वतके पास आते हूवे पांचसो पाचसो जोजनके उचो और सवासे सवासे जोजन के घरतीमें उ० और पहूलपणे अंगुलके असंख्यातमेभाग रहा है लबाइमे ३०२०९ जो० ६ कालाका है च्यारो पर्वत रत्नमय है

(५) वृतल वैताढ्य—सदावाइ वयडावाइ गन्धावाइ मालवन्ता यह च्यार पर्वत १००० जो० उचा २५० जो० धरतीमें तीनगुणी साधिक परद्धि है धांनकी पायलीके आकार एक हजार जों० पहूला विस्तारवाले है ।

(६) चितविचित जमग समग यह च्यार पर्वत देवकूरू उत्तरकूरू युगल क्षेत्रमे निषेड निलवन्तसे ८३४ जो० और एक जोजनका सात भाग करना उन्होंसे च्यार भाग दुरे है। वह १००० जो० उचा ओर २५० जो० धरतीमें उंडे है मूलमे १००० जो० पहूला-विस्तारवाला है मध्य ७५० जो० उपरसे ५०० जोजन विस्तारवाला है.

(७) मेरूपर्वत—मेरूपर्वत जम्बुद्विपके मध्य भागमे है वह एक लक्ष जोजनका है जिस्मे १००० जोंजन धरतिमे और ९९००० जो० धरतीसे उपर है मूलमे पहूलो १००९० जो० एक जोजनका इग्यारी या दश भाग है। धरतिपर दश हजार जोजन विस्तारवाला है उपर इग्यारे जोजन के पीछे एक जोजन कम होते कम होते मेरू के सीखरपर एक हजार जोजन के विस्तावाला है सब जगा तीनगुणी जाझेरी परद्धि है मेरूपर्वतके चौतर्फ एक पद्मवर वेदीका ओर एक वनखंड है वह वर्णन करने योग्य है। मेरूपर्वत के च्यार वन है यथा (१) भद्रशालवन (२) नन्दनवन (३) सुमानसवन (४) पंडकवन.

(१) भद्रशालवन—मेरूपर्वतके चौतर्फ धरति उपर पूर्व पश्चिम २२००० बावीस हजार जोजन और उत्तर दक्षिण अढाइसो २५० जोजनका है एक वनखंड एक वेदीका चौतर्फ है श्यामप्रभाकर अच्छा शोभनिक है। मेरूपर्वत के पूर्व दिशा तर्फ भद्रशालवनमे ५० जोजन जावे तब एक सिद्धायतन (जिनमान्दिर) आवे वह ५० जो० लम्बो २५ जो० चोडा ३६ जो० उचा अनेक स्थभा पुतलीयों आदिसे सुशोभीत है उन्ही सिद्धायतन के तीन दरवाजा है। वह आठ जोजनका उचा और च्यार जोजनका चोडा जीसपर सुपेत गुमटकर सोभायमान है उन्ही सिद्धायतन के मध्य भागमे एक मणि-पीट चौतरो ८ जो० लंम्वो चोड। च्यार जो० जाडो सर्व रत्नमय है। उन्ही चौतराके उपर एक देवच्छादो (जहा जिन प्रतिमा वीराजमान हे उन्ही को मूल गुभारा भी कहा जाते है) वह ८ जो० लंम्बा चौडा—साधिक आठ जो० उचा उचपणे है वर्णन करने योग्य है उन्ही के अन्दर त्रिलोक्य पूजनीक तीर्थंकर भगवान कि प्रतिमावों पद्मासन विराजमान है यावत् धूपके कुडचे आदि रहे हूवे है। एवं दक्षिण एवं पश्चिम एवं उत्तर अर्थात् च्यारो दिशामें च्यार जिन मन्दिर पूर्ववत् समझना। मेरूपर्वत से इशान कोनमे भद्रशाल वनमे जावे तब च्यार नन्दा पुष्करणि वावी आति है पद्मा पद्माप्रभा, कुमुदा कुमुदप्रभा वह वावी ५० जो० लंम्बी २५

जो० चोडी १० जो० उढी वेदिका वनखंड तोरणादि करी संयुक्त है उन्ही च्यार वावीयों के मध्य भागमे इशानेन्द्रका प्रधान प्रासाद (म्हल) है वह प्रासाद ५०० जो० उचा २५० जो० विस्तारवाला है यावत् सपरिवार के आसन सहित है। एवं अग्निकोनमें भी च्यार वावी है उत्पला, गुम्मा निलना उज्वला पूर्ववत् परन्तु इन्ही वावी के मध्य भागमे शकेन्द्रका प्रासीद है एवं वायुकोनमे च्यार वावी है लिंगा भिंगनाभा अञ्जना अञ्जनप्रभा-मध्यमे शकेन्द्रका प्रासाद सिंहासन सपरिवार समझना एवं नैऋतकोनमे च्यार वावी श्रीक्रन्ता श्रीचन्दा श्रीमहीता श्रीनलीता--मध्यभागमें प्रासाद इशानेन्द्रका समझना वावी-वावी के अन्तरामे जो० खुली जमीन है उन्हों के उपर इन्द्रोंका प्रासाद है। भद्रशालवनमे आठ विदिशावोंमे आठ हस्तिकुट है वह १२५ जो० धरतीमे ५०० जो० धरतीसे उचा है मूलमे पांचसो जो० मध्यमे ३७५ जो० उपर २५० जो० विस्तारवाला है तीनगुणी झाझेरी परद्धि है। पद्मुत्तर, निलवन्त, सुहस्ति, अञ्जन गिरि, कुमुद, पोलास, विढिस, रोयणगिरि, इन्ही आठ कुंटोंपर कुंटकेनाम देवता ओर देवतोंका भूवन रत्नमय है उन्ही देवोंकी राजधानी आपनी अपनि दिशासे अन्य जम्बुद्विपमे जानापर आति है विजय देववत समझना भद्रशालवन वृक्ष गुच्छा गुमावेली तृण कर शोभाय

मान है बहुतसे देवता देवी विद्याधरादि आवे है पूर्व संचित सुभ फलकों भोगवते हूवे विचरे है।

(२) नन्दनवन-भद्रशालवनकी संभूमिसें ५०० जोजन उंचा मेरूपर्वतपर जावे वहाँ गोल वलीयाकार नन्दनवन आवे वह पांचसो जो० विस्तारवाला है मेरूपर्वतको चौतर्फ वीटा हूवा है अर्थात् वहांपर मेरूपर्वतकी एक मेखला निकली हूइ है उन्होंके उपर नन्दनवन है। वेदिकावन खंड च्यार जिन-मन्दिर १६ वावी ४ प्रासाद शक्रेन्द्र इशानेन्द्रका पूर्वभद्र शालवनवत् समझना और नन्दनवनमें ६ कुंट है नन्दनवन-कुंट, मेरूकुंट, निषेडकुंट, हेमवन्त० रजीतकुं० रूचित० सागर-चित० वज्र० बलकुंट जिस्में आठ कुट पांचसो पांचसो जो० उंचा यावत् आठो कूटपर आठ देवीका भुवन है मेघंकरा, मेघवती, सुमेघा, हेममालानिदेवी, सुवच्छादेवी, वच्छमित्रादेवी, बज्रसेनादेवी, बलहकादेवी, आठों देवीयोंकि स्थिति एक पल्योपमकी है राजधानी अपनी अपनी दिशा तर्फ अन्य जम्बुद्विपमें समझना। बलकुट १००० जो० उंचा है मूलमें १००० मध्यमें ७५० उपरसें ५०० जो० विस्तारवाला है तीनगुणी साधिक परद्धि है बलदेवता राजधानी अन्य जत्बुद्विपमें है शेषभद्रशालवनवत् यावत् अच्छा सुन्दर है। देवदेवी आनन्द करते है.

(३) सुमानसवन–नन्दनवनके तलासे ६२५०० जोजन उर्ध्व जावे तब सुमानस नामका वन आवे। वह पांचसो जोजन के विस्तारवाला मेरूपर्वतको चौतर्फ वींट रखा है वेदीकावन खंड च्यार जिनमन्दिर १६ वावी शक्रेन्द्र इशानेन्द्रका ४ प्रासाद पूर्ववत् समझना यावत् देवतादेवी आते है.

(४) पंडकवन–सुमानसवनसे ३६००० जोजन उर्ध्व जावे तब मेरूपर्वतके शिखर उपर पंडकवन आता है ४६४ जो० चक्रवाल चुडी आकार मेरूपर्वतकी चुलका (१२ जोजन) कों चौतर्फ वींटरखा है। वेदीकावन खंड च्यार जिनमन्दिर १६ वावी शक्रेन्द्र इशानेन्द्रका च्यार प्रासाद पूर्ववत् समझना। पंडकवनके मध्यभागमें मेरूचुलका है वह ४० जोजनकी उंची है मूलमें १२ मध्यमें ८ उपरसे ४ जोजन विस्तारवाली है साधिक तीनगुणी परद्धि। सर्व वैरूडीय रत्नमय है। एक वेदिका वनखंडसे वींटी हूइ है। उपरका तलो मणिजडित है मध्यभागमें एक सिद्धायतन एक गाउका लम्बा आदा गाउका चोडा देशोना गाउका उंचा अनेक स्थाभकर शोभनीक है मध्य मणिपीट देवच्छदा और पद्मासन जिनप्रतिमावों यावत् धूपकुडचा आदि। देवतादेवी वहांपर आते है या लब्धिधरमुनि भी जाते है त्रिलोक्य पूजनीक तीर्थकरोंकी सेवाभक्ति करते है.

पंडकवनमें च्यार दिशावोंमें च्यार अभिशेष शीलावों

है जिन्होंकों उपर तीर्थंकर भगवान्का जन्माभिशेष इन्द्रमहाराज करते है। उन्होंके नाम-पंडूशीला, पंडूकबलशीला, रक्तशीला, रक्तकंबलशीला वह शीलावों पांचसो जोजन लम्बी अढाइसो जो० चोडी च्यार जो० जाडी है अर्धचन्द्रके आकार सर्व कनकमय अच्छी सुन्दर है। वेदिकावन खंडादिसे सुशोभित है। उन्ही शीलावोंके च्यारो तर्फ अच्छा पागोतीया उन्होंके उपर तोरणादिसे और शीलावोंके उपरका तला अच्छा साफ है जिस्में पूर्वपश्चम शीलावोंके उपर दो दो सींहासन ५०० धनुषका लम्बा २५० धनु० चोडा जिसपर विदेहक्षेत्रके तीर्थंकरोंका जन्माभिशेष जो भुवनपति व्यंतर जोतीषी और वैमानीकदेवता करते है और उत्तरदक्षिणकी शीलापर एकेक सींहासन है उन्हीके उपर तीर्थंकरोंका जन्माभिशेष पूर्ववत् च्यार निकायके देवता करते है.

मेरूपर्वतके तीन करंड है (१) हेठेका (२) मध्यमका (३) उपरका जिस्में हेठला करंड १००० जो० धरतीमें है जिस्में २५० जो० पृथ्वीमय २५० जो० पाषाणमय २५० जो० वज्रमय २५० जो० शार्करा पृथ्वीमय है। मध्यमका करंड धरतीके उपर ६३००० जोजनका है जिस्में १५७५० जो० रजतमय १५७५० जो० रूपामय १५७५० जो० स्फटक रत्नमय १५७५० जो० अंकरत्नमय है उपरका करंड ३६०००

ओ० जंम्रुणीया सुवर्णमय है एवं तीन करंड मीलाके १ लक्ष जो-जन परिमाण मेरूपर्वत है मेरूपर्वतके १६ नाम है। मन्दिरमेरू, मनोरम, सुदर्शन, सयंप्रभ, गिरिराज, रत्नोचय, शिलोचय, लोकमध्य, लोकनाभि, अवच्छर सूर्यावृतन, सूर्यावर्ण, उत्तम दिशादि वर्डेसे इन्हीं मेरूपर्वतका मन्दिर नामका देव एक पल्योपमकि स्थितिवाला है वास्ते इन्हीका मन्दिर नाम दीया है और देवादिकों आनन्दका घर है तथा सास्वता नाम है इति.

(५) कुंटद्वार—जम्बुद्विपमे ५२५ कुंट है जिस्मे ४६७ कुंट पर्वतोपर है यथा—

१ चुलहेमवन्तपर्वतपर कुंट ११
२ महाहेमवन्तपर्वतपर ,, ८
३ निषेडपर्वत पर ,, ९
४ निलवन्तपर्वत पर ,, ९
५ रूपिपर्वत पर ,, ८
६ सीखरीपर्वत पर ,, ११
७ चौतीस वैताड्यपर्वत है प्रत्यक पर्वतपर नव नव..................कुंट ३०६

८ शौलावस्कारपर्वत प्रत्यक पर्वत पर च्यार च्यार कुंट ६४
९ विद्युत्प्रभा गजदन्ता पर ,, ९
१० मालवन्ता ,, ,, ,, ९
११ सुमानस ,, ,, ,, ७
१२ गन्धमाल ,, ,, ,, ७
१३ मेरुपर्वतका नन्दनवनमे आये हूवे कुंट ९

एवं ४६७ तथा भद्रशालवनमे ८ हस्तिकुंट है देवकुरूमे ८ उतरकुरूमें ८ एवं २४ और ३४ चक्रवरत कि विजय में

३४ ऋषभकुंट एवं ५८ सर्व मीलके ५२५ कुंट है जिस्मे छे वर्षधरपर्वतोंका ५६ शोलावस्कारोंका ६४ च्यार गजदन्ताका ३० नन्दनवनका ८ भद्रशालवनका ८ एवं १६६ कुंट प्रत्यक कुंट ५०० जोजनका उचा ५०० जो० मूल पहूला शीखर पर २५० जोजन विस्तारवाला है और गजदन्ताके २ नन्दनवनका १ एवं ३ कुंट १००० जो० का उचा तथा मूलमे १००० जो० का पहूला शीखरपर ५०० जो० पहूल है एवं १६९

चौंतीस वैताड्यका ३०६ कुंट २५ गाउका उचा और मूल पहूला तथा शीखर पर १२॥ गाउका पहूला है। जम्बु-पीठका ८ सामली पीठका ८ और ऋषभकुंट ३४ एवं ५० कुंट आठ जोजनका उचा आठ जोजनका मूलमे पहूला और शीखर पर ४ जोजका पहूला है एवं कुल ५२५ कुंट समझना।

उपर जो ५२५ कुंट कहे है इन्हींमें ७६ कुंट परतों जिनमंदिर है शेष ४४९ कुंट पर देवता और देवीयोंका भुवन है यथा–छे वर्षधरपर्वतों पर छे जिन मन्दिर–शोलावस्कार पर्वतों पर १६ जिनमन्दिर। च्यार गजदन्तों पर च्यार जिन-मन्दिर आठ देवकूर आठ उत्तरकूरू और चौतीस वैताड्य पर्वतो पर ३४ जिनमन्दिर एवं कुल ७६ जिनमन्दिर है इन्हीके सिवाय भद्रशालवनमे ४ नन्दनवनमे ४ सुमानसवनमे ४ पंडग वनके च्यार ४ मेरू चुलाका पर १ जम्बु वृत्त पर १ सामली वृत्त पर १

एवं १५ मीलाके ५५ जिनमन्दिर सास्वता है परिमाण—छे वर्षधर शोलावस्कार च्यार गजदन्ता च्यार भद्रशाल च्यार नन्दनवन च्यार सुमानसवन च्यार पंडगवन एवं ४२ स्थानके जिनमन्दिर पचास पचास जो० लम्बा पचविस पचविस जो० चोडा छतीस छतीस जो० उचा अनेक स्थाभ पुतलीया हार आदिसे अच्छा शुशोभित सर्व रत्नोंमय है उन्ही जिनमन्दिरोंके तीन तीन दरवाजा है प्रत्यक दरवाजा आठ जोजनका उचा च्यार जो० पहूला तोरण स्थाभ आदिसे अच्छा मनोहर है.

चौतीस वैताढ्य आठ देवकूरू आठ उत्तरकूरूके पीठका तथा जम्बुवृक्षका एक सामलीवृक्षका एक और मेरूचुलुकाका एक एवं ५३ जिनमन्दिर एक कोषका लम्बा आदा कोषका पहूला १४४० धनुषका उंचा सर्व रत्नमय है इन्ही सर्व सिद्धायतनों अर्थात् जिनमन्दिरोंमें त्रीलोक्य पूजनिक तीर्थकरोंकी शान्तमुद्रा पद्मासनमय मूर्तियों है उन्होंकी सेवाभक्ति अर्चनादि देवदेवी विद्याधर करते है.

शेष ४४६ कुंट तथा २०० कञ्चनगिरि ४ वृतलवैताढ्य ४ चितविचित जमगसमग एवं सर्व ६५७ स्थानपर देवीदेवतोंका आवास (भुवन) है इति.

(६) तीर्थद्वार—जम्बुद्विपमें तीर्थ १०२ है वह लौकिक सास्वता तीर्थ है जिस समय चक्रवरत खंड साधनेकों जाते है

तब वहांपर ठेरते है वह तीर्थाध्यष्टायक देवोंका अष्टमतप करते है या तीर्थकरोंका जन्माभिशेषके लिये उन्ही तीर्थोंका जल औषधि आदि देव लाते है इत्यादि वह तीर्थका नाम–मागध, वरदाम और प्रभास एवं चक्रवरतकि ३४ विजयमें तीन तीन तीर्थ होनासे १०२ तीर्थ है.

(७) श्रेणी–जम्बुद्विपमें श्रेणी १३६ है यथा वैताढ्य-गिरि २५ जोजनका धरतिसें उंचा है उन्ही पर्वतके उपर धरतिसें १० जोजन उपर जावे तब विद्याधरोंकी २ श्रेणि (१) दक्षिण श्रेणि जिस्में ५० नगर है (२) उत्तर श्रेणि जिस्में ६० नगर आते है उन्ही विद्याधरोंकी श्रेणिसे दश दश जोजन उंचा जावे तब अभियोग देवोंकी दो दो श्रेणि आति है (१) दक्षिण श्रेणि (२) उत्तर श्रेणि वहांपर व्यंतरदेवता पूर्व कीये हूवे सुकृतके फल भोगवते है एवं ३४ वैताढ्यपर च्यार च्यार श्रेणि है सर्व मीलके १३६ श्रेणि होती है इति.

(८) विजयद्वार–जम्बुद्विपमें ३४ विजय है जहांपर चक्र-वर्त छे खंडको विजय करते है अर्थात् छे खंडमें एक छत्र-राज करते है.

महाविदेहक्षेत्र एक है परन्तु उन्हीमें ३२ विजय अलग अलग है जिस्में १६ विजय मेरूपर्वतसे पूर्वकी तर्फ है और १६ विजय मेरूपर्वतसे पश्चिमकि तर्फ है जो पूर्व महाविदेहमें १६

विजय है उन्हीके विचमें सीता नाम नदी है वास्ते सीतानदीके उत्तर तटपर ८ विजय और दक्षिण तटपर आठ विजय है इसी माफीक पश्चिम महाविदेहमें सीतोदा नदीके दोनों तटपर आठ आठ विजय है एवं विदेहक्षेत्रमें ३२ विजय है उन्हीका नाम—

पूर्व विदेह सीतानदी.		पश्चिम विदेह सीतोदानदी.	
उत्तर तट.	दक्षिण तट.	उत्तर तट.	दक्षिण तट.
१ कच्छ विजय	वच्छ विजय	पद्म विजय	विप्रा विजय
२ सुकच्छ ,,	सुवच्छ ,,	सुपद्म ,,	सुविप्रा ,,
३ महाकच्छ ,,	महावच्छ ,,	महापद्म ,,	महाविप्रा ,,
४ कच्छवती ,,	वच्छवती ,,	पद्मावती ,,	विप्रावती ,,
५ आव्रता ,,	रमा ,,	संखा ,,	वग्गु ,,
६ मंगला ,,	रमक ,,	कुमुदा ,,	सुवग्गु ,,
७ पुरकला ,,	रमणीक ,,	निलीना ,,	गन्धीला ,,
८ पुष्कलावती ,,	मंगलावती ,,	शलीलावती ,,	गन्धीलावती ,,

प्रत्यक विजय १६५९२ जोजन दो कलाकी दक्षिणोतरमें लम्बी है और २२१२॥ जोजन पूर्व पश्चिममें चोडी है तथा एक भरतक्षेत्र और दुसरा एरवतक्षेत्र एवं चक्रवरतोंकी ३४ विजय समझना। इन्ही चौतीस विजयमें ३४ दीर्घ वैताढ्य

चौतीस तमस गुफा ३४ खंडप्रभागुफा ३४ राजधानी ३४ नगरीयों ३४ कृतमाली देव ३४ नटमाली देव ३४ ऋषभकुट ३४ गंगानदी ३४ सिन्धुनदी यह सर्व पदार्थ सास्वता है शेष नाम देखो जम्बुद्विप प्रज्ञाप्तीसे इति.

(६) द्रहद्वार–जम्बुद्विपके अन्दर शोला द्रह है यथा पद्मद्रह, महापद्मद्रह, तीगीच्छद्रह, केशरीद्रह, महापुडरिकद्रह, पुडरिकद्रह, यह छे द्रह छे वर्षधर पर्वतोंके उपर है और पांच द्रह देवकूरू युगल क्षेत्रके अन्दर है निषेडद्रह, देवकूरूद्रह, सूर्यद्रह, सूलसद्रह, विद्युत्प्रभद्रह तथा पांच द्रह उत्तरकूरू युगल क्षेत्रके अन्दर है निलवन्तद्रह, उत्तरकूरूद्रह, चन्द्रद्रह एरवरत द्रह मालवन्तद्रह एवं सर्व १६ द्रह जम्बुद्विपके अन्दर है।

(१) पद्मद्रह—चुलहेमवन्त पर्वत १०५२–१२ पहूल है जिन्होंका मध्य भागमे पद्मद्रह है वह पूर्व पश्चम एक हजार जोजनको, लम्बो और उत्तर दाक्षिणमें ५०० जोजनको चोडो दश जोजनको उढो परिपूर्ण निर्मल पाणीसे भरा हूवा है वह द्रह अनेक कमलों कर अच्छा शोभनिक है। कमलोंका विवरण।

द्रहके मध्य भागमे श्रीदेवीका वढा कमल है उन्ही के चौतर्फ भंडारी देवोंका १०८ कमल है, च्यार कमल मेहत्तरीक देवीयोंका है, सात कमल श्रीदेवीके अनिकाके अधिपति देवोंका

है, ४००० कमल श्रीदेवीके सामान्यक देवोंका है, १६००० कमल श्रीदेवीके आत्मरक्षक देवोंका है, श्रीदेवीके अभिंतर परिषदाका ८००० मध्यम परिषदाका १०००० बाह्य परिषदाका १२००० एवं ३०००० कमल परिषदा देवोंका है, इतना कमलों के बाहार फीरता तीन कोट है, जिस्मे अन्दरके कोटमे ३२००००० कमल। मध्य कोटमे ४०००००० कमल। बाहारके कोटमें ४८००००० कमल है। सर्व मीलके १२०५०१२० कमल-पुष्प है। कमलका परिमाण श्रीदेवीका कमल एक जोजनका पहूला आदा जोजनका जाडा दश जोजन जलमें उंढा है दो कोष जलसे उंचा है सर्व उंचा दश योजन साधिक है। उन्ही कमलका मूल बज्र रत्नमय है अरिष्टरत्नमय कन्द वैडूर्यरत्नमय बाह्यका पत्र है जम्बुनान्द सूवर्णमय अन्दरका पत्र है तपाये हूवे सूवर्णमय कमलका केशरा है नाना प्रकार मणिमय कमल कि पुष्करणा है सूवर्ण कि कीरणका है वह कीरणका दो कोष की पहूली लम्बी है एक कोषकी जाडी है उन्ही कीरणका के उपरका भाग अति सुन्दर मनोहर है। उन्ही के अन्दर श्रीदेवीका भुवन है वह भुवन एक कोष लंम्बा और आदा कोष का पहूला है और देशोन एक कोषका उंचा है। अनेक स्थभापुतलीयों चन्द्रकन्तादि कर शोभनिक है वह देवोंको भी देखने योग्य है। उन्ही भुवनके तीन दरवाजा दक्षिण दरवाजो पूर्वदिशा० उत्तरादिशा वह दरवाजा ५०० धनुष्यका उंचा है अढाइसो धनुषका पहूला है

तोरण ध्वज आदि चित्रोसें सुन्दर है उन्ही भुवनके मध्यभागमें एक मणिपीट चौतरा है ५०० धनुष लम्बा २५० धनुष चोडा उन्ही चौतरा उपर एक देवशय्या है वह वर्णन करनेयोग है यावत् वहांपर श्रीदेवी अपने देवदेवीके साथ पूर्वउपार्जित शुभ फलोकों भोगवती हूइ आनन्दमें रेहती है। यह पद्मद्रहके बाहार एक पद्मवेदिका और एक वनखंड कर वीटा हूवा है शेषाधिकार नदीद्वारमें लिखेंगे इसी माफीक सीखरीपर्वतपर पुंडरिकद्रह भी समझना परन्तु उन्हीके देवी लच्मिदेवीका भुवन था कमल है इसी माफीक देवकूरु उत्तरकूरु युगल क्षेत्रोमें १० द्रहका भी वर्णन समझना परन्तु उन्ही द्रहोके बाहार वेदिका दो दो है कारण उन्ही द्रहोमें सीता और सीतोदानदी वेदिकाकों भेदके द्रहमें आति है और वेदिकाकों भेदके द्रहसें निकलती है वास्ते वेदिका दो दो है शेष अधिकार पद्मद्रह माफीक समझना। १२।

(१३) महापद्मद्रह—महाहेमवन्तपर्वतके उपर मध्यभागमें २००० जो० लम्बा और १००० जो० चोडा दश जो० उढा महापद्म नामका द्रह है उन्होंपर ह्रँ नामा देवीका कमल तथा भुवन है परन्तु कमलका मान दुगुणा समझना इसी माफीक रूपिपर्वतपर महापुंडरिकनामा द्रह है परन्तु उन्हीपर बुद्धिदेवीका कमल और भुवन ह्रँ देवी माफीक समझना। १४।

(१५) तीगच्छद्रह–निषेडपर्वत उपर मध्यभागमें तीगच्छनामा द्रह ४००० जो० लम्बो २००० जो० चोडो दश जोजनका उढा है कमल भुवन वहांपर घृतिदेवीका है ह्रँ देवीसे द्रुगुण परिमाणवाला समझना इसी माफीक निलवन्तपर्वतपर केशरीद्रह भी समझना परन्तु वह कीर्तीदेवीका कमलभुवन समझना तथा युगलक्षेत्रका दश द्रहके नामवाले देवता मालिक है सब देवदेवीयोंकी एक पल्योपमकि स्थिति है और राजधानी अन्य जम्बुद्विपमें समझना शोला द्रहका सर्व कमल १६२८०१६२० कमल सर्व रत्नमय है इति.

द्रह नाम.	पर्वत उपर.	लम्बा.	चोडा.	उढा.	देवी.
पद्मद्रह	चुलहेम०	१०००	५००	१०	श्रीदेवी
महापद्म ,,	महाहेम०	२०००	१०००	१०	लक्ष्मि
तीगच्छ ,,	निषेड	४०००	२०००	१०	घृति
केशरी ,,	निलवन्त	४०००	२०००	१०	बुद्धि
महापुंडरिक,,	रूपि	२०००	१०००	१०	ह्रँ
पुंडरिक ,,	सीखरी	१०००	५००	१०	कीती
दशद्रह ,,	जमनीपर	१०००	५००	१०	देवता १०

(१०) नदीद्वार–जम्बुद्विपमें १४५६०९० नदी है जिस्में चुलहेमवन्तपर्वत उपर पद्मद्रह है उन्ही द्रहसे तीन नदी नीकली

है जिस्में प्रथम गंगानदी—पद्मद्रहके पूर्वदिशाका तोरणसे पूर्वदिशामें ५०० जोजन चुलहेमवन्तपर्वतके उपर गइ वह गंगावृतनकुट है उन्हीसे टकर खाती हूइ ५२३ जो० ३ कला दक्षिणदिशा पर्वत उपर गइ वहांसे जेसे घटके मुखसे जौरसे पाणी न पडता हो या तुटे हूवे मौतीयोंका हारकी माफीक मगरमच्छके मुंहके आकार जिह्वासे साधिक १०० जो० उपरसे गंगाप्रभासानामा कुंडमें पाणी पडरहा है वह जिह्वा आदा जोजन की लम्बी और सवाछे जोजनकी पहूली है विकसा हूवे मगरमच्छके मुहके संस्थान है सर्व वज्र रत्नमय अच्छी सुन्दर आकारवाली है जिह्वा-नालिकाकों केहते है। चुलहेमवन्तपर्वतपर पद्मद्रहसे गंगानदी गंगाप्रभासकुंडके अन्दर पडति है वाँह गंगाप्रभासकुंड ६० जोजन लम्बो पहूलो १० जो० उंडो है जिस्की रुपामय उपकंठा वज्र पाषाणमय तलो है, मुखसे अन्दर जाणेके वेसा विवद प्रकारके रत्नकरा बन्धा हूवा है सुवर्णका मध्यभाग, रुपाकी वेलुरेत पात्थरी हूइ है गंभीर शीतल जलसे भरा हूवा है अनेक कमलोंके पत्रसे आच्छादित है बहूतसे कमल उत्पल कमल पद्म० नलिनंकुमुद० शतपत्र० सहस्रपत्रादि कमल उन्ही गंगाप्रभासकुंडके तीन दरवाजा है पूर्वदिशा दक्षिणदिशा पश्चिमदिशा तीनों दरवाजाके आगे पगोतीया है उन्होंको उपरका भाग रिष्टरत्नमय वैडूर्यरत्नमय स्थांभा सूवर्ण रुपाका पाटीया लोहीताक्ष रत्नोसें पाटीयोंकि सन्धी जोडी हूइ है

वज्ररत्नोंका खीला है मणिरत्नका आलम्बन (हाथ पकडनेका) पागोतीयेंके उपर प्रत्यक प्रत्यक तोरण है वह तोरण अनेक मणि मौक्ताफलहार आदि अनेक भूषण तथा चित्र कर सुन्दर है उन्ही गंगाप्रभासकुंडके मध्यभागमें एक गंगाद्विपनामका द्विपा है। वह आठ जोजन लम्बा पहूला है दो कोश पाणिसे उंचा है। सर्व बज्र रत्नमय अच्छो सुन्दर है। उन्ही द्विपका मध्यभाग पांच प्रकारके मणिसे मृदु स्पर्शवाला है उन्हीके मध्यभागमें गंगादेवीका एक भुवन है वह एक कोषका लम्बो आदा कोशका पहूला देशोना एक कोशका उंचा है अनेक स्थांभापुतलीयों मौक्ताफलकी मालावों यावत् श्रीदेवीना भुवन माफीक मनोहर है वहां गंगादेवी सपरिवार पूर्व किये हूवे सुकृतके फल भोगवती हूइ विचरे हैं कुंडका या द्विपका और देवीका नाम सास्वता है अगर वह देवी चवतो दुसरी देवी उत्पन्न हूवे परन्तु नाम तो वहां ही गंगादेवी रहेता है।

गंगाप्रभासकुंडका दक्षिणके दरवाजेसें गंगानदी निकली हूइ उत्तर भरतक्षेत्रसे अन्य (छोटी) ७००० नदीयोंको साथ लेती हूइ वैताड्यपर्वतकी खंडप्रभागुफाके निचेसे दक्षिणभरतमें आती हूइ वहांसे ७००० नदीयों अर्थात् सर्व १४००० नदी-योंको साथमें लेके जम्बुद्विपकी जगतिको भेदती हूइ पूर्वका लवणसमुद्रमें जा-मीली है इसी माफीक सिंधुनामा नदी भी

चुलहेमवन्तपर्वतका पद्मद्रहके पश्चिम तर्फसे निकली सिंधुप्रभा-कुंडमें होके पूर्ववत् १४००० नदीयोंका परिवारसे पश्चिमके लवणसमुद्रमें परन्तु वहां तमसप्रभागुफाके निचासे तथा कुंडका नाम सिंधुकुंड तथा सिंधुदेवीका भुवन समझना एवं दोनों नदीयोंका परिवार २८००० नदीयों है। वह पर्वतपर निक-लती आदा जोजनकि उंडी और ६। जोजनकी विस्तारवाली थी पीछे क्रमसर वढते वढते जहां लवणसमुद्रमें मीली है वहांपर पांच गाउकी उढी और ६२।। जो० विस्तारवाली हुइ थी.

चुलहेमवन्तपर्वतके पद्मद्रहके उत्तरके तोरणसे रोहीता नामकी नदी नीकलके रोहीतप्रभासनामा कुंडमें पडती है यह नदी हेमवय युगलक्षेत्रमें गइ है अधिकार गंगानदीके माफीक परन्तु नीकलती एक गाउकी उढी १२।। जोजनका विस्तार-वाली है तथा रोहीतप्रभासकुंडका विस्तार दुगुण १२० जोज-नका समझना जहां लवणसमुद्र पासे १० गाउकी उढी १२५ जोजन विस्तारवाली है इसी माफीक महाहेमवन्तपर्वतपर महा पद्मद्रहसे रोहीतंसानदी हेमवय युगलक्षेत्रमें आइ है परिमाण सर्व रोहीता० माफीक इन्हीं दोनों नदीयोंके २८००० नदी-योंका परिवार समझना। एवं ५६०००

महाहेमवन्तपर्वतका महापद्मद्रहका उत्तरका तोरणसे हरिक्रन्तानदी हरिवास युगलक्षेत्रमें गइ है वह निकलतों २

गाउ उढी २५ जोजन विस्तारवाली हरिक्रन्तकुंड २४० जोजनकों परिवार ५६००० शेष अधिकार गंगानदी माफीक समझना और निषेडपर्वतपर तीगच्छद्रहसे हरिसलीलानदी हरिवास युगलक्षेत्रमें आइ है परिमाणादि सर्व हरिकन्तवत् परन्तु कुंडका नाम हरिसलीला है.

निषेडपर्वतपर तीगच्छद्रहके उत्तरके तोरणसे सीतानामकी नदी एक जोजनकी उढी ५० विस्तारवाली सीताकुंड ४८० जोजनका है उन्हींके अन्दर आती हूइ देवकूरू युगल क्षेत्रका दो विभाग करती हूइ पांच द्रहको भेदती हूइ देवकूरुसे ८४००० नदीयों साथ लेती हूइ मेरुपर्वतके पास होके भद्रशालवनका दो विभाग करती हूइ पश्चिम महाविदहका मध्यभागमें चलती हूइ चक्रवरतकी १६ विजयके प्रत्यक विजयकि गंगा और सिंधुनदीयों सपरिवार अर्थात् चौदा चौदा हजार नदीयोंका परिवारसे गंगासिंधु नदीयों सीतानदीमें मीलती हूइ सर्व ५३२००० नदीयोंका परिवारसे पश्चिममें मुहकर लवणसमुद्र में जा-मीली है ।

एवं निलवन्तपर्वतपर केशरीद्रहसें सीतोदानदी उत्तरकूरु युगलक्षेत्रके पूर्ववत् ८४००० नदीयोंसे पूर्व महाविदहमें पूर्ववत् कुल ५३२००० नदीयोंके साथमें पूर्व मुहकर लवणसमुद्रमें ज़ा-मीली है सीतावत् जेसे दक्षिणकी तर्फसे केहते आये है इसी माफीक उत्तरकी तर्फ भी समझना ।

निलवन्तपर्वतके केशरीद्रहके उत्तरके तोरणसे नरकन्ता और रुपीपर्वतके महापुंडरिकद्रहके दक्षिणका तोरणसें नारी-कन्ता यह दोनों नदीयों रम्यक्वास युगलक्षेत्रमें कुंड और देवीका नाम नदी माफीक विस्तार परिवार देखो यंत्रसें.

रुपीपर्वतपर महापुंडरिकद्रहके उत्तरके तोरणसे रुपकुल नदी और सिखरीपर्वतपर पुंडरिकद्रहका दक्षिणका तोरणसे सुवर्णकुलानदी यह दोनों नदी एरणवय युगलक्षेत्रमें गइ है परिवारादि देखो यंत्रसे.

सिखरीपर्वतपर पुंडरिकद्रहके पूर्व और पश्चिम तोरणसे रता रक्तवंति यह दो नदीयों एरवरतक्षेत्रमें गंगा सिन्धुवत् चौदा चौदा हजार नदीयोंके परिवारसे लवणसमुद्रमें प्रवेश कीया है नदीके माफीक कुंडका या देवीयोंका नाम समझना कुंड वा भुवनका अधिकार गंगादेवी माफीक है.

कोष्टक संकेत सूचिनाः—

नि० उ०—निकलतो उढी. प्र० उ०—समुद्रमें प्रवेश होतो उढी.

नि० वि०—निकलतो विस्तार. प्र० उ०—समुद्रमें प्रवेश होतो विस्तार.

नं.	नदी.	पर्वतसे.	द्रहसे.	नि० उ०	नि०वि०	प्र० उ०	प्र. वि.	परिवार.
१	गंगनदी	चुलहेम	पद्म	०॥ गाउ	६। जो०	१।जो०	६२॥	१४०००
२	सिन्धु ,,	,,	,,	,,	,,	,,	जोजन	१४०००
३	रोहिता ,,	,,	,,	१ गाउ	१२॥ जो	२॥जो.	१२५	२८०००
४	रोहितंसा ,,	महाहेम०	महापद्म	,,	,,	,,	जोजन	२८०००
५	हरिकन्ता ,,	,,	,,	२ याउ	२५ जो.	५ जो०	२५०	५६०००
६	हरिशलीला	निषेड	तीगच्छ	,,	,,	,,	जोजन	५६०००
७	सीता ,,	,,	,,	४ गाउ	५ जो.	१०जो.	५००	५३२०००
८	सीतोदा ,,	निलवन्त	केशरी	,,	,,	,,	जोजन	५३२०००
९	नरकन्ता ,,	,,	,,	२ गाउ	२५ जो.	५ जो०	२५०	५६०००
१०	नारिकन्ता	रुपि०	महापुंड०	,,	,,	,,	जोजन	५६०००
११	रुपकुला	,,	,,	१ गाउ	१२॥ जो	२॥जो.	१२५	२८०००
१२	सूवर्णकुला	सिखरी	पुंडरिक	,,	,,	,,	जोजन	२८०००
१३	रक्ता ,,	,,	,,	०॥ गाउ	६। जो	१।जो०	६२॥	१४०००
१४	रक्तवन्ती	,,	,,	,,	,,	,,	जोजन	१४०००
७८	विदेहकी ६४ ,,	कुंडोंसे	धरतिपर	,,	,,	,,	,,	१४०००

एवं सर्व मीली १४५६००० नदीयों परिवारकी हूइ तथा यंत्रमें १४-६४ मीलके ७८ मूल नदीयों हूइ.

महाविदेहक्षेत्रके च्यार विभागमें ३२ चक्रवरतकि विजय है जिस्का २८ अन्तरोंमें १६ तो वस्कारपर्वत पेहले लिख आये है और १२ अन्तरमें बारह अन्तर नदी है यथा-गृहवन्ति, द्रहवन्ति, पंकवन्ति, तंतजला, मंतजला, उगमजला, क्षीरोदा, सिंहसोता, अन्तोवहनि, उपिमालनि, फेनमालनि, गंभीरमालनि एह १२ नदीयों प्रत्यक नदी १२५ जोजनकी चोडी है अढाइ जो० उंढी है १६५९२ जोजन और दो कलाकि लम्बी है एवं सर्व मीलके १४५६०९० नदीयों जम्बुद्विपमें है यह थोकडा सामान्य बुद्धिवाला सुखपूर्वक समझ शके वास्ते संक्षेपसें ही लिखा गया है विशेष विस्तारकि इच्छावालोंके लिये गुरुमहाराजकी विनयभक्ति कर जम्बुद्विप प्रज्ञाप्तीसूत्र श्रवण करना चाहिये इत्यलम् ।

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

शीघ्रबोध या थोकडा प्रबंध

भाग १४ वा.

थोकडा नं. १

सूत्र श्री जीवाभिगमसे

(लवणसमुद्राधिकार)

लवणसमुद्र—जम्बुद्विप एक लच्च जोजनका है उन्हीके चौतर्फ वलीयाकार दो लच्च जोजन विस्तारवाला लवणसमुद्र है जिनहोके अन्दर कि परद्धि जम्बुद्विपके परद्धि माफीक है ओर बाहार कि परद्धि १५८११३६ जोजन साधिक है लवणसमुद्रका पाणीका उढास जम्बुद्विप कि जगति (कोट) से ९५ जोजन लवणसमुद्रमें जावे तव एक जोजन उढा है पचाणवेसो ९५०० जोजन जगतिसे लवणसमुद्रमे जावे तब १०० जों० उढा तथा ९५००० जोजन जावे तब १००० जो० उढो आवे इसीमाफीक धातकि खंण्डसे भि ९५००० जो० लवणसमुद्रमे आवे तो १००० जो० उढो आवे दोनों तर्फ से ९५०००-९५००० जो० आनासे मध्यमे १०००० जोजन लवणसमुद्र

१००० जोजन उढा है अर्थात् जम्बुद्विप कि जगतिसे चौतर्फ पचणवे पचाणवे हजार जोजन जानेपर चौतर्फ दश दश हजार जोजन लवणसमुद्र एक हजार जोजनका उढ़ा है वहासे पचणवे पचणावे हजार जोजन जानेपर घातकि खंड द्विप आता है। लवणसमुद्रके च्यारों दिशामे च्यार दरवाजा है वह जम्बुद्विप माफीक समझना।

लवणसमुद्रके मध्यभाग जो १०००० जोजनका गोल चक्राकार १००० जोजनके उढस पाणी है उन्ही लवण-समुद्रके मध्यभागमे च्यार पाताल कलशा है (१) पूर्वदिशामे वडवा मुख पातालकलशो (२) दक्षिणदिशामे केतुनामा पाता-कलशो (३) पश्चिमदिशामे जेपु (४) उत्तरादिशामें इश्वर पाताल कलशो। यह च्यारो कलसा लक्ष लक्ष जोजन परिमाण लम्बा है मध्यभागमे लक्ष जोजन विस्तारवाला है कलशोका अधोभाग तथा उपरका मुख दश दश हजार जोजनका है उपर कि ठीकरी एक हजार जोजन कि जाडी है कलशोंका मुखपर हजार हजार जोजन लवण समुद्रका पाणी है। एकेक कलशाके विचमे अन्तर २१९२६५ जोजनका है उन्ही प्रत्यक अन्तरामे १९२१ छोटे कलशा है च्यारो अन्तरोंमे ७८८४ छोटे कलशा है कारण एकेक अन्तरामे कलशोंकी नव नव श्रेणि है उन्ही श्रेणिमे कलशा २१५-२१६-२१७-२१८-२१९-२२०-२२१-२२२-२२३ एवं नव श्रेणिका १९७१ कलसा है च्यारो

अन्तराके ७८८४ कलशा होता है वह सर्व छोटा कलशा एक हजार जोजनका लम्बा और मध्यभागमे १००० विस्तार तथा ओधो भाग या मुख सो सो जोजनका और दश जोजनकी उपर ठीकरी है एवं सर्व ७८८८ कलशा है। उन्ही कलशोके तीन तीन भाग करना जिस्मे निचेके ती भागमे वायु है मध्यके ती भागमे वायु ओर पाणी है उपरके ती भागमे पाणी है। जो निचेका भागमे वायु है वह वैक्रय शरीर करे उन्ही समय उपरका पाणी उच्छलने लग जात है वह प्रत्य-दिनमें दो बखत पाणी उच्छा ला देता है.

तब लवणसमुद्रकि वेल (दगमाला) का पाणी उच्छलता है परन्तु तीर्थंकर चक्रवरतादि पुन्यवानोंका प्रभावसे एक बुंद भी निचि नहीं गिरती है अथवा यह लोकस्थिति है सास्वता भाव वर्तते है और च्यार पातालकलशोंका अधिपति च्यार देवता है कालदेव, महाकालदेव वेलवदेव, प्रभंजनदेव एक पल्योपमकि स्थिति तथा ७८८४ कलशोंका देवतोंकी आधा पल्योपमकि स्थिति है। इति पातालकलशा।

लवणसमुद्रमें पाणिका दगमाला १०००० जो० चोडा विस्तारवाला १००० जो० उंढा है १६००० जो० का उंचा है सर्व १७००० जो० का है। जब पाणि उच्छलता है तब दो कोश उंची सीखा आ-जाती है।

लवणसमुद्रके मध्यभाग अर्थात् दोनों तर्फ ६५००० ।

६५००० जोजन छोडदेनेपर मध्यभागमें १०००० जोजन लवणसमुद्रका पाणी उर्ध्व भीतकि मार्फीक १६००० जोजन उंचा चला गया है और १००० जो० निचा उढा है उन्ही पाणीका जम्बुद्विपकि तर्फसे हाथमें चाटु लिये हूवे ४२००० देवता और दगमालके उपर ६०००० देवता तथा घातकि खण्डाकि तर्फसे ७२००० देवता पाणीकों धवा रहा है। एवं १७४००० देवता पाणीकों धवा रहा है। इन्ही देवतोंकों वेलन्धर देव भी कहा जाता है कारण यह देव पाणीकी वेलकों धरनेवाला है तथा इन्ही दगमालाकों गोतीत्थ भी कहेते है।

उक्त वेलन्धर देवतोंका आवासपर्वत-जम्बुद्विपकी जगतिसे ४२००० जोजन च्यारो दिश लवणसमुद्रमें जावें तब पूर्वदिशमें गोथुभ-दक्षिणमें दगाभास-पश्चिममें संख-उत्तरमें दगसीमा एवं च्यार पर्वत च्यारों दिशोमें है इशानकोनमे कर्केटिक-अग्निकोनमे विद्युत्प्रभा-नैऋतकोनमे कैलाश-वायुकोनमे अरूणप्रभ एवं च्यार पर्वत च्यारों कोनोंमे है एवं ८ पर्वत उचा १७२१ जोजन मूल पहूला १०२२ जोजन मध्यमे ७२३ जो. और सीखरपर ४२४ जोजन विस्तारवाला है एकेक पर्वत के अन्तरो ७२११४$\frac{८}{१३}$ है रत्न और कनकमय सर्व पर्वत है च्यार दिशाका च्यारों पर्वत वेलन्धर देवोंका है गोथभदेव, शिवदेव, संखदेव, मणोशीलदेव, इन्होंकी एक पल्योपमकि स्थिति है और विदिशाके पर्वतके नामका देव पल्योपम कि

स्थितिवाले अनुवेलन्धर देवोंका पर्वत है इन्ही आठों पर्वतोंपर वेलन्धरानुवेलन्धर नागराजा देवोंका आवास प्रासाद है सर्व रत्नमय देवतोंके योग्य वह प्रासाद ६२।। जो. उचा ३१। जो. का चोडा अनेक स्थभ कर अच्छा सुन्दर है । इति ।

लववसमुद्रमे छपनान्तरद्विप है उन्हों के अन्दर पल्योपम के असंख्यात भागके आयुष्यवाला ओर ८०० धनुष्यकि आवग्गहानावाले युगल मनुष्य रहेते है जम्बुद्विपके चुलहेमवन्त ओर सीखरी पर्वत के निश्राय (सामिपसे) लवणसमुद्रमें दोडोके आकार टापुवों कि लेन गइ है जेसे जम्बुद्विप कि जगतिसे ३०० जोजन लवणसमुद्रमें जावे तब पेहला द्विपा ३०० जोजनका विस्तारवाला आता है उन्ही द्विपासे ४०० जोजन तथा जगतिसे भि ४०० जो० जानेपरे दुसरा द्विपा ४०० जोजनके विस्तारवाला आता है । उन्ही द्विपासे ५०० जोजन तथा जगतिसे भी ५०० जोजन जानेपर तीसरा द्विपा ५०० जो० के विस्तारवाला आता है उन्ही द्विपासे या जगतिसे ६०० जोजन जानेपर चोथो ६०० जो० विस्तारवाला द्विप आता है। उन्ही द्विपसे या जगतिसे ७०० जो० जानेपर ७०० जो० विस्तारवाला पाचवा द्विप आता है उन्ही द्विपसे या जगतिसे ८०० जो० जानेपर ८०० जो० विस्तारवाला छठा द्विप आते है उन्ही द्विपसे या जगतिसे ९०० जो० जानेपर ९०० जो० विस्तारवाला सातवा द्विप आता है सर्व लवणस-

मुद्रके ८४०० जोजन क्षेत्रमे युगल मनुष्योंका द्विपा है यह एक लेन (दाड) पर ७ द्विप है इसी माफीक पूर्व लवणसमुद्रकी ४ दाडो ओर पश्चिम लवणसमुद्रकी ४ दाडो एवं आठ दाडो पर ५६ द्विपा है उन्हो मे रहेनेवाला युगल मनुष्योंका मनोवंच्छीत सुख दश प्रकारका कल्पवृक्ष पूर्ण करते है इति ।

लवणसमुद्रके अधिष्टायक लवणस्वस्थिक देव का गोतम द्विप नामका द्विपा–जम्बुद्विपकि जगतिसे पश्चिमदिशा १२००० जोजन लवणसमुद्रमे जावे तब १२००० जोजनके विस्तारवालों गोतमद्विपा आता है वेदिका वनखंड कर शोभनिक है उन्ही गोतमद्विपापर स्वस्थिकदेवका प्रासाद है वर्णन करने योग्य है वहापर देव निवास करते है इति ।

सूर्यका द्विपा—जम्बुद्विपका दो सुर्य ओर अन्दरका लवणसमुद्रका दो सूर्य एवं च्यार सूर्यका च्यार द्विपा गोतम द्विपा के च्यारो तर्फ है अर्थात् सूर्यके च्यारो द्विपोंसे वीटा हूवा मध्य भागमे गोतमद्विपा है ।

चंद्राद्विप–जम्बुद्विपकि जगतिसे पूर्वकि तर्फ लवणसमुद्रमे १२००० जोजन जानेपर दो जम्बुद्विपका चन्द्र दो अन्दरके लवणसमुद्रका चन्द्र एवं च्यारों चन्द्रका च्यारों द्विप है सूर्य ओर चन्द्रका द्विपा १२००० बाराह २ हजार जोजन विस्तारवाला है उन्ही द्विपोपर अपना अपना प्रासाद है वहाँपर देवता आते जाते निवास करते है ।

धात कि खंड कि तर्फससे लवणसमुद्रमे १२००० जोजन आनेपर लवणसमुद्रके वेलके बाहारका पूर्वमे दो चन्द्र द्विपा और पश्चिममे दो सूर्य द्विपा बारह बारह हजार जोजनके विस्तारवाला है इन्ही १२ द्विपों उपर देवतोंका भुवन-प्रासाद है वह प्रत्यक प्रासाद ६२॥ जोजनका उचा ३१। जोजानके विस्तारवाला अनेक स्थाभादिसे अच्छा शोभनिक है लवण-समुद्रके चौतर्फ पदम्बर वेदिका है विजयादि च्यार दरवाजा है दरवाजे दरवाजे ३९५२८०।¼ का अन्तर है लवणसमुद्रमे ५०० जो० का मच्छ भी है।

इति लवणसमुद्राधिकार।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नम्बर २.

सूत्र श्री जीवाभिगम प्र. ४.

(धातकिखंड द्विपादि)

लवणसमुद्रके चौतर्फ बलीयाके आकार च्यार लक्ष जोजन विस्तारवाला धातकिखंड नामका द्विप है वह च्यार लक्ष

जोजनका पहूला है ४११०६६१ जोजन साधिक परद्धि है उन्ही घातकिखंड द्विपमे उत्तर दक्षिण लम्बा च्यार लक्ष जोजन। पूर्व पश्चिम एक हजार जोजनका पहूला मूलमें एक हजार जोजन चोडा यावत् सीखरपर पांचसो जोजन परिमाणवाले दो इक्षुकार पर्वत आजानेसे घातकिखंडके दो विभाग हो गये है (१) पूर्व घातकिखंड (२) पश्चिम घातकिखंड इन्ही दोनों विभागके अन्दर दो मेरुपर्वत हैं वह मेरुपर्वत एक हजार जोजन धरतीमें उढा और ८४००० जोजन धरतीसे उंचा एवं ८५००० जोजनका प्रत्यक मेरु है। वह मेरुपर्वत च्यार वन करके अलंकृत है दुसरे पर्वत या वासा आदि सर्व जम्बुद्विपसे दुगुणा समझना परन्तु क्षेत्रका लम्बा चोडा अधिक है और घातकिखंड द्विपमें १२ चन्द्र और १२ सूर्य सपरिवार है शेषाधिकार अढाइ द्विपका यंत्रमें लिखा जावेगा इति।

घातकिखंड द्विपके चौतर्फ गोल वलीयाकार ८०००० जोजनके विस्तारवाला कालोदद्धि नामका समुद्र है वह चौतर्फ आठ लक्ष जोजनका पहूला है ६१७०६०५ जोजन साधिक परद्धि है एक पद्मांम्बर वेदिका एक वनखंड च्यार दरवाजा और दरवाजे दरवाजे अन्तर २२६२६४६ जो० है वह समुद्र हजार जोजनका उढा है अच्छा जलसे परिपूर्ण भरा हूवा।

कालोदद्धि समुद्रके चौतर्फ गोल वलीयाकार पुष्कर नामका द्विप है वह १६००००० जोजनका चौतर्फ विस्तार-

वाला है १६२६३८६४ जोजन साधिक पराद्धि है एक वेदिका एक वनखंड च्यार दरवाजा है वर्णन पूर्ववत् इन्ही पुष्कर द्विपके मध्यभागमें मानुषोत्र नामका पर्वत बेठा हूवा सिंहके आकारके है वह १७२१ जोजनका धरतीसे उंचा ४३१ धरतीमें १०२२ मूल पहूला ४२४ मध्य पहूला ७२३ उपरसे पहूला सर्व तपाये हूवा सूवर्णमें है वह पर्वत पुष्करद्विपका दो विभाग करादिया है (१) अभिंतर पुष्कर्द्ध (२) बाह्य पुष्कर्द्ध जिसमें अभिंतरका पुष्कर्द्ध द्विपमें मनुष्य निवास करते है अर्थात् मानुषोत्रपर्वतके अन्दर जो पुष्कर्द्धक्षेत्र है उन्हीके अन्दर मनुष्य निवास करते है । बाहार केवलतीर्यंच है ।

पुष्कर्द्धक्षेत्रके मध्यभाग दक्षिणोत्तर दिशा आठ आठ लक्ष जोजनका दो इक्षुकारपर्वत आठ आठ लक्ष जो० लम्बा एक हजार जोजनका. उंचा २५० जो० धरतीमें मूल हजार जो० का विस्तार सीखरपर पांचसो जोजनका विस्तारवाला दोनों पर्वत पुष्कार्द्ध द्विपका दो विभाग करादिया है [१] पूर्व पुष्कार्द्ध [२] पश्चिम पुष्कार्द्ध । दोनों विभागमें दो मेरु यावत् धातकिखंड द्विपके माफीक सर्व पदार्थ समझना परन्तु क्षेत्रका परिमाणादि विस्तार क्षेत्र माफीक अधिक है ।

जम्बुद्विप एक धातकिखंड द्विप एक पुष्कार्द्ध आदा द्विप एवं अढाइद्विप और लवणसमुद्र एक कालोदद्धि एक यह दो

समुद्र अर्थात् अढाइद्विप दोय समुद्रको समय चेत्र भी कहाजाते है कारन सिद्ध होता है सो इन्ही समय चेत्रसे ही होता है इन्ही अढाइद्विपके चेत्रका परिमाण:—

१ जम्बुद्विप पूर्व पश्चिम मीलके १ लच्च जो०
२ लवणसमुद्र ,, ,, ,, ४ लच्च जो०
३ घातकिखंड ,, ,, ,, ८ लच्च जो०
४ कालोदद्धिसमु०,, ,, ,, १६ लच्च जो०
५ पुष्कर्द्धद्विप ,, ,, ,, १६ लच्च जो०

एवं मनुष्यलोक-समयचेत्र-अढाइद्विप ४५ लच्च जोजनका है जिन्होकि परद्धि १४२३०२४९ जोजन साधिक है अढाइद्विपमें जो मौख्य पदार्थ है सो यंत्रद्वार बतलादिया जाता है।

पदार्थ.	(१) जम्बुद्विपमे.	(१) घातकिखंड.	०॥ पुष्कर्द्ध.
मेरूपर्वत	१	२	२
वर्षघरपर्वत	६	१२	१२
वस्कारपर्वत	१६	३२	३२
गजदन्ता	४	८	८
विजया	३२	६४	६४
मोटीनदी	९०	१८०	१८०

परिवारनदी	१४५६०००	२६१२०००	२६१२०००
द्रह	१६	३२	३२
वैताडपर्वत	३४	६८	६८
वटवैताड	४	८	८
वासा-क्षेत्र	७-१०	१४-२०	१४-२०
चन्द्रसपरिवार	२	१२	७२
सूर्यसपरिवार	२	१२	७२
तीर्थ	१०२	२०४	२०४
श्रेणी	६८	१३६	१३६
गुफा	६८	१३६	१३६
कुलपर्वत	२६६	५४०	५४०
कुलकुंट	५२५	१०५०	१०५०
कुलसिद्धायतन	६१	१८२	१८२

मानोषोत्र पर्वतके बाहार जो आठलक्ष परिमाण पुष्कर्द्ध क्षेत्र हे वह मनुष्य सुन्य है अन्दरका पुष्कर्द्ध क्षेत्र कि नदीयोंका पाणी मानोषोत्र पर्वतकों भेदके बाहारका पुष्कर्द्धमे जाता है।

आगेके द्विपसमुद्रका नाम मात्र लिखा जाते है सर्व द्विपसमुद्रोंके च्यार च्यार दरवाजा है जम्बुद्विपके जगति है

शेष द्विपसमुद्रोंके वेदिका और वनखंड है परिमाण तथा चन्द्र सूर्य यंत्रमे लिखते है जीतना चन्द्र है इतना ही सूर्य है एकेक चन्द्र सूर्यका परिवारमे २८ नक्षत्र ८८ ग्रह ६६६७५ कोडा कोड तारोंका परिवार समझ लेना।

अढाइद्विपके बाहार जोतीषीयों की चाल नही है मनुष्यका जन्म मृत्यु नही गाज विज वर्षाद बादर अग्नि भी नही है।

नाम	विस्तारपणो	चन्द्रसूर्य
जम्बुद्विप	१ लक्ष जोजन	२
लवणसमुद्र	२ ,, ,,	४
धातकिखंड	४ ,, ,,	१२
कालोदद्धिसमुद्र	८ ,, ,,	४२
पुष्करद्विप	१६ ,, ,,	१४४
पुष्करसमुद्र	३२ ,, ,,	४६२
वारुणि द्विप	६४ ,, ,,	१६८०
,, समुद्र	१२८ ,, ,,	५७३६
क्षीर द्विप	२५६ ,, ,,	१६५८४
,, समुद्र	५१२ ,, ,,	६६८६४

घृत द्विप	१०२४ ,, ,,		२८८२८८
,, समुद्र	२०४८ ,, ,,		७७६४२४
इक्षु द्विप	४०९६ ,, ,,		२६६११२०
,, समुद्र	८१९२ ,, ,,		६०८५६३२

इति सात द्विप सात समुद्र ।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नम्बर ३

(सूत्र श्री जीवाभिगम प्र० ३)

(नन्दीश्वर द्विप)

इक्षुसमुद्रके चौतर्फ गोल बलीयाके आकारे नन्दीश्वर द्विप है वह १६३८४०००००० जोजनके विस्तारवाला है साधिक तीनगुण पराद्धि है । नन्दीश्वर द्विपका भूमिविभाग अच्छा सुन्दर देवोंका मनकों हरनेवाला है द्विपके मध्यभागमें च्यार पर्वत श्यामवर्णका अञ्जनगिरि पर्वत है पूर्वदिशामें पूर्वाञ्जगिरि । दक्षिणदिशामें दक्षिणाञ्जनगिरि । पश्चिमदिशामें पश्चिमाञ्जन-

गिरि और उत्तरदिशामें उत्तराञ्जनगिरि है प्रत्यक अञ्जनगिरि १००० जो० धरतिमें ८४००० जो० धरतिसे उंचा है मूलमें साधिक दश हजार जो० धरतिपर दश हजार जोजन और सीखरपर एक हजार जोजनके विस्तारवाला है। साधिक तीनगुणी परद्धि है सर्व अरिष्ट (श्याम) रत्नमय है।

प्रत्यक अञ्जनगिरिके सीखरका तला शममादलका तला माफीक साफ है। सीखरके तलाका मध्यभागमें एक सिद्धायतन अर्थात् जिनमन्दिर है वह १०० जो० लम्बो ५० जो० चोडो ७२ जो० उंचा अच्छा सुन्दर रमणिय है उन्ही जिनमन्दिरके च्यारो दिशामें च्यार दरवाजा है वह १६ जो० उंचा ८ जो० पहूला च्यारो दिशाके दरवाजोके आगे च्यार मुखमंडप है वह १०० जो० लम्बा ५० जो० चोडा १६ जोजन साधिक उंचा है। च्यार दरवाजा १६ जो० उंचा ८ जो० चोडा. उन्ही मुखमंडपके आगे प्रेक्षापधरमंडप है वह १०० जो० लम्बा ५० जो० चोडा साधिक १६ जोजन उंचा है उन्हीके अन्दर ८ जोजन विस्तारवाली मणिपिठ चौतरो है (ठाणायंगवृत्ति) सिंहसन देवदुषवस्त्र तथा वज्रका अंकुश उन्हीके अन्दर घटमान अर्द्धघटमान मौक्ताफलकी मालावों फुन्दाकर शोभनिक है। उन्ही प्रेक्षपधर मंडपके आगे एक स्थुभ (छत्री) वह १६ जोजन साधिक विस्तारवाली है उन्हीके च्यारो दिशामें च्यार मणिपिठ चौतरा है उन्होंके उपर च्यार

जिन प्रतिमापद्मासन शान्तमुद्रा स्थुभ सन्मुख मुख किया हूवे विराजमान है। उन्हि स्थुभसे आगे एक मणिपिठ चौतरो है वह आठ जोजनके विस्तारवाला उन्होंके उपर चैत्य वृक्ष आठ जोजनकों उचो है वर्णन करने योग्य है उन्होंके आगे ओर भी आठ जोजनका मणिपिठ चौतारा है उन्होके उपर महेन्द्र ध्वज ६४ जोजनकी उची ओर भी छोटी छोटी विजय विजयन्ति ध्वज है उन्होंसे आगे नन्दा पुष्करणी वावी १०० जो० लम्बी ५० जो० चोडी १० जो० उडी अनेक कमल पागोतीया तौरण चमर छत्र ध्वज कर शोभानिक है। उन्ही वावी के च्यारो दिशा च्यार वनखंड है यह मूल सिद्धायतनके एक दिशा के पदार्थ कहा है एसे ही च्यारो दिशीमे समझना तथा पूर्व दिशाके वनखंडमे १६००० गोल आसन १६००० चौखुणा आसन पडा हूवा है एवं पश्चिममे और दक्षिणोत्तर दिशामे आठ आठ हजार है वह देवतोंके आने जाने नखत वह बेठनेकों काम आते है।

मूल जिनमन्दिरके मध्य भागमे एक मणिपिठ चातरो १६ जोजन लम्बो पहूलो है उन्ही के उपर एक देवच्छंदो १६ जोजन लम्बो पहूलो साधिक शोला जोजन उचो है अच्छो सुन्दर सर्व रत्नमय है उन्ही मूल गुभारामे १०८ जिनप्रतिमा पद्मासन शान्तमुद्रा विराजमान है। एवं प्रत्यक जिनमन्दिरे

१२४ जिनप्रतिमावों है जेसे यह एक अञ्जन गिरिपर एक मन्दिर कहा है इसी माफीक च्यारो अञ्जनगिरिपर च्यार मन्दिर समझना सर्व पदार्थ रत्नमय वढा ही मनोहर है ।

प्रत्यक अंजनगिरिपर्वत के च्यारों दिशामे च्यार च्यार वावी है वह वावी एक लच्च जोजन लम्बी पचास हजार जो० चोडी ओर हजार जोजन कि उडी है पागोतीया तोरणादिसे सुशोभनिक है उन्ही वावी के अन्दर एकेक दाद्धिमुख पर्वत है वह पर्वत १००० जो० उडा है ६४००० उचा है दश हजार जोजन मूलसे ले के सीखरतक पहूला विस्तारवाला है पलक संस्थान है । एवं च्यार अञ्जनगिरिके चौतर्फ १६ वावीयों है उन्ही के अन्दर १६ दधिमुखापर्वत और १६ पर्वतोंके उपर १६ जिनमंदिर है उन्होका वर्णन अञ्जनगिरि पर्वतोंके उपरका मन्दिर माफीक समझना.

स्थानायांग वृतिमें प्रत्यक वावी के अन्तरे में दोदो कनकगिरि है एवं १६ वावीयों के अन्तरामे ३२ कनकगिरि अर्थात् सुवर्णमय १००० जोजनका उचा पलंक संस्थान पर्वत है प्रत्य कनकगिरि के उपर एकेक जिनमन्दिर अञ्जनगिरि माफिक है एवं च्यार अञ्जनगिरि १६ दाद्धिमुखा ३२ कनकगिरि मीलके ५२ पर्वतोंके उपर बावन जिनमन्दिर है ।

च्यार अञ्जनगिरि के अन्तरामे च्यार रतिगीरापर्वत है वह अढाइसो जोजन धरतिमे १००० जों० उचा सर्व स्थान हजार जोजन पहूला पलीक संस्थान है प्रत्यक रतीगीरापर्वत के च्यारों दिशामें च्यार च्यार राजधानीयों एवं १६ राजधानी है वह प्रत्यक राजधानी १००००० जों० के विस्तारवाली है ३१६२२७।३।१२८।१३॥–१–१–१–६ झाझेरी परद्धि है यावत् राजधानीका वर्णन माफीक समझना जिस्मे इशान और नैऋत्यकोन रतीगीराके ८ राजधानीयों तो शक्रेन्द्र के अग्रमेहषियोंकि है ओर अग्नि ओर वायुकोन रतीगीराके ८ राजधानीयों इशानेन्द्र के अग्रमेहषियोंकी है नन्दीश्वर द्विप आती है तब वह पर ठेरती है अब नंदीश्वर द्विपका सर्व पदार्थ कहते है ।

४ अञ्जनगिरिपर्वत अञ्जनरत्नमय.

१६ दधिमुखापर्वत अंकरत्नमय.

३२ कनकागिरिपर्वत कनकमय.

५२ जिनमन्दिर सर्व रत्नोंमय.

६६५६ बावन मन्दिरोंमें जिनप्रतिमावें.

२०८ मुखमंडप ५२ मन्दिरके दरवाजेपर.

२०८ प्रेक्षप घरमंडप ,, ,,

२०८ स्थुभ.

८१६ जिनप्रतिमावों स्थुभके चौतर्फ.

२०८ चैत्यवृक्ष.

२०८ महेन्द्रध्वज.

२०८ पुष्करणि वावीयों.

१६ वावीयों अञ्जनगिरीके चौतर्फ.

४ रतीगीरापर्वत.

१६ राजधानीयों.

नन्दीश्वरद्विपके अन्दर बहूतसे भुवनपति वाणमित्रा जोतीषी और वैमानिकदेव पाखी, चौमासी, समत्सेरी या जिनकल्याणक दिनें वहांपर एकत्र होते है जिनमहिमा भगवन् की मूर्तियोंकी भावभक्ति अर्चनपूजन करते है तथा जंघाचारण विद्या चारणमुनिभी वहांकि यात्रा करनेको पधारते है सूत्रोंमें बहूतसे विस्तारसे नन्दीश्वरद्विपका व्याख्यान किया है परन्तु भव्यात्मावोंके कंठस्थ करनेके लिये संक्षेपसे मुदासर वातों थोकडारूपमें लिखदि है वास्ते इन्हीकों पेस्तर कंठस्थ कर फीर बहू श्रुतियोंके पास शास्त्रश्रवण करो तोंके वडा ही आनन्द आवेगा इति.

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नम्बर. ३

सूत्रश्री जीवाभिगमजी प्र ९

(निगोद)

शास्त्रकारों ने निगोद दो प्रकारकि वतलाई है।

१ सूक्ष्मनिगोद—सूक्ष्मनिगोदके गोला असंख्याते है वह स्मपूरणलोक व्याप्त है.

२ बादर निगोद—जो लोकके दशभागमे है। जेसे कन्दमूल जमिकन्द कान्दा मूला लशण रतालू पंडालू आदो अडवी आलू आदि जिन्होंके सूचि अग्र भागमे अनन्त जीव होता है।

सूक्ष्मनिगोदके दो भेद है (१) निगोद जीवोंके शरीर (२) निगोदके जीव। जिस्मे निगोद जीवोंका शरीर असंख्याते है क्युकि निगोद जीवोंके तेजस और कार्माण शरीर तो प्रत्यक जीवोंके प्रत्यक शरीर है परन्तु औदारीक शरीर है वह अनन्त जीवोंका एक शरीर होते है वह औदारीक शरीर भि असंख्याते है अर्थात् निगोदके औदारीक शरीर असंख्याते हैं और

प्रत्येक शरीरमें अनन्ते अनन्ते जीव है। वह असंख्याते शरीर है वह द्रव्यापेक्षा है परन्तु प्रदेशापेक्षा तो प्रत्यक शरीर के अनन्ता अनन्ता प्रदेश हैं क्युकि अनन्ता परमाणु वा एकत्र होनासे एक औदारीक शरीर बनता है। द्रव्यापेक्षा जो औदारीक शरीर है उन्हीका भि दो दो भेद है (१) पर्याप्ता (२) अपर्याप्ता एवं प्रदेशापेक्षा भि.

सूक्षमनिगोदका जीव है वह द्रव्यापेक्षा अनन्ता है और प्रत्यक जीव के असंख्याते असंख्याते आत्म प्रदेश है उन्हीका भी दो दो भेद है (१) पर्याप्ता (२) अपर्याप्ता एवं प्रदेशप्पेक्षा भि समझना.

बादर निगोद—जेसे सूक्ष्म निगोदका शरीर-जीव, द्रव्य, प्रदेश, पर्याप्ता अपर्याप्त के भेद उपर किया गया है इसी माफिक बादर निगोदका भि समझना.

भव्यात्मावोंको विशषः बोध के लिये शास्त्रकार सूक्षम बादर निगोद कि अल्पाबहूत्व कर बतलाते है।

निगोदके शरीरकि अल्पाबहूवत.

(१) द्रव्यापेक्षा.

(१) बादर निगोद के पर्याप्ता शरीर द्रव्य स्तोक.
(२) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, असं० गु०

(३) सूक्ष्म ,, ,, ,, ,, ,, ,,

(४) सूक्ष्म ,, पर्याप्ता ,, ,, संख्या० गु०

(२) प्रदेशापेक्षा.

(१) बादर निगोदके पर्याप्ता शरीर द्रव्य स्तोक.

(२) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, असं० गु०

(३) सूक्ष्म ,, ,, ,, ,, ,,

(४) ,, ,, पर्याप्ता ,, ,, संख्य० गु०

(३) द्रव्य और प्रदेशापेक्षा.

(१) बादर निगोदके पर्याप्ता शरीर द्रव्य स्तोक.

(२) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, असं० गु०

(३) सूक्ष्म ,, ,, ,, ,, ,,

(४) ,, ,, पर्याप्ता ,, ,, संख्या० गु०

(५) बादर ,, ,, ,, प्रदेश अनंतगु०

(६) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, असं० गु०

(७) सूक्ष्म ,, ,, ,, ,, ,,

(८) ,, ,, पर्याप्ता ,, ,, संख्य० गु०

निगोदके जीवोंके अल्पाबहूत्व ।

(४) द्रव्यापेक्षा.

(१) बादर निगोद पर्याप्ता जीव द्रव्य स्तोक.
(२) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, असं० गु०
(३) सूक्षम ,, ,, ,, ,, ,,
(४) ,, ,, पर्याप्ता ,, ,, संख्या० गु०

(५) प्रदेशापेक्षा.

(१) बादर निगोद पर्याप्ता जीव प्रदेश स्तोक.
(२) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, असं० गु०
(३) सूक्षम ,, ,, ,, ,, ,,
(४) ,, ,, पर्याप्ता ,, ,, संख्य० गु०

(६) द्रव्य और प्रदेश.

(१) बादर निगोद पर्याप्ता जीव द्रव्य स्तोक.
(२) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, असं० गु०
(३) सूक्षम ,, ,, ,, ,, ,,
(४) ,, ,, पर्याप्ता ,, ,, संख्या० गु०
(५) बादर ,, ,, ,, प्रदेश असं० गु०
(६) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, ,,
(७) सूक्षम ,, ,, ,, ,, ,,
(८) ,, ,, पर्याप्ता ,, ,, संख्या० गु०

निगोदके शरीर और जीवोंकि अल्प० ।

(७) द्रव्यापेक्षा.

(१) बादर निगोदके पर्याप्ता शरीर द्रव्य स्तोक.
(२) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, असं० गु०
(३) सूक्ष्म ,, ,, ,, ,, ,,
(४) ,, ,, पर्याप्ता ,, ,, संख्य० गु०
(५) बादर निगोदके पर्याप्ता जीव द्रव्य अनन्त गु०
(६) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, असं० गु०
(७) सूक्ष्म ,, ,, ,, ,, ,,
(८) ,, ,, पर्याप्ता ,, ,, संख्या० गु०

(८) प्रदेशापेक्षा.

(१) बादर निगोदके पर्याप्ता जीव प्रदेश स्तोक.
(२) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, असं० गु०
(३) सूक्ष्म ,, ,, ,, ,, ,,
(४) ,, ,, पर्याप्ता ,, ,, संख्या० गु०
(५) बादर ,, ,, शरीर ,, अनन्तगुणा
(६) ,, ,, अपर्याप्ता ,, ,, असं० गु०
(७) सूक्ष्म ,, ,, ,, ,, ,,
(८) ,, ,, पर्याप्ता ,, ,, संख्या० गु०

(६) द्रव्य और प्रदेशापेक्षा.

(१)	बादर	निगोदके	पर्याप्ता	शरीर	द्रव्य	स्तोक.	
(२)	,,	,,	अपर्याप्ता	,,	,,	असं० गु०	
(३)	सूक्ष्म	,,	,,	,,	,,	,,	
(४)	,,	,,	पर्याप्ता	,,	,,	संख्या० गु०	
(५)	बादर	,,	,,	जीव	द्रव्य	अनन्त गु०	
(६)	,,	,,	अपर्याप्ता	,,	,,	असं० गु०	
(७)	सूक्ष्म	,,	,,	,,	,,	,,	
(८)	,,	,,	पर्याप्ता	,,	,,	संख्या० गु०	
(९)	बादर	,,	,,	जीव	प्रदेश	असं० गु०	
(१०)	,,	,,	अपर्याप्ता	,,	,,	,,	
(११)	सूक्ष्म	,,	,,	,,	,,	,,	
(१२)	,,	,,	पर्याप्ता	,,	,,	संख्या० गु०	
(१३)	बादर	,,	,,	शरीर	,,	अनन्त० गु०	
(१४)	,,	,,	अपर्याप्ता	,,	,,	असं० गु०	
(१५)	सूक्ष्म	,,	,,	,,	,,	,,	
(१६)	,,	,,	पर्याप्ता	,,	,,	संख्या० गु०	

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नं. ४.

सूत्र श्री आचारांग अध्य० १ उ० १

(द्रव्यदिशा भावदिशा)

पांचमा गणधर सौधर्मस्वामि अपने शीष्य जम्बुस्वामि प्रत्ये कहेते हैं हे जम्बु इन्ही संसारके अन्दर कितनेक जीव एसे अज्ञानी है कि जिन्होंकों यह ज्ञान नहीं है कि पूर्वभवमें में कोन था और कोन दिशासे में यहांपर आया हूं. दिशा दो प्रकारकि होती है (१) द्रव्यदिशा (२) भावदिशा.

(१) द्रव्यदिशा अढारा (१८) प्रकारकि है यथा (१) इन्द्रादिशा (पूर्वदिशा), (२) अग्निदिशा (अग्निकोन), (३) जमादिशा (दक्षिणदिशा), (४) नैऋतदिशा (नैऋतकोन), (५) वायुदिशा (पश्चिमदिशा), (६) वायुणा (वायुकोन), (७) सोमादिशा (उत्तरदिशा), (८) इसाना (इशानकोन), (९) विमलादिशा (उर्ध्वदिशा), (१०) तमादिशा (अधोदिशा) एवं दश दिशा है जिस्में च्यार दिशा च्यार विदिशा इन्ही आठोंका अन्तरा आठ दश दिशाके साथ मिलानेसे १८ द्रव्यदिशा होती है पूर्वोक्त जीवोंको यह ख्याल नहीं है कि इन्ही अढारा

द्रव्यदिशासें में कौनसि दिशा या विदिशासें आया हूं जब द्रव्यदिशा है तो भावदिशाभी आवश्य होना चाहिये वास्ते शास्त्रकार भावदिशा केहते है.

(२) भावदिशा-पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वायु-काय, तथा वनस्पतिकायके च्यार भेद है (१) मूल बीया-जिन्होंके मूलमें बीज रहेता है मूलादि, (२) कन्दबीआ-जिस्के कन्दमें बीज रहेते है नागरमोथादि, (३) पोरबीया-जिस्के गाठ गाठके अन्दर बीज रहेते है इक्षुवादि, (४) स्कन्धबीया-जिस्के स्कन्धमें बीज रहेते है शाली आदि एवं ८ बेरिन्द्रिय, तेरिन्द्रिय, चौरि-न्द्रिय और तीर्यंच पंचेन्द्रिय तथा मनुष्य च्यार प्रकारके-कर्मभूमि, अकर्मभूमि, अन्तरद्विपे और समुत्सम मनुष्य एवं १६ नारकि और देवता सर्व मीलके भावदिशा १८ होती है पूर्वोक्त जीवोंको यह ख्याल नहीं है कि में कौनसी दिशासें आया हूं और कौनसी दिशामें जाउंगा अगर में जीन्ही कुट-म्बके साथ रक्त हो रहा हूं वह कुटम्ब कौनसी दिशासें आया है और कौनसी दिशामें जावेगा अज्ञानवत् जीवोंको इतना ज्ञान नहीं होता है इसी अज्ञानके जरिये जीवअनादि कालसें इन्ही भवचक्रमें भ्रमण करते है.

कितनेक जीव एसेभि होते है कि स्वयं जानलेते है कि में पूर्वभवमें अमुक गतिजतिमें था या अमुक दिशासें यहांपर

आया हूं कारण जातिस्मरणादि ज्ञानसें जेसे मृगापुत्रकुमार या महाबलकुमारादि और कितनेक ज्ञानवन्तोंके पाससे सुननेसे जानते है जेसे मेघकुमार भगवान के पास अपना भव सुननेसे जाना की में पूर्वभवमें हस्ती था इत्यादि।

ज्ञानीपुरुषोंसे श्रवण करनेसे विशेष ज्ञान भी होसक्के है तत्त्वदृष्टीसे बतलाये जाय तो सम्यत्तव प्राप्तीके मौख्य च्यार वाद है।

(१) आत्मवाद—आत्मा चैतन्य अरुपि अमूर्ति अखंड अमल शुद्धानिर्मल ज्ञानदर्शन चरित्रमय सद् चदानन्द असंख्यात प्रदेशमय सास्वत हैं निश्चय नयसे अकर्ता अभुक्त शुद्ध उपयोगमय है इन्हीसे शास्त्रकारोने पांच भुत वादी-या नास्तिक वादीयोंका निराकार कीया है।

(२) लोक वादी—जहां पांचास्तिकाय है उन्हीकों लोक कहाजाता है वह लोक असंख्याते कोडोन कोड योजनका है जिस्का भि तीन भेद है (१) उर्ध्वलोक (बारह देवलोक नौग्रीवैग पांचानुत्तर वैमान) (२) अधोलोक सात नारकरूप (३) तीरच्छो लोक जिस्मे जम्बुद्विपादि असंख्याते द्विप लवणसमुद्रादि असंख्याते समुद्र यावत् संभुरमण समुद्र तक तथा अधोलोक विशेष विस्तारवाला है तीर-

च्छोलोक क्रमःसर संकोंचीत और उर्ध्वलोक पुनः विस्तार-वाला है अर्थात् कम्बरके हथ लगाके नाचता वोपाके आकार लोक है वह भी द्रव्यापेक्ष सास्वत है और वर्णादि पर्यायापेक्ष असास्वत है इन्दीसे इश्वर वादीयोंका नीरकार कीया है।

(३) कर्मवादी—कर्म अनादि से आत्माके गुणोंको रोक रखा है जेसे सूर्य तजस्वी है परन्तु वादलोंका अवरण आनासे तेजको रोक देता है वसे कर्म भी जीवके गुणोंको रोक देते हे जेसे—

कर्म	आवर्ण द्रीष्टान्त	कौनसा गुणोंको रोके.
ज्ञानावर्णीय	घाणिका वहल	ज्ञानगुणको रोके
दर्शनावर्णीय	राजाका पोलीया	दर्शनगुणको रोके
वेदानिय	मधुलीपत छुरी	अव्याद सुखको रोके
मोहनिय	मदरापान पुरुष	क्षायक गुणको रोके
आयुष्य	केद कीया हूवा	अठलावगाहन गुणको रोके
नामकर्म	चित्रकार माफिक	अमूर्ति गुणको रोके
गौत्रकर्म	कुभकार ,,	अगुरू लघु गुणको रोके
अन्तरायकर्म	राजाका भंडारी	वीर्य गुणको रोके

इन्ही आठो कर्मोने आत्माके आठों गुणोको रोक रखा है व्यवहारनयसे जीवके शुभाशुभ अध्यवशासे कर्मोका दल एकत्र होते है वह अवधाकलपक जानेपर जीवके रसविपाक उदय होते हूवे जीव सुख और दुःख भोगवते है और काल लब्धि प्राप्त कर कर्मोसे मुक्त हो जीव मौक्षमे भी जाते है यह कर्मोका अस्तित्व वतलानेसे काल स्वभाव वादियोंका निराकार किया है.

(४) क्रिया वादी--जो जीव कर्म कर सहित है वह जीव सदेव क्रिया करताही रहेता है और वह शुभाशुभ क्रिया करनेसे शुभाशुभ कर्म रुप फल भी देती है अर्थात् सकर्मी जीवोंके क्रिया अस्तित्व भाव है और क्रिया का फल भी अस्तित्वभाव है यहांपर अक्रियावादीका निराकरण कीया है ।

यह च्यार सम्यग्वाद है इन्हीको यथायोग्य जाननेसे ही सम्यग्द्रष्टीकेहलाते है इन्हीके सिवाय जो मनःकल्पत मत्तको धारण करनेवाले जीवोंको मिथ्याद्रष्टी कहा जाते है । वह अनादि प्रवाहमें परिभ्रमण करते आये है और करते ही रहेगो इस लिये भगवान्ने दो प्रकारकि प्रज्ञा फरमाइ है (१) वस्तुका स्वरुपका ज्ञानकर समझना, (२) परवस्तुका त्याग करना अर्थात् जीस आश्रव कर कर्म आरहा है उन्हीकों रोकना चाहिये.

कारण संसारके अन्दर एकेक जीव अन्य जीवोंकी घात करते है उन्होंका शास्त्रकारोंने छे कारण बतलाया है.

(१) जीतव्य-आजीविकाके लिये आरंभादि करे।

(२) प्रशंसा-जगत्में अपनि तारीफी करानेके लिये।

(३) मान-दुसरेसे अधिक होनेका अभिमानके लिये।

(४) पूजा-जनलोकोंके पाससे पूजा करानेके लिये।

(५) जन्ममरण मिटानेके लिये या यज्ञहोमादि करणा।

(६) दुःख मीटानेके लिये शरीरमें हूइ वेदना मीटानेके लिये।

यह छे कारणोंसे हिंसा करते है वह अनार्य कर्मके करनेवाले है उन्हीको भवन्तरे अहितका कारण-अबोधका कारण होगा कारण वह करनेवाले अज्ञानी मिथ्यात्व अनार्य है और सम्यग्द्रष्टी तो पूर्वोक्त आरंभकों कर्मबन्धका हेतु जाने मोहकर्मकी गांठ जाने मरणका हेतु या नारकका हेतु जानते है इसी वास्ते समकितसार अध्ययनमें कहा है कि " समत्त दंसी न करोति पावं " इसी वास्ते आरंभ परिगृहसे मुक्त हो वीतरागाज्ञाका आराद्धन करो इत्यादि।

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नं. ५

(सूत्रश्री सूयगडायांगजी. श्रु० २ अ०३)

(आहार)

जीवात्मा सच्चदानन्द निजगुणभुक्ता सदा अनाहारीक है यह निश्चय नयका वचन है। और जीवके अनादि कालसे कर्मोका संयोग होनासे भिन्न भिन्न योनिमें नया नया जन्म धारण करते हूवे पुद्गलोंका आहार करता है यह व्यवहार नयका वचन है। व्यवहार नयसे जीव रागद्वेष की प्रवृति करते हुवे के कर्मबन्ध भी होता है उन्ही कर्मोका फल भवन्तरमे शुभाशुभ आवश्य भोगवना भी पडता है जाति अपेक्षा जीव पांच प्रकार के होते है यथा-एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरिन्द्रिय, पांचेन्द्रिय, जिस्मे एकेन्द्रियका पांच भेद है यथा-पृथ्वीकाय अपकाय तेउकाय वायुकाय वनास्पतिकाय सर्व जीवोंमे वनास्पतिकायके जीवाधिक होनासे शास्त्रकारोंने प्रथम वनास्पतिकायका ही व्याख्यान करते है.

वनास्पतिकाय च्यार प्रकारकी होती है यथा—

(१) अग्गबीया—वृक्षके अग्रभागमे बीज होता है.

(२) मूलबीया—मूलमे बीज जेसे कन्दा मूलाके

(३) पोरबीया—गाठ गाठमे बीज इक्षुआदिमे

(४) स्कन्धबीया—गहू चीणादिमे

इन्ही वनास्पतिकायके उत्पन्न होनेका स्थान दोय है (१) स्थलमे (२) जलमे जिस्मेपेस्तर स्थलमे उत्पन्न होते है उन्हीका अधिकार लिखा जाते है.

पृथ्वीयोनिया वृक्ष पृथ्वीमे उत्पन्न होता है तब पेहला पृथ्वीकायके स्नग्धपुद्गलोंका आहार ले के अपना शरीर बन्धता है बादमे छे काया के जीवोंके मुकेलगे पुद्गलोंका आहार लेते है वह आहार अपने शरीरपणे परिणमाते हूवे शरीरका वर्ण गन्ध रस स्पर्श नाना प्रकारका होते है यह प्रथम अलापक हूवे । १ ।

पृथ्वीयोनिया वृक्ष मे वृक्ष उत्पन्न होता है तब पेहले उत्पन्न स्थानके स्नग्धका आहार ले के अपना शरीर बन्धते है बादमे छे कायाके शरीरोंके पुद्गलोंका आहार ले के अपना शरीरके वर्ण गन्ध रस स्पर्श नाना प्रकारके बनाते है । २ ।

वृक्ष योनिया वृक्षमे वृक्ष उत्पन्न होता है तब पेहले अपने उत्पन स्थानके स्नग्धका आहार लेके शरीर बन्धता है बादमे छे कायाके शरीरोंका पुद्गलोंसे अपने शरीरके नानाप्रकारके वर्णगन्ध रसस्पर्श बनाते है । ३ ।

वृक्ष योनियावृक्षमें दश बोल उत्पन्न होते है यथा–मूल, कन्द, स्कन्ध, त्वचा, साखा, प्रतिसाखा, पत्र, पुष्प, फल, बीज. यह १० बोल उत्पन्न होते पेहले अपने स्थानके स्निग्धका आहार लेके अपना शरीर बन्धता है बादमें छे कायाके जीवोंका मुकेलगा पुद्गलोंका आहार ले अपने शरीरका वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श नानाप्रकारके बनाते है । ४ ।

पृथ्वी योनिया वृक्षमें अज्ञोरा (एक जातिका वृक्षमें दुसरी जातिका वृक्ष उत्पन्न होता है उन्हीको अज्ञोरा केहते है) उत्पन्न होता है ।१। वृक्ष योनियावृक्षमें अज्ञोरा उत्पन्न होता है ।२। अज्ञोरा योनियावृक्षमें अज्ञोरा उत्पन्न होता है ।३। अज्ञोरा योनिया अज्ञोरामें मुलादि १० बोल उत्पन्न होता है ।४। एवं च्यारों अलापकमें उत्पन्न होते है। पेहले अपने उत्पन्न स्थानके स्निग्धके पुद्गलोंका आहार ले अपना शरीर बन्धते है बादमें छे कायाके शरीरोंके मुकेलगा पुद्गलोंका आहार ले अपने शरीरका वर्ण, गन्ध, रस स्पर्श नानाप्रकारके बनाते है।

एवं च्यार अलापक तृण वनास्पतिका एवं च्यार अलापक औषदी (२४ प्रकारका धन्य) का एवं च्यार अलापक हरिकायका भावना पूर्ववत् समझना सर्व २० अलापक हूवे ।

पृथ्वी योनियावृक्षमें भूइफोडा उत्पन्न होता है भावना पूर्ववत् एवं २१ ।

जेसे पृथ्वी योनियावृत्तसे २१ अलापक हूवे है इसी माफीक उदक (पाणी) योनियावृत्तसे* भी २१ अलापकके हेना परन्तु इकवीसमा अलापकमें भूइफोडाके स्थान उत्पलादि कमल समझना एवं ४२ अलापक हूवे।

पृथ्वी योनियावृत्तमें त्रसकाय उत्पन्न होती है ।१। वृत्त योनियावृत्तमें त्रसकाय उत्पन्न होती है।२। वृत्त योनियावृत्तमें मूलादिया दश बोल उत्पन्न होता है।३। एवं अज्ञोराका ३, तृणका ३, औषदीका ३, हरिकायका ३, भूइफोडाका १ एवं १६ इसी माफीक उदक योनियाका भी १६ अलापक मीलाके ३२ अलापक हूवे।

वेद मोहनिय कर्मोदय मनुष्यकों मैथुन संज्ञा उत्पन्न होती है तब स्त्रि के साथ मैथुन कर्म सेवन करते है उन्ही समय माताका रौद्र पिताका शुक्र के साथसं योग होते है उन्हीके अन्दर जीव उत्पन्न होते है वह स्त्रिवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद उत्पन्न होते ही पेहला माताका रौद्र पिताका शुक्रका आहार लेता है बादमे माता कि नाडी और पुत्र कि नाडी के साथ संबन्ध होनासे माता जो जो रसवती भोजन करती है उन्हीका एक विभाग पुत्र भी आहार करता है गर्भकाल पूर्ण हो तब

* पाणीमें कमलादि उत्पन्न होते है जिस्की योनि पाणीमें होती है।

उन्ही पुत्रका जन्म होता है बादमे माताके दुद्ध सपीका आहार करता है फीर नाना प्रकारके त्रसस्थावरोंके शरीरके पुद्गलोंका आहार कर के अपने शरीरका वर्णगन्ध रस स्पर्श नाना प्रकारका वनाता है । ७५ ।

इसी माफिक जलचार जीव परन्तु जन्मतों पाणीका आहार लेते है । ७६ । एवं खेचर परन्तु जन्मतों माताका । पोखकों आहार लेवे । ७७ । एवं स्थलचर मनुष्यकी माफीक । ७८ । एवं उरपुरी सर्प परन्तु जन्मतों हवा (वायु) कों आहार लेवे । ७९ । एवं भूजपुर भी समझना । ८० ।

वीध्वंस चर्ममे क्रीडा करमीयादि जीव उत्पन्न होता है वह पेहला अपने उत्पन्न स्थानके स्नग्धका आहार लेवे यावत् पूर्ववत् सझना । ८१ । परसेवासे यू लीखादिका । ८२ । मल मूत्रमे समुत्सम जीवोंका । ८३ ।

त्रसस्थावर जीवोंके शरीरमे वायुकायाके योगसे अपकाय उत्पन्न हूवे पेहला उत्पन्न स्थानके स्नग्धका आहार लेवे शेष पूर्ववत् । ८४ ।

त्रसस्थावर योनिया उदकमे उदक उत्पन्न होता है ।८५। उदक योनियाउदकमे उदक उत्पन्न होता है । ८६ । उदक योनिया उदकमें त्रस प्राणी उत्पन्न होता है । ८७ ।

त्रस स्थावर जीवोंका अचित तथा सचित शरीरमे अग्नि-काय उत्पन्न हूवे । ८८ । त्रसस्थावर योनिया अग्निमे अग्नि उत्पन्न हूवे । ८९ । अग्नियोनिया अग्निमे अग्नि उत्पन्न होती है । ९० । अग्नि योनिया अग्निमें, त्रसस्थावर जीव उत्पन्न होता है । ९१ ।

त्रसस्थावर जीवोंका सचित अचित शरीरमे वायुकाय उत्पन्न होती है । ९२ । त्रसस्थावर योनिया वायुकायमे वायु-काय उत्पन्न होती है । ९३ । वायु योनियावायुमें वायुकाय उत्पन्न होती है । ९४ । वायु योनियावायुकायमें त्रस स्थावर उत्पन्न होता है । ९५ ।

त्रस स्थावर जीवोंका सचित अचित शरीरमें पृथ्वीकाय उत्पन्न होती है । ९६ । त्रस स्थावर योनिया पृथ्वीकायमें पृथ्वीकाय उत्पन्न होती है । ९७ । पृथ्वी योनियापृथ्वीमें पृथ्वीकाय उत्पन्न होती है । ९८ । पृथ्वी योनियापृथ्वीकायमें त्रस स्थावर उत्पन्न होता है सर्व स्थानपर उत्पन्न होता है । वह पेहले अपना उत्पन्न स्थानके स्निग्धके पुद्गलोंका आहार लेता है बादमें छे कायाके शरीरके मुकेलगे पुद्गलोंका आहार लेके अपने शरीरका वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श नानाप्रकारके बनाते है।

नारकी कुंभीमें उत्पन्न होते है । १०० । देवता शय्यामें उत्पन्न होते है । १०१ । इति आहार अलापक ।

हे भव्यात्मन् यह उपर लिखा योनिमें परिभ्रमण करता अपना जीव अनादिकालसे मारा मारा फीरता है इन्ही योनि-को मीटानेवाला श्री वीतरागका ज्ञान है इन्हीकी सम्यक् प्रकारे आराधना करो तार्के फीर दुसरीवार योनिमें उत्पन्न होनाका कमही न रहे। रस्तु।

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नं. ६

(बहूश्रुति कृत.)

(प्रत्यक बोलपर ६२ बोल उतारा जावेगा)

नं.	मार्गणा.	जीवभेद.	गुणस्थान.	योग १५	उप० १२	लेश्या ६
१	समुच्चय जीवमें	१४	१४	१५	१२	६
२	स० अपर्याप्तामें	७	३	५	९	६
३	स० अ० अनाहारी	७	३	१	८	६

४	स० अ० आहारीक	७	३	३	६	६
५	स० पर्याप्ता	७	१४	१४	१२	६
६	स० प० आहारीक	७	१४	१४	१२	६
७	स० प० अनाहारीक	१	२	१	२	१
८	पांचेन्द्रिय	४	१२	१५	१०	६
९	पां० अपर्याप्ता	२	३	५	९	६
१०	पां० अ० अनाहारीक	२	३	१	८	६
११	पां० अ० आहारीक	२	३	४	९	६
१२	पं० पर्याप्ता	२	१२	१४	१०	६
१३	पां प० आहारीक	२	१२	१४	१०	३
१४	चौरिन्द्रिमें	२	२	४	६	३
१५	चौ० अपर्याप्ता	१	२	३	६	३
१६	चौ० अ० अनाहारीक	१	२	१	५	३
१७	चौ० अ० आहारीक	१	२	२	६	३
१८	चौ० पर्याप्तामें	१	१	२	४	३
१९	चौ० प० आहारीक	१	१	२	४	३
२०	तेइन्द्रिय	२	२	४	५	३
२१	ते० अपर्याप्ता	१	२	३	५	३
२२	ते० अ० अनाहारीक	१	२	१	५	३
२३	ते० अ० आहारीक	१	२	२	५	३

२४	ते० पर्याप्ता	१	२	२	३	३
२५	ते० प० आहारीक	१	१	२	३	३
२६	बेन्द्रिय	२	२	४	५	३
२७	बे० अपर्याप्ता	१	२	३	५	३
२८	बे० अ० अनाहारीक	१	२	१	५	३
२९	बे० अ० आहारीक	१	२	२	५	३
३०	बे० पर्याप्ता	१	१	२	३	३
३१	बे० प० आहारीक	१	१	२	३	३
३२	एकेन्द्रिय	४	१	५	३	४
३३	ए० अपर्याप्ता	२	१	३	३	४
३४	ए० अ० अनाहारीक	२	१	१	३	४
३५	ए० अ० आहारीक	२	१	२	३	४
३६	ए० पर्याप्ता	२	१	४	३	३
३७	ए० प० आहारीक	२	१	४	३	३
३८	अनेन्द्रिय	१	२	५|७	२	१
३९	अ० पर्याप्ता	१	२	५|७	२	१
४०	अ० अनाहारीक	१	२	१	२	१
४१	अ० आहारीक	१	१	५|७	२	१

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नं. ७

(बहू श्रुतिक्कत)

नं.	मार्गणा.	जी.	गु.	यो.	उ.	ले.
१	समुच्चय जीवमे	१४	१४	१५	१२	६
२	सकाय में	१४	१४	१५	१२	६
३	स० अपर्याप्ता	७	३	५	९	६
४	स० अ० अनाहारीक	७	३	१	८	६
५	स० अ० आहारीक	७	३	४	९	६
६	स० पर्याप्ता	७	१४	१४	१२	६
७	स० प० अनाहारीक	१	२	१	२	१
८	स० प० आहारीक	७	१३	१४	१२	६
९	पृथ्वीकायमे	४	१	३	३	४
१०	पृ० अपर्याप्ता	२	१	३	३	४
११	पृ० अ० अनाहारीक	२	१	१	३	४
१२	पृ० अ० आहारीक	२	१	२	३	४
१३	पृ० पर्याप्तामे	२	१	१	३	३
१४	पृ० प० आहारीक	२	१	१	३	३

१५	अपकायमे	४	१	३	३	४
१६	अ० अपर्याप्ता	२	१	३	३	४
१७	अ० अ० अनाहारीक	२	१	१	३	४
१८	अ० अ० आहारीक	२	१	२	३	४
१९	अ० पर्याप्ता	२	१	१	३	३
२०	अ० प० आहारीक	२	१	१	३	३
२१	तेउकायमें	४	१	३	३	३
२२	ते० अपर्याप्ता	२	१	३	३	३
२३	ते० अ० अनाहारीक	२	१	१	३	३
२४	ते० अ० आहारीक	२	१	२	३	३
२५	ते० पर्याप्ता	२	१	१	३	३
२६	ते० प० आहारीक	२	१	१	३	३
२७	वायुकायमें	४	१	५	३	३
२८	वायुअपर्याप्ता	२	१	३	३	३
२९	व० अ० अनाहारीक	२	१	१	३	३
३०	व० अ० आहारीक	२	१	२	३	३
३१	व० पर्याप्ता	२	१	४	३	३
३२	व० प० आहारीक	२	१	४	३	३
३३	वनास्पतिकायमें	४	१	३	३	४
३४	व० अपर्याप्ता	२	१	३	३	४

३५	व० अ० अनाहारीक	२	१	१	३	४
३६	व० अ० आहारीक	२	१	२	३	४
३७	व० पर्याप्ता	२	१	१	३	३
३८	व० प० आहारीक	२	१	१	३	३
३९	तसकायमें	१०	१४	१५	१२	६
४०	त० अपर्याप्ता	५	३	५	९	६
४१	त० अ० अनाहारीक	५	३	१	८	६
४२	त० अ० आहारीक	५	३	४	९	६
४३	त० पर्याप्ता	५	१४	१४	१२	६
४४	त० प० अनाहारीक	१	२	१	२	१
४५	त० प० आहारीक	५	१३	१४	१२	६

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नं. ८

(बहूश्रुति कृत)

न.	मार्गणा.	जी.	गु.	यो.	उ.	ले.
१	सूक्ष्मेकन्द्रि अपर्यप्ता	१	१	३	३	३
२	,, ,, पर्याप्ता	१	१	१	३	३

३	बादर एकेन्द्रि अप०	१	१	३	३	४
४	,, ,, पर्याप्ता	१	१	४	३	४
५	बेइन्द्रिय अपर्याप्ता	१	२	३	५	३
६	,, पर्याप्ता	१	१	२	३	३
७	तेइन्द्रिय अप०	१	२	३	५	३
८	,, पर्याप्ता	१	१	२	३	३
९	चौरिन्द्रिय अप०	१	२	३	६	३
१०	,, पर्याप्ता	१	१	२	३	३
११	असंज्ञी पांचेन्द्रि अप०	१	२	३	६	३
१२	,, ,, पर्याप्ता	१	१	२	३	३
१३	संज्ञी पांचेन्द्रि अप०	१	३	५	८	६
१४	,, ,, पर्याप्ता	१	१२	१४	१०	६
१५	मिथ्यात्व गुणस्थान	१४	१	१३	६	६
१६	सास्वदन ,,	६	१	१३	६	६
१७	मिश्र ,,	१	१	१०	६	६
१८	अव्रती सम्य० ,,	२	१	१३	६	६
१९	देशव्रती ,,	१	१	१२	६	६
२०	प्रमत्त संयति ,,	१	१	१४	७	६
२१	अप्रमत्त ,, ,,	१	१	११	७	३
२२	निवृत्ति बादर ,,	१	१	९	७	१

२३	अनिवृति बादर गुणस्थान	१	१	६	७	१
२४	सुक्षम संपराय ,,	१	१	६	७	१
२५	उपशान्त मोह ,,	१	१	६	७	१
२६	क्षीण मोह ,,	१	१	६	७	१
२७	संयोगी केवली ,,	१	१	५।७	२	१
२८	अयोगी केवली ,,	१	१	०	२	०
२६	सत्य मनयोगमें	१	१३	१४	१२	६
३०	असत्य मनयोगमें	१	१२	१४	१०	६
३१	मिश्र मनयोगमें	१	१२	१४	१०	६
३२	व्यवहार मनयोगमें	१	१३	१४	१२	६
३३	सत्य वचनयोगमें	१	१३	१४	१२	६
३४	असत्य वचनयोगमें	१	१२	१४	१०	६
३५	मिश्र वचनयोगमें	१	१२	१४	१०	६
३६	व्यवहार वचनयोगमें	१	१३	१४	१२	६
३७	औदारीक कायमें	१४	१३	६	१२	६
३८	औ० मिश्र काययोग	६	६	६	१२	६
३६	वैक्रय काययोग	३	७	६	१०	६
४०	वै० मिश्र काययोग	३	५	६	१०	६
४१	आहारीक ,,	१	२	६	७	६
४२	आ० मिश्र ,,	१	२	६	७	६
४३	कारमण काययोग	८	४	१	१०	६

४४	मतिज्ञानमे	६	१०	१५	७	६
४५	श्रुतिज्ञानमे	६	१०	१५	७	६
४६	अवधिज्ञानमे	२	१०	१५	७	६
४७	मनः पर्यवज्ञान	१	७	१४	७	३
४८	केवलज्ञानमे	१	२	५।७	२	१
४९	मतिअज्ञानमे	१४	२	१३	६	६
५०	श्रुतिअज्ञानमे	१४	२	१३	६	६
५१	वीभगाज्ञानमे	२	२	१३	६	६
५२	चक्षुदर्शनमें	३।६	१२	१४	१०	६
५३	अचक्षुदर्शनमे	१४	१२	१५	१०	६
५४	अवधिदर्शनमे	२	१२	१५	१०	६
५५	केवलदर्शनने	१	२	५।७	२	१
५६	कृष्णलेश्यामें	१४	६	१५	१०	१
५७	निर्ल ,,	१४	६	१५	१०	१
५८	कापोत ,,	१४	६	१५	१०	१
५९	तेजो ,,	३	७	१५	१०	१
६०	पद्म ,,	२	७	१५	१०	१
६१	शुक्ल ,,	२	१३	१५	१२	१
६२	समुच्चयजीवमे	१४	१४	१५	१२	६

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नम्बर, ९

(बहूश्रुत कृत)

नं.	मार्गणा.	जी०	गु०	यो०	उ०	ले.
१	द्रव्यात्मा	१४	१४	१५	१२	६
२	कषायात्मा	१४	१०	१५	१०	६
३	योगात्मा	१४	१३	१५	१२	६
४	उपयोगात्मा	१४	१४	१५	१२	६
५	ज्ञानात्मा	६	१२	१५	९	६
६	दर्शनात्मा	१४	१४	१५	१२	६
७	चारित्रात्मा	१	९	१५	९	६
८	वीर्यात्मा	१४	१४	१५	१२	६
९	पुलाक निग्रन्थ	१	२	९	६	६
१०	बुकश ,,	१	२	१२	६	६
११	प्रतिसेवना ,,	१	२	१२	६	६
१२	कषायकुशील ,,	१	५	१४	७	६
१३	निग्रन्थ ,,	१	२	९	७	१
१४	स्नातक ,,	१	२	५/७	२	१

१५	औदारीक शरीर	१४	१४	१५	१२	६
१६	वैक्रय शरीर	३	७	१५	१०	६
१७	आहारीक शरीर	१	२	१०	७	६
१८	तेजस शरीर	१४	१४	१५	१२	६
१९	कारमाण शरीर	१४	१४	१५	१२	६
२०	एक प्राणवाला जीवोमें	७	३	१	८	६
२१	दोय ,,	१	१	०	२	०
२२	तीन ,,	२	१	३	३	४
२३	च्यार ,,	४	१	५	३	४
२४	पांच ,,	१	२	५।७	२	१
२५	छे ,,	२	२	४	५	३
२६	सात ,,	२	२	४	५	३
२७	आठ ,,	२	२	४	६	३
२८	नव ,,	२	२	४	६	३
२९	दश ,,	२	१२	१५	१०	६
३०	आहार पर्याप्ती	१४	१३	१४	१२	६
३१	शरीर ,,	१४	१४	१५	१२	६
३२	इन्द्रिय ,,	१४	१२	१५	१०	६
३३	श्वासोश्वास ,,	१२	१३	१४	१२	६
३४	भाषा ,,	५	१३	१४	१२	६
३५	मनः ,,	१	१३	१४	१२	६

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नं. १०

(बहूश्रुति कृत.)

नं.	मार्गणा.	जी.	गु.	यो.	उ.	ले.
१	समुच्चय जीवमे	१४	१४	१५	१२	६
२	नारकीमें	३	४	११	९	३
३	ना० अपर्याप्ता	२	३	३	९	३
४	ना० अ० अनाहारीक	२	३	१	९	३
५	ना० अ० आहारीक	२	३	२	९	३
६	ना० पर्याप्ता	१	४	१०	९	३
७	ना० प० आहारीक	१	४	१०	९	३
८	तीर्यंचमे	१४	५	१३	९	६
९	ती० अपर्याप्ता	७	३	३	६	६
१०	ती० अ० अनाहारीक	७	३	१	५	६
११	ती० अ० आहारीक	७	३	२	६	६
१२	ती० पर्याप्तामे	७	५	१२	९	६
१३	ती० प० आहारीक	७	५	१२	९	६
१४	मनुष्यमे	३	१४	१५	१२	६

१५	म० अपर्याप्ता	२	३	३	६
१६	म० अ० अनाहारीक	२	३	१	८
१७	मनुष्य अ० आहारी	२	३	२	६
१८	म० पर्याप्तामें	१	१४	१४	१२
१९	म० प० अनाहारीक	१	२	१	२
२०	म० प० आहारीक	१	१३	१४	१२
२१	देवतावोंमें	३	४	११	६
२२	देवतावों अपर्याप्ता	२	३	३	६
२३	देव० अ० अनाहारीक	२	३	१	८
२४	दे० अ० आहारीक	२	३	२	६
२५	देव० पर्याप्ता	१	४	१०	६
२६	देव० प० आहारीक	१	४	१०	६
२७	सिद्धभगवानमें	०	०	०	२

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नं. ११

(वहू श्रुतिकृत)

अलद्धिया उसे केहते है कि जिस्मे वह वस्तु न मीले जेसे मतिज्ञानका अलाद्धिया केहनेसे जिन्ही जीवोंमे मतिज्ञान न मीलता हो जेसे पेहले तीजे तेरवे चौदवे इन्ही च्यार गुणस्थानमे मतिज्ञानका अभाव है इसी माफीक सर्व स्थानपर समझना ।

नं.	मार्गणा.	जी०	गु०	यो०	उ०	ले.
१	मतिज्ञानके अलद्धियामे	१४	४	१३	८	६
२	श्रुतिज्ञानके ,,	१४	४	१३	८	६
३	अवधिज्ञानके ,,	१४	१४	१५	११	६
४	मनःपर्यवज्ञानके ,,	१४	१२	१५	११	६
५	केवलज्ञानके ,,	१४	१२	१५	१०	६
६	मतिअज्ञानके ,,	६	१२	१५	९	६
७	श्रुतिअज्ञानके ,,	६	१२	१५	९	६
८	विभंगाज्ञान ,,	१४	१४	१५	११	६
९	चक्षुदर्शनके ,,	१२	५	७	१०	६
०	अचक्षु० ,,	१	२	५|७	२	१
१	अवधिज्ञानके ,,	१४	१४	१५	१०	६
२	केवलदर्शन० ,,	१४	१४	१५	१०	६
३	इन्द्रियका ,,	१	२	५|७	२	१
४	श्रोतेन्द्रियका ,,	११	४	९	८	५
५	चक्षुइन्द्रियका ,,	९	४	९	७	५
६	घ्रणेन्द्रियका ,,	७	४	९	७	५
७	रसेन्द्रियका ,,	५	३	९	५	५
८	स्पर्शेन्द्रियका ,,	१	२	५|७	२	१
९	अनेन्द्रियका ,,	१४	१२	१५	१०	६

२०	ज्ञानावर्णीयका	,,	१	२	५।७	२	१
२१	दर्शनावर्णीयका	,,	१	२	५।७	२	१
२२	वेदनियका	,,	०	०	०	२	०
२३	मोहनियका	,,	१	३	११	६	१
२४	आयुष्यका	,,	०	०	०	२	०
२५	नामकर्मका	,,	०	०	०	२	०
२६	गोत्रकर्मका	,,	०	०	०	२	०
२७	अन्तरायका	,,	१	२	५।७	२	१
२८	सवेदके	,,	१	६	११	६	१
२९	स्त्रिवेदके	,,	१४	१४	१५	१२	६
३०	पुरुषवेदके	,,	१४	१४	१५	१२	६
३१	नपुंसकवेदके	,,	२	१४	१५	१२	६
३२	अवेदके	,,	१४	९	१५	१०	६
३३	सकषायके	,,	१	४	११	६	१
३४	क्रोधक०	,,	१	५	११	६	१
३५	मानक०	,,	१	५	११	६	१
३६	माया	,,	१	५	११	६	१
३७	लोभ	,,	१	४	११	६	१
३८	अकषाय	,,	१४	१०	१५	१०	६
३९	सेलेश्या	,,	१	१	०	२	०

४०	कृष्णलेश्या	,,	१	८	१५	९	३
४१	निललेश्या	,,	१	८	१५	९	३
४२	कापोतलेश्या	,,	१	८	१५	९	३
३४	तेजोलेश्या	,,	१	७	११	९	१
४४	पद्मलेश्या	,,	१	७	११	९	१
४५	शुक्ललेश्या	,,	१	१	०	२	०
४६	अलेश्या	,,	१४	१३	१५	१२	६
४७	संयोगिका	,,	१	१	०	२	०
४८	मनयोगिका	,,	१	१	०	२	०
४९	वचन०	,,	१	१	०	२	०
५०	काययोगि	,,	१	१	०	२	०
५१	अयोगि	,,	१४	१३	१५	१२	६
५२	सम्यक्द्रष्टी	,,	१४	२	१३	६	६
५३	मिथ्याद्रीष्टी	,,	६	१२	१५	९	६
५४	मिश्रद्रीष्टी	,,	१४	१३	१५	१२	६
५५	संज्ञीका	,,	१३	४	१०	८	५
५६	असंज्ञीका	,,	२	१४	१५	१२	६
५७	संसारका	,,	०	०	०	२	०

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नं. १२

(बहूश्रुति कृत)

न.	मार्गणा.	जी.	गु.	यो.	उ.
१	ज्ञानावर्णीयकर्ममें	१४	१२	१५	१०
२	दर्शना० ,, ,,	१४	१२	१५	१०
३	वेदनिय ,, ,,	१४	१४	१५	१२
४	मोहनिय ,, ,,	१४	११	१५	१०
५	आयुष्य ,, ,,	१४	१४	१५	१२
६	नामकर्ममें	१४	१४	१५	१२
७	गौत्रकर्ममे	१४	१४	१५	१२
८	अन्तरायकर्ममे	१४	१२	१५	१०
९	वज्रऋषभनाराच संहनन	२	१४	१५	१२
१०	ऋषभनाराच० ,,	२	११	१५	१०
११	नारचसंहनन ,,	२	११	१५	१०
१२	अर्द्धनाराच० ,,	२	७	१५	१०
१३	कालकास० ,,	२	७	१५	१०
१४	छेवट स० ,,	१४	७	१५	१०

१५	समचौरंससंस्थान	२	१४	१५	१२	६
१६	निग्रोधसंस्थान	२	१४	१५	१२	६
१७	सादियसंस्थान	२	१४	१५	१२	६
१८	वामन संस्थान	२	१४	१५	१२	६
१९	कुब्ज संस्थान	२	१४	१५	१२	६
२०	हून्डक संस्थान	१४	१४	१५	१२	६
२१	सावचीया (सिद्ध)	०	०	०	२	०
२२	सोवचीया (भव्य)	१४	१४	१५	१२	६
२३	सा० सो (पडवाइ)	१४	१४	१५	१२	६
२४	नि० नि० (अभव्य)	१४	१	१३	६	६
२५	अछद्मस्थ	१	२	५।७	२	१
२६	अकेवली	१४	१२	१५	१०	६
२७	असिद्ध	१४	१४	१५	१२	६
२८	सचितयोनि	१२	२	६	६	४
२९	अचितयोनि	१४	४	१३	९	६
३०	मिश्रयोनि	१४	४	१३	९	६
३१	शीतयोनिमे	१२	२	६	६	४
३२	उष्णयोनिमे	२	१	३	३	३
३३	मिश्रयोनिमे	२	४	१३	९	६
३४	संवृतयोनिमे	४	६	१३	९	६

३५	बेहडायोनिमें	८	२	४	६	३
३६	मिश्रयोनिमें	२	१४	१५	१२	६
३७	क्रियावादी	२	१	१३	६	६
३८	अक्रियावादी	१४	१	१३	६	६
३६	अज्ञानवादी	१४	२	१३	६	६
४०	विनयवादी	२	२	१३	६	६
४१	आर्तध्यान	१४	६	१५	१०	६
४२	रौद्रध्यान	१४	५	१३	६	६
४३	धर्मध्यान	१	५	१५	७	६
४४	शुक्लध्यान	१	७	११	६	१
४५	वेदनि समुद्घात	१४	६	१५	१०	६
४६	कषाय ,,	१४	६	१५	१०	६
४७	मरणान्तीक ,,	१४	५	१३	१०	६
४८	वैक्रय ,,	३	६	१३	१०	६
४६	तेजस ,,	२	५	१३	१०	६
५०	आहारीक ,,	१	२	६	७	६
५१	केवली ,,	१	१	३	२	१

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नम्बर. १३

(बहूश्रुत कृत)

नं.	मार्गणा	जी.	गु.	यो.	उ.	ले.
१	वासुदेवकी आगति	१	४	१०	९	४
२	हास्यादि सम्यक् द्रीष्टी	६	६	१५	७	६
३	अव्रती मनयोगमें	१	३	१२	९	६
४	एकान्तसंज्ञी सम्य० अव्रती	२	२	१३	६	६
५	अप्रमत्त हास्यादिमें	१	२	११	७	३
६	तेजोलेशी एकेन्द्रिमें	१	१	३	३	१
७	अमर गुणस्थानमें	१	३	१२	१२	६
८	अमर गु० छद्मस्थ	१	२	१०	१०	६
९	अमर गु० चरमान्त	१	२	१२	८	६
१०	यथाख्यात-संयोगि	१	३	११	९	१
११	गुण० चमरान्त	१४	२	१३	८	६
१२	संयोग गु० चमरान्त	१४	२	१३	८	६
१३	छद्मस्थ गु० च०	१४	२	१३	१०	६

१४	सकषाय गुणस्थान चरमान्त	१४	२	१३	१०	६
१५	सवेद गु० च०	१४	२	१३	१०	६
१६	व्रतीछद्मस्थ गु०	१	७	१४	७	६
१७	अप्रमत्त छद०	१	६	११	७	३
१८	हास्यादि संयती	१	३	१४	७	६
१९	हास्यादि अप्रमत्त	१	२	११	७	३
२०	व्रती सकषाय	१	५	१४	७	६
२१	व्रती सवेद	१	४	१४	७	६
२२	व्रती छद्मस्थ	१	७	१४	७	६
२३	सम्य० सवेद	६	७	१५	७	६
२४	सम्य० सकषाय	६	८	१५	७	६
२५	परभव जाता जीवमें	७	३	१	१०	६

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नं. १४

(बहूश्रुत कृत)

(२८ लब्धि)		भव्य		अभव्य	
नं.	मार्गणा.	पुरुष	स्त्रि	पुरुष	स्त्रि
१	आमोसहि लब्धि	हूवे	हूवे	हूवे	हूवे
२	विप्पोसहि ,,	,,	,,	,,	,,
३	जलोसहि ,,	,,	,,	,,	,,
४	खेलोसहि ,,	,,	,,	,,	,,
५	सव्वोसहि	,,	,,	,,	,,
६	संभिन्नश्रोता ,,	,,	नहीं	नहीं	नहीं
७	अवधिज्ञान	,,	हूवे	,,	,,
८	ऋजोमति	,,	,,	,,	,,
९	विपुलमति ,,	,,	,,	,,	,,
१०	केवलज्ञान ,,	,,	,,	,,	,,
११	चरण ,,	,,	नहीं	,,	,,
१२	अरिहंत ,,	,,	,,	,,	,,

१३	गणधर	,,	,,	,,	,,	,,
१४	चक्रवर्त	,,	,,	,,	,,	,,
१५	बलदेव	,,	,,	,,	,,	,,
१६	वासुदेव	,,	,,	,,	,,	,,
१७	आहारीक	,,	,,	,,	,,	,,
१८	वैक्रय	,,	,,	हूवे	हूवे	हूवे
१९	पुलाक	,,	,,	नहीं	नहीं	नहीं
२०	तेजोलेश्या	,,	,,	हूवे	हूवे	हूवे
२१	शीतलेश्या	,,	,,	,,	,,	,,
२२	कोठबुद्धि	,,	,,	,,	,,	,,
२३	बीजबुद्धि	,,	,,	,,	,,	,,
२४	पूर्वधर	,,	,,	नहीं	नहीं	नहीं
२५	पदानुसारणी	,,	,,	हूवे	हूवे	हूवे
२६	आसीवीस	,,	,,	,,	,,	,,
२७	क्षीरमंजुषा	,,	,,	,,	,,	,,
२८	अक्षीणमाणसी	,,	,,	,,	,,	,,

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नं. १५

(पुद्गलपरावर्तन)

असंख्याते वर्षका एक पल्योपम होता है दश कोडाकोड पल्योपमका एक सागरोपम होता है दश कोडाकोड सागरोपमका एक उत्सर्पिणी काल तथा दश कोडाकोड सागरोपमका एक अवसर्पिणी काल होता है इन्ही उत्सार्पिणी अवसर्पिणीकों मीलाके वीस कोडाकोड सागरोपमकों शास्त्रकारोंने एक कालचक्र कहा है एसे अनन्ते कालचक्रका एक पुद्गलपरावर्तन होता है वह प्रत्यक जीवों भूतकालमें अनन्ते अनन्ते पुद्गलपरावर्तन कीये है विशेष बोधके लिये पुद्गलपरावर्तनकों च्यार प्रकारसे बतलाते है. यथा-द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव। प्रत्यकके दो दो भेद है (१) सूक्ष्म, (२) बादर. वह इस थोकडा द्वारा बतलाया जावेगा.

(१) द्रव्यापेक्षा बादर पुद्गलपरावर्तन—लोकमें रहे हूवे द्रव्य जिन्हीकों जीव ग्रहन करते है वह आठ वर्गणा द्वारे ग्रहन करते है यथा-औदारीकशरीर द्वारे, वैक्रयशरीर द्वारे, आहारीकशरीर द्वारे, तेजसशरीर द्वारे, कार्मणशरीर द्वारे, श्वासोश्वासद्वारे, भाषा द्वारे, मन द्वारे, इन्ही आठ वर्गणासे एक

आहारीक शरीर वर्गण छेडदेना कारण एक जीव अधिकसे अधिक आहारीक शरीर करे तो च्यारसे ज्यादा न करे, वास्ते सर्व लोकका द्रव्य ग्रहनका अभाव है। शेष ७ वर्गणासे अनुक्रमे एकेक जीव सर्व लोकका द्रव्यको अनन्ती अनन्ती वार ग्रहण कर छोडा है अर्थात् औदारीक शरीर वर्गणासे सर्व लोकका द्रव्य अनन्तीवार ग्रहन कर छोडा एवं वैक्रय० तेजस० कार्मण० श्वासोश्वास० भाषा० ओर मनवर्गणासे सर्व लोकका द्रव्यको अनन्तीवार ग्रहन कर छोडा इन्हीकों द्रव्यापेक्षा बादर पुद्गलपरावर्तन केहते है। इसमें अनन्तों काल लगता है

(२) द्रव्यापेक्षा सूक्ष्म पुद्गलपरावर्तन-पूर्वोक्त बतलाइ हुइ सात वर्गणासे प्रथम जीव औदारीक वर्गणासे लोकका द्रव्य ग्रहन करना प्रारंभ कीया है वह क्रमःसर सर्व लोकका द्रव्य केवल औदारीक वर्गणासे ही ग्रहन करे अगर वीचमें वैक्रयादि छे वर्गणासे द्रव्य ग्रहन करे वह गीनतीमें नहीं जेसे औदारीक शरीरका भाव कर तो वीचमें वैक्रय शरीरका भव करे यहांपर आचार्यो महाराजका दो मत्त है एक केहते है कि औदारीक वर्गणासे द्रव्य ले तो वीचमें वैक्रयादि वर्गणासे द्रव्य लेवे वह गीनतीमें नहीं किन्तु औदारीक गीनतीमें है दुसरोंका मत्त है कि औदारीक वर्गणासे द्रव्य ले तो वीचमें वैक्रयादि वर्गणासे द्रव्य लेवे तो औदारीकसे और

वैक्रयसे लिये हूवे सर्व द्रव्य गीनतीमे नही अर्थात् फीरसे औदारीक वर्गणाद्वारे द्रव्यग्रहन करे तात्पर्य यह है कि औदारीक वर्गणाद्वारे द्रव्यग्रहन करतों जहँ तक सम्पुर्ण लोकके द्रव्य औदारीक वर्गणाद्वारे ग्रहन करे वहातक वीचमे दुसरी वर्गणा न आवे वह एक वर्गण कही जावे। इसीमाफीक वैक्रय वर्गणासे द्रव्यग्रहन करतों वीचमे औदारीकादि वर्गणासे द्रव्य लेवेतों गीनतीमे नही परन्तु सर्व लोकका द्रव्य वैक्रयसेही लेवे वीचमे दुसरा भव नकरे तों गीनतीमे आवे इसी माफीक सातों वर्गणासे क्रमःसर सम्पुरण लोक द्रव्यग्रहन करे उन्हीकों द्रव्यापेक्षा सूक्षम पुद्गल परावर्तन केहते है.

(३) क्षेत्रापेक्षा बादर पुद्गलपरावन—असंख्याते कोडो न कोड योजनके विस्तारवाला यह लोक है जिन्ही के अन्दर रहे हूवे आकाश प्रदेश भी असंख्याते है उन्ही आकाश प्रदेशोंको एकेक समय एकेक प्रदेश निकाला जावे तों असंख्याते कालचक्र पुर्ण हो जावे इतने आकाश प्रदेश है.

एक आकाशप्रदेश पर जीव जन्ममरण कीया है वह गीनतीमे और फीरसे उन्ही आकाशप्रदेशपर मरे वह इन्ही पुद्गलपरावर्तन कि गीनतीमे नही आवे इसी माफीक अस्पर्श किये हूवे आकाशप्रदेश पर जन्ममरण करते हूवे सम्पुरण लोकाकाशप्रदेशोंको स्पर्श करे। जीव जन्ममरण करता है वह

असंख्याते प्रदेशपर करता है तद्यपि यहांपर मौख्यता एकही प्रदेशकी गीनी गइ है। इसी माफीक प्रत्येक प्रदेशपर जन्म-मरण करते हूवे सम्पुरण लोक पुरण करदे उन्हीको क्षेत्रापेक्षा बादर पुद्गलपरावर्तन केहते है तात्पर्य यह हूवे कि एकेक प्रदेशपर भूतकालमें जीव अनन्तीवार जन्ममरण कीया है बादर पुद्गलपरावर्तनमें काल अनन्ता लगता है।

(४) क्षेत्रापेक्षा सूक्ष्म पुद्गलपरावर्तन-पंक्तीबन्ध आकाश प्रदेशको श्रेणि केहते है वह श्रेणियों लोकमें असंख्याती है जिस आकाशप्रदेशपर जीव जन्मा है उन्ही आकाशप्रदेशाकि पंक्तीबन्ध श्रेणिपर जन्ममरण करता जावे इन्हीसे सम्पुरण श्रेणि पुरण करदे अगर वीचमें विषमश्रेणि अर्थात् श्रेणि बहार जन्म करे तो गीनतीमें नहीं एक आचार्य महाराजकी मान्यता है कि जीतना विषमश्रेणि भव करे वह गीनतीमें नहीं दुसरे आचार्योंकी मान्यता है कि वहांतक जितने शमश्रेणि विषमश्रेणि भव कीया है वह सर्वही गीनतीमें नहीं है। तत्त्वकेवलीगम्य इसी माफीक श्रेणि पुरण करे पीछे उन्हीके पासाकि श्रेणिपर जन्ममरण करे वीचमें विषमश्रेणि न करे तो गीनतीमें अगर करे तो गीनतीमें नहीं इसी माफीक सम्पुरण लोकाकि श्रेणियोंको क्रमःसर पुरण करे उन्हीकों क्षेत्रापेक्षा सूक्ष्म पुद्गलपरावर्तन केहते है बादरसे सूक्ष्ममें काल अनन्तगुणो लागे है।

(५) कालापेक्षा बादर पुद्गलपरावर्तन—वीस कोडा-कोड सागरोपमका एक कालचक्र होता है उन्हीका समय असंख्याते है एक कालचक्रके पेहला समयमें जीव जन्ममरण कीया फीर दुसरा कालचक्रके पेहला समयमें जन्ममरण करे वह गीनतीमें नहीं परंतु अन्य अस्पर्श समयके अन्दर जन्म-मरण करे वह गीनतीमें आवे इसी माफीक जन्ममरण करते करते सम्पुरण कालचक्रके सर्व समयोंपर जन्ममरण करे उन्हीकों कालापेक्षा बादर पुद्गलपरावर्तन केहते है। उन्हींमें भी काल अनन्त पुरण होते है।

(६) कालापेक्षा सूक्ष्म पुद्गलपरावर्तन—पूर्वोक्त काल-चक्रके प्रथम समय जन्ममरण कीया और दुसरे कालचक्रके दुसरे समय जन्ममरण करे तो गीनतीमें शेष समयमें जन्म-मरण करे तो गीनतीमें नहीं इसी माफीक तीसरा कालचक्रका तीसरा समयमें चोथा कालचक्रके चोथा समयमें एवं क्रमःसर समयमें जन्ममरण करे तो गीनतीमें आवे किन्तु विचमें अन्य समयमें जन्ममरण करे तो सब भव गीनतीमें नहीं इसी माफीक सम्पुरण कालचक्रकों पुरण करदे उन्हीकों कालापेक्षा सूक्ष्म पुद्गलपरावर्तन केहते है बादरसे सूक्ष्मकों काल अनन्तगुणा लगता है।

(७) भावापेक्षा बादर पुद्गलपरावर्तन—कर्मोंके अनु-

भाग तथा सर्व स्थितिका स्थान असंख्याते है उन्ही असंख्याते स्थानपर जन्ममरण करे जेसे एक स्थान जन्ममरण कर स्पर्श लिया है अब दुसरी दफे उन्ही स्थानपर अनेकवार जन्ममरण करे वह गीनतीमें नहीं आवे परंतु नहीं स्पर्श कीये हुवे स्थानकों स्पर्श कर मरे वह गीनतीमें आवे इसी माफीक अस्पर्श कीये हूवे सर्व स्थानोंकों जन्ममरण द्वारे स्पर्श करते करते सर्व अध्यवशय स्थानकों स्पर्श करे उन्हीकों भावापेक्षा बादर पुद्गलपरावर्तन केहते है। कालपूर्ववत्

(८) भावापेक्षा सूक्ष्मपुद्गल परावर्त्तन-पूर्वोक्त जो अध्यवशयेके असंख्याते स्थान है उन्हीकों क्रमःसर स्पर्श करे जेसे प्रथम स्थानकों स्पर्श कीया बादमें कालान्तर दुसरेकों स्पर्श करे अगर विचमे अन्यस्थानकों जन्ममरण कर स्पर्श करे वह गीनतीमे नही परन्तु क्रमःसर करे वह गीनतीमे आवे एवं तीजो चोथो पांचमो छटो यावत् क्रमःसर चरमस्थान स्पर्श करे इन्ही को भी अनन्तोकाल लागे है उन्हीको भावारुपेक्षासूक्ष्मपुद्गल पवावर्त्तर्न कहेते है और कितनेक आचार्योंकी यहभी मन्यता है कि जो नारककि जघ० १०००० वर्ष कि स्थितिसे लगाके ३३ सागरोपमकी स्थितिका अपंख्याते स्थान है उन्ही सर्वको अस्पर्शे कोंस्पर्श कर सब स्थानोंको जन्ममरणद्वारे पुरण कर देवे एवं देवतोंमे ३१ सागरोपम तथा मनुष्य तीर्यंचमे ज० अन्तर

मुहूर्तसे तीनपल्योपम तक के स्थिति स्थानको पूर्ववत् जन्म-मरण कर पुरण कर दे उन्हीको भावापेक्षा बादर पुद्गलपरावर्त्तन केहेते है और पुर्वोक्त स्थिति स्थानोंकों क्रमःसर १-२-३ यावत् चरमान्त समयतक जन्ममरणसे स्पर्श कर सम्पुरण स्थिति स्थानपुरण करे उन्हीको भावापेक्षासूक्ष्मपुद्गलपरावर्त्तन केहते है ग्रन्थान्तर वर्ण गन्धरस स्पर्श अगुरुलघुपर्या इन्ही पुद्गलोंकों जन्ममरणद्वारे अस्पर्शको स्पर्श करे (पूर्ववत्) उन्हीकों भावापेक्षाबादर पुद्गलपरावर्त्तन और क्रमःसर पुद्गलोंकों स्पर्श करे उन्हीकों भावापेक्षा सूक्ष्मपुद्गलपरावर्त्तन केहेते है.

द्रव्य क्षेत्र काल भाव इन्ही च्यारों प्रकार पुद्गलपरावर्त्तन के बादरकों अनन्ताकाल लगता है और जो बादरकों काल लगता है उन्हीसे भी सूक्ष्मको अनन्तगुणा काल लगता है (विस्तार देखो भगवतीजीके पुद्गलपरावर्तनका थोकडासे)

प्रत्येक संसारी जीव भूतकालमें द्रव्यक्षेत्रकालभावसे अनन्ते अनन्ते पुद्गलपरावर्तन कर आये है।

एक दफे सम्यक्त्व प्राप्ती हो जाते है तो फीर वह संसारमें रहे तो देशोना अर्द्ध पुद्गलसे ज्यादा नहीं रहेता है इस लिये भव्यात्मावोंकों इस वैरागमय थोकडेपर आवश्य ध्यान देना चाहिये कारन वीतरागके धर्मवीनो अपना जीव भी इसी आरापर संसारमें अनन्ते पुद्गलपरावर्तन कर

आया है उन्ही श्रमकों दुर करनेके लिये इस समय मनुष्य जन्मादि अच्छी सामग्री मीली है वास्ते श्रीसर्वज्ञ प्रणित् परमोत्तम धर्मका आराधन कर पुद्गलोकों जलाञ्जली देके अपना निज स्थानकों स्वीकार करना चाहिये ।

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नं. १६

(संख्यातादि २१ बोल)

शास्त्रकारोंने संख्याते असंख्याते और अनन्तेका २१ भेद कर बतलाये है जिस्मे संख्यातेके तीन भेद है (१) जघन्य संख्याते (२) मध्यम संख्याते (३) उत्कृष्ट संख्याते। जघन्य संख्याते दोय रूपकों केहते है मध्यम संख्याते तीन च्यार पांच छे सात यावत् उत्कृष्ट संख्यातेमें एक रूप न्युन हो। उत्कृष्ट संख्यातेके लिये च्यार पालोंका द्रष्टान्त कर बतलाते है।

पाला च्यार प्रकारके है (१) शीलाक (२) प्रतिशीलाक (३) महाशीलाक (४) अनवस्थित। प्रत्येक पाला एक लक्ष जोजनका लम्बा चोडा तीन लक्ष शोला हजार दोय सो सत्ताबीश जोजन तीन गाउ एकसो अठाविश धनुष्य साडातेर

अंगुल एक यव एक युक एक लिख छे वालाग्र पांच व्यवहारीया परमाणु इतनी परद्धि है दश हजार जोजनका उंडा उन्ही पालाके आठ जोजनकी जगती। जगतीके उपर आदा जोजनकी वेदिका है गोल आकार अर्थात् धान्यवरणोकि पाइलीके आकार पाला होते है।

१ शीलाक पालों

२ प्रतिशीलाक पालों

३ महाशीलाक पालों

४ अनवस्थित पालों

अनवस्थित पालों=केहनेका मतलब यह है कि जिन्होंकी एक स्थित नहीं है वह आगे चलके वतलाया जावेगा।

अनवस्थित पालों एक लक्ष योजनके विस्तारवालाकों सरसवके दाणोंसें पुरण वरे कि फीर जिस्के उपर एक दाणा नहीं ठेर सके। उन्ही भरे हूवे पालेकों कोइ देवता हाथके अन्दर लेके एक सरसव दाणा द्विपमें एक समुद्रमें नाखतों नाखतों चला जावे जहांतक वह पाला खाली न हो जावे,

पालाका चरमदाना जीस द्विपमें या समुद्रमें डाला है वहां अनवस्थित पाला जीस द्विप या समुद्रमें बीलकुल खाली हो गया है उन्ही द्विप या समुद्र जीतना लम्बा चोडा विस्तारवाला ओर दश हजार जोजनका उंडा आठ जोजनकि जगती आदा जोजनकि वेदिकावाला पाला बनाके सरसवके दानोंसे भरे फीर वहांसे उठाके आगेके द्विप समुद्रमें एकेक दाना डालते डालते चला जावे जहांतककि वह पाला खाली न हो अर्थात् उन्ही पालामें शेष एक दाना रहे वहांपर उन्ही पालाकों छोडदे ओर जो एक दाना रहा था उन्हीकों शीलाक नामका पालामें डालदे। कारणकि जो पेहले लक्ष जोजन परिमाणवाला पाला था उन्हीका परिमाण हो जानेके कारण पेहला दाना नहीं डाला था परंतु दुसरे दफे अनवस्थित होनेसे चरमदान डाला गया है।

जिस द्विप या समुद्रमें अनवस्थित पाला खाली हूवा था उन्ही द्विप या समुद्र जीतने विस्तारवाला (उंडा जगती वेदिका पेहलेवत्) पाला बनावे वह सरसवसे भरके आगेके द्विप समुद्रमें एकेक दाना डालते डालते चले जावे उन्ही पालामें यावत् चरमका एक दाना रहे वह शीलाक पालामें डाल देवे अब शीलाक पालामें दो दाना जमा हूवे। फीर जीस द्विप या समुद्रमें वह अनवस्थित पाला खाली हूवा है उतना विस्तारवाला पाला बनाके सरसवके दानासे भर आगेके द्विप समुद्रमें एकेक दाना डालते डालते चले जावे पालामें

चरमदाना रहे वह लेके शीलाक पालामें डालदे तब शीलाक पालामें तीन दाने जमा हूवे । जिस द्विप वा समुद्रमें अनवस्थित पाला खाली हूवा था उन्ही द्विप था समुद्र जीतना विस्तारवाला पाला बनाके सरसवके दानासे भरके आगेका द्विप समुद्रमें एकेक दाना डालते डालते चला जावे शेष चरमका दाना शीलाक पालामें डाले तब शीलाकपालामें च्यार दाने जमा हूवे । इसीमाफीक अनवस्थित पाला कि नवीनवी अवस्था होते एकेक दाना शीलाकमे डालते डालते लक्ष जोजनके विस्तारवाला शीलाकपाल भी समपुरण भरा जावे तब अनवस्थित पालाकों जहाँ खाली हूंवा है वहाही छोड दे और शीलाकपालको हाथमे ले के एकदाना द्विपमे एकदाना समुद्रमे डालते डालते शेष एकदाना रहे वह प्रतिशीलाकमे डाल देना अबशीलाक खाली पडा है पीछा अनवस्थितका पाला जो कि शीलकका चरमदाना जिस द्विप या समुद्रमे पडाथा उन्ही द्विप या समुद्र जीतना अनवस्थित पाला बनाके सरसवके दानेसे भरके द्विप समुद्रमे डालता जावे शेष एक दाना रहे वह फीरसे शीलाकपालामे डाले एकेक दाना डाल के पेहले कि माफीक शीलाकको भरदे फीर शीलाक को उठाके एकेक दाना द्विप वा समुद्रमें डालते डालते शेष एक दाना रहे वह प्रतिशीलाकमे डाले तब प्रतिशीलाकमे दो दाना जमां हूवे फीर अनवस्थित पालासे एकेक

दाना डालके शीलाक पालाको भरे ओर शीलकके एकेक दाना प्रतिशीलाकमे डालते जावे इसीमाफीक करते करते प्रतिशीलक पाला लच्च जोजनके परिमाण वाला भी सीखा सहित भरा जावे तब अनवस्थित ओर शीलाक दोनोको छोडके प्रतिशीलाकको हाथमे लेके एक दाना द्विपमे एक दाना समुद्रमे डालते डालते शेष एक दाना रहे वह महा शीलाकमे डलदेना जीस द्विपमे प्रतिशीलाक पाला खाली हूवा है इतना विस्तारवाला ओर भी अनवास्थितपाला वनाके सरसवसे भरके आगेके द्विप समुद्रमे एकेक दाना डालता जावे पूर्ववत् अनव-स्थितपालासे शीलाकपालाको एकेक दानासे भरदे ओर शीलाक भरा जावे तब शीलाकसे प्रतिशीलाक भरदे और प्रति शीलाक पालासे पूर्ववत् एकेक दना डालते डालते महाशीकको भरदे आगे पांचमो कोइ भी पाला नही है इसी वास्ते महाशीलाक पाला भरा हूवां ही रेहेना देवे ओर पीच्छले जो अनवस्थित पालासे शीलाक भरे ओर शीलाक पालासे प्रतिशीलाक भरदे प्रतिशीलाक खाली करनेको अब महाशीलाकपालामे दाना समावेस नही हो शक्ता है वास्ते प्रतिशीलाक भी भारा हूवा रहे और अनवस्थित पालासे शीलाक पाला भर देवे आगे प्रति शीलाकमें दाना समावेश हो नहीं शके इसी वास्ते शीलाक पाला भी भरा हूवा रहे और अन-वस्थित पाला भरा हूवा है वह शीलाक पालामें दाना समावेश

हो नहीं शके वास्ते अनवास्थित पाला भी भरा हूवा रहे इसी माफीक च्यारो पाला भरा हूवा है अब जो पीछे द्विप समुद्रमें सरसवके दाना डाला था उन्ही सर्व दोनोंको एकत्र कर एक रासी बनावे उन्ही रासीके अन्दर पूर्व भरे हूवे च्यारों पालोंके सरसव दाने मीला देवे उन्ही रासीके अन्दरसे एक दाना निकलकर शेष रासी है वह उत्कृष्ट संख्याते है अर्थात् दोय दानोंकों जघन्य संख्याते कहेते है और पूर्व जो बतलाये हूवे तीन पालोंसे द्विप समुद्रमें सरसवके दाने और च्यार पाले भरे हूवे दानोंकों मीलाके एक रासी करे तीन दानोंसे लगाके उन्ही रासीमें दो दाना कम हो वहांतक मध्यम संख्याते होते है ओर रासीमें एक दाना कम होना उन्हीकों उत्कृष्ट संख्याते कहे जाते है ओर वह रहा हूवा एक दाना रासीमें मीलादे अर्थात् समपुरण रासीकों जघन्य प्रत्येक असंख्याते केहते है अर्थात् पेहला डाले हूवे द्विप समुद्रके सर्व सरसव एकत्र करके भरे हूवे च्यारों पालोंके सरसव भी साथमें मीलाके सबकी एक रासी बनादे उन्ही रासीकों जघन्य प्रत्येक असंख्याते कहेते है ओर उन्ही रासीसे सरसवका एक दांना निकाल लेवे तब शेष रासीकों उत्कृष्ट संख्याते केहते है अगर दो दाना रासीसे निकाल लेवे तब शेष रासीकों मध्यम संख्याते केहते है ।

प्रत्येक जघन्य असंख्यातेकि जो रासी है उन्हीकों रासी अभ्यास करे यथा-कोई आचार्योंका मत्त है कि जितना दाना रासीमें है उन्हीकों उतना गुणा करना जेसे कल्पनाकि रासीमें १०० दाना हो तो सोकों सोगुणा करनेसे १०००० होता है। दुसरा आचार्योंका मत्त है कि रासीमें जितने दाने है उन्हीकों उतनीवार गुणा करना जेसे रासीमें १० दानोंकि कल्पना कि जाय।

१—१—१—१—१—१—१—१—१—१
१०-१०-१०-१०-१०-१०-१०-१०-१०-१०

---

(१) १०० प्रथम दशकों दशगुणा करतों.
(२) १००० सोकों दशगुणा.
(३) १०००० हजारकों दशगुणा.
(४) १००००० दशहजारको दशगुणा
(५) १०००००० लक्षको दशगुणा
(६) १००००००० पूर्वकों दशगुणा
(७) १०००००००० ,, ,,
(८) १००००००००० ,, ,,
(९) १०००००००००० ,, ,,
(१०) १००००००००००० ,, ,,

यह तों कल्पनाकि रसी हूइ परन्तु जो जघन्य प्रत्येका

संख्याते कि रासकों इसीमाफिक असंख्याते वार गुणे करतों जो रासी आवे उन्हीकों जघन्य युक्ता असंख्याते केहेते है अगर उन्ही रासीसे दो दाने निकाल के फीर रासीकी पृच्छा करे तो वह दो दाने कम कीये हूइ रासी मध्यम प्रत्येक असंख्याते है अगर उन्ही रासीमे एक दाना डालके पृच्छा करे तों उत्कृष्ट प्रत्येक असंख्याते है और दुसरा दाना डाल दे तो जघन्य युक्ता असंख्याते होते है। (एक आविलका के समय परिमाण)

जघन्य युक्ता असंख्याते कि जो रासी है उन्हीकों पूर्ववत् रासी अभ्यासकर रासीसे दो दाने निकालके पृच्छा करतों वह रासी मध्यम युक्ता असंख्याते है अगर एक दाना डालके पृच्छा करते उत्कृष्ट युक्ता असंख्याते है और रहा हूवा एक दाना डालके पृच्छा करे तों जघन्य असंख्याते असंख्याता होते है.

जघन्यासंख्याते असंख्यात कि रासीको रासी अभ्यास पूर्ववत् करे उन्ही रासीसे दो दाना निकालके पृच्छा करे तों शेष रासी मध्यमासंख्याते असंख्यात है एक दाना रासीमे मीला दे तों उत्कृष्ट असंख्याते असंख्यात होता है और दुसरा दाना जो मीला दे तों जघन्य प्रत्येक अनन्ता होता है.

जघन्य प्रत्येक अनन्तों कि रासीकों पूर्ववत् रासी अभ्यास करे उन्ही रासीसे दो दाना निकालके शेष रासी कि

पृच्छा करे तो वह रासी मध्यम प्रत्येक अनन्त है अगर एक दाना रासीमे मीलाके पृच्छा करे तों उत्कृष्ट प्रत्येक अनन्ता होता है और दुसरा दाना मीलाके पृच्छा करे तों जघन्ययुक्ता अनन्ते होते है.

जघन्य युक्ता अनन्ते कि रासीकों रासी अभ्यास पूर्ववत् करे उन्ही रासीसे दो दाना निकालके पृच्छा करतों मध्यमयुक्ता अनन्ता होता है उन्ही रासीमें एक दाना डालके पृच्छा करतों उत्कृष्ट युक्ता अनन्ते होते है और दुसरा दाना डालके पृच्छा करतों जघन्य अनन्ते अनन्ता होता है यह विधि अनुयागद्वार सूत्रयुक्त कही है।

मत्तान्तर एक आचार्यमहाराज केहते है कि जो उपर चोथो जघन्ययुक्ता असंख्याते है उन्हीका वर्ग करना जीतनेकों जीतने गुणा करना जेसे दशकों दशगुणा करनेसे १०० होता है इसी माफीक असंख्यातेकों असंख्यातगुणा करनेसे जो रासी हो उन्हीकों सातमा जघन्य असंख्याते असंख्यात केहते है अर्थात् रासीसे दो दाना निकालनेसे पांचमा मध्यम युक्ता असंख्याता होता है एक दाना मीलादेनेसे उत्कृष्ट युक्ता असंख्याते होते है दुसरा दाना मीलानेसे जघन्य असंख्याते असंख्यात होता है।

जघन्य असंख्याते असंख्याताकि जो रासी है उन्ही

रासीको तीन दफे वर्ग करना जेसे कि पांचकों पेहले वर्ग करनेसे २५ होता है दुसरी दफे २५ को वर्ग करनेसे ६२५ होता है तीसरी दफे ६२५ कों ६२५ गुणासे ३९०६२५ होता है इसी माफीक सातमा बोल जो असंख्याते असंख्यात है उन्हीकों त्रीवर्ग करके उन्हीके साथ १० बोल मीलाना.

(१) धर्मास्तिकायके सर्वप्रदेश.
(२) अधर्मास्तिकायके सर्वप्रदेश.
(३) लोकाकशास्तिकायके सर्वप्रदेश.
(४) एक जीवके आत्मप्रदेश.
(५) कर्मोंकि स्थितिबन्ध अध्यवसाय स्थान.
(६) अनुभाग-शुभाशुभ प्रकृतिके रसविभाग.
(७) मन वचन कायाके योगस्थान अर्थात् वीर्य अंस.
(८) कालचक्रके समय.
(९) प्रत्येक जीवोंका शरीर.
(१०) निगोद जीवोंका शरीर (असंख्याते औदारीक शरीर है वह)

पूर्वोक्त रासीके अन्दर यह दश बोल मीलाके रासीकों तीनवार पूर्ववत् वर्ग करे वह रासीसे दो दाने निकालके पृच्छा करे तो आठमा मध्यम असं० असंख्यात होता है एक दाना डालके पृच्छा करे तो उत्कृष्ट असंख्याते असंख्यात होता है

और दुसरा दाना डालके पृच्छा करे तो जघन्य प्रत्येक अनन्ते होता है उन्ही रासीकों और भी पूर्ववत् त्रीवर्ग करके दो दाना निकालनेसे मध्यम प्रत्येक अनन्ते होता है एक दाना मीलादेनासे उत्कृष्ट प्रत्येक अनन्ते होते है और दुसरा दाना मीलादेनेसे जघन्ययुक्ता अनन्ते होते है (इतने अभव्य जीव है)

जघन्य युक्ता अनन्ते को त्रीवर्ग-पूर्ववत् तीनवार वर्ग करके जो रासी आवे उन्ही रासीमे दो दाना निकालके शेष रासीकी पृच्छा करे तो वह रासी पांचमा मध्यम युक्ता अनन्ता होता है एक दाना डालके पृच्छा करे तो जघन्य अनन्ते अनन्ता होता है ।

जघन्य अनन्ते अनन्त को और भी तीनवार वर्ग करे तो भी उत्कृष्ट अनन्ते अनन्त न हुवे उन्ही रासीके अन्दर ६ बोल और भी मीलावे यथा--

(१) सिद्धोंके सर्व जीव (अनन्ते है)
(२) निगोदके जीव (सूक्ष्मबादर निगोद)
(३) वनास्पतिके जीव (प्रत्येक और साधारण)
(४) भूत भविष्य वर्तमान कालका समय
(५) परमाणु वादि सर्व पुद्गल स्कन्ध
(६) लोकालोक के आकाश प्रदेश

पूर्वोक्त रासीके अन्दर यह ६ बोल मीलाके ओर भी तीनवार वर्ग करना ओर वह वर्ग रासी हो उन्हीके अन्दर केवलज्ञान केवलदर्शनके सर्व पर्याय मीलानेसे उत्कृष्ट अनन्ते अनन्त होता है परन्तु लोकालोकमे एसा कोइ भी पदार्थ नही है वास्ते शास्त्रकारोने यह सर्व को आठमा मध्यम अनन्ते अनन्तमे ही गीना है तत्त्वकेवलीगम्य ।

२१ बोलोकी संख्या.

(३) संख्याते के तीन बोल जघन्य मध्यम उत्कृष्ट

(९) असंख्याते के नव बोल (१) जघन्य प्रत्येक असंख्याते, (२) मध्यम प्रे० अ, (३) उ० प्र० अ०, (४) जघन्ययुक्ता असंख्याते, (५) म० युक्ता असं०, (६) उ० यु० असं०, (७) जघन्य असंख्याते असंख्यात, (८) मध्यम असंख्याते असं० (९) उत्कृष्टासंख्याते असंख्यात इति.

(९) अनन्ते के नव बोल (१) जघन्य प्रत्येक अनन्ता (२) मध्यम प्र० अनन्ते (३) उ० प्र० अनन्ते (४) ज० युक्ता अनन्ते (५) मध्यम युक्ता अनन्ते (६) उत्कृष्ट युक्ता अनन्ते (७) जगन्य अनन्ते अनन्ता (८) मध्यमानन्ते अनन्ता (९) ० उत्कृष्टानन्ते अनन्ता इति.

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

हीसाब १९७७ का.

जमा.

६५५।	पहेला पर्युषणमें सुपनादिकी आवन्दका.
१२०५।	दुजा पर्युषणमें सुपनादिका आवन्दका.
४।=	आठवा भागकी बचत.
१७५	भगवतीसूत्रकी पूजाका रु. ३२५ के अन्दरसे.
२०३६॥।=	

नावे.

१७७॥	नन्दीसूत्र १००० का.
१०३॥।	अमे साधु शा माटे थया १०००
३५६।	सात पुष्पोंका गुच्छ १०००
६१॥।	शीघ्रबोध भाग १० वा १०००
२७३॥	शीघ्रबोध भाग ११ वा १०००
२७३॥	शीघ्रबोध भाग १२ वा १०००
५११ }	शीघ्रबोध भाग १३ वा १००० शीघ्रबोध भाग १४ वा १०००
२३६।	द्रव्यानुयोग प्र–प्र. १५००
१३।=	शीघ्रबोध भाग ६ का लागता.
२०३६॥।=	

श्री संघके सेवक,

मेघराज मोणोयत.

मु० फलोधीवाला.

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला पुष्प नं० ५१

शीघ्रबोध भाग १५ वां

लेखकः—

मुनिश्री ज्ञानसुन्दरजी

विपयानुक्रमणका ।

विपय ।	पृष्ठ
१ प्रश्न ७१ उत्तराध्ययन अ० २९	१
२ नमिराज ऋषीके प्रश्नोत्तर	२५
३ केशी गौतमके प्रश्नोतर	३४
४ प्रदेशी राजाके प्रश्नोत्तर	४७
५ रोहा मुनिके प्रश्नोत्तर	७४

श्री रत्नप्रभासूरि सद्गुरुभ्यो:

अथश्री

शीघ्रबोध

अथवा

थोकडा प्रबन्ध

भाग १५ वां

संग्राहक:—

श्रीमदुपकेश (कमला) गच्छीय मुनि

श्रीज्ञानसुन्दरजी (गयवरचन्दजी)

प्रकाशक:—

शाह हीरचन्दजी फूलचंदजी कोचर

मु० फलोधी (मारवाड)

प्रथमा वृत्ति १,००० वीर संवत् २४४८

विक्रम सं० १९७८

'जैन विजय' प्रेस—सूरतमें मूलचंद किसनदास कापडियाने मुद्रित किया।

प्रस्तावना ।

प्यारे वाचक वृन्दों ।

शीघ्रबोध भाग १–२–३–४–५–६–७–८–९–१०–११–१२–१३–१४ आप लोगोंकि सेवामें पहुंच चुका है। आज यह १५ वां भाग आपके कर कमलोंमें ही उपस्थित है। इन्ही १५ वा भागके अन्दर पूर्व महाऋषियों, स्वआत्म–कल्याण और पर आत्मावोंपर उपकार करनेके लिये तथा आत्मसत्ता प्रगट करनेवाले महात्वके प्रश्न तथा प्रश्नोके उत्तर सिद्धान्तोद्धारे शकलित किये थे। उन्होंको सुगमताके साथ हरेक मोक्षाभिलाषीयोंके सुख सुख पूर्वक समझमें आशके इस हेतुसे मूलसुत्रोंसे भाषान्तर कर आप कि सेवामें यह लघु किताब भेजी जाती है आशा है कि आप लोग इस आत्म कल्याणमय प्रश्नोत्तर पढ़के पूर्व महाऋषि-योंके उद्देशको सफल करोगे शम् ।

ॐ

श्री रत्नप्रभसूरि सद्गुरुभ्योनमः

शीघ्रबोध भाग १५ वां।

प्रश्नोत्तर नं० १।

सूत्र श्री उत्तराध्ययनजी अध्य० २९

(७१ प्रश्नोत्तर)-

आत्म कल्याण करनेवाले भव्यात्मावोंके लिये निम्नलिखत प्रश्नोत्तर बडे ही उपयोगी है वास्ते मौक्ताफलके मालाकि माफिक हृदयकमलके अन्दर स्थापित कर प्रतिदिन सुधारस पान करना चाहिये।

(१) प्रश्न—संवेग (वैराग) संसारका अनित्यपना और मोक्षकि अभिलाषा रखनेवाले जीवोंको क्या फलकि प्राप्ती होती है।

(उत्तर) संवेग (वैराग) कि भावना रखनेसे उत्तम धर्म करनेकि श्रद्धा होगा। उत्तम धर्मकि श्रद्धा होनेपर संसारीके पौद्गलीक सुखोंको अनित्य समझेगा अर्थात परमवैराग्य भावको प्राप्त होगा। जब अन्तानुबंधी क्रोध मान माया लोभका क्षय करेगा, फिर नये कर्म न बन्धेगा इन्हीसे मिथ्यात्वकि बिलकुल विशुद्धि होगा। जब सम्यक् दर्शनकि आराधना करता हुवा उसी भवमें मोक्ष जावेगा, अगर पेस्तर किसी गतिका आयुष्य बन्ध भी गया हो तो भि तीन भवोंमें तो आवश्यहि मोक्ष जावेगा।

(२) प्रश्न—निर्वेद (विषय अनाभिलाषा) भाव होनेसे जीवोंको क्या फलकि प्राप्ती होती है?

(उ०) निर्वेद होनेसे जीव जो देवता मनुष्य और तीर्यंच सम्वन्धी कामभोग है उन्होंसे अनाभिलाषी होता है फिर शब्दादि सर्व कामभोगोंसे निवृति होता है फिर सर्व प्रकारके आरम्भ सारम्भ और परिग्रहका त्याग कर देते है एसा त्याग करते हुवे संसारका मार्गको बीलकुल छेदकर मोक्षका मार्ग पर सीधा चलता हुवा सिद्धपुर पटनकों प्राप्त कर लेता है।

(३) प्रश्न-धर्म करनेकि पूर्ण श्रद्धावाले जीवोंको क्या फल?

(उ०) धर्म करनेकि पूर्ण श्रद्धावाले जीवोंको पूर्व भवमें साता वेदनिय कर्म किये जिन्होंसे इस भवमें अनेक पौदगलीक सुख मीला है उन्होंसे विरक्त भाव होते हुवे गृहस्थावासका त्याग कर श्रमण धर्मको स्वीकार कर तप संयमादिसे शरीरी मानसी दु:खोंका छेदन भेदन कर आव्याबाद सुखोंमें लोक अग्र भागपर विराजमान हो जाते है।

(४) प्रश्न–गुरु महाराज तथा स्वधर्मी भाइयोंकी शुश्रषा पूर्वक सेवा भक्ति करनेसे जीवोंको क्या फल होता है?

(उ) गुरु महाराज तथा स्वधर्मी भाइयोंकि शुश्रषापूर्वक सेवा भक्ति करनेसे जीव विनयकि प्रवृतिकों स्वीकार करता है इन्हीसे जो बोध बीजका नाश करनेवाली आसातनाकों मूलसे उखेड देता है अर्थात आसातना नहीं करनेवाला होता है। इन्हींसे दुर्गतिका निरूद्ध होता है तथा गुरु महाराजादिकी गुण कीर्ति करनेसे सद्गति होती है सदगति होनेसे मोक्षमार्ग (ज्ञान दर्शन चरित्र) कों विशुद्ध करता है और विनय करनेवाला लोकमें प्रशंस्या करने लायक होता है सर्व कार्यकि सिद्धि विनयसे होती

है एक अध्यात्मावोंको विनय करता हुवा देखके अन्य जीवोंको भी विनय करनेकि रुचि उत्पन्न होती है। अंतिम विनय भक्तिका फल है कि जन्मजरा मरणादि रोगोंको क्षय करके मोक्षकों प्राप्त कर लेता है ।

(५) प्रश्न—लगे हूवे पापकि आलोचना करनेसे जीवोंको क्या फल होता है ।

(उ०) लगे हूवे पापकि आलोचना करनेसे जो मोक्षमार्गमें विघ्नभूत और अनन्त संसारकि वृद्धि करनेवाले मायाशल्य, निदानशल्य मिथ्या दर्शनशल्यको मुलसे निष्ट कर देते है । इन्होंसे जीव सरल स्वभावी हो जाते है सरल स्वभावी होनेसे जीव स्त्रिवेद नपुंसकवेद नही बन्धे अगर पेहले बन्धा हुवा हो तो निर्ज्जरा (क्षय) कर देते है । वास्ते लगे हुवे पापकि आलोचना करनेमें प्रमाद बिलकुल न करना चाहिये ।

(६) प्रश्न—अपने किये हूवे पापकि निंद्या करनेसे क्या फल होता है ?

(उ०) अपने किये हूवे पापकि निंद्या करनेसे जीवोंको पश्चाताप होता है अहो मैंने यह कार्य बूरा किया है । एसा पश्चाताप करनेसे जीव वैराग्य भावकों स्वीकार करता है एसा करनेसे जीव अपूर्व गुणश्रेणिका अवलम्बन करते हुवे जीव दर्शन मोहनिय कर्मकों नष्ट करता हूवा निज आवास (मोक्ष) में पहुंच जाता है ।

(७) प्रश्न—अपने किये हूवे पापोंकों गुरु महाराजके आगे घृणा करते हूवे जीवोंको क्या फल होता है ?

(उ०) अपने किये हुवे पापोंको गुरु सन्मुख घृणा करनेसे प्रथम तो अपनि आत्माको विशुद्ध बनानेके लिये निज दोष प्रगट करनेका स्थान मीला है इन्हींसे अप्रसस्थ योगोंका निष्ट करता हुवा प्रशस्थ योगोंको स्वीकार करता है एसे करनेसे जीवोंके ज्ञानावर्णीय दर्शनावर्णीय कर्मोका दल आत्माके ज्ञानदर्शन गुणको रोक रखा है उन्ही कर्मदलको निष्ट करता है इन्हींसे अपूर्व ज्ञानदर्शन गुणकि प्राप्ती होती है।

(८) प्रश्न—सामायिक (षटावश्यकसे पेहलावश्यक) करनेसे क्या फल होता है ?

(उ०) सा० शत्रु मित्रोंपर समभाव रूप जो सामायिक करते हैं उन्ही जीवोंको सावद्य—पापकारी योगोंका वैपार नहीं रहता है अर्थात नवा कर्मोका बन्ध नहीं होता है।

(९) प्रश्न—चौवीस तीर्थंकरोंकि स्तुतिरूप चोविस्थो (दुसरा वश्यक) करनेसे क्या फल होता है ?

(उ) चौवीस तीर्थकरोंकि स्तुति करनेसे दर्शन (सम्यक्त्व) विशुद्ध होता है अर्थात् गुणी जनोंका गुण करनेसे अन्तःकरण स्वच्छ हो जाता है ।

(१०) प्रश्न—गुरुमहाराजको द्वादशाव्रतन वन्दन (तीसराव-श्यक) करनेसे क्या फल होता है ?

(उ) गुरु वन्दन करनेसे जीवोंके निचगौत्रका बन्धनहीं होता है अगर पेहला हूवा होतो क्षय हो जाता है और उच्च गोत्र यशोकीर्ति शुभ शौभाग्य सुस्वर आदि अच्छे प्रकृतीयोंकि प्राप्ती होती है अर्थात् गुरवादिको वन्दन करनेसे अपनि लघुता

और दुसरेका बहूमान होता है इन्होंसे जीव कर्मोंसे लघुभूत होता है।

(११) प्रश्न–प्रतिक्रमण (चोथावश्यक) करनेसे जीवोंकों क्या फल होता है ?

(उ) प्रतिक्रमण करनेसे जो जीवोंके व्रतरूपी नावाके अति-चार रूप हूवा छेद्र उन्हींका निरूद्ध होता है एसा करनासे जीवोंकों आश्रव और सबले दोषोंसे निवृतिपना होता है इन्होंसे अष्टप्रवचन कि माता रूपी संयम तपके अन्दर समाधिवान्त पणे विचारे।

(१२) प्रश्न–कार्योत्सर्ग (पांचमावश्यक) करनेसे क्या फल होता है ?

(उ) कायोत्सर्ग करनेसे जीव भूत वर्तमान कालके प्रायश्चितको विशुद्ध करता है जैसे भारके वहान करनेवालेका भार उतर जानेसे सुखी होता है वेसे ही प्रायश्चित उतर जानेपर जीव भी सुखी हो जाते है।

(१३) प्रश्न–पच्चक्खान (छटावश्यक) करनेसे क्या फल होता है।

(उ) पच्चक्खान करनेसे जीवोंकि इच्छाका निरूद्ध होता है ऐसा होनेसे सर्व द्रव्यसे ममत्वभाव मीट जाता है ममत्व न रहनेसे जीव शीतलीभूत होके संयमके अन्दर समाधिपने विचरता है।

(१४) प्रश्न –"थाइथुइ मंगलं" चैत्यवन्दन करनेसे क्या फल होता है ?

(उ) चैत्यवन्दन करनेसे जीवोंको बोधबीज रूपि ज्ञान दर्शन चरित्र कि प्राप्ती होती है इन्होंसे अन्तः क्रिया करके मोक्ष

पदकी आराधन करते है तथा शेष कर्म रेहजानेपर वैमानिक देवोंमें जाने योग्याराधना होती है वहांसे मनुष्य होके मोक्ष जाता है।

(१५) प्रश्न–काल प्रतिलेखन (प्रतिक्रमण करनेके बाद स्वद्याय करनेके लिये आकाशकि १० अस्वद्यायका प्रतिलेखन) करनेसे क्या फल होता है ?

(उ) कालप्रतिलेखन करनेसे जीवोंके ज्ञानावर्णिय कर्मका क्षय होता है कारण कालप्रतिलेखन करने पर सर्वसाधु सुख पूर्वक सूत्रोंका पठन पाठन कर शक्ता है इन्होंसे ज्ञानपदकी आराधना होती है ?

(१६) प्रश्न–लगे हूवे पापोंका गुरु मुखसे आगमोक्त प्रायश्चित लेनेसे जीवोंको क्या फल होता है ?

(उ) गुरु मुखसे पापोंका प्रयाश्चित लेनेसे पापोंसे विशुद्ध होते हुवे निरातिचार हो जाते हैं इन्हीसे आचार धर्मका आराधिक होते हूवे मोक्ष मार्गकोंनिर्मल करता है।

(१७) प्रश्न–किसी भी जीवोंके साथ अनुचित वर्ताव होने पर उन्हिसे माफी अर्थात् क्षमत्क्षामणा करनेसे जीवोंको क्या फल होना है।

(उ) किसी० सर्व जीवोंसे क्षमत्क्षामणा करनेसे अन्तःकरणसे प्रशस्थ भावना होती है प्रशस्थ भावना होनेसे सर्व प्राण भूत जीव सत्वसे मित्र भावना उत्पन्न होता है इन्होंसे अपने भावोंकि विशुद्धि होती है और सर्व प्रकारके भयसे मुक्त होते हूवे निर्भय होके निज स्थानकों प्राप्त कर लेते हैं।

(१८) प्रश्न–स्वाद्याय (आगमोकि आवृति) करनेसे क्या फल होता है ?

(उ) स्वाद्याय करनेसे जीवोंका अध्यवशाय ज्ञान रमणतामें रेहते हैं इन्हींसे ज्ञानावर्णिय कर्मका क्षय होता है तथा सर्व दु:खोंकि अन्तः करनेमें यह सूत्रोंकि स्वद्याय मौख्य कारण भूत है।

(१९) प्रश्न–वाचना सूत्रोंकि वाचना देना तथा वाचना लेनेसे जीवोंको क्या फल होता है ?

(उ) सूत्रोंकि वाचना देनेसे कर्मोंकि निर्ज्जरा होती है और सूत्र धर्मकि अनासातना अर्थात सूत्रोंका बहुमान होता है वाचना देनेसे तीर्थ धर्मका आलम्बन होता है तीर्थ धर्मका आलम्बन करता हूंवाजीव कर्मोंकि महान् निर्जारा और संसारका अन्तः करता है शासनका आधार ही आगमोंकि वाचना पर रहा हुवा है वाचना देने लेनेसे ही शासन आमोध चल रहा है वास्ते वाचना देने लेनेमें समय मात्रका प्रमाद न करना चाहिये।

(२०) प्रश्न–ज्ञान वृद्धिके लिये तथा शंका होनेपर प्रश्न पूच्छते है उन्नीं जीवोंको क्या फल होते है।

(उ) प्रश्न पुच्छनेसे सूत्र अर्थ और सूत्रार्थ विशुद्ध होते हैं और जो शंका होनेसे कक्षामोहनिय उत्पन्न हुई थी वह प्रश्न पुच्छनेसे निष्ट हो जाती है चित्त समाधि होने पर नये नये ज्ञान कि प्राप्ती होती है।

(२१) प्रश्न–सिद्धान्तोंको वारवार पठन पाठन करनेसे क्या फल होता है ?

(उ) सिद्धान्त० विस्मृत हो गये सूत्रार्थ कि स्मृति होती है वारवार पठनपाठन करनेसे अक्षर लब्धि तथा पदानुस्वारणी लब्धियोंकि माप्ती होती है ।

(२१) प्रश्न—अनुपेक्षा-सुत्रार्थ पर प्रति समय उपयोग देता हुवा अनुभव ज्ञानकी विचारण करते हूवे जीवोंको क्या फल होता है ।

(उ) अनुपेक्षा—अनुभव ज्ञानसे विचारणमें उपयोग कि प्रवृति होनेसे आयुष्य कार्मकों छोड़के शेष सातों कर्मोका घन प्रबन्ध होतो शीतल करे, दीर्घकालकि स्थितिवाले कर्मोको स्वल्पकालकि स्थितिवाला कर देते है, तीव्र रसवाले कार्मोको मंद रस वाला कर देते है बहुत प्रदेशवाले कर्मोकों स्वल्प-प्रदेशवाला करे, आयुष्य कर्म स्यात् बन्धे (वैमानिकका) स्यात् न बन्धे (मोक्ष जावे तो) आसाता वेदनिय वारवार नहीं बन्धे इस आरापार संसार समुद्रको शीघ्र तिरके पारपामें अर्थात् अनुपेक्षा है वह कर्मोके लिये बड़ा भारी शस्त्र है ।

(२३) प्रश्न—श्रोतागणकों धर्म कथा सुनानेसे क्या फल होता है ।

(उ) धर्मकथा केहनेवाला हजारों गमे जीवोंका उद्धार करता है इन्होंसे कर्मो कि महान् निर्ज्जरा होती है और साथहीमें शासनकी प्रभावना होती है इन्सोंसे भविष्यमें अच्छे फलका अस्वादन करता हुवा मोक्ष जावेगा ।

(२४) प्रश्न—सूत्रोंकि आराधना करनेसे क्या फल होता है ।

(उ) सुत्रोंकि सेवा भक्ति पूजन पठन पाठन करनेसे जीवोंको जो संसारमें भ्रमन करानेवाला अज्ञान है उन्सोंकों निष्ट करता हुवा सर्वप्रकारका कलेसकों करकर आप समाधिभावसे उत्तम स्थान प्राप्त करता है ?

(२५) प्रश्न-श्रुतज्ञान पर एकाग्रमनकों लगा देनेसे क्या फल होता है।

(उ) श्रुत ज्ञान पर एकाग्र चित्त लगा देनेवालेकों पाप वैपारोंमें जाते हुवे मनका निरूद्ध होता है नये कर्म नहीं बन्धते हैं पूर्व कर्मोंकि निर्ज्जरा होती है भविष्यमें निर्मल ज्ञानकि प्राप्ती होती है।

(२६) प्रश्न-सत्तरा प्रकारके संयम आराधन करनेसे क्या फल होता है ?

(उ०) संयम (शत्रु मित्र पर समभाव) पालनेसे जीवोंके आश्रवरूपी नालासे नये कर्म आना बन्ध हो जाता है।

(२७) प्रश्न-बारह प्रकारके तप करनेसे क्या फल होते है ?

(उ०) तपश्चर्य करनेसे जीवोंके पूर्व कालमें संचय किये हूवे कर्मोका क्षय होता है कारण तप है वह इच्छाका निरूद्ध करना है और इच्छाका निरूद्ध करना वहा ही कर्मोकी निर्ज्जर है

(२८) प्रश्न-पुराणा कर्मोका क्षय होनेसे जीवोंकों क्या फल होता है ?

(उ०) पुराणा कर्मोका क्षय होनेसे जीवोंकि अन्तः क्रिया होती है अन्तीम क्रिया होनेसे जीव अनन्तकालकि सों कर्मोसे प्रीत थी उन्हीको तोडके मोक्षमें पधार जाते है।

(२९) प्रश्न–सुखशय्यामें सयन करनेसे क्या फल होता है।

(उ०) सुख शय्यापर सयन करनेसे जीवोंके जो चंचलता चपलता अधीर्यता आतुरतादि प्रकृतियों है उन्होंका निष्ट होजाता है इन्होंसे कोमलताभाव होजाते है तब पर जीवोंको दुखी देखते ही कम्पा होती है और सुख शय्याका सेवन करनेसे शोक रूपी दुश्मनका नाश होता है इन्हीसे चारित्र मोहनीय कर्म मूलसे चला जाता है तब सुख शय्याके अंदर चरित्र धर्मसे रमणता करता हुवा श्रेणीका अवलम्बन करके शिव मन्दिर पर पहुंच जाते है।

(३०) प्रश्न–अप्रतिबंद्ध (गृहस्तादिका परिचयत्याग) होनेसे क्या फल होता है।

(उ०) अप्रतिबंध होनेसे निःसंग (संगरहित) होजाता है निःसंग होनेसे चित्तका एकाग्रपणा रेहता है चित्तका- एकाग्रपणा रेहनेसे राग द्वेष तथा इन्द्रियोंकी विषयका तीस्कार होता है एसा होनेसे जीव आनन्दचित्तसे स्वकार्यसाधन करता हुवा अप्रतिबन्धपणे विचरे ?

(३१) प्रश्न–पशु नपुंसक स्त्रियों रहित मकानमें रेहनेसे क्या फल होता है।

(उ०) एसा मकानमें रेहनेसे चरित्रकी गुप्ती अच्छी तरहेसे पल शकती है और विगई आदिसे त्याग करनेकी इच्छा होती है

---

१ श्री स्थानायांग सूत्रके चतुर्थ स्थानेमे च्यार सुख शय्या है।

(१) निग्रन्थके वचनोंमें शंका कक्षा न करना।

(२) काम भोगकि अभिलाषा रहित होना।

(३) शरीरकि शुश्रषा विभूषा न करना।

(४) आहार पानीकि शुद्ध गवेषना करना।

इन्होंसे ब्रह्मचर्य व्रतकी विशुद्धता करते हुवे जीव अष्ट कर्मोकी गंठीको छेदके मोक्ष जाते है ?

(३२) प्रश्न–विषय कषायसे विरक्त होनेसे क्या फल होता है ?

(उ०) विषय कषायसे विरक्त होनेसे जीव पाप कर्म नहीं करते है इन्होंसे अध्यवशाय रूपी शस्त्र तीक्ष होते है। उन्होंसे च्यारगतिरूप विष वेलीकों तत्काल छेदके संसारसे विमुक्त हो जाते हैं।

(१३) प्रश्न–संभोग=साधुवोंके तथा साध्वियोंके आपसमें वस्त्रपात्र वाचना आहार पाणी आदि लेने देनेका संभोग होता है उन्होका त्याग करनेसे जीवोंको क्या फल होता है।

(उ०) संभोगका त्याग करनेसे जीव अवलम्बन (आसा) का क्षय करता है अर्थात् संभोग होनेसे एक दूसरेकी साहिताकी आसा करते है और त्याग करनेसे आप निरालम्बन होजाते है। निरालम्बन होनासे अपनी स्व सत्तापर ही कार्य करनेमें पुरुषार्थ करते है और अपना ही लाभमें संतुष्ट रेहते हुवे दुसरी सुख शय्या-का आराधन करते हुवे सिंहकी माफीक विचरे।

(३४) प्रश्न–औपधिवस्त्र पात्रादिका त्याग करनेसे क्या फल होना है।

(उ) औपधिके त्याग करनेसे "अपलिमंत्थ" अर्थात औपधि है वह संयमका पलिमंत्थ हैं कारण औपधि रखनेसे उन्होंको देखना संरक्षन करनादि अनेक विकल्प करना पडता है उन्होंसे निवृति

होनेसे शीतोष्ण कालमें किसी कीस्मकि तृष्णा नहीं रहेती है इन्होंसे आनन्द मगलसे संयम यात्रा निर्वाहा शक्ते है।

(३९) प्रश्न—सदोष आहारपाणीका त्याग करनेसे क्या फल होता है ?

(उ) सदोष आहारादिका त्याग करनेसे जिन्ही जीवोंके शरीरसे आहार बनता था उन्ही जीवोंकी अनुकम्पाको स्वीकार करता हूवा अपने जीवनेकी आसाका परित्याग करते हूवे जो आहार संबन्धी कलेश था उन्होंसे भी निवृति होके सुख समाधीके अन्दर रमणता होती है।

(७६) प्रश्न—कषाय (क्रोधादि)का त्याग करनेसे क्या फल होता है ?

(उ) कषायका त्याग करनेसे जीव निर्कषाय अर्थात् वीतराग भावी होजाता है वीतरागी होनासे सुख और दुःखको सम्यक् प्रकारे जानता हूवा अकषाय स्थानपर पहूंच जाता है।

(३७) प्रश्न—योगों (मन वचन कायके वैपार)का त्याग करनेसे क्या फल होता है ?

(उ) योगोंका त्याग करनेसे जीव अयोगावस्थाको स्वीकार करता है अयोगी होनेपर नवा कर्म नहीं बन्धते है चवदमें गुण-स्थान अयोगीगुणश्रेणीपर छडते हूवे पूर्व कर्मोकी निर्ज्जरा कर शीघ्र ही मोक्षमें जाते है।

(३८) प्रश्न—शरीर (तेजस कार्मणादि)का त्याग करनेसे

(उ) तेजस कार्मण शरीर जीवोंकि अनादिकालसे साथ ही लगे हुवे हैं और मोक्ष जाते समये ही इन्होंका त्याग होते हैं वास्ते तेजस कार्मण शरीरका त्याग करनेसे सिद्ध अतिश्यको प्राप्त करते हूवे लोकके अग्र भाग पर जाके विराजमान होजाते है अर्थात् अशरीरी होजाते है।

(३९) प्रश्न–शिष्यादिकि साहिताका त्याग करनेसे क्या फल होता है ?

(उ०) साहिता लेना (इच्छा) यह एक कमजोरी ही है वास्ते साहिताका त्याग करनेसे जीव एकत्व पणाको प्राप्त करते है एकत्व होनेसे जीवको काम क्रोध कलेश शब्दादि नही होता है स्वसत्ता प्रगट हो जाती है इन्होंसे तप संयम संवर ज्ञान ध्यान समाधि आदिमें विघ्न नही होता है निर्विघ्नता पूर्वक आत्म कार्यको साधन कर शक्ता है।

(४०) प्रश्न–भात्त पाणी (संथारा) का त्याग करनेसे क्या फल होता है ?

(उ०) आलोचना करके समाधि सहित भात पाणीका त्याग करनेसे जीवोंके जो अनादि कालसे च्यारों गतिमें परिभ्रमण करानेवाले भव थे उन्होंकि स्थितिका छेदन करते हूवे संसारका अन्त कर देता है।

(४१) प्रश्न–स्वभाव (अनादि कालसे अठारे पाप सेवनरूप प्रवृत्तिका त्याग करनेसे क्या फल होता है ?

(उ०) स्वभावका त्याग करनेसे अठारे पापसे निवृत्ति हो जाती है इन्होंसे जीवोंको सर्व व्रतीरूप स्वपणतिमें रमणता होती

है इन्होंसे जीव शुक्लध्यान रूपी अपूर्व कारण गुणस्थानका आवलम्बन करते हुए च्यार घनघाती (ज्ञानावर्णिय, दर्शनवर्णिय, मोहनिय, अन्तराय कर्म) कर्मोका क्षय कर प्रधान केवल ज्ञान प्राप्त कर मोक्षमें जाता है।

(४२) प्रश्न–प्रतिरूप–श्रद्धायुक्त साधुके लिंग रजो हरण मुखस्त्रादि धारण करनेसे क्या फल होता है।

(उ०) साधु लिंग धारण करनेसे द्रव्ये आरंभ सारंभ समारंभ तथा परिग्रह आदि अनेक कलेशोंका खजांना जों संसारिक बन्धनसे मुक्त होता है भावसे अप्रतिबंध विहार करते हुवे राग द्वेष कषाय विषयादिसे विमुक्त होता है जब लघुभूत (हलका) होके अप्रमतगजपर आरूढ होके माया शल्यादिको उन्मुल करते हुवे अनेकोगम जीवोंका उद्धार करते है कारण साधुका लिंग जगजीवोंको विसवासका भाजन है और कर्म कटकका नाश करनेमें मुनिपद साधक है समिती गुप्ती तपश्चर्य ब्रह्मचर्य आदि धर्म कार्य निर्विघ्नतासे साधन हो सक्के है इन्होसे स्वपर आत्मावोंका कल्याण कर परंपरा मोक्षमे जाते है।

(४३) प्रश्न–व्ययावच्च–चतुर्विध संघकि व्ययावच्च करनेसे क्या फल होता है।

(उ) चतुर्विध संघकि व्ययावच्च करनेसे=तीर्थंकर नाम गौत्र उपार्जन करते हैं कारण व्ययावच्च करनेसे दुसरे जीवोंको समाधी होती है शासनकि प्रभावना होति है भवान्तरमें यश कीर्ति शरीर सुन्दर मजबुत संहननकी प्राप्ती होती है यावत् तीर्थ पद भोगवके मोक्षमे जाते है।

(४४) प्रश्न–ज्ञानादि सर्व गुण संपन्न होनेसे क्या फल होत है ?

(उ) ज्ञानादि सर्वगुण संपन्न होनेसे फिर दुसरी दफे संसारमें जन्म मरण न करे अर्थात शरीरी मानसी दुःखोंका अन्त कर मोक्षमें जावे ।

(४५) प्रश्न– राग द्वेष रहित (वीतराग) होनेसे क्या फल होता है ।

(उ०) राग द्वेष रहित होनेसे धन धान्य पुत्र कलत्र शरीर आदि पर मस्नेह दूर हो जाता है तब शब्द रूप गन्ध रस स्पर्श इन्होंके अच्छे होने पर राग नहीं बुरे होने पर द्वेष नहीं उत्पन्न होते हैं अर्थात् अच्छा और बुरे निंदा और स्तुतिसर्व पर शमभाव हो जाते है ।

(४६) प्रश्न–क्षमा करनेसे जीवोंकों क्या फल होता हैं ।

(उ) क्षमा करनेसे जीवोंके परिसह रूप जो महान् शत्रु है उन्हीकों क्षमा रूपी कवच (शस्त्र)से पराजय कर देता है पराजय करनेसे स्वपर आत्मावोंका शीघ्र कल्याण होता है । शान्ति करनेके लिये यह एक परम औषधी है ।

(४७) प्रश्न–निर्लोभता रखनेसे क्या फल होता है ।

(उ) निर्लोभता रखनेसे अकिंचन भाव होता है इन्होंसे जो जीवोंके आकाश प्रदेशकि माफीक अनंती तृष्णा लग रही है उन्हों कों शांत कर देता है ।

(४८) प्रश्न मर्दव (कोमलता) गुण प्राप्त होनेसे क्या फल होता है ।

(उ०) कोमलता होनेसे जीव मान रहित होता है मान रहित होनेपर उद्धतता दूर होती है इन्होंसे जीव अष्ट प्रकारे जो दम है उन्होंसे हमेश दुर रेहता है इसीसे भवान्तरमें उच्च जाति कुलमें उत्पन्न होता हुवा सम्यक् ज्ञानादिकों प्राप्ती कर स्वकार्य साधन करेता हुवा विचरेगा ।

(४९) प्रश्न–अर्जव–माया रहीत होनेसे जीवोंकों क्या फल होता है ।

(उ०) मायारहित होनेसे भावका सरल भाषाका सरल कायाका सरलपना होता है इन्होंसे योग (मनवचनकाया) अवि संवाद (समाधि) पने रेहता है एसा होनेसे स्त्रिवेद नपुंसक वेद नही बन्धता है । भवान्तरमें सम्यक्त्वकी प्राप्ती होते ही कर्म शल्यको निकाल अवस्थित स्थान स्वीकार करेगा ।

(५०) प्रश्न–भाव सत्य होनेसे जीवोंको क्या फल होता है ।

(उ०) भाव सत्य होनेसे जीवोंका अन्तःकरण विशुद्ध होता है अन्तःकरण विशुद्ध प्रवृति करते हूवे अरिहंत धर्मका आराधन करनेकों सावधान होगा एसे होनेसे भवान्तरमें भी चरित्र धर्मका आराधीक होगा ।

(५१) प्रश्न–करण सत्य होनेसे क्या फल होता है ?

(उ०) करण सत्य होनेसे जीव जेसे मुहसे केहते है वेसाही कार्य करके वतला देते है जेसे प्रतिलेखनादि क्रिया कहे उसी मुताबीक करते भी है ।

(५२) प्रश्न–योग सत्य होनेसे जीवोंकों क्या फल होता है ।

(उ०) योग (मनवचनकाया) सत्य होनेसे जीवोंके योगोंकि

विशुद्धता होती है विशुद्ध योगोंसे प्रशस्थ क्रिया करते हूवे चारित्र धर्मकि आराधना होती है।

(१३) प्रश्न–मनकों पापोंसे गुप्त रखनासे क्या फल होता है?

(उ०) मनकों पापोंसे गुप्त रखनेसे मनका एकत्वपना होता है मनका एकत्वापना होनेसे जों मन संबन्धी पाप आता था वह रूक गया और मनोगुप्तोरूप जो संयम था उन्होंका आराधीक होता है।

(१४) प्रश्न–वचनगुप्ती रखनेसे क्या फल होता है?

(उ०) वचनकि गुप्ती रखनेसे जो च्यार प्रकारकि विकथा करनेसे पाप आता था उन्होंकों रोक दीया और वचनसे जो करने योग ज्ञान ध्यान पठनपाठन स्वध्यायदि कार्यका आराधीक होता है।

(१५) प्रश्न–कायगुप्ती करनेसे क्या फल होता है?

(उ०) कायागुप्ती रखनेसे जो काया अयत्नासे हलन चलनादिसे आते हूवे आश्रवको रोक देता है और विनय व्यवच्च आसन ध्यानदि कायासे करने योग संयम क्रियाका आराधीक होता है?

(१६) प्रश्न–मनके संकल्प विकल्पकों मीटाके एकान्त निश्चल ध्यानादि सत्य कार्यमें स्थापन करनेसे क्या फल होता है।

(उ०) मनको० एकत्वता होती है एकत्वता होनेसे अनुभव ज्ञानपर्यव निर्मल होता है ज्ञानसे जो अनादि कालके मिथ्यात्व पर्यव था उन्होंका नास होता है एसा होनेसे विशुद्ध दर्शनकि प्राप्ती होती है।

(१७) प्रश्न–वचन–सावद्य कर्कश आदि दोष रहीत स्वध्या-

वादिके अन्दर स्थापन करनेसे क्या फल होता हैं ?

(उ०) वचन० मर्यादाको जनने वाला होता है मर्यादाकों जाननेसे जीवदर्शनकों विशुद्ध करता है। दर्शन विशुद्ध होनेसे दुर्लभपनेका नास करता हुवा सुलभ बोधीपना उपार्जन करता है।

(५८) प्रश्न–कायाके अयत्न आदि दोषोंको दुर कर व्यावचादिकमे स्थापन करनेसे क्या फल होता है।

(उ०) काया० इन्होंसे चरित्र पर्यवकों विशुद्ध करता है चरित्र पर्यव विशुद्ध होनेसे जीव यथाक्षात चरित्रकि आराधना करते है इन्होंसे वेदनियकर्म आयुष्यकर्म नामकर्म गोत्रकर्मकों क्षय कर मोक्ष जाता है।

(५९) प्रश्न–अज्ञानकों नष्टकर ज्ञाम संपन्न होनेसे क्या फल होता है?

(उ०) ज्ञानसंपन्न होनेसे जीव जीवादि पदार्थकों यथावत समझे यथावत् समझनेसे जीव संसार भ्रमनका नास करे जेसे सूतके डोरा सहित सूइ होनेसे फीरसे हस्तगत हो शक्ती है इसी माफीक ज्ञान सहित जीव कभी संसारमे रेहता होतों भी कभी मोक्ष जाशकता है। अर्थात् ज्ञानवन्त जीव संसारमे विनास पामे नहीं और ज्ञानसे विनय व्ययावच्च तप संयम समाधी क्षमादि अनेक गुणोंकी प्राप्ती ज्ञानसे होती है ज्ञानी स्वसमय पर समयका ज्ञाता होनेसे अनेक भव्य जीवोंका उद्धार कर शक्ता है।

(६०) प्रश्न–मिथ्यात्वका नास करनेसे–दर्शन संपन्न होता है उन्होंको क्या फल होता है।

(उ०) दर्शन संपन्न होनेसे जीव जो संसार परि भ्रमनका मूल कारण अन्तानुबंधी क्रोधमान माया लोभ और मिथ्यात्व मोहनिय है उन्होंका मूलसे ही उच्छेद कर देता है एसा करते हुये च्यार घन घाती कर्मोका नाश करते हूवे केवल ज्ञानदर्शनको उपार्जन करते है तब लोकालोकके भावोंको हस्तांमलकी माफिक देखता हुवा विचरता है।

(६१) प्रश्न—अव्रतका नाश करके चरित्र संपन्न होता है उन्होंका क्या फल होता है।

(उ०) चरित्र (यथाक्षात) संपन्न होनेसे जीव शलेसीकरण वाला चौदवा गुणस्थानको स्वीकार करता है चौदवा गुणस्थानको स्वीकार करते हुवे अंतः क्रिया करके जीव सिद्ध पदकी प्राप्ती कर लेते है।

(६२) प्रश्न—श्रोतेन्द्रियकों अपने कबजेमें करलेनेसे क्या फल होता है।

(उ) श्रोतेन्द्रियकों अपने कबजेमें करलेनेसे अच्छा और बुरा शब्द श्रवण करनेसे रागद्वेषजो कर्मोका बीज है उन्होंकी उत्पती नही होती है इन्होंसे नये कर्मोका बन्ध नही होता है पुराणे बन्धे हुवे कर्मोकी निर्ज्जरा होती है।

(६३) प्रश्न—चक्षु इन्द्रिय अपने कबजे करनेसे क्या फल होता है।

(उ) चक्षु इन्द्रिय अपने कबजे करनेसे अच्छे और बुरे रूप देखनेसे राग द्वेष न होगा। इन्हीसे नये कर्म न बन्धेगा और पुराणे बन्धे हूवे है उन्होंकि निर्ज्जरा होगा।

(६४) प्रश्न—घ्रणेन्द्रिय अपने कबजेमें रखनेसे क्या फल होता है।

(उ) घ्रणेन्द्रिय अपने कबजेमें रखनेसे अच्छे और बुरे गन्ध पर राग द्वेष उत्पन्न न होगा इन्हीसे नये कर्म न बन्धेगा और जो पुराणा बन्धा हुवा कर्म है उन्होंकि निर्ज्जरा होगा।

(६५) प्रश्न—रसेन्द्रिय अपने कबजे करनेसे क्या फल होगा।

(उ) रसेन्द्रिय अपने कबजे करनेसे अच्छे और बुरे स्वाद पर राग द्वेष न होगा—इन्होंसे नये कर्म न बन्धेगा पुराणे बन्धे हुवे कर्मोंकी निर्ज्जरा करेगा।

(६६) प्रश्न—स्पर्शेंद्रिय अपने कबजे करनेसे क्या फल होगा।

(उ) स्पर्शेंद्रिय अपने कबजे रखनेसे अच्छे और बुरे स्पर्श पर राग द्वेष न होगा इन्होंसे नये कर्म न बन्धेगा पुराणे बन्धे हुवे कर्म है उन्होंकी निज्जरा होगा।

(६७) प्रश्न—क्रोध पर विजय करनेसे क्या फल होता है।

(उ) क्रोधपर विजय अर्थात् क्रोधकों जितलेनेसे जीवोंकों क्षमा गुणकि प्राप्ती होती है इन्होंसे क्रोधावरणीय * कर्मका नया बन्ध नही होता है पुरणे बन्धे हुवे कर्मोंकी निज्जीरा होती है।

(६८) मानपर विजय करनेसे क्या फल होता है।

(उ) मानको जित लेनेसे जीवोंकों मर्द्दव (कोमलताविनय) गुणकि प्राप्ती होती हैं इन्होंसे मानावरणीय कर्मका नया बन्ध न होगा पुराण बन्धा हूवा है उन्होंकि निर्ज्जरा होगा।

---

*क्रोध मान माया और लोभ यह मोहनीय कर्मकि प्रकृति है वास्ते क्रोधावरणीय केहनेसे मोहनिय कर्म ही समझना एवं मान माया लोभ।

(६९) प्रश्न–मायाकी विजय करनेसे क्या फल होता है ।

(उ) मायाकों जितलेनेसे जीवोंको सरलता निष्कपट भावोंकी प्राप्ती होती है इन्होंसे मायावरणीय नये कर्मोंकी बन्ध नही होता है और पुरणे बन्धे हूवे कर्मोका निर्ज्जरा होती है ।

(७०) प्रश्न–लोभका विजय करनेसे क्या फल होता है ।

(उ) लोभ जित लेनेसे जीवोंकों निर्लोभता गुणकि प्राप्ती होती है इन्होंसे लोभावरणीय कर्मका नये बन्ध न होगा पुरणे बन्धे हूवे कर्मकी निर्ज्जरा होगी ।

(७१) प्रश्न–रागद्वेष और मिथ्यात्वशल्यका परित्याग करनेसे क्या फल होता है ।

(उ०) रागद्वेष मिथ्यात्वशल्यका त्याग करनेसे जीव ज्ञानदर्शन चरित्रकि आराधना करनेको सावधान होता है ऐसा होनेसे जो अष्टकर्मोंकि गंठो है उन्होंको छेदन भेदन करनेको तैयार होता है, जिस्मे भी प्रथम मोहनिय कर्मकि अठावीस प्रकृति है उन्होंकि घात करता है बादमें ज्ञानावर्णीय कर्मकी पांच प्रकृती और दर्शनवर्णिय कर्मका नव प्रकृति और अन्तराय कर्मकि पांच प्रकृति इन्हीं च्यार घन घातीये कर्मोंकों नास कर देता है इन्हीं च्यारों कर्मोंका नास (क्षय) करनेसे अनुत्तर प्रधान जिस्के आवरण नहीं है वह भी आनेके बाद फिर जाता नहीं है वेसा उत्तम केवल ज्ञानको प्राप्त कर लेते है तब संयोग केवली होते है उन्होंको सपराय कर्मका बंध नही होता है परन्तु इरिया वही कर्म प्रथम समय बंध दुसरे समय वेदना तीसरे समय निर्ज्जर हो एस दो समय वाल कर्मोंका बन्द होता है फीर चौदवे गुणस्थान

जावे पर जीव कर्मोंका अबन्धक हो जाते है।

(७१) प्रश्न–अबन्धक होनेसे जीवोंका क्या फल होता है?

(उ०) अबन्धक होनेसे अर्थात् अन्तर महूर्त आयुष्य रहनेसे योगोंका निरूद्ध करते हुवे सुक्षम क्रियासे निवृति और शुक्ल ध्यानके चोथे पायेका ध्यान करते हुवे प्रथम मनोयोगका निरूद्ध पीच्छे वचन योगका निरूद्ध पीच्छे काय योगका निरूद्ध करके पांच ह्रस्वाक्षर " अ इ उ ऋ ऌ " का उच्चारण कालमें समुत्सम क्रियाका निरूद्ध और शुक्ल ध्यानके अंदर वर्तते आयुष्य कर्म वेदनिय कर्म नामकर्म गोत्रकर्म इन्हीं च्यारों कर्मोको संयुग क्षयकर देता है।

(७२) प्रश्न–चारों अघातीये कर्मोका क्षय करनेसे क्या फल होता है?

(उ०) च्यारों अघातीये कर्मोका क्षय करनेसे जीव जो अनादि कालका संयोग वाला तेजस कारमण और औदारीक यह तीनों शरीरको छोडके शमश्रेणी प्राप्त अस्पर्श प्रदेश उर्ध्व एक समय अविग्रहगतिसे ज्ञानके साकारोपयोग संयुक्त सिद्ध क्षेत्रमें अनन्ते अव्वावाद सुखोंमें विराजमान हो जाते है।

यह ७२ प्रश्नोत्तर भव्यात्मावोंके कण्ठस्थ करनेके लिये विस्तार नही करते हूवे मूल सूत्रसे संक्षेपार्थ ही लिखा है अधिक अभिलाषा रखने वाले आत्म बन्धुओंको गुरुमुखसे यह अध्ययन अवश्य श्रवण करना चाहिये। इत्यलम्।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

प्रश्नोत्तर नं० २

सूत्र श्री उत्तराध्ययनजी अध्य० ९

(श्री नमिराज ऋषि)

प्रत्येक बुद्धि नमिराजाकि कथा विस्तारसे है परन्तु हमारेको यहांपर प्रश्नोत्तर ही लिखना है वास्ते संक्षिप्त परिचय करा देना उचित समझा गया है यथा–मिथिलानगरीका नरेश नमिराजके शरीरमें दाह ज्वर होजानेसे पतिकी भक्तिके लिये १००८ राणीयों बावनाचन्दनको घसके अपने स्वामिके शरीरपर शीतल लेपन कर रही थी उन्ही समय सब राण योंके हाथमें रत्नोंके कङ्कणोंकी झणकार (अवाज) राजाको नागवार गुजरने पर हुकुम दे दीया कि यह अवाज मुझे अधिक तकलीफ दे रही है तब सब राणीयोंने अपने स्वामिका हुकूम होनेपर मात्र एकेक चुडी रखके शेष सर्व खोलके रखदी इतनेमें खडका बन्ध होनेसे राजाने पुछा कि क्या अब वह झनकार नहीं है राणीयोंने कहा स्वामिनाथ हमने शोभाग्यके लिये एकेक चूडी ही रखी है इतनेमें तो नमिराजाको यह ज्ञान हुवा कि बहुत मोलने पर ही दुःख होता है अलम् अपनेको एकेला ही रेहना चाहिये यह एकत्व भावना करते ही जाति स्मरण ज्ञान होगया आप परमयोगीराजा होके मिथिला नगरीको छोड बगीचेमें जाके ध्यानारूढ होगये ।

उन्ही समय प्रथम स्वर्गके सौधर्मेन्द्रने अवधिज्ञानसे देखा कि एकदम वगेर किसीके उपदेश नमिराजने योग धारण किया है तो चलो इन्होंकि पारक्षा तो करे । तब इन्द्रने ब्रह्मणका रूप धारण करके नमिराज ऋषिके पास आया और प्रश्न करता हुवा ।

(१) प्रश्न—हे नमिराज यह प्रत्यक्ष देवलोक सादृस मिथिकानगरीके म्हेल (प्रासाद) और सामान्य घरोंके अन्दर बडा भारी कोलाहल शब्द हो रहा है अर्थात् आपके योग लेनेपर इन्ही लोकोकों कीतना दुःख हुवा है तो आपको इन्ही लोकोंका रक्षण करना चाहिये क्युंकि यह सब लोक आपके ही आश्रत रहे हुवे हैं।

(उत्तर) हे ब्रह्मण—यह सब लोक अपने स्वार्थके लिये ही कोलाहाल शब्द कर रहे है न कि मेरे लिये। जैसे इस मिथिला नगरीके बाहर एक अच्छा सुन्दर पुष्प पत्र फल शाखा प्रति साखासे विस्तारवाला वृक्ष है उन्हों कि शीतल सुगन्धी छाया और मधुर फल होनेसे अनेक द्विपद चतुष्पद और आकाशके उडनेवाले पक्षी आनन्दमें उन्हीं वृक्षकि निश्रायमें रहते थे। किसी समय अति वेगके वायु चलनेपर वह वृक्ष तूट पडा उन्ही तूटे हूवे वृक्षकों देखके वह आश्रत जीव एकदम रौद्र आक्रन्दसे कोलाह करने लग गये अब सोचिये वह जीव अपने सुखके लिये दुःख करते है या वृक्ष तुट पडा उन्हीको तकलीफ हूइ उन्होंके लिये दुःख करता है। कहेना ही होगा कि वह जीव अपने स्वार्थके लिये रूदन करते हैं इसी माफीक मथिला नगरीके न· समुह रूदन करते हैं वह अपने स्वार्थके लिये ही करते तों मुजे भी मेरा स्वार्थ साधना चाहियें उन्ही असास्वते शरीरकों अपना मानना ही बडी भूलकि बात है वास्ते मेरी नगरीआदि नहीं है म्हे एकेला ही हूं।

(२) हे योगीन्द्र–आपकि मिथिला नगरीके अन्दर प्रचन्ड दावानल (अग्नि) प्रज्वलित हो रही है उसमें गढ मढ म्हेल प्रासाद और सामान्य जनोंके घर जल रहे है तो आप सामने वयु नही जोते है अर्थात् आपके नैत्रोंमें बडी शीतलता रही हूई है कि आपके देखनेसे अग्नि शांत हो जाती है (मोहनिय कर्मकि परिक्षका प्रश्न है)

(उ) हे भूऋषि–म्है सुखसे संयमयात्रा कर रहा हूं मेरा कुच्छ भी नही जलता है। कारण जिन्होंने राजपाट धन धान्य स्त्रियों आदिका परित्याग कर योग धारण किया हो उन्हीकों किसी प्रकारकि संसारसे ममत्व भाव नही है तो फिर जलनेकि चिंता ही क्यों हों और मेरा जो ज्ञानदर्शनादि धन है उन्होंके जलानेवाली अग्नि समान्य कषाय है उन्हीकों तों में प्रथम ही मेरे कब्जामें कर ली है वास्ते म्है निर्भय होके सुख संयम यात्रा कर रहा हूं।

(३) प्रश्न-हे मुनीद्र आप दीक्षा लेना चाहते हो परन्तु पेस्तर नगरके गढ पोल भुगल दरवाजे बुरजो पर तोपो शस्त्रादिसे पका बन्धोबस्त करके फीर योग लो कि आपके राजका पूर्ण परि- पालन आपके पुत्र ठीक तौरसे कर शकेगा।

(३) हे जगदेव–मेने मेरा नगरका खुब मजबुत जाब्ता कर लिया है यथातत्वश्रधन रूप मेरे नगर है तपश्चर्य बाह्या भित्तर रूप कीमाड है संवर रूप भोगल है क्षमा रूपीगढ शुभ मनोयोगका कोट, शुभ वचन योग रूपी बुरजो, शुभ काययोगका मोरचा बन्धा हुवा है, पाक्रमकी धनुष्य, इर्या समतिकि जीवा

धीर्यताकी पाणच, सत्यताका कवच, (शस्त्र) अप्रमाद रूपी गन्धहस्ती, ज्ञान रूपी अश्व, अष्टादश शिलांगरथ धारी युक्त रथ, अध्यवशाय अन्तःकरण भावना रूपी बाणोंसे भरा हूवे रथोंको देखके कोई भी दुस्मन मेरे पास नहीं आशक्ता है । हे भूऋषि मोहनरेन्द्रकि शैन्याको चकचुरकरदी है तो अब कोनसा दुस्मन मेर रहा है ? हे भूऋषि असार संसारके अस्थिर पदार्थोंके लिये सग्राम करनेको मुनि हमेशा दुर ही रेहते है परन्तु भाव सग्राम कर्म शत्रुवोंको पराजय करनेके लिये हमेशा तैयार रहते हैं ।

(४) प्रश्न–हे जितेन्द्र–इस दुनियोंके अंदर एक समान्य मनुष्य भी अपने जीवनमें एकेक नाम्वरीके कार्य करते है तो आप तो महान् राजेश्वर हो वास्ते आपको इस अक्षय पृथ्वीपर अच्छा सुंदर सीखर बंध झाली झरोखे वाला प्रासाद (म्हेल) जोकि आपके पुत्रादिके क्रीडा करने योग्य एसा मकान बानके एक बडा भारी नाम कर । हे क्षत्री फीर आपको दीक्षा लेना उचित है ?

(उ०) हे ब्रह्मदेव–जिन्होंको रस्तेमें ठेरना हो वह मकान कराते है म्हैतो इन्ही मकानोंको छोडा है और इच्छित मकान (मोक्ष-शिव मंदिर) में जाके ठेरूगा, हे ब्रह्मण मकान बनानेसे ही नाम्वरि नहीं होती है यह तो बाल क्रीडावत मकान और नाम्वरी है परन्तु जो मकान और नाम्वरी अक्षय है उन्होंको प्राप्त करनेकि कोषीस करना यह वडी भारी नाम्वरी है वास्ते मुजे मकान बनानेकि जरूरत नहीं है मेरे तो इच्छित मकान बना हुवा तैयार है वहा हीजाके म्है ठेरूंगा ।

(५) प्रश्न-हे क्षमावीर–आपके नगरीकों उपद्रव्य करनेवाले तस्कर चौर लुटेरा बटपाडा दगाबाज आदि अनेक है उन्हींकों अपने कब्जामे कर फीर योग लेना ?

(उत्तर) हे भव्य–संसारकी उलटी चाल है जो भाव चौर (विषयकषाय) है उन्हीकों तों निज धन चौरानेमें साहिता करते है और जो द्रव्य चौरकि अपनि वस्तुवोंकों नही चौरानेवाल है उन्हीकों पकड केदकर देते है परन्तु म्है एसा नही हू कि जो चौर नही है उन्हीकों पकडनेमें मेरा अमूल्य समय खोदुं म्है तों मेरे असली मालके चौरानेवाले (विषय कषाय) चौरोंकों मेरे अधिन कर लिया है अब मेरा धन चाहे चाडेचौकमें क्यु न पडा रहै मुजे भय है ही नही अर्थात् निर्भय होके मेरा धनका रक्षण करता हूं।

(६) प्रश्न–आत्मवीर–आपके वैरी भूमि या अन्य राजा जो कि अबी तक आपकि आज्ञा नही मानि है आपको नमस्कार नही कीया है उन्हीकों सग्राम द्वारा पराजय कर अपने अधिन बनाके फीर दीक्षालो तांके पीछे आपके पुत्रादिको कोई तरह कि तकलीफ न हो ?

(उ०) हे रौद्राक्ष धारक–जो हजारकों हजार गुण करनेसे दशलक्ष होते है इतने सुभटोंकों पराजय करलेना दुष्कर नहीं है परन्तु एक अपनि आत्मापर विजय करना बहुत ही दुष्कर है जिन्ही पुरुषोंने एक आत्माको जीतली हो तो फीर दुसरोंके लिये सग्राम करने कि क्या जरूरत है मैंनेतों ज्ञान आत्मासे अज्ञानाकों भगा दीया है और दर्शनात्मासे मोहोकों अपने कब्जे कर लिया

है वस सब वैरी भूमिया दुस्मनों मेरी आज्ञामे ही वर्तते है वास्ते मुजे संग्राम करने कि कोई भी जरूरत नहीं है।

(७) प्रश्न-हे राजन्-आपने उच्च कुलमे अवतार लिया है तो भवान्तरेमे अच्छे मोक्ष सुखके देनेवाला एक 'यज्ञ' करावों और श्रमणशाक्यादि तापसोंकों और ब्रह्मणोंकों भोजन करवाके दक्षिणा देके फीर योग लेना।

(उ०) हे भूऋषि-प्राणीयोंके बद्धरूप जो 'यज्ञ' कराणातों दुनीयोंमें प्रगट ही अकृत्य है कारण यज्ञमें तो गज अश्व माता पिता बकरादिका बलीदान किया जाता है इन्ही घोर हिंस्यासे तों जीवोंकि दुर्गति ही होती है अच्छे मनुष्योंकों यह कृत्य करने लायक ही नहीं है। और एसे यज्ञ कर्मके करनेवाले श्रमण शाक्यादिकों भोजन कराना यह भी यज्ञ कर्मकों उतेजित करता है और संसारीक भोग भोगवना यह विष समान फल देनेवाला है यह तुमारा केहना बीलकुल अयोग्य है हे ब्रह्मण तुही विचार यह संयम कितने उच्च कोटीका है अगर कोई मनुष्य प्रतिमास दश दश लक्ष गायोंका दान दे तथा सुवर्णमय पृथ्वीका भी दान देता है। उन्होंसे भी संयम अधिक फलवाला है। कारण संयम पालने वाला तों दश लक्ष क्या परन्तु सर्व जगत् जन्तुवोंकों अभयदान दिया है वास्ते सर्व प्रशंसनीय संयम ही है उन्हीकों अंगीकार करते हुवे सर्व जीवोंको अभय दान देता हुवा भाव यज्ञ करता हूवा म्है आत्म सुखोंका ही अनुभव कर रहा हूं।

(८) प्रश्न-हे धराधीश-गृहस्थाश्रम ब्रह्मचार्याश्रम भीक्षावृत्याश्रम और वनवासाश्रम यह च्यारांश्रमके अन्दर गृहस्थाश्रम ही

उत्तम है कारण शेषाश्रमको आधारभूत है तों गृहस्थाश्रम ही है। परन्तु गृहस्थाश्रमका निर्वाह करना बड़ा ही दुष्कर है कायर पुरुषोंसे गृहस्थाश्रम चलना बड़ा ही मुशकल है गृहस्थाश्रमें तों सुरवीर धीर पुरुषोंसे ही चल शक्ता है। हे नरनाथ दीक्षा तों प्रगट ही कायरता बतला रही है कि भिक्षावृतिसे आजीवका करना इतना ही नही बल्के कृषांनी लोकोंको भी भिंया करनेयोग है वास्ते तुमारे जेसा वीर पुरुषोंको तों गृहस्थाश्रम हीमें रहेके पौषद आदि करना योग्य है ?

(उत्तर) हे भूऋषि गृहस्थाश्रम हे वह सर्व सावद्य (पाप वैपार सहित) है और जिन्होंकि यह श्रद्धा है कि दीक्षासे भी गृहस्थाश्रम अच्छा है उन्होंको जो गृहस्थाश्रममें रेहकर मासमासोपवास करके कुषाग्र भाग उतना भोजन करते हूवे भी 'संयम' के शीलमें भागमे नही आशक्ते हैं कारण संयम निर्वद्य है और गृहस्थाश्रम सावद्य है वास्ते वीर पुरुषोंकों संयम ही स्वीकार करने योग्य है और मोक्षरूपी फलका दातार ही संयम है नकि गृहस्थाश्रम।

(९) प्रश्न-हे नराधिप—अगर आपकों दीक्षा ही लेना हो तो पेस्तर आपके खजांनामे मणिमाणक मौक्ताफल चन्द्रकन्तामणि कांसी तांबा पीतल वस्त्रभूषण और शैन्यके अन्दर गज अश्व सुभट आदि सर्व मजबुत भरके फीर दीक्षा लो।

(उत्तर) हे लोभानन्द—इन्ही मणिमौक्ता फलादिसे कीसी प्रकारकि तृप्ती नही होती है जेसे कीसी लोभी मनुष्यको एक

सुवर्णमय मेरूपर्वत बनाके दे देवे तथा सर्व पृथ्वी सुवर्णमय करके दे देवे तो भी उन्ही लोभी पुरुषकी तृष्णा कबी शान्त न होगी कारण लोकमे द्रव्य तों असंख्यातों है और जीवोंकी तृष्णा आकाशसे भी अनन्त है। है–ब्रह्मदेव केवल धनही नहीं बल्के इन्ही आरापार पृथ्वीकों सुवर्णकि बनाके अन्दर शालीगोधम जवज्वार कांसी सुवर्ण चान्दी आदि लोभानन्दको देदी जावे तों भी शान्त होना असंभव है परन्तु ज्ञानी पुरुषों तो इन्हीं नाश भय तृष्णाको एक महान् दुःखका खजाना समझके परीत्याग किया है वह ही परम सुख विलासी हुआ है वास्ते मुजे खजाना भरनेकि जरूर नहीं है। मेरा खजाना भरा हूवा है।

(१०) प्रश्न हे भोगेन्द्र यह प्रत्यक्ष भोग विलास राज अन्तेवर (स्त्रियों) आदि सब देवतोंके माफीक ऋद्धि आपको मीली है इन्होंको तो आप त्याग न करते है और भवांतरमें अधिक सुखोंकि अभिलाषा रखते है यह ठीक नहीं है अगर आगे न मीलने पर आपको और संकल्प विकल्प तो करना न पडेगा यह भी विचार आपको पेहला करना चाहिये अर्थात् यह मीले हूवे काम भोगको भोगवो फिर दीक्षा लेना तांके दोनों भोगोंको अधिकारी बना सकेंगे।

(उत्तर) हे विप्र–यह मनुष्य संबन्धी काम भोग देखनेमे सुन्दर देखाइ देता है परन्तु परिणामसे शल्य सादृश है विष सादृश है आसीविषसर्प सादृश है किंपाकके फल सादृश है भोग भोगवति वखत अच्छा लगता है परन्तु जब उन्हों भोगसे कर्म बन्धा है वह उदयमे होता है तब महान् दुःख नरक निगोदमे

भोगवना पडता है गरवीण मात्तसुखा, "बहुकालदुःखा" भोग भोगवना तोदुरा रहा परन्तु भोगोंकि अभिलाषा करनेवालोंको भी नरकादि अधोगति होती है। हे विप्र यह नासमान सडन पडन विध्वंशन जिन्होंका धर्म है एसा काम भोग जगतमें क्रोधमान माया लोभ प्रेम कलेशका मूल स्थान है पूर्व महाऋषियों इन्ही काम भोगोंका बड़ा भारी तीस्कार किया है। सत्पुरुषोंके आचारने योग नहीं है वास्ते इन्हीं भोगोंकों भुजग समझके ही मैंने परित्याग किया है।

इन्ही दश प्रश्नोद्धार सौधर्मेन्द्र ब्राह्मणके रूपमें 'नमिराज-ऋषि' कि पारक्षा करी परन्तु आत्माके एक प्रदेश मात्रमें क्षोभ करनेको असमर्थ हुवा तब इन्द्रने उपयोगसे द्रढ धर्मी समझके इन्द्रने अपना असलीरूप बनाके महात्मा नमिराजऋषिकों वन्दन नमस्कार करके बोलता हूवा—हे महा भाग्य आपने निज दुस्मन क्रोधमान माया लोभादिकों ठीक कब्जे कर रखा है। हे धोरवीर आपने अपना क्षान्त दान्त अर्जव मार्दव च्यारों महासुभटोकों पासमे रखके मोक्षगढ पहूंचनेकि ठीक तैयारी कर रखी है इत्यादि अनेक स्तुतियों करते हूवे इन्द्र अपना मन मुगट और जलहलते कुंडल सहीत अपना शिर मुनिश्रीके चरणकमलोंमें झुकाके नमस्कार करके बोलता हूवा। हे भगवान् आप इस लोकमें भी उत्तम पुरुष हो कि छते भोगोंकों त्याग कर योग लीया है और परलोकमें भी आप उत्तम होंगे कि इस संसारका अन्त कर मोक्ष जावोंगे। हे प्रभो आप जगत रक्षण दीनबन्धु भवतारक स्वपरात्म उद्धारक हों। आपके स्तवनादि करनेसे भव्यात्मावोंका कल्याण होता है इसी माफीक इन्द्र[illegible]ना जन्म पवित्र

करते हूवे मुनि बन्दन कर आकाश मार्ग गमन करते हूवा श्रीन-मिराजऋषि प्रत्यक बुद्धि तप संयमादि आराधन कर जन्म जरा मरण रोग शोक मीटाके अन्तिम श्वासोश्वासकों छोड़के लोकाग्रामागमे सास्वता सुखोंमें विराजमान हो गये । शम्

प्रश्नोत्तर नम्बर ३

सूत्र श्री उत्तराध्यायनजी अध्य० २३

(केशी गौतमके प्रश्नोत्तर)

तेवीसवा तीर्थकर श्री पार्श्वनाथजीके संतानीक अनेकगुणालंकृत अवधिज्ञान संयुक्त केशीश्रमण भगवान बहूतसे शिष्यमंडलके परिवारसे भूमंडलकों पवित्र करते हुवे सावत्थी नगरीके तंदुकवन उद्यानमें समौसरन करता हूवा अर्थात् उद्यानमे पधारे ।

चरम तीर्थकर भगवान वीर प्रभुके जेष्ट शिष्य इन्द्रभूति "गौतमस्वामि" अनगार अनेक गुणोंलंकृत च्यारज्ञान चौदा पूर्व धारक बहुतसे शिष्यमंडलके परिवारसे पृथ्वीमंडलकों पवित्र करते हुवे सावत्थी नगरीके कोष्टक नामके उद्यानमें समौसरण करते हुवे-ठेर है-

दोनों महापुरुषोंके शिष्य समुदाय बड़े ही भद्रक और विनयवान जैसे शालके वृक्षके परिवार भी शालका ही होते है । एक समय दोनों भगवन्तोंकि शिष्य एकत्र होनेसे यह शंका उत्पन्न हुई कि श्री पार्श्वनाथ प्रभु और श्री बीर भगवान दोनों परमेश्वरोंने एकही कारण (मोक्षका) यह धर्म फरमाया हे तों फीर यह प्रत्यक्षमें इतना तफावत क्यु जो कि पार्श्वनाथ प्रभुके शिष्योंकि च्यार महाव्रत

रूपी धर्म और पांचों वर्णके वस्त्र वह भी अपरिमित तथा स्वल्प या बहु मूल्यके भी रक्षशक्ते हैं और भगवान वीर प्रभुके संतानोंके पांच महाव्रतरूपी धर्म तथा मात्र श्वेतवर्णके वस्त्र वह भि परिमीत परिमाण और स्वल्प मूल्यके रखते हैं इस शंकाका समाधानके लिये अपने अपने गुरु महाराजके पास आके निवेदन किया–भगवान गौतमस्वामिने पार्श्वनाथजीके संतानकोजष्ट (बड़े) समझके आप अपने शिष्यमंडलकों साथ लेके आप तंदुक वनमें आने लगे कि जहां पर केशीश्रमण भगवान विराजते थे।

उन्ही समय बहुतसे अन्यमति लोक भी एकत्र हो गये कि आज जैनोंके आपसमें क्या चर्चा होगा और इन्ही दोनोंके अन्दर सच्चा कौन है। मनुष्य तों क्या परन्तु आकाशमें गमन करये हूये विद्याधर और देवता भी अदृष्टरूपसे आकाशमें चर्चा सुननेकों उपस्थित हो गये।

इदर भगवान गौतनस्वामिकों आते हुवे देखके केशीश्रमण भगवान अपने शिष्यमंडलकों लेके सामने गये और बड़ेही आदर सत्कारसे अपने स्थानपर ले आये और पंच प्रकारके तृर्णोका आसन गौतमस्वामिकों बेठनेके लिये तैयार किया तत्पश्चित् केशीश्रमण और गौतमस्वामि दोनों महाऋषि एक ही तक्खतपर विराजमान हूवे, जेसे आकाशके अन्दर सूर्य और चन्द्र शोभनिक होते हैं इसी माफीक केशीगौतम शोभने लगे।

सभा चतुर्विधसंघ, देवता, विद्याधर, और अन्यमति लोकोंसे चक्करबन्ध भराई गई थी और लोक राह देख रहे थे कि अब क्या चर्चा होगा। वह एक चित्तसे ही सुनना चाहिये।

केशीश्रमण भगवान मधुर स्वरसे बोले कि। हे महाभाग्य। अगार आपकी इच्छा हो तों म्हैं आपसे कुछ प्रश्न पूछना चाहाता हूं ?

गौतमस्वामि विनयपूर्वक बोले कि–हे भगवान। मेरे पर अनुग्रह करावे अर्थात् आपकि इच्छा हो वह प्रश्न पुछनेकी कृपा करे।

(१) केशीश्रमण भगवानने प्रश्न किया कि हे गौतम। पार्श्वप्रभु और वीरभगवान दोनोंने एक ही मोक्षके लिये यह धर्म रस्ता (दीक्षा) बतलाते हुवे पार्श्वप्रभु च्यार महाव्रत रूपी धर्म और वीरभगवान पांच महाव्रतरूपी धर्म वतलाया है तो क्या इस्मे आपकों आश्चर्य नहीं होता हैं।

(उ०) गौतम स्वामि नम्रता पूर्वक बोलते हुवो कि हे भगवान्। पहेला तीर्थंकर श्री आदिनाथ भगवान्के मुनि सरल (माया रहीत) थे किन्तु पहेले न देखनेसे मुनियोंका आचार व्यवहारको समझना ही दुष्कर था परन्तु प्रज्ञावान् होनेसे समझनेके बाद आचारमें प्रवृति करना बहुत ही सहेज था और चरम तीर्थंकर वोरभगवान्के मुनि प्रथम तो जडवत् होनेसे समझना ही दुष्कर और वक्र होनेसे समझे हुवेकों भी पालन करना अति दुष्कर है वास्ते इन्ही दोनों भगवानके मुनियोंकि लिये पांच महाव्रतरूपी धर्म कहा है और शेष २२ तीर्थंकरोंके मुनि प्रज्ञावान होनेसे अच्छी तरहसे समझ भी सकते हैं और सरल होनेसे परिपूर्णाचारकों पालन भी कर सकते थे वास्ते इन्ही २२ भगवान्के मुनियोंके लिये च्यार महाव्रत रूपी धर्म कहा है। पांच महाव्रत केहनेसे स्त्रि चोथ व्रतमें और परिग्रह धन धान्यादि पांचमें व्रतमें गीना है परन्तु प्रज्ञावान्त समझ सकते है कि जब

किसी पदार्थ पर ममत्व भाव नहीं रखना तो फिर स्त्रितों ममत्व भावका एक सीखर बन्ध प्रासाद ही है वास्ते स्त्रिकों और परिग्रहकों एक ही व्रतमें माना गया है। हे भगवान् इसमे किंचत् ही आश्चर्यंकि बात नहीं है दोनों भगवानोंका येय तो एक ही है। यह उत्तर श्रवण करके परिषदाकों बड़ा ही संतोष हुवा था।

यह उत्तर श्रवण करके भगवान् केशीश्रमण बोले कि हे गौतम इस शंकाका समाधान आपने अच्छा किया परन्तु एक प्रश्न मुझे और भी पुच्छना है।

गौतमस्वामिने कहा कि भगवान आप अवश्य कृपा करावे।

(२) हे गौतम श्रीपार्श्वप्रभुने साधुवोंके लिये 'सचेल' वस्त्र सहित रहना वह भी पांचों वरणके स्वल्प वह वहु मूल्य अपरिमितमर्यादावाले वस्त्र रखना कहा है और भगवान वीरप्रभुने 'अचेल' वस्त्र रहित अर्थात् जीर्ण वस्त्र वह भी श्वेत वर्ण और स्वल्प मूल्यवाला रखना कहां है इसका क्या कारण है?

(उत्तर) हे भगवान् मुनियोंकों वस्त्रादि धर्मोपकरण रखनेकी आज्ञा फरमाइ है इसमें प्रथम तो साधुलिंग है वह बहूतसे जीवोंकों विसवासका भाजन है और लिंग होनासे भव्यात्मावों धर्मपर श्रद्धा रखते हुवे स्वात्म कल्याण कर सकते है दुसरा मुनियोंकी चित्तवृत्ति कबी अस्थिर भी हो जावे तो भी ख्याल रहेगा कि मैं साधु हु दीक्षतहु यह अतिचारादि मुझे सेवन करने योग नहीं है अर्थात् अतिचारादि लगाते हुवे चिन्ह देखके रूक जावेगा। वास्ते यह धर्म उपकरण संयमके साधक है इसमें पार्श्वप्रभुके

संतान सरल और प्रज्ञावन्त होनेसे उन्होंको किसी भी पदार्थ पर ममत्व भाव नही है और वीरभगवान्‌के मुनि जड़ और वक्र होनेसे उन्होंके लिये उक्त कायदा रखा गया है परन्तु दोनोंका धेय, एक ही है कि धर्मोपकरण मोक्षमार्ग साधन करनेमें साहितामूत जानके ही रखा जाता है ।

केशीश्रमण-हे गौतम आपने इस शंकाका अच्छा समाधान किया परन्तु और भी मुझे प्रश्न करना है । परिषदा भी श्रवण करके बड़े ही आनन्दको प्राप्त हूई है ।

गौतम-हे भगवान आप कृपा करके फरमाइये ।

(२) हे गौतम ! इस संसार चक्रवालमें हजारों दुस्मनों हैं उन्ही दुस्मनों (वैरी) के अन्दर आप निवास किस प्रकारसे करते है और वह दुस्मन आपके सन्मुख युद्ध करनेको बराबर आते हूवे और हुमला करते हुवे कि आप दरकार नही रखते हुवे भी दुस्मनोंको केसे पराजय करते हुवे विचरते हो ।

(उ०) हे भगवान-जो दुस्मन है वह सर्व मेरे जाने हुवे है इन्ही दुस्मनोंका एक नायक है उन्हीको म्है मेरे कब्जेमें प्रथमसे ही कर रखा है और उन्ही नायकके च्यार उमराव है वह तो हमेंशके लिये मेरे दाश ही बन रहे हैं और उन्ही नायकके राजमें पांच पंच है वह मेरे आज्ञाकारी ही है इन्ही दुस्मनोंमें यह १-४-५=१० मुख्य योद्धा है इन्हीको अपने कब्जेमें कर लेनेके पीछे विचारे दुसरे दुस्मन तो उठके बोलने समर्थ भी काहासे हो वे इस वास्ते म्है इन्ही दुस्मनोंका पराजय करता हुवा सुखपूर्वक आनन्दमें विचरता हु ।

(प्र०) हे गौतम—आपके दुस्मन=एक नायक च्यार उमराव पांच पंच कोन है और कीसकों पराजय कीया है ?

(उ०) हे भगवान्—दुस्मनोंका नायक एक 'मन' है यह आत्माका निज गुणकों हरण करता है इन्हीको अपने कब्जे कर लेनेसे 'मन' के च्यार उमराव क्रोध मान माया और लोभ यह मेरे आज्ञाकारी बन गये हैं जब इन्ही पांचोकों आज्ञाकारी बना लिये तब हीसे पांच पंच 'पांच इन्द्रिय' है उन्होंका सहजमें पराजय कर लिया, बस इन्ही १० योद्धोंकों जीत लेनेसे सर्व दुस्मन अपने आदेशमें हो गये हैं वास्ते म्है दुस्मनोंके अन्दर निर्भय विचरता हूं।

यह उत्तर श्रवण करने पर देवता विद्याधर और मनुष्योंकों बड़ा ही आनन्द हुवा है और भगवान् केशीश्रमण बोलते हुवे—हे प्रज्ञावन्त आपने मेरा प्रश्नका अच्छा युक्तिपूर्वक उत्तर दीया परन्तु मुझे एक प्रश्न और भी करना है ?

गौतम—हे महाभाग्य आप अनुग्रह कर अवश्य फरमावे।

(४) प्रश्न—हे गौतम—इस आरापार संसारके अन्दर बहुतसे जीव निवड़ बन्धनरूपी पासमें बन्धे हुवे दृष्टीगोचर हो रहे है तो आप इस पाससे मुक्त होके वायुकि माफिक अप्रतिबन्ध केसे विहार करते हो ?

(उ०) हे भगवान्—यह पास बड़ी भारी है परन्तु म्है एक तीक्षण धारावाला शस्त्रके उपायसे इन्ही पासकों छेदभेद कर मुक्त हुवा अप्रतिबन्ध विहार करता हूं।

(प्र०) हे गोतम आपके कोनसी पास और कोनसे शस्त्रसे दी है ?

(उ०) हे महाभाग्य–इन्ही घोर संसारके अन्दर रागद्वेष पुत्र कलीत्र धनधान्यरूपी जबरजस्त पास है उन्हीकों जैन शासनके न्याय और सदागम भावोंकि शुद्ध श्रद्धना अर्थात् सम्यग्दर्शनरूपी तीक्षण धारावाले शस्त्रसे उन्ही पासकों छेदन भेदन कर मुक्त हूवा आनन्दमे विचर रहा हु। अर्थात रागद्वेष मोहरूपी पासकों तोड़नेके लिये सदागमका श्रवण और सम्यग् श्रद्धनारूप सम्यग्दर्शनरूपी शस्त्र हे इन्हीके जरियेपाससे मुक्त हो शक्ता है।

हे गौतम–आप तों बड़े ही प्रज्ञावान हो और यह प्रश्नका उत्तर अच्छी युक्तिसे कहके मेरा संशयको ठीक समाधान किया परन्तु एक और भी प्रश्न पुच्छता हुं।

गौतम–हे भगवान् मेरे पर अनुग्रह करावे।

(५) प्रश्न–हे भाग्यशाली! जीवोंके हृदयमें एक विषवेल्लि होती है जिन्होंके फल विषमय होता है उन्ही फलोंका अस्वादन करते हुवे जगत् जीव भयंकार दुःखके भाजन हो जाते हैं, तो हे गौतम आपने उन्हीं विष वेल्लिको मूलसे केसे उखेडके दूर कर, केसे अमृतपान करते हो?

(उ०) हे भगवान्! म्है उन्हीं विषवेल्लिकों एक तीक्षण कुदालेसे जड़ा मूलसे उखेड दी, अब उन्ही विषमय फलका भय न रखता हुवा जैन शासनमें न्यायपूर्वक मार्गका अवलम्बन करता हुवा विचरता हु।

(प्र०) हे गौतम आपके कोनसी विषवेल्लि और कोनसा कुदालसे उखडके दुर करी है?

(उ०) हे केशीश्रमण—इन्ही घोर संसारके अन्दर रहे हुवे अज्ञानी जीवोंके हृदयमें तृष्णारूपी विषवेल्लि है वहवेल्लि भवभ्रमण-रूपी विषमय फल देनेवाली है परन्तु म्है संतोषरूपी तीक्ष्ण धारावाला कुदालासे जडा मूलसे नष्ट करके जैन शासनके न्याय माफीक निर्भय होके विचरता हू।

(६) प्रश्न—हे गौतम—इस रौद्र संसारके अन्दर प्राणीयोंके हृदय और रामरोमके अन्दर भयंकर जाज्वलामान अग्नि प्रज्वलीत होती हुई प्राणीयोंकों मूलसे जला देती है, तों हे गौतम आप इस ज्वलत अग्निकों शान्त करते हुवे कैसे विचरतें है।

(उ०) हे भगवान्! यह कोपित अग्नि पर म्है महामेघ धाराके जलको छांटके बीलकुल शान्त करके उन्ही अग्निसे निर्भय विचरता हु।

(प्र०) हे गौतम आपके कोनसी अग्नि और कोनसा जल है?

(उ०) हे भगवान्—कषायरूपी अग्नि अज्ञानी प्राणीयोंको जला रही है परन्तु तीर्थंकररूपी महामेघके अन्दरसे सदागम रूपी मूशलधारा जलसे सिंचन करके बीलकुल शान्त करते हुवे म्है निर्भय विचरता हु।

(७) प्रश्न—हे गौतम—एक महा भयंकर रौद्र दुष्ट दिशावि-दशामें उन्मार्ग चलनेवाला अश्व जगतके प्राणीयोंकों स्वइच्छीत स्थानपर ले जाते है तो हे गौतम आप भी ऐसे अश्वपरारूढ होने पर भी आपकों उन्मार्ग नही ले जाते हुवा भी तुमारी मरजी माफीक अश्व चलता है इसका क्या कारण है?

(उ०) हे भगवान्? उन्ही अश्वका स्वभाव तो रौद्र भयंकार और दुष्ट ही है और अज्ञान प्राणीयोंको उन्मार्गमें लेजाके बडा

ही दुःखी बना देते है परन्तु म्है उन्ही अश्वके मुहमे एक जबरजस्त लगाम और गलेमे एक बडा रसा डाल दिया है कि जिन्होंसे सिवाय मेरी इच्छाके कीसी भी उन्मार्ग बीलकुल जा भी नही शक्ता है अर्थात् मेरी इच्छानुस्वार ही चलता है ।

(प्र) हे गौतम आपके अश्व कौन और लगाम रसा कोनसा है ?

(उ) हे भगवान ! इस लोकमें बडा साहसोक रौद्र उन्मार्ग चलनेवाला 'मन' रूपी दुष्टाश्व है वह अज्ञानी जीवोंकों स्वइच्छा घुमाये करता है परन्तु म्है धर्मशिक्षण रूपी लगाम और शुभ ध्यान रूपी रसासे खेचके अपने कब्जे कर लिया है कि अब किसी प्रकारके उन्मार्गादिका भय नही रखते हूवा म्है आनन्दमें विचरता हु । हे प्रज्ञवान, आपने अच्छी युक्तिसे यह उत्तर दिया हैं परन्तु एक प्रश्न मुझे और भी पुच्छना है ? परिषदाकों बडा ही आनन्द होता है ।

गौतम-हे दयाल कृपाकर फरमावे ।

(८) हे गौतम इस लोकके अन्दर अनेक कुपन्थ (खराब मार्ग) और बहुतसे जीव अच्छे रहस्तेका त्याग कर कुपन्थकों स्वीकार करते है । उन्हींसे अनेक शरीरी मानसी तकलीफो उठाते है तो हे गौतम आप इन्ही कुपंथसे वचके सन्मार्ग पर कीस तरहे चलते हो ।

(उ) हे भगवान-इस लोकके अन्दर जीतने सन्मार्ग और उन्मार्ग है वह सर्व मेरे जाने हूवे है अर्थात सुपंथ कुपन्थको म्है ठीक ठीक जानता हु इसी वास्ते कुपन्थका त्यागकर सुपन्थ पर आनंदसे चलता हु ।

(प्र) हे गौतम इस लौकमें कौनसा अच्छा और बुरा रस्ता है ?

(उ) हे महाभाग्य—इसी लौकमें अनेक मत्त मत्तांतर स्वच्छंद निजमति कल्पना इन्द्रियपोषक स्वार्थवृत्तिसे तत्वके अज्ञात लौकोंने पंथ चलाये है अर्थात ३६३ पाषांडोंके चलाये हुवे रहस्तेको कुपन्थ कहेते है और सर्वज्ञ भगवान निस्पृहीतासे जगतोद्धारके लिये तत्वज्ञानमय रस्ता बतलाया है वह सुपंथ है वास्ते मै कुपन्थका त्याग करता हुवा सुंदर सद्बोध दाता सुपन्थ पर ही चलता हुवा आत्मरमणता कर रहा हु ।

हें गौतम यह उत्तर आपने ठीक युक्तिद्वार प्रकाश कीया परन्तु एक और भी प्रश्न मुझे पुच्छनेका है ।

हे क्षमा गुणालंकृत भगवान फरमावो ?

(८) हे गौतम—इस घोर संसारके अन्दर महा पाणीका वेगके अंदर बहुतसे पामर प्राणीयों मृत्युको प्राप्त होते है तो इन्हीको सरणाभुत एसा कोई द्विपको आप जानते हो ?

(उ) हे भगवान—इन्ही पाणीके महा वेगसे बचानेके लिये एक बडा भारी वीस्तारवाला और शौम्य प्रकृति सुंदराकर महा द्विपा हैं । वहां पर पाणीका वेग कबी नही आता है उन्ही द्विपाका आवलम्बन करते हुवे जीवोंको पाणीका वेग सबन्धी कोसी प्रकारका भय नही होता है ?

(प्र) हे गौतम वह कौनसा द्विपा ओर पाणी है ?

(उ) हे भगवान इस रौद्र संसारार्णवमें जन्म जरा मृत्यु रोग शोक आदि रूपी पाणीका महा वेग है इस्में अनेक प्राणीयों

शरीरी मानसी दुःखका अनुभव कर रहे है। जिस्में एक सुन्दर विशाल अनेक गुणागर धर्म नामका द्विप है अगर पाणीका बेगके दुःख देखते हुवे भी इन्ही धर्मद्विपका अवलम्बन कर ले तों इन्ही दुःखोंसे बच शक्ता है। अर्थात् इस घौर संसारके अन्दर जन्म मृत्यु आदिके दुःखी प्राणीयोंकों सुखी बननेके लिये एक धर्महीका अवलम्बन है और धर्महीसे अक्षय सुखकि प्राप्ती होती है।

हे गौतम आपकि प्रज्ञा बहुत अच्छी है। यह उत्तर आपने ठीक दीया परन्तु एक प्रश्न मुझे और भी पुच्छनेका है।

हे कृपासिन्धु आप अवश्य कृपा करावे।

(१०) प्रश्न-हे गौतम--महा समुद्रके अन्दर पाणीका वेग (चक्र) बाडाही जोर शौरसे चलता है उन्हीके अन्दर बहुतसे प्राणीयों डुबके मृत्यु सरण हो जाते है और उन्ही समुद्रके अन्दर निवास करते हुये, आप नावापरारूढ हो केसे समुद्रों तीर रहे हो।

(उ०) हे भगवान् उन्ही समुद्रके अन्दर नवा दो प्रकारकि है (१) छेद्र सहित कि जिन्होके अन्दर बेठनेसे लोक सुमुद्रमे डुब मरते है (२) छेद्र रहीत कि जिन्होंके अन्दर बेठके आनन्दके साथ समुद्रकों तिर सकते है।

(प्र०) हे गौतम--कोनसा समुद्र और कोनसी आपके नावा है ?

(उ०) हे भगवान--संसार रूपी महा समुद्र है। जिस्मे औदारीक शरीर रूपी नावा है परन्तु नावामें आश्रवद्वाररूपी छेन्द्र है जो जीव आश्रवद्वार सहित शरीर धारण कीया है वहतों संसार समुद्रमें डुब जाता है और आश्रवद्वार रोक दीया है ऐसा

शरीर रूपी नावापरारूढ हुवा है वह संसार समुद्रसे तीरके पार हो जाता है । हे भगवान् मैं है छेद्र रहीत नावापरारूढ होता हुवा ही समुद्रतिर रहा हु ।

हे गौतम यह उत्तर तो आपने ठीक युक्ति सर दीया परन्तु एक प्रश्न मुझे और मी करना है ।

हे स्वामिन् आप कृपा कर फरमावे ।

(११) प्रश्न हे—गौतम इस भयंकार संसारके अन्दर घौरोन- घौर अन्धकार फेल रहा है जिसके अन्दर बहुतसे प्राणीयों इदरके उदर धक्के खाते भ्रमण कर रहे हैं उन्होंको रस्ता तक भी नहीं मीलता हैं तो हे गौतम इन्ही अन्धकारमें उद्योत कोन करेगा क्या यह बात आप जानते हो ?

(उत्तर) हे भगवान—इन्ही घौर अन्धकारके अन्दर उद्योत करनेवाला एक सूर्य है उन्ही सूर्यके प्रकाश होनेसे अन्धकारका नाश हो जाता है तब उदर इधर भ्रमन करनेवालोको ठीक रस्ता मालम हो जायगा ।

(प्र) हे गौतम—अन्धकार कोनसा और उद्योत करनेवाला सूर्य कोनसा ?

(उ०) हे भगवान इस आरापार लोकके अंदर मिथ्यात्वरूपी घौर अंधकार है जीस्मे पामर प्राणीयों अन्धा होके इदर उधर भ्रमण करते है परन्तु जब तीर्थंकररूपी सूर्य केवलज्ञान रूपी प्रकाशमें भव्यात्मावोंको सम्यग्दर्शन रूप अच्छा सुंदर रहस्ता मीलजावेगा उन्ही रहस्तेसे सीघ्र स्वस्थान पहुंच जावेगा । यह उत्तर सुनके देवादि परिषदा प्रश्नचित हो रही थी ।

हे गौतम यह आपने ठीक कहा परन्तु एक और भी प्रश्न मुझे करना है। गौतम–फरमावो भगवान।

(१२) प्रश्न–हे गौतम यह अनादि प्रवाह रूप संसारके अंदर बहुतसे प्राणीयों शरीरी और मानसी दुःखोंसे पिडीत हो रहे है उन्होंके लिये आप कोनसा स्थान मानते हो कि जहांपर पहुंच जानेसे फीर जन्म मरण ज्वाररोग शोककि वेदना बीलकुल ही न होने पावे।

(उ०) हे भगवान इस लोकमें एक एसा भी स्थान है कि जँहापर पहुच जानेके बाद किसी भी प्रकारका दुःख नही होता है।

(प्र०) हे गौतम ऐसा कोनसा स्थान है ?

(उ०) हे भगवान–जो लोकके अग्र भागपर जो निवृत्तिपुर (मोक्ष) नामका स्थान है वहां पर सिद्धावस्थामें पहुंच जाने पर किसी प्रकारका जन्म ज्वार मृत्युवादि दुःख नही है अर्थात कर्म-रहित होकर वहा जाते है वास्ते अव्वाबाद सुखोंमें वीराजमान हो जाते है।

केशीस्वामि-हे गौतम आपकि प्रज्ञा बहुत अच्छी है और अच्छी युक्तियों द्वारा आपने यह १२ प्रश्नोंका उत्तर दीया है। परिषदा भी यह १२ प्रश्न सुनके शांत चित्त और वैरागरसका पान करते हुवे जिन शासनकी जयध्वनिके शब्द उच्चारण करते हुवे विसर्ज्जन हुई।

शासनका एक यह भी कायदा है कि जब तीर्थंकरोंका शासन प्रचलित होता है तब पूर्व तीर्थंकरोंके साधु विचरते है वे जबतक

बर्तमान तीर्थंकरोंके शासनको स्वीकार न करे वहां तक केवलज्ञान होवे, वास्ते भगवान केशीश्रमण पार्श्वप्रभुके संतान थे और इस समय शासन भगवान वीर प्रभुका प्रचलित था वह भगवान केशी-श्रमणकों केवलज्ञान प्राप्तकि कोशीषसे वीर प्रभुका शासनकों स्वीकार कीया अर्थात् पेहले च्यार महाव्रत रूपी जो धर्म था वहा भगवान गौतमस्वामिके पास पांच महाव्रतरूपी धर्मकों स्वीकार करके तप संयममें अपनी आत्माको लग देनेसे शासन रूपी वृक्ष मे केवलज्ञान रूपी फलकी प्राप्ती स्वल्पकालमें ही हो गई थी। भगवान केशीश्रमण केवल पर्याय पालते हुवे चरमश्वासोश्वासका त्याग कर अक्षय सुख रूपी सिद्धपुरपाटनमें अपना स्वराज करने लग गये अर्थात् मोक्ष पधार गये है। इतिशम्।

प्रश्नोत्तर नम्बर ४

सूत्र श्री रायपसेणीजी

(केशीश्रमण और प्रदेशी राजा)

चरम तीर्थंकर भगवान वीरप्रभु अपने शिष्य समुदायसे पृथ्वीमंडलकों पवित्र करते हुवे अमलकम्पानगरीके अम्रशाल नामके उद्यानमें पधारे थे। उन्ही समय सुरियाभदेव अपनि ऋद्धि सहित भगवान्कों वन्दन करनेकों आया था भगवान्कों वन्दन नमस्कार करके गौतमादि मुनिवरोंके आगे भक्ति पूर्वक ३२ प्रकारके नाटक कर स्वस्थान गमन करता हुवा। तत्पश्चित् भगवान् गौतमस्वामिने प्रश्न किया कि हे करूणासिन्धु यह सुरियाभदेव पुर्व भवमें कोंनथा कीसनगरमें रहता था और क्या

सुकृत कार्य किया कि जिन्होंसे प्रभावके वह देवता संबन्धी महान् ऋद्धि ज्योति क्रन्तीकों प्राप्त हुवा है इस पर भगवान फरमाते हैं कि हे गौतम! एकाग्रचित्त कर सुनो। इन्हीं जम्बुद्विपके भरतक्षेत्रमें केकइ नामका आद्धा जिनपद देशमें श्वेताम्बिका नामकी नगरी थी धनधान्य मनुष्यों कर अच्छी शोभनिक होनेसे अमरापुरकी औपमा दी जाती थी उन्ही नगरीके बाहर मृगवन उद्यान था वह भी वृक्ष लत्ता वेलि फल पुष्प और निर्मल जलसे परीपूर्ण भरा हुवा होद वापीकर अच्छा सुन्दर मनोहर था। उन्ही श्वेताम्बिका नगरके अन्दर अधर्मका अन्तेवासी नास्तिक शिरोमणि एसा प्रदेशी नामका राजा था और राजाके सूरिक्रन्ता नामकी राणी थी वह राजाकों परमवल्लभ थी उन्ही राणीके अंग जात और प्रदेशी राजाका पुत्र सुरिकान्त नामका राजकुमर था वह कुमर राजकार्य चलानेमें बड़ा ही कुशल था। राजा प्रदेशीके चित्त नामका प्रधान था वह च्यारों बुद्धियोंमें बड़ा ही निपुण था और राजके कार्य करनमें अच्छी सलाह देनेमें दुसरे राजावोंके साथ व्यवहार चलानेमें दीर्घदृष्टीवाला था।

एक समय राजा प्रदेशीके सावत्थी नगरीका जयशत्रु राजाके साथ कुच्छ कार्य होनेसे चित्त नामका स्वप्रधानकों बोलाके आदेश करता हुवा कि हे चित्त प्रधान आप सावत्थी नगरीका जयशत्रु राजाके पास जावों और वह भेटणा हमारी तर्फसे देके यह कार्य कर पीच्छे जलदिसे आवों, चित्त नामका प्रधान अपने मालक (राजा) कि आज्ञाकों सविनय शिरपर चडाके राज प्रदेशीके दीये हुवे भेटणोकों और फरमाये हुवे कार्यकों स्वीकार कर अपने स्थान

पर आये स्नान मंजन कर अच्छे वस्त्र भूषण धारण करके अपने साथ लेने योग्य सुभट रथ आदिकों लेके चित्त प्रधान सावत्थी नगरी गया=सावत्थी नगरीके राजा जयशत्रुने भी प्रधानजीका अच्छा सत्कार किया प्रदेशी राजाका भेटणा आदर पूर्वक स्वीकार करके प्रदेशी राजाके कार्यमें प्रवृति करने लगा।

सावत्थी नगरीके कोष्टक नाम उद्यानमें श्री पार्श्वप्रभुके चोथे पाट पार विराजते हुवे केशीश्रमण भगवान* अपने शिष्य मंडलके परिवारसे पधारते हुवे, यह खबर नगरीमें होनेसे धर्माभिलाषी पुरुषों महात्मावोंकि सेवाभक्ति और व्याख्यान श्रवण करनेकों जा रहे थे; उन्हीं समय चित्त प्रधान भी इस बातको जानके आप भी केशीश्रमण भगवानके पास पहुंच गये। आये हूवे परिषदा वृन्दकों धर्मकथा कहेते हुवे भगवान केशीश्रमण संसारका स्वरूप अनित्य दर्शाया और धर्मका महत्व बतलाया, यह धर्म दो प्रकारका है (१) साधु धर्म सर्वव्रती (२) श्रावक धर्म देशव्रती हे, भव्य यथाशक्ति धर्मकों स्वीकार कर प्रतिज्ञा पूर्वक आज्ञा पालन करनेसे जीव आराधीक होता है और आराधीक होनेपर अधिकसे

---

* केशीस्वामि समकालिन दोय हुवे है। गौतमस्वामिके साथ चर्चा करी थी वह केशीश्रमण पार्श्वनाथजीके संतान मुनिपद धारक थे तीन ज्ञान संयुक्त अन्तिम मोक्ष पधारे थे। और प्रदेशी राजाकों प्रतिबोध दिया था वह केशीश्रमण पार्श्वनाथजीके संतान थे परन्तु आचार्य पद धारक च्यार ज्ञान संयुक्त अन्तिम बारहवे देवलोक पधारे थे। वास्ते दोनों केशीश्रमण समकालिन हूवे थे परन्तु हे भिन्न भिन्न एसा शास्त्रो द्वारा तथा पार्श्व पटावली द्वारा संभव होता है। यहा प्रदेशी राजाको प्रतिबोध करनेवाले केशीश्रमण च्यार ज्ञान संयुक्त पार्श्वनाथजीके चोथे पाट आचार्य थे....

अधिक भव करे तो भी १९ भवोंसे ज्यादा नही करे इत्यादि देश-नाकी जिस्मे कीसने दीक्षा कीसीने श्रावक व्रत लेके अपने अपने स्थान गये ।

चित्त प्रधान व्याख्यान श्रवण करके बड़ा आनंदीत हुवा और गुरू महाराजके पास श्रावकके १२ व्रत धारण किये। कितनेक रोज रेहनेपर प्रदेशी राजाका कार्य होजानेसे जयशत्रु राज प्रेमदर्शक भेटणा तैयार कर चित्त प्रधानको कार्य हो जानेका समाचार कहेके वह भेटणा देके रजा देता हुवा । चित्त प्रधान रवानेकि तैयार करके भगवान केशीश्रमणके पासमे आया अपने रवाने होनेका अभिप्राय दर्शाते हुवे भगवानसे श्वेताम्बिका पधारनेकि विनती करी कि हे भगवान आप श्वेताम्बिका पधारो इसपर गुरु महाराजने पुर्ण ध्यान न दीया तब दूसरी तीसरीवार और भी विनती करी ! तब केशी भगवान बोले कि हे चित्त प्रधान तु जानता है कि एक अच्छा सुन्दर बन हो और उन्हीमे मधुर फलादि पाणी भी हो परन्तु उन्ही वनके अन्दर एक पारधी रेहता हो तो वनचर या खेचर जानवर आशक्ता है ? नही आवे, इसी माफोक तुमारे श्वेताम्बिका नगरी अच्छी साध्वादिके आने योग्य है परन्तु वहा नास्तिक प्रदेशी राजा पारधि तुल्य है वास्ते साधुवोंका आना केसे बन शक्ता है ।

नम्रतापूर्वक चित्त प्रधान बोला कि हे भगवान आपको प्रदेशी राजासे क्या मतलब है श्वेताम्बिका नगरीमें बहुतसे लोक धनाढ्य बसते है और बडेही श्रद्धावान है हे भगवान आप पधारो आपको बहुतसा असानपान खादीम स्वादिम वस्त्र पात्र पाट पटला

शय्या संथाराकि आमंत्रण करके वेहारावेंगे और आपकि बहुत सेवा भक्ति करेगे तो फिर आपको प्रदेशी राजासे क्या करना है हे भगवान आपके पधारनेपर बहुत ही उपकार होगा कारण यहांके लोग बडे ही भद्रीक प्रकृतिवाले हैं वास्ते आवश्य पधारों ऐसी आग्रेपूर्वक विनतिको श्रवण करते हूवे भगवान केशीश्रमणने फरमाया कि हे चित्त अवसर जाना जायगा । इतना केहेनेपर प्रधानजीको उमेद हो गइ कि गुरु महाराज आवश्य पधोरेंगे ।

चित्तप्रधान सावत्थीसे रवाना होके श्वेताम्बिका आते ही पेहला वनपालकके पासे जाके केह दीया कि स्वल्पही कालमे यहा पर पार्श्वनाथ संतानीये केशीश्रमण पधारेगे उन्होंकों मकान पाट पाटला आदिक सत्कार पूर्व देना और अच्छी तरहेसे सेवा भक्ति करना जब महात्मा यहा पर बिराजमान होजावे तब तुम हमारे पास आके हमकों खबर दे देना इत्यादि ।

चित्त प्रधान अपने स्थानपर आके रस्तेका श्रम दुर कर राजा प्रदेशीके पास जाके नम्रतापूर्व भेटणा देके सर्व समाचारोंसे राजाकों संतुष्ट कीया ।

यहां केशीश्रमण भगवान अपने शिष्य मंडलसे विहार करते २ श्वेताम्बिका नगरी पधार गये । वनपालकने महात्मावोंकों देखतों ही बडा ही आदर सत्कारसे वन्दन नमस्कार करके उतरनेका स्थान और पाटपाटलादिसे भक्ति करके फिर नगरमे जहा चित प्रधान रहेते थे वहां आके हर्ष वदनसे वधाइ देताहुवा की हे प्रधानजी जिन महा पुरुषोंकि आप रहा देख रहे थे वेही भगवान

उद्यानमे पधार गये है उन्होंको मकान पाटपाटला शय्या संथारा देके मैं आपके पास आया हूं।

चित्त प्रधान आनन्दीत चित्तसे वनपालककों वधाइदेके नगर निवासीयोंको खबर कर दी उसी समय हजारों लोकोंके साथमें प्रधानजी केशीश्रमणजी महाराजकों वन्दन करनेको आये भक्ति पूर्व वन्दन कर धर्मदेशना सुनी मुनियोंको गौचरी आदिसे खुब सुख साता उपजाई। श्वेतांबिका नगरीमें आनंद मंगल वर्त राहा था।

एक समय चित्त प्रधान गुरू महाराजसे अर्ज करी कि हे भगवान आप हमारे प्रदेशी राजाकों धर्म सुनावों। मुझे खातरी है कि आपका प्रभाव शाली व्याख्यान श्रवण करनेसे प्रदेशी राजा अवश्य आपका पवित्र धर्मकों स्वीकार करेगा?

हे चित्त प्रधान च्यार प्रकारके जीव धर्म सुनाने लायक नहीं होते है यथा-(१) साधु मुनिराज आते है ऐसा सुनके सामने न जाता हो (२) मुनिराज उद्यानमें आ जाने पर भी वहां जाके वन्दन न करता हो (३) मुनिराज अपने घर पर आ जाने पर भी वन्दन भक्ति न करता हो (४) मुनिराज रस्तेमें सामने मील जाने पर भी वन्दन भक्ति न करता हो। हे चित्त तुमारे प्रदेशी राजामें च्यारों बोल पाते हे अर्थात् प्रदेजी राजा हमारे पास ही नहीं आवे तो मैं धर्म कैसे सुना सक्ता हूं।

चित्त प्रधान बोला कि हे भगवान् हमारे वहां कम्बोज देशके च्यार अश्व आये हैं उन्हीकों फीरानेके हेतुसे मैं प्रदेशी राजाकों आपके पास ले आउंगा फीर आपके मनमाना धर्म प्रदेशी

राजाकों सुनाइये ! इतना केहके वन्दन कर चित्त प्रधान अपने स्थान गया ।

एक समय वह च्यार अश्वोंसे रथ तैयार कर जंगलमें घूमनेके नामसे राजा प्रदेशीकों चित्त जंगलमें ले आया इधर उधर रथकों फीराते बहुत टैम हो जानेसे राजाका जीव घबराने लग गया, तब प्रधानसे राजाने कहा कि हे चित्त रथको पीछा फीरालों धूपसे मेरा जीव घबराता है अगर यहां नजीकमें शीतल छाया हो तो वहांपर चलों इतनेमें चित्त प्रधान बोला महाराज यह नजिकमें अपना उद्यांन है वहां पर अच्छी शीतल छाया है । प्रदेशी राजाने कहा कि एसा हो तों वहां ही चलो । इतनेमें प्रधानजीने रथकों सीधा ही जहां पर केशीश्रमण भगवान विराजते थे । उन्होंके पासमें प्रदेशी राजाकों ले आये एक मकांनमें राजाको ठेरा दिया । श्रम दुर हो जानेपर राजाने दृष्टि पसार किया तो उदर केशीश्रमण भगवान विस्तारवाली परिषदां को धर्मदेशना दे रहें थे । उन्होंको देखके प्रदेशी राजा बोला हे चित्त यह जड मूंढ कोन है और इन्हों कि सेवा करनेवाले इतने जडमूंड काहासे एकत्र हुवे है ।

चित्त प्रधान बोला हे नराधिप यह जैन मुनि है । धर्म देशना दे रहे है । इन्होंकि मान्यता है कि जीव और काया भिन्न भिन्न है । इसपर प्रदेशी राजा बोला हे चित्त क्या यह साधु अच्छे लिखे पढे है अपनेकों वहां पर जाने योग्य है अर्थात् अपने प्रश्न करे तो वह उत्तर देवेगा ।

चित्त प्रधन बोला हे नरेश्वर ये मुनि अच्छे ज्ञाता है वहां पर जाने योग्य है आपके प्रश्नोंका उत्तर ठीक तौर पर दे देवेंगे वास्ते आप आवश्य पधारों इतना सुननेपर राजा प्रदेशी चित्त-प्रधानको साथमें लेकर केशीश्रमण भगवानके पासमें आया परन्तु प्रदेशी वन्दन नहीं करता हुवा मुनिके आगे खडा रहा।

प्रदेशीराजा बोला हे स्वामिन् क्या आप जीव और शरीरको अलग अलग मानते हो ?

केशीश्रमण बोले हे राजन् जैसे हासलके चोरानेवाला उन्मार्ग जाता है और उन्मार्गका ही रस्ता पूछता है इसी माफीक हे राजन् तूं भी हमारा हासल चौराते हुवे बेअदबीसे प्रश्न करते है। हे महीपति पेहला आपके दीलमें यह विचार हुवा था कि यह कोण झडमूंड है और कौन झडमूंड इन्होंकी सेवा करते है। इतनेमें राजा प्रदेशी विस्मत होते हुवे पुच्छा कि हे भगवान आपने मेरे मनकी बात कैसे जानी ? केशीश्रमण बोले कि हे राजन् जैन-शासनके अन्दर पांच प्रकारके ज्ञान है यथा—

(१) **मतिज्ञान**—मगजसे शक्तियों द्वारा ज्ञान होना।

(२) **श्रुतिज्ञान**—श्रवण करनेसे ज्ञान होना।

(३) **अवधिज्ञान**—मर्यादायुक्त क्षेत्र पदार्थोंका देखना।

(४) **मनःपर्ययज्ञान**—अढाई द्विपके संज्ञी जीवोंके मनका भाव जानना।

(५) **केवलज्ञान**—सर्व पदार्थोंको हस्ताम्बलकि माफीक देखना और जानना।

इस्में मुझे केवल ज्ञान छोडके शेष च्यार ज्ञान है उस्मे मनः पर्यव ज्ञानद्वार मैं तुमारे मनकि सर्व वार्तो जानी है।

राजा प्रदेशी बोला हे भगवान मैं यहा पर बेठु ?

केशीश्रमण बोले हे राजन् यह बगेचा तुमारा ही है।

राजा प्रदेशीके दीलमे यहतो निश्चय हो गया कि यह कोइ चमत्कारी महात्मा है अब ठीक स्थान पर बेठके राजा बोला कि हे भगवान आपकि यह श्रद्धा द्रीष्टी प्रज्ञा और मान्यता है कि जीव और शरीर अलग अलग है ?

हे राजन् हमारी श्रद्धा यावत् मान्यता हे कि जीव और शरीर जुदे जुदे है और इस बातको हम ठीक तौर पर सिद्ध कर शक्ते है।

प्रदेशी राजा बोला कि अगर आपकी यह ही श्रद्धा मान्यता हो तो मैं आपसे कुच्छ प्रश्न करना चाहता हुं ?

हे राजन् जेसी आपकी मरजी हो ऐसा ही करिये।

(१) प्रश्न—हे भगवान मेरी दादीजी हमेशोंके लिये धर्म पालन करती थी और उन्होंकी मान्यता भी थी कि जीव और शरीर जुदा जुदा है हो आपके मान्यतासे धर्म करनेवाले देव लोकमें देवता होना चाहिये और मेरे दादजी भी देवतोंमें ही गये होगे— अगर मेरे दादजी देवलोकसे आके मुझे केहे कि हे वत्स मैं धर्म करके देवावतार लिया हूं वास्ते तुं भी इस अधर्मकों छोडके धर्मकर तांके दुःखसे बचके देवतावोंका सुख मीलेगा हे महाराज एसा मुझे आके केहदेवें तों मैं आपका केहना सच समझु कि हमारे दादीजीका शरीरतों यहा पर रहा और जीव देवतोंमें गया इस लिये जीव रीर अलग अलग है अगर मेरे दादीजी एसा न कहे तों मेरे

बना हुवा ठीक ही है कि जीव और शरीर एक ही है अर्थात् पांचतत्वसे यह पुतला बना हुवा है जब पांचोतत्व अपने २ रूपमें मील जाते है तब पुतला विनास हो जाता है यह मेरी मानता ठीक है ?

(उत्तर) हे राजन् कोई मनुष्य स्नान कर चंदनादि सुगन्ध पदार्थसे शरीर लेपन करके देव पूजन करनेको जा रहा हैं, रस्तेमें कोई पाखाना (टटी) में उभा हुवा मनुष्य उन्हीं देव पूजन करनेकों जाते हुवे मनुष्यकों पाखानेमें बोलावे तों जा शक्ता है ? नही भगवान इस दुर्गन्धके स्थानमें वह केसे जावे अर्थात् नही जावे । हे राजन् वह दुर्गन्धके स्थान पर जाना नही इच्छता है तों देवतावोंतों परम् आनंदमें उत्तम पदार्थोंके भोग विलासमें मग्न हो रहे है इन्ही मनुष्य लोक कि दुर्गन्ध ४००–५०० योजन उर्ध्व जाती है वास्ते देवता मनुष्य लोकमें आना नही चाहते है। हे राजन् और भी सुन देवता मनुष्य लोकमें आनेकि अभिलाषा करते भी च्यार कारणोंसे नही आशक्ते है यथा—

(१) तत्कालके उत्पन्न हुवे देवतावोंके मनुष्योंका संबंध छुट जाता है (विस्मृत) और वहां देव देवीयोंसे नया संबन्ध हो जाते है इसीसे देवता आ नही शक्ता है ।

(२) तत्कालका उत्पन्न हुवा देवता–देवता संबन्धी दिव्य मनोहर काम भोगोंमे मुर्च्छीत हो जाते है वास्ते यहांके सडन पडन निध्वंसन काम भोगोंका तीरस्कार करते है वास्ते आ नही शक्ता है ।

(३) तत्कालका उत्पन्न हुवा देवतावोंकि आज्ञाकारी देव देवीयों एक नाटिक करते हे उन्हीकों देखनेमे लग जाते है वह सुखपूर्वक देखनेवालोंको ज्ञात होता है कि महुर्त मात्रका नाटिक है परन्तु यहां २००० वर्ष क्षीण हो जाते है वास्ते देवता आ नही शक्ते है।

(४) तत्कालके उत्पन्न हुवा देवतावों मनुष्य लोकमे आना चाहे परन्तु मृत्यु लोक कि दुर्गन्ध ४००–५०० योजन ऊर्ध्व जाती है वास्ते दुर्गंधके मारे देवता यहां पर आ नही शक्ता है।

वास्ते हे राजन् तूं इस वातकों स्वीकार करले की जीव और शरीर भिन्न भिन्न हैं।

(२) प्रश्न हे भगवान् आपने यह युक्ति तो ठीक मीलादि परंतु मेरे दादाजी मेरे माफीक बडे ही अधर्मी थे लोहीसे हाथ हंमेशों लीप्त ही रेहते थे जीव मारनेमें कीसी प्रकार कि घ्रणा नही लाते थे वह आपकि मान्यता माफीकतों नरकमे ही गये होगे हे भगवान् अगर मेरे दादाजी नरकसे आके मुझे केहदे कि हे वत्स मेने वहुतसे अधर्म किये थे वास्ते नरकमे दुःख देख रहा हु परन्तु अब तुम अधर्म न करना अगर अधर्म करोंगे तों मेरे माफीक तुम भी नरकमें दुःख देखोंगे एसा आके मेरा दादजी मुझे कहेतों मैं आपकि वातको सच मानु नही तों मेरी मानी ठीक है ?

(उत्तर) हे राजन् आपकि परम वल्लभा सूरिकन्ता नामकि राणी है उन्होंके साथ कोई लंपट पुरुष काम भोग सेवन करता होतो तु उस लंपटकों क्या दंड करेगा ? हे भगवान् उस लंपटको मैं मारूं पीटूं केद करूं। हे राजन् अगर वह लंपट कहे कि मूजे क्षण मात्र छोडतों मैं मेरे कुटुम्बादिसे मील आउ तो तुम

उन्हीं लंपटकों छोड दोगे ? नहीं भगवान् एसे अकृत करनेवालोंको केसे छोडा जावे अर्थात् एक क्षण मात्र भी नहीं छोडु । इसी माफीक हे राजन् नारकिके नैरियोंकों भी क्षण मात्र यहां आनेको नहीं छोडा जाता है और भी सुनो नारकीके नैरिये यहां आना चाहते है तद्यपि च्यार-कारणोंसे नहीं आ शक्ते है यथा—

(१) तत्काल उत्पन्न हुवा नारकीके महावेदनिय कर्मक्षय नहीं हुवे वास्ते आना चाहते हुवे भी आ नहीं शक्ते है अर्थात् वहां वेदना भोगवनी ही पडती है ।

(२) तत्कालोत्पन्न हूवे नारकी परमाधामी देवतावोंके आधिन हो रहे है वह देवता एक क्षीण मात्र भी उन नारकीकों विसरामा नहीं लेने देते है वास्ते नहीं आ शक्ते है ।

(३) तत्कालोत्पन्न हूवे नारकी किये हुवे नरक योग्य कर्म पूर्ण भोगव नहीं शक्या वास्ते नारकी आ नही शक्ते है ।

(४) नारकीका आयुष्य बन्धा हुवा है वह पुरणक्षय नहीं कीया है वास्ते आना चाहते हुवे भी नारकीके नैरिया यहां पर आ नहीं शक्ते है ।

इस वास्ते हे राजन् तू मानले कि जीव और काया भिन्न भिन्न है ।

(३) प्रश्न - हे भगवन् एक समय मैं सिंहासनपर बेठा था उन्ही समय कोतवाल एक चौरकों पकडके मेरे पास लाया मैंने उसी जीवते हुवे चौरको एक लोहा कि मजबुत कोठीमें प्रवेश कर उपरसे ढकणा बन्ध कर दिया और एसी मजबूत कोठीकों कर दी कि वायुकायकों भी उसी कोठीमे आने जानेका च्छेद्र नही

रहा फीर कितनेक समय होजानेसे उन्ही कोटीको इदर उदर ठीक तलास करनेपर काही भी छेद्र न पाये कोठीकों खोलके देखा तो वह चौर मृत्यु प्राप्त दृष्टीगोचर हुवा तब म्हैने निश्चय कर लिया कि जीव और शरीर एक ही है क्युकि अगर जीव जुदा होता तों कोटीसे निकलने पर छेद्र अवश्य होता परन्तु छेद्र तो कोंइ भी देखा नहीं वास्ते हे भगवान् मेरा मानना ठीक है कि जीव काया एक ही है ?

(उत्तर) हे राजन् यह तेरी कल्पना ठीक नहीं है कारण जीव तो अरूपी हैं और जीव कि गति भी अप्रतिहत अर्थात् किसी पदार्थसे जीवकी गति रूक नहीं शक्ती है अगर कोठीके छेद्र न होनेसे ही आपकी मति भ्रम हो गई हो तो सुनो। एक कुडागशाला अर्थात् गुप्त घरके अन्दर एक ढोल डाके सहित मनुष्यकों बेठाके उन्होंका सर्व दरवाजा और छेद्रोंकों बीलकुल बन्ध कर दे (जेसे आपने कोटीका छेद्र बन्ध किया था) फिर वह मनुष्य गुप्त घरमें ढोल मादल बजावे तो हे राजन् उन्ही बाजाकी आवाज बाहारके मनुष्य श्रवण कर शक्ते है ? हां भगवन् अच्छी तरहेसे सुन शकते है। हे राजन् वह शब्द अन्दरसे बाहार आये उन्होंसे गुप्त घरके कोइ छीद्र होता है ? नहीं भगवन् तो हे राजन् यह अष्ट स्पर्शवाले रूपी पौदगल अन्दरसे बाहार निकलनेमें छेद्र नहीं होते है तों जीव तों अरूपी है उन्होंके निकलनेसे तो छेद्र होवे ही काहासे वास्ते हे प्रदेशी तु समझके मान ले के जीव और शरीर अलग अलग है।

(४) हे भगवन् एक समय कोतवाल एक चौरकों पकड़के मेरे पास लाया म्हैं उन्हीं चौरको मारके एक लोहाकी कोटीमें डाल

दिया और सर्व छेद्रको बन्ध कर दिये फीर कितनेक समयके बाद कोटीकों देखा तो एक भी छेद्र नहीं हूवा कोटीको खोलके देखा तो अन्दर हजारों जीव नये पेदा हो गये। हे भगवन् जब कोटीके छेद्र नहीं हुवे तो जीव काहासे आये इसी वास्तें मेरा ही मानना ठीक है कि जीव और काया एक ही है।

(३) हे राजन् आपने अग्निमें तपाया हुवो एक लोहाका गोलेकों देखा है ? हां प्रभो मैंने देखा है। हे राजन् उन्हीं लोहोका गोलेके अन्दर अग्नि प्रवेश होती है ? हां दयाल प्रवेश होती है। हे राजन् क्या अग्नि प्रवेश होनेसे लोहाका गोलेके छेद्र ही होता है ? नहीं भगवन् छेद्र नहीं होता है। हे राजन् जब यह बादर अग्नि लोह गोलाके अन्दर प्रवेश हो जानेपर भी छेद्र नहीं हूवे तों जीव तो अरूपी सुक्षम है उन्हींको लोहाकी कोटीमें प्रवेश होते छेद्र काहाशे होवे वास्ते समझके मान ले जीव काया जुदी जुदी है।

(९) हे स्वामीन आप यह बात मानते हो कि सर्व जीव अनन्त शक्तिवाले है ? हां राजन् सर्व जीव अनन्त शक्तिवान् है। तो हे भगवान एक युवक पुरुष जीतना वजन उठा शके इतनाही वजन वृद्ध क्युं नही उठा शक्ता है। अगर युवक और वृद्ध दोनों बाराबर वजन उठा शके तो म्हें आपका केहना मानु, नही तो मेरा ही माना हुवा ठीक है ?

(उत्तर) हे महीपाल—जीवतो अनन्त शक्तिवान् है परन्तु कर्मरूपी औपधीसे वह शक्तियों दब रही है जब औषधी (कर्म) बीलकुल दूर हो जावेंगे तब अनन्त शक्ति अर्थात् आत्म वीर्य

प्रगट हो जायगा और आपका जो केहना है कि युवक और वृद्ध बराबर वजन क्यों नही उठा शक्ते है ? हे राजन् आप जानते है कि अगर कोई दो मनुष्य युवक बलवान बराबरके है जिसमें एकके पास नवी कावड मजबुत वांस और रसी आदी सामग्री है और दुसरे मनुष्यके पास पुराणी कावड सडे हुवे वांस और रसी आदि सामग्री है। हे राजन् वह दोनों पुरुष बराबर वजन उठा शक्के है नही भगवान् वह बराबर केसे उठा शक्ते है कारण उन्होंके कावडमें तफावत है, हे राजन दोनों पुरुष बराबर होने पर कावडकि तफावत होनेसे बराबर वजन नही उठा शक्ते इसी माफक जीव तों बराबर शक्तीवाला है परन्तु कावड रुप शरीर सामग्रीमें युवक और वृद्धका तफावत है वास्ते वह बराबर वजन नही उठा शके। इस हेतुसे समझ लो राजन् कि जीव और काया अलग अलग है।

(६) प्रश्न हे भगवान् जीव सर्व सरखे मानते होतो जेसे एक युवक पुरुष बाणफेके इसी माफोक वृद्ध पुरुष बाणफेके तो मैं मानु कि जीव और काया अलग अलग है नहीं तों मेरा माना हुवा ही ठीक है ?

(उत्तर) हे राजन् दो पुरुष बराबर शक्ती वाले है जिस्मे एकके पास बाण तीर धनुष्यदि नवी सामग्री है और दुसरे पुरुषके पास पूरणी सामग्री है तो दोनों पुरुष बराबर होनेपर क्या बाणकों बराबर फेक सक्ता है ? नहीं भगवान्। क्या कारण ? सामग्री नवी पुरणीका ही कारण है ? हे राजन् इस हेतुसे समझे की युवक पुरुषके शरीर संहनन सामग्री नवी है वह बाण जोरसे चला शक्ता है। और वृद्ध पुरुषके शरीर संहनन सामग्री पुराणी

होजानेसे इतना वेगसे बाण नहीं फेंक शक्ता है वास्ते समझके मानलोकि जीव और काया अलग अलग है।

(७) हे भगवान् एक समय कोतवाल जीवता हुवा चौरकों मेरे पास लाया, मैं उन्हीं जीवता हुवा चौरके दोय तीन च्यार पंच यावत् संख्याते खंड करके खंड खंडमें जीवकों देखने लगा परन्तु मेरे देखनेमें तों जीव कहीं भी नहीं आया तों मैं जीव और शरीरकों अलग अलग केशे मानु अर्थात् मेरा माना हुवा ही ठीक है ?

(उत्तर) हे राजन् कठीयाडोंका समुह एक समय एकत्र मीलके एक वनमें काष्ट लेनेकों गये थे वह सर्व एक स्थान पर स्नान मज्जन देव पूजन कर भोजन करके एक कठोयाडाकों कहा कि हम सब लोक काष्ट लेने कों जाते है और तुम यहा पर रहो यहां जों अग्नि है इन्हों कि सरक्षण करो और टैम पर रसोइ तैयार रखना अगर अग्नि बुज भी ज वे तों यह जो आरणकि लकडी है इन्होसे अग्नि निकाल लेना। हम सब लोक काष्ट लावेगे उन्होंके अन्दरसे कुच्छ (थोडा थोडा) तुमकों भी देदेंके बरावर बना लेवेगे एसा कहेके सर्व लोक वनमें काष्ट लेनेको चले गये। बाद मे पीछे रहा हुवा कठीयाडा प्रमादसे उन्ही अग्निका संरक्षण कर नही शका। अग्नि बुज जाने पर आरणकि लकडीयों लाके उसके दोय तीन च्यार पंच यावत् संख्याते खंड करके देखा तो काही भी अग्नि नही मीली तब सर्व कठीयाडोंको असत्य समझता हुवा निरास होके वेठ गया। इतनेमें वह सब लोक काष्ट लेके आया और देखा तों अग्नि भी नही आरणकि लकडीयों भी सब तुटी हुइ पडी

है और वह कठीयाडा भी निरास हुवा बेठा है उन्होसे पुच्छा तो सब वृतांत कहा तब सर्व कठीयाडे कोपित होके बोले हे मुढ ? हे तुच्छ ? यह तुमने क्या कीया इत्यादि तीरस्कार कीया बाद मे वह सर्व कठीयाडे लकडी तत्त्वके जानकार ठीक क्रिया कर अग्निको प्रगट कर भोजनादिसे सुखी हुवे । उन्ही प्रथम कठीयाडेके माफीके हे मुंढ प्रदेशी, हे तुच्छ प्रदेशी, तत्त्वसे अज्ञात है प्रदेशी तु भी कठीयाडेकी माफीक करता है ।

हे भगवान् यह विस्तारवाली परिषदके अन्दर मेरा अपमान करना क्या आपके लिये योग्य है ?

हे प्रदेशी आप जानते है कि परिषद कितने प्रकारकी होती है ?

हां भगवन् मैं जानता हु कि परिषदा च्यार प्रकारकी होती है यथा (१) क्षत्रीयोंकी परिषदा (२) गाथापतियोंकी परिषदा (३) ब्राह्मणोंकी परिषदा (४) ऋषीयोंकी परिषदा ।

हे प्रदेशी आप जानते हो कि इन्हीं च्यार प्रकारके परिषदाकी आसातना करनेवालोंको क्या दंड दीया जाता है ?

हां भगवन् मैं जानता हु कि आसातना करनेवालोंको दंड

(१) क्षत्रीयोंके परीषदाकी आसातना करनेवालोंको शुली फासी केद आदिका दंड दीया जाता है ।

(२) गाथापतियोंके परिषदाकी आसातना करनेसे लकडी काटी हस्त चपेटादिका दंड दिया जाता है ।

(३) ब्राह्मणोंके परिषदाकि आसातना करनेसे अक्रोष वचन आदिसे तिरस्कार किया जाता है ।

(४) ऋषियोंके परिषदाकि आसातना करनेसे–मुंढ तुच्छ आदि शब्दोंका दड करते है हे प्रदेशी आप जानते हुवे ऋषियोंकि आसातना करते हो और दंड मीलने पर अपके अपमानका दावा करते हो अर्थात् हे राजन् आप जानते हुवे ही मेरेसे प्रतिकुल प्रश्न करने है यह बात केशीश्रमण मनःपर्यव ज्ञानसे प्रदेशी राजाके मनकी बातकों जाणी थी कि प्रदेशी राजा समझ जाने पर भी प्रतिकुल प्रश्न करते है। इस लिये मुंढ तुच्छ शब्दोंकि सजा दी थी।

हे भगवान् म्है आपका प्रथम ही व्याख्यासे समझ गया था परन्तु प्रतिकुल प्रश्न कीये वगेर मेरे और मेरा पक्ष वालोंको विशेष ज्ञान मील नही शक्ता है वास्ते विशेष ज्ञान प्राप्तिके इरादासे ही मेंने यह प्रतिकुल प्रश्न कीये है।

हे राजन् आप जानेते है कि लौकमे व्यवहारीयें कितने प्रकारके होते है ?

हां भगवान् म्है जानता हु कि व्यवहारीये च्यार प्रकारके होते है यथा–

(१) जेसे कीसी साहुकारका रुपिया लेना है वह मागनेकों जाने पर देनदार रूपीया देवे और साहुकारका आदर सत्कार करे वह प्रथम व्यवहारीया है (२) मागने पर रुपया दे देवे परन्तु सत्कार न करे यह भी दुसरे व्यवहारीया ही है (३) मागनेपर रुपीया न देवे परन्तु नम्रतापूर्वक सत्कार करके कहे की म्है अमुक मुदतमें आपके रूपीया सूत सहीत देउगा वह तीसरा व्यवहारीया है

(४) मागनेपर रूपीया न देवे और सत्कार भी न करे और उलटा तीरस्कार करे वह अव्यवहारीया है ।

हे प्रदेशी आप भी इन्ही च्यार व्यवहारीयोंके अन्दर दुसरा व्यवहारीया हो कारण कि आप मनमें तों ठीक समझ गये हो । परन्तु बाहरमें आदर सत्कार नही कर शक्ते हो हे प्रदेशी जब मनमे समझ ही गये तों अब लज्जा किस बातकि है खुलमखुला धर्मकों स्वीकार क्यों न कर लेते हो ।

(८) प्रश्न—हे भगवन् आप हस्ताम्बलकि माफीक प्रत्यक्षमे मुझे जीव और शरीर अलग अलग बतलादो तों म्है अत्री आपका कहना मान शक्ता हु नही तों मेरा माना हुवा ही धर्म अच्छा है ?

(उत्तर) केशीश्रमण उत्तर दे रहे थे इतनेमे एक वृक्षके पत्र जोरसे चलने लगे तब केशीस्वामि प्रदेशी राजासे पुच्छा कि हे प्रदेशी यह वृक्षके पत्र क्यु चल रहे है तब प्रदेशी बोला कि हे भगवान् वायुकायके प्रयोगसे वृक्षका पत्र चल रहे है । केशी स्वामिने काहा हे प्रदेशी वायुकायाकों कोइ अम्बले जीतनी वायुकाय दीखा शक्ता है प्रदेशीने काहा नही भगवन् वायुकाय बहुत सूक्षम है । केशी स्वामिने काहा हे प्रदेशी च्यार शरीर संयुक्त वायुकाया भी नही दीखा शके तों अरूपी जीवकों हस्ताम्बल कि माफीक केसे बता शके हे प्रदेशी छदमस्थ जीवों दश पदार्थोंकों नही देख शक्ते है यथा—

(१) धर्मास्तिकाय जो जीव पुद्गलोंको चलन साहीता देती है

(२) अधर्मास्तिकाय जों जीव पुद्गलोंकों स्थिर होंनेमे साहिता देती है ।

(३) आकाशास्तिकाय जों जीवाजीवकों स्थान देती है।

(४) शरीर रहीत जीव को नही देख शक्ता है ?

(५) परमाणु पौद्गल कोनही देख शक्ता है ?

(६) शब्दके पौद्गल कोनही देख शक्ता है ?

(७) गन्धके पौद्गल कोनही देख शक्ता है ?

(८) यह भव्य है वा अभव्य है „

(९) इसी भवमें मोक्ष जावेगा या नही जावेगा ?

(१०) यह जीव तीर्थंकर होगा या नही होगा ?

इन्हीं १० बोलोंको छदमस्थ नहीं जाने, परन्तु केवली भगवान् जान शकते है वास्ते हे प्रदेशी तु समझ ले जीव और शरीर अलग अलग है।

(९) प्रश्न-हे भगवान आपके शासनमें सर्व जीव एक ही सारखा-बराबर माने गये है तो यह प्रत्यक्ष लोकमें हस्ती महाकाय वाला होता है जिन्होंके महारम्भ क्रिय-कर्म-आश्रव देखनेमें आते है और कुंथवेका स्वल्प शरीर है और उन्होंके स्वल्पारम्भ क्रिया-कर्म-आश्रव देखनेमें आते है तो फोर जीव बराबर केसे माना जावे वास्ते मेरा माना हुवा ही तत्व ठीक है ?

(उ०) हे प्रदेश हस्ती और कुंथवेका जीवतों सदृश ही है परन्तु जीवोंके पुन्य पापकी प्रकृतियों भिन्न भिन्न होनेसे शरीर न्युनाधिक होता है जेसेकि एक कुडागशाला-गुप्तघर होता है जिन्होंके अन्दर एक दीपक कर दिया जाय और उन्होंके उपर एक विस्तारवाला ढक दे देनेपर उन्ही दीपकका प्रकाश उन्हीं ढकके अन्दर ही पडेगा और उन्हीसे कुच्छ कम ढक होगा तों

प्रकाश भी कम पडेगा और उन्हीसे ही कम ढक होगा तो प्रकाश भी कम पडेगा अर्थात् जीतना ढक होगा उतना ही प्रकाश पडेगा तात्पर्य यह हुवा कि। दीपकमें प्रकाश है परन्तु उनके ढक होगा उतना ही विस्तारमें प्रकाश पडेगा दीपक माफीक जीव है और ढक माफीक नाम कर्मोदय शरीर मीला है जीतना शरीर होगा उतनेमें जीव समावेस हो जायगा इसीमें—कर्मोके अनुस्वार शरीरकी ही न्युनाधिकता है वास्ते समझके मान लों कि जीव काय अलग अलग है।

(१०) प्रश्न–हे भगवान् आपकों युक्तियों बहुत ही आति है और युक्तिपूर्वक आपका केहना ही सत्य है परन्तु मेरे बाप दादोंसे चले आये धर्मको मैं किस्तरेसे त्यागन करू मुझे लोक क्या कहेगा?

(उत्तर) हे राजन्–आपने लोहा वाणीयाका दृष्टांत सुना है! नही भगवान मेने लोहावाणीयाका द्रष्टांत नहीं सुना है! हे राजन् लों अब सुनों! एक नगरसे बहुतसे वेपारी लोक द्रव्यार्थी गाडोंमें कीरयाणों लेके विदेशको रवाने हुवे जिस्मे एक लोहा वाणीया भी था" आगे चलते एक लोहाकि खान आई तब सर्व वेपारी लोकों लोहाकों ले लीये, आगे चलने पर एक तांबाकि खान आइ सब लोकोंने लोहाकों छोडके तांबाको ले लीया और अपने साथ चलनेवाला" लोहा वाणीयाकों, भी कहे दीया कि हे भाइ यह तांबा लोहासे अधिक मूल्य वाला है। वास्ते लोहाको छोडके तुम भी इस तांबाको ले लों। लोहा वाणीयांने उत्तर दीया कि एकको छोडे और दुसरेको ग्रहन कोन करे खेर। आगे चलने पर चान्दीकी

खानआइ तो सब लोकोंने तांबांको छोडके चान्दी लेली और पेहलाकि माफीक लोहाणीयानेतों लोहा ही रखा आगे चलनेपर सुवर्ण लेलीया लोहावाणीयाने तों अपनी ही सत्यताकों कायम रखी, आगे चलते हुवे एक रत्नोंकि खान आइ सब जीणोंने सुवर्णको छोड़के रत्न ग्रहन कर लिया और हित बुद्धिसे । लोहावाणीयाकों काहा हे भाइ अपना हठको छोड दों इस स्वल्प मूल्यवाला लोहाकों छोडके यह बहु मूल्य रत्नोंको ग्रहन करों अबीतो कुच्छ नहीं बीगडा है अपने सब बराबर हो जावेगे तुम रत्नोंकों ग्रहन करलों उत्तरमे लोहावाणीयाने कहा कि बड़ी हासी कि बात है कि तुमने कितने स्थान पर पलटा पलटी करी है तो क्या मुजे आप एसा ही समझ लिया नही ? नही ? कबी नही ? म्हे आप कि माफीक नही हू मैंने तो जो लेलीया वह ही लेलीया चाहे कम मूल्य हो चाहे ज्यादामूल्य हों म्हेतो अब लीया हुवा कबी छोड़नेवाला नहीं हू। बस सब लोक अपने अपने घर पर आये रत्नोंवालेतो एकाद रत्नकों वेचके बड़े भारी प्रसादके अन्दर अनेक प्रकारके सुखोंको विलसने लग गये और यह लोहा वाणीया दालीद्री ही रेह गये अब दुसरोंका सुख देखके बहुत पश्चाताप झुरापा करने लगा परन्तु अब क्या होता है । हे राजन् तु भी लोहावाणीयाका साथी हो रहा है परन्तु याद रखीये फीर लोहावाणीयाकी माफीक तेरेकों भी पश्चाताप न करना पडे इसकों ठीक विचारलेना ?

प्रदेशी राजा बोला कि हे भगवान् आपके जेसे महान् पुरुषोंका समागम होनेपर कीसी जीवोंकों पश्चाताप करनेका आवकाश ही नहीं रेहेता है तो मेरे पर तो आपने

बड़ी ही कृपा करी है अब इस भवमें तो क्या परन्तु भवान्तरमें भी मेरे पश्चाताप करनेका काम नही रहा है। हे भगवान् मैं अच्छी तरहसे समझ गयाहु कि आपका फरमान सत्य है जेसे आपने फरमाया वेसे ही जीव और काया अलग अलग हैं यह बात मेरे ठीक ठीक समझमें आगइ है अब तो म्है आपकि वाणीका प्यासा हो राहा हूं वास्ते कृपा कर केवली परूपीत धर्म मुझे सुनावे। केशीश्रमण भगवानने विचित्र प्रकारकी धर्मदेशना देना प्रारंभ किया। हे राजन् तीर्थकरोंने मोक्षका दरवाजे च्यार बतलाये है यथा दान धर्म, शीलधर्म, तपश्चर्यधर्म, भावधर्म जिस्मे भी दान धर्मको प्रधान बतलानेके लिये स्वयं तीर्थकरोंने प्रथम वर्षी दान देकेही योगारंभ धारण कीया है जब मनुष्योंके सूमतारूपी हृदयके कमड खुलके हृदयमे उद्धारताका प्रवेश होता है तब दुसरे अनेक गुण स्वयंही आ जाते है इत्यादि केहके फीर केहेते है कि हे राजन् भगवन्तोंने साधुधर्म और श्रावक धर्म यह दो प्रकारके धर्म अक्षय सुखका दातार बतलाये है इसपर खुब ही विस्तार हो शक्ता है परन्तु यहापर हम प्रश्नोत्तरका ही विषयकों लिख रहें है वास्ते इतना ही केहना ठीक होगा कि केशीश्रमण भगवान्ने विचित्र देशना राजाको सुनाई।

प्रदेशी राजा धर्म देशना श्रवणकर हर्ष हृदयसे बोला कि हे भगवत् दीक्षा लेनेकों तों म्है असमर्थ हु आप कृपाकर मुझे श्रावकके १२ व्रतोंकि कृपा करा दीजीये। तब केशीश्रमण भगवानने प्रदेशी राजाकों सम्यक्त्व मूल व्रतोंका उच्चारण कराया।

प्रदेशी राजाने सविनय सम्यक्त्व मूल व्रतोंकों धारण कर अपने स्थानपर जानेको तैयार हूवे।

केशीस्वामि बोले कि हे प्रदेशी राजा आप जानते हों कि आचार्य कितने प्रकारके होते है ?

हां भगवन् म्है जानता हु आचार्य तीन प्रकारके होते है (१) कलाचार्य (२) शिल्पाचार्य (३) धर्माचार्य।

हे राजन् इन्ही तीनों आचार्योंका बहु मान केसे किये जाते है वह भी आप जानते है।

हां भगवन् म्है जानता हु कि कलाचार्य और शिल्पाचार्यकों द्रव्य वस्त्र भूषण माला भोजनादिसे सत्कार किया जाता है और धर्माचार्यकों वन्दन नमस्कार सेवा भक्तिसे सत्कार किया जाता है।

हे राजन् आप इस बातकों जानते हुवे मेरे साथमे प्रतिकुल वरताव कराथा उन्होंकों वगर क्षमत्क्षामना और वन्दन किये ही जानेकि तैयार करली है।

हे भगवान् म्है इन्हीं बातकों ठीक ठीक जानता हूं परन्तु यहां पर क्षमत्क्षमन और वन्दना आदि करनेसे म्है ही जानुगा परन्तु मेरा इरादा है कि कल सुर्योदय म्है मेरे अन्तेवर पुत्र उमराव और च्यार प्रकारकी शैन्य लेके बड़े ही उत्सवके साथ आपकों वन्दन करनेकों आउगा और वन्दन करूंगा।

यह सुनके केशीश्रमण भगवानने मौन व्रतको ही स्वीकार कीया था क्युकी इस कार्यमें साधुवोंको हां या ना नहीं केहना एसा आचार है।

दुसरे दिन राजा प्रदेशी अपने सर्व कुटुम्ब और च्यार प्रकारे

सैन्याकों बड़ ही आडम्बरके साथ केशी स्वामिकों वंदन करनेको आया इसीसे बहुतसे अन्य लोकोंको भी धर्मपर श्रद्धा हूई भगवानकों वन्दन नमस्कार कर भगवानकि सुधारस देशनाका पानकर पीच्छा जाने लगा, इतनेमें केशीस्वामि बोलाकि हे राजन रमणीकका अरमणीक न होना ?

प्रदेशी राजा बोला कि हे भगवान रमणीक और अरमणीक किसकों केहते है ? हे राजन जेसे कोई करसानिका क्षेत्र खलामें अनाज पकता है उन्ही समय बहुतसे पशु पंखी और मनुष्य याचक आदिके आने जानेसे वह खेतखला अच्छा रमणीक होता है जब अनाजआदि करसानी लोक अपने घरपर ले जाते है फीर उन्हीं क्षेत्रखलामें कोई भी नही आता नही जाता उन्ही समय वह क्षेत्रखला अरमणीक हो जाता है। इसी माफीक इक्षुक्षेत्र इसी माफीक उद्यान भी समझना और नाटिकशाला भी समझना तात्पर्य यह हे कि हे राजन मैं यहापर हु वहां तक तुम धर्म पर अच्छी श्रद्धा और मेरी सेवा भक्ति करते है यह तुमारा रमणीकपणा है परन्तु मेरे चलेजानेपर यह धर्म भावना छोड दोगे तो अरमणीक हो जावोगे वास्ते मैं आपकों केहता हू कि मेरे चले जानेपर अरमणीक न होना अर्थात् धर्मभावनाको छोडना नहीं। बराबर धर्मकार्य शासनकार्य आत्मकार्य हमेशके लिये करते रेहना

प्रदेशी राजा बोला कि हे भगवान इस बातकि आप खातरी रखो मैं रमणीकका अरमणीक कबी नही होवुगा हे भगवान् मेरे श्वेतांबिका नगरोके आश्रित ७००० । ग्राम है जिन्हीकि आबादानी (पैदास) मेरे राजभंडार और सैन्यादिकके उपभोगमें लगनेके

सिवाय बचत खजानेमें जमां होती थी परन्तु म्है आपका उद्धार वृत्तिका धर्म श्रवण किया है वास्ते मेरी भावना है कि इन्ही ७००० ग्रामोंकि आवन्दके च्यार भाग करूगा जिस्मे एक भाग तो अंतेवर आदिकों, एक भाग शैन्याकों, एक भाग खजानामें जमां, और एक भागकि विशाल दानशाला करवायके प्रतिदिन असान पान खादिम स्वादिम वस्त्रादि दान देता रेहूगा और शील, व्रत पच्चरकान पौषद उपवासादि धर्मक्रिया करता रहुगा वास्ते हे भगवान आप पुरणतये खातरी रखिये म्है रमणीकका अरमणीक कबी भी नही होहुगा। यह बात केशीश्रमण ध्यान पूर्वक श्रवण करके राजाकों दृढ धर्मी जाना। प्रदेशी राजाने केशीश्रमण भगवानकों वंदन नमस्कार कर अपने स्थानपर चला गया तत्पश्चात् राजा संसारकों असार समझता हुवा उन्ही अस्थिर राजपाटकि सार संभल न करता हुवा अपने आत्मकल्याणके कार्य करता रहा अर्थात् श्रावकके व्रतोंको ठीक तरहे पालन कर रहा था।

केशीश्रमण भगवान वहांसे विहारकर अन्य जिनपद देशमें गमन करते हुवे। देखिये संसारकि सवार्थवृत्ति जब प्रदेशी राजा आत्मकार्यमें ध्यान लगा देनेसे राज अंतेवरकि सार संभार करना छोड दीयाथा, तब सुरिकंता राणीने दुष्ट विचार कियाकि यह राजा तो मेरी और राजकि कुछ भी सारसंभार नही करता है अर्थात् मेरे साथ काम भोग नही भोगवता है तों मेरे क्या काम का अगर एसाही हो तों म्है इन्हीकों विष-शस्त्र तथा अग्निका प्रयोगसे जांनसे मार डालु और मेरा पुत्र सुरिकान्तकों राज देदु,

एसा विचार करति हुइ कितनेक समय राजाका छेद्र देखती रही परन्तु एसा मोखा ही नमीला तब राणी अपने पुत्र सुरिकान्तको बोलवाके सर्व वात कही कि अगर म्है और तुं दोनों मीलके राजाकों मार देवे तों तेरेको राज म्है देदुगी। यह बात कुमर सुनि तो खरी परन्तु इस बातका आदर न किया मनमे मली भी न समझी और वहांसे उठके चला गया। पीच्छे राणीने विचार किया कि यह पुत्र न जाने अपना पिताकों केह देगा तों मेरी सब बात राजा जान लेगा वास्ते मुझे कोइ उपाय कर राजाकों विष देना ही उचित है।

इस समय राजा छट छट पारणा करता था जिसमे बारह छट हो गया था और तेरवा छेटका पारण था उन्ही समय सूरिकान्ना राणी पारणेकि आमंत्रण करके विषयुक्त भोजन खीला दीया बस स्वल्प ही समयमें राजाके शरीरमें विषका विस्तार होने लगा राजाने जान लिया कि यह सब मेरे किया हुवा कर्मही उदय हुवा है भलो यह राणी तों विष प्रयोगसे एक मेराही प्राणोंका नाश करती है परंतु मेने तों बहुतसे प्राणोंका नाश किया है वास्ते सम परिणामोंसे ही सहन करना उचित है ऐसा विचारके आप तृणके संस्थारे पर बेठके श्री सिद्ध भगवानको नमस्कार किया और आपने धर्माचार्य श्री केशीश्रमण भगवानकों भी नमस्कार किया अर्थात् वंदन नमस्कार कीया तत्पश्चात् आठारा पापस्थानकि आलोचन करके सर्व प्रकारसे १८ पापस्थान और च्यार प्रकारे आहारका त्याग करके समाधि पूर्वक चरम श्वासोश्वास और नाश मान शरीरकों त्यागन करता हूवा अन्तमें कालधर्मको प्राप्त हूवा।

राजा प्रदेशीने अज्ञाव दशामें बहुत ही पापकर्म किये थे परन्तु जब सम्यक्त्वरूपी गुण श्रेणीका आवलम्बन किया उसी समयसे अन्तिम क्षमारूपी वज्रसे सर्व अशुभ कर्मोंका नाश कर आप सौधर्म देवलोकके अंदर साढा बारह लक्ष योजनके विस्तारवाले सुरियाभ नामका वैमानके अधिपति सुरियाभ नामके देवपणे उत्पन्न हुवा था सुरियाभ देवकि रूद्धि और वैमानका विस्तार अन्य थोकड़ा द्वारा लिखा जावेगा ।

भगवान—गौतम स्वामिसे केहते हूवे कि हे गौतम पूर्व भवमें अपरिमित्त क्षमा प्रदेशी राजाने कि थी उसी प्रदेशी राजाका जीव यह सुरियाभ देव है जो कि अबी नाटिक करके गया है यह महा ऋद्धि ज्योति कान्ति प्राप्त होनेका कारण सम्यक्त्व सहित क्षमा ही है ।

हे भगवन् यह सुरियाभ देव देवभवसे काहा जावेगा ?

हे गौतम महाविदह क्षेत्रमें दृढपइनो होके मोक्षमें जावेगा ।

॥ इतिशम् ॥

प्रश्नोत्तर नम्बर ९

सूत्र श्री भगवतीजी शतक १ उद्देशा ६

(रोहा मुनिके प्रश्न)

सर्वज्ञ भगवान वीर प्रभुके शिष्य जो कि प्रकृतिका भद्रीक और प्रकृतिका विनीत होनेसे स्वाभावसे ही क्रोध मान माया लोभ उपशान्त थे और भी अनेक गुण संयुक्त ऐसा " रोहा नामका मुनि था " अपने ज्ञान ध्यानमें सदैव रमनता करता था । एक

समय रोहा मुनिको प्रश्न उत्पन्न हूवा। तब भगवानके पास आके नम्रता पूर्वक वन्दन नमस्कार कर प्रश्न करता हूवा कि—

(प्र०) हे भगवान ! पेहला लोक और पीच्छे अलोक हूवा था कि पेहला अलोक और पीच्छे लोक हूवा था ?

(उ०) हे रोहा ! जिस पदार्थकी आदि और अन्त नहीं तो उसको पहिले और पीच्छे कैसे कहा जाय। इसी माफीक लोका लोककी भी आदि अन्त नहीं है वास्ते पेहले या पीछे नहीं कह शक्ते। परन्तु दोनों सास्वते हैं। क्योंकि आकाश सास्वता है और आकाशके साथ धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय और काल यह पांचों द्रव्य है इन्हींको लोक कहते हैं और जहांपर केवल आकाश द्रव्य ही है वह अलोक कहा जाता है। जब आकाश सास्वता है तब आकाशके अन्दर रेहने वाले पांचों द्रव्य भी सास्वते हैं इस्में भी द्रव्यास्तिकनयकि अपेक्षा सास्वत है और पर्यायास्ति नयकि अपेक्षा जो अगुरु लघु पर्याय है वह असास्वत है और लोकमें जो अकृतम पदार्थ है वह द्रव्यापेक्षा सास्वत है क्योंकी इस लोकको किसीने बनाया नहीं और इसका विनास भी कबी होगा नहीं। और जो कृतम पदार्थ है उसकी आदि भी है और अन्त भी है। इस वास्ते यह लोकालोक सास्वत पदार्थ है।

(प्र०) हे भगवान् ! पहेला जीव और पीछे अजीव हुवा है कि पेहला अजीव और पीछे जीव हुवा है ?

(उ०) हे रोहा ! 'जीव और अजीव यह दोनों सास्वते पदार्थ हैं क्योंकि जीव और अजीव अनादि कालसे लोक व्यापक

है। अजीवके पांच भेद हैं। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय और काल। अगर पहेले जीव मानते हैं तो आकाशविना जीव कहां ठेरा था, धर्मास्ति विना जीव गमन केसे कर शके, अधर्मास्ति विना जीव स्थिर केसे रहशके। अगर पहेले अजीव मानते हैं तों जीव विना धर्मास्ति० किसकों साहिता देती थी, अधर्मास्ति किसकों स्थिर करती थी इत्यादि अनेक दोषण उत्पन्न होते हैं। वास्ते केवल ज्ञानसे सम्यक् प्रकार देखनेवाले अनन्त तीर्थंकरोंने जीव अजीव दोनों अनादिकालके सास्वते पदार्थ कहे हैं। न किसीने उत्पन्न किया है न कबी विनास होगा। इसी माफोक सिद्ध और संसारी इसी माफीक मोक्ष और संसार भी सास्वते पदार्थ कहे हैं। इसीकी पुष्टीके लिये निम्न प्रश्न पर विचार करो।

(प्र०) हे भगवान ! पहेला कुकड़ी हुई या ईंडा। तथा पहेला ईंडा हुवा कि कुकड़ी ?

(उ०) हे रोहा। कुकड़ी भी सास्वती है और ईंडा भी सास्वता है क्योंकि कुकड़ी विना ईंड़ा हो नही सकता है और ईंडा विना कुकड़ी हो नही सकती वास्ते ज्ञानी पुरुषोंने अनादिकालसे कुकड़ी और ईंड़ाकों सास्वता बतलाया है।

(प्र०) हे भगवान। पेहला लोकांत पीछे अलोकांत है कि पेहला अलोकान्त और पीछे लोकान्त है ?

(उ०) हे रोहा ! दोनों सास्वते है। भावना पूर्ववत।

(१) एवं लोकान्त और सातवीं नरकका आकाशान्त।

(२) एवं सातवीं नरकके आकाशान्त और सातवीं नरकके तृण वायु।

(३) एवं सेतवीं नरवका तृणवायु और सातवीं नरकका घनवायु।

(४) एवं सातवीं नरकका घनवायु और सातवीं नरकका घनोदद्धि।

(५) एवं सातवों नरकका घनोदद्धि और सातवीं नरकका पृथ्वी पिंड।

(६) एवं सातवीं नरकके पृथ्वीपिंड और छठी नरकका आकाशान्त।

(१०) एवं तृणवायु, घनवायु, घनोदद्धि, पृथ्वीपिंड पाचों बोल।

(१५) पांचवीं नरकका भी पांचों बोल इसी माफीक।

(२०) चोथी नरकके पांचों बोली भी इसी माफीक

(२५) तीजी ,, ,, ,,

(३०) दुजी ,, ,, ,,

(३५) पहेली ,, ,, ,,

एवं लोकान्त और द्विपान्त जम्बुद्विपादि असंख्याते और समुद्र लवणादि असंख्याते एवं भरतादि सर्व क्षेत्र सर्व अलावा लोकान्त साथे संयोग कर देना तथा नरकादि २४ दंडक षट्द्रव्य छेलेस्या आठकर्म तीनद्रीष्टी च्यारदर्शन पांचज्ञान तीनअज्ञान च्यारसंज्ञा, तीनयोग दोयउपयोग सर्वद्रव्य, सर्वप्रदेश, सर्व पर्याय। प्रश्नोत्तर सर्व पूर्वकि माफीक करना अब चर्म प्रश्नके कहते हैं।

(प्र) हे भगवान। लोकान्त पेहला और काल पीछे हैं?

(उ) हे रोहा। दोनों सास्वते पदार्थ है। जेसे द्विप समुद्रसे लेके काल तकके प्रश्न लोकान्तके साथ किये है इसी माफीक अलोकान्तके साथ भी संयोग लगा देना। जैसे लोकान्त और अलोकान्तके साथ प्रश्नोत्तर बतलाये हैं इसी माफीक द्विपके साथ निचेके सर्व संयोग जोड देना फीर द्विपको छोड समुद्रके साथ सर्व संयोग कर देना फीर समुद्रको छोड भरतादि क्षेत्रके साथ सर्व निचेके बोलोंका संयोग कर देना यावत् सर्व पर्यायसे कालके साथ संयोग कर देना।

इसी प्रश्नोंके उत्तर द्वारा इश्वरवादी जो लोक इश्वर बनाया कहते है अर्थात् सर्व पदार्थ इश्वरने बनाया है इसका निराकार किया है। क्योंकि ईश्वर कीसी पदार्थका कर्ता नही है कारण ईश्वर कर्म रहित सद्चिदानंद अमूर्ति=अरूपी स्वगुण भोक्ता है उनकों तो किसी प्रकारका कार्य करना रहा ही नहीं है और ऐसा जो कुंभकारकि माफीक जगत कार्य करता रहे तो उनमें ईश्वरत्व प्राप्ती मानना भी मिथ्यात्वका कारण है कारण जगतके घटपटादि पदार्थ सर्व सास्वत हैं और कृतम वस्तु जो बनाते है वह कर्मोवाले जीव ही बनाते हैं और ईश्वर तो कर्म रहीत है वास्ते ईश्वर जगतका कर्ता नहीं है। जीव स्वयं कर्मो अनुस्वार शुभाशुभ फलका भोक्ता है और जब तप संयमसे शुभाशुभ कर्मोकों नास करेगा तब ईश्वर रूप हो जावेगा।

रोहा मुनिने इन्ही प्रश्नोंका उत्तर सुनके आनंदमय हो अपनी आत्माको ज्ञान रमणतामें लगाके ध्यान करता हुवा।

इतनेमें गौतमस्वामीको प्रश्न उत्पन्न हूवे । वे भी भगवानके पास आये और वंदन नमस्कार करके बोले ।

(प्र०) हे भगवान । लोक स्थिति कितने प्रकारकी है ?

(उ०) हे गौतम ! लोकस्थिति आठ प्रकारकी है । यथा

(१) आकाशके आधारसे वायु रहा हुवा है अर्थात् आकाशके आधार तृण वायु है और तृणवायुके आधार घनवायु है ।

(२) वायुके आधारसे पाणी रहा है (घनोदधि)

(३) पाणीके आधार पृथ्वी रही हुई है अर्थात् जो नरकका पृथ्वीपिंड है वह बंधा घन माफीक पाणीके आधार रहा हुवा है ।

(४) पृथ्वीके आधार त्रस स्थावर जीव रहे हुवे हैं ।

(५) अजीव–जीवोंका संग्रह । यहा उपचरितनयापेक्षा शरीरादि अजीव जीवोंको संग्रह कीया है ।

(६) जीव कर्मोंको संग्रहकर रखा है ।

(७) अजीवकों जीव संग्रह करता है अर्थात् जीव भाषामन पणे पुद्गलोंको संग्रह करता है ।

(८) जीव कर्मोंको संग्रह करता है ।

(प्र) हे भगवान । यह लोक स्थिति कीस प्रकारसे है ?

(उ) हे गौतम । जेसे कोई चमडे की मसक वायुकाय भरके उपरका मुहपके डोरेसे बन्ध करदे । और उसी मसकके मध्य भागको पके डोरासे कसके बांध दे फीर उपरका डोरा खोलके आधे भागकि वायुको निकालके उसके बदले पाणी भरके उपरका मुह बांधके बिचमें जो डोरी बांधी थी उसकों भी खोलदे तब वायुके उपर

पाणी रह सका है। इसी माफीक वायुके आधार पाणी और पका पाणीके आधार पृथ्वी रही हुई है यावत् जीवकर्मोको संग्रह कीया है।

(प्र) हे भगवान्! सूक्षम अपकाय हमेशा वर्षती है।

(उ) हे गौतम! सूक्षम अपकाय हमेशा वर्षती है वह उर्ध्व आधो तीरच्छी दिशामें हमेशा वर्षती है। परन्तु जैसे स्थूल अपकाय दीर्घ काल ठेरती है इसी माफीक सूक्ष्म अपकाय दीर्घकाल नहीं ठेरती है। सूक्ष्म केहनेका कारण यह है कि वह स्थूल दृष्टीवालोंके द्रष्टीगोचर हो न ही शक्ती है परन्तु है एक बादर अपकायकि जातीमे। रात्री समय अधिक ठेरती है दिनके अन्दर सूर्यका आताप होनेसे शीघ्र ही विध्वंस हो जाती है वास्ते साधु साध्वी तथा सामायिक पौषदमें श्रावक रात्री समय खुले आकाशमें नही ठेरते है अगर कारणात जाना होतो भी कम्बली आदिसे शरीर अच्छांदन करते है। वे अहिंसात्मीक धर्मका पालन करते है।

मरु स्थलमें मुनि विहारका लाभ ।

मारवाड फलोधी नगरमें मुनिश्री ज्ञानसुन्दरजी महाराजका चतुर्मास होनेसे धर्म कृत्यमें वृद्धि ।

(१)=सं० १९७७ का चतुर्मासा ।

१	तपस्या कि पंचरंगी एक
१	तपस्याका शिरपेच एक
२०१	पर्युषणमें पौषद
६१९।)	पेहले पर्युषणमें सुपनोकि आवन्द
१२०९।)	दुसरे पर्युषणमें सुपनोकि आवन्द

(२)-सं० १९७८ का चतुर्मासा ।

२	तपस्याकि पंचरंगी दोय
२	पौषदका शिरपेच दोय
९०१	पर्युषणमें पौषद
९	स्वामिवत्सल पौषदके
२	स्वामीवत्सल खीचंदमें
२१००)	पर्युषणोंमें सुपनोंकि आवन्द
४४१)	श्री भगवती और नन्दीसुत्रकि पूजाका
१२०००	पुस्तकों छापी

और भी पुजा प्रभावना वरघोडा तथा जिर्णोद्धारकि टीपों तथा ३६ आगमोंकि वांचनादि धर्मकृत्य अच्छा हुआ हैं और ज्ञान पंचमिके रोज १२५ श्रोता वर्गने सम्यक्त्व मुल व्रत धारण किया है। शम् ।

प्रकाशकः—

मेघराज मुणोत

फलोधि (मारवाड)

॥ जलदि किजिये ॥

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला संस्थासे स्वल्प समयमें आज तक ९१ पुष्प प्रसिद्ध होचुके है कार्य चालु है।

जैन सिद्धांतके तत्त्वज्ञान मय शीघ्रबोध भाग १-२-३-४-५-६-७-८-९-१०-११-१२-१३-१४-१५

हिन्दी मेझर नामो-२०१ आगमोका प्रबल प्रमाणसे ३१ विषयका प्रतिपादन किया गया है साथमें त्रण निर्नामा लेखोंका उत्तर भी दिया गया है। किंमत फक्त आठ आना।

द्रव्यानुयोग प्रथम प्रवेशिका खास पाठशालाओंमें पढ़ाने लायक है। पाठशालामें टीपल खरचासे ही भेजी जाती है।

लिखोः—**श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला।**

मु० फलोधी—मारवाड।

मुद्रक—

मूलचन्द किसनदास कापडिया,

"**जैन विजय**" प्रिन्टींग प्रेस,

खपाटिया चकला, लक्ष्मीनारायणकी वाड़ी—सूरत।